श्री वीतरागाय नमः ।

अभयरत्नसार

सम्पादक

परम पूजनीय, पूज्यपाद, प्रातःस्मरणीय, वृहद् (वड़) गच्छीय, श्रीपूज्य जैनाचार्य श्रीचन्द्रसिंहसूरिजीके शिष्य-रत्न

पण्डित काशीनाथजी जैन ।

प्रकाशक

दानमल शंकरदान नाहटा

बीकानेर (मारवाड़)

प्रथमावृत्ति २०००] वीर सं० १६५४ [मूल्य अमूल्य

आरम्भके साढ़े तेरह फार्म कलकत्ता २०१, हरीसन रोडके
नरसिंह प्रेसमें पं० काशीनाथजी जैनके द्वारा छापे गये,
बाकीका सम्पूर्ण ग्रंथ चितपुर रोडके श्री लक्ष्मीप्रिंटिंग
वर्क्समें बाबू नरसिंहदास अग्रवाल द्वारा छापा गया

प्रकाशकीय-निवेदन ।

साधर्मिक बन्धुओंसे सप्रेम निवेदन है, कि प्रस्तुत पुस्तकके सम्बन्धमें हमारी यह अभिलाशा थी कि, इसका मूल्य न रखकर विना मूल्य ही प्रचार करवाया जाय। तदनुसार इस पुस्तकके पूर्व-वक्तव्यमें तथा बीकानेर महावीर-मण्डलकी नियमावलीमें विज्ञापन देकर समस्त जैन बन्धुओंको भेंट देनेका उल्लेख कर दिया था। परन्तु बादमें कई सज्जनोंके यह कहनेपर कि "सब किसीको मुफ्त दे देनेसे कईयोंके पास दो-दो-तीन-तीन प्रतियें चली जाँयगी और कई भाईयोंही वंचित रह जायेंगे। तथा मुफ्तकी पुस्तक जानकर कई भाई उसका ठीक तरह उपयोग भी न कर सकेंगे। अतः इसका लागत दाम रख दीजिये या उससे कम करके थोड़ा दाम रख दीजिये; पर दाम जरूर रखिये।" यह समझ कर हमने अब यह निश्चय किया है, कि यति साधु-साध्वी तथा लायब्रेरी-पुस्तकालयको भेंट दी जाय और साधर्मिक भाई-बहनोंसे लागत मूल्यसे भी कम दाम लेकर दी जाय।

प्रस्तुत पुस्तककी २००० प्रतियोंपर छपाई, शोधाई, बन्धाई और कागज़ आदिका सारा व्यय २५००) हुआ है। तदनुसार प्रति पुस्तकका मूल्य १।)सवा रुपैया पड़ता है। परन्तु हर एक साधर्मिक भाई लाभ लेसके इस ख़यालसे पूरे दाम न रखकर केवल ॥।) बारह आने ही रखे हैं। और इन पुस्तकोंके जो दाम आयेंगे उन दामोंमें फिर कोई नयी पुस्तक प्रकाशित करवा कर आप लोगोंकी सेवामें उपस्थित करेंगे। आशा है, प्रेमी जनोंको हमारी यह व्यवस्था प्रिय प्रतीत होगी।

इस पुस्तकके प्रकाशन करानेके सम्बन्धमें शासन-रक्षक, गांभिर्यादि गुण-विभूषित, शास्त्र-विशारद, व्याख्यान-वाचस्पति, पूज्यपाद, प्रातः स्मरणीय, जंगम-युगप्रधान भट्टारक जैनाचार्य श्री १००८ श्रीजिनचारीत्रसूरीश्वरजीने हमें सदुपदेश देकर इसको एक हजार प्रतियोंके छपवानेका निश्चय करवाया था। परन्तु कुछ समयके बाद शासन-मण्डन सकल शास्त्र-सम्पन्न, चारित्र-चूड़ामणि परम-पूज्य जैनाचार्य श्री १००८ श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजकी विशेष प्रेरणा होनेपर दो हजार प्रतियोंके छपवानेका निश्चय हुआ। और तदनुसार हमने दो ही हजार प्रतियें छपवाकर प्रकाशित करवायी हैं।

इस पुस्तकके छपवाकर प्रकाशित करवानेका सारा श्रेय उक्त दोनों गुरुवर्योंको ही हैं। क्योंकि उन्हींकी परम कृपा और विशेष प्रेरणासे यह पुस्तक आप लोगोंकी सेवामें रखी गयी है। आशा है इसे सप्रेम अपनाकर उक्त दोनों गुरुवर्योंके सदुपदेशको तथा हमारे परिश्रमको सफल करेंगे। यदि इस पुस्तकका हाथों-हाथ प्रचार हो गया तो थोड़ेही समयमें दूसरी कोई नयी पुस्तक तैयार करवाकर आप सज्जनोंकी सेवामें रखेंगे। यही हमारा अन्तिम निवेदन है।

प्रस्तुत पुस्तकका नामकरण हमारे स्वर्गीय पुत्र श्रीयुत अभयराजके स्मरणार्थ उसीके नामपर इसका नाम "अभयरत्नसार" रखा गया है। अस्तु।

निवेदक,—

शंकरदान नाहटा

पूर्व-वक्तव्य

प्रिय पाठक वृन्द !

वर्तमान समयमें प्रस्तुत पुस्तकके विषयानुसार अनेकों छोटी-मोटी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। एवं समय-समय पर नवीन पुस्तकें भी प्रकाशित होती रहती हैं; पर उनमें कुछ-न कुछ त्रुटि अवश्य ही रह जाती है। अतएव पुनः उसी विषय पर अन्यान्य पुस्तकोंके प्रकाशन करनेकी जिज्ञासा हो पड़ती है। पहले इस पुस्तककी शैलीके अनुसार "रत्नसागर" और "रत्न-समुच्चय" नामक बड़ी-बड़ी पुस्तकें कलकत्ता निवासी उपाध्याय जयचन्द्जी तथा बीकानेर निवासी उपाध्यायजी रामलालजी गणीकी ओरसे प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनका प्रचार मारवाड़ दक्षिण, बराड़, बङ्गाल आदि प्रदेशोंमें खूब अच्छा रहा। आज भी उन पुस्तकोंकी मांग हो रही है; पर प्रकाशकोंके पास न रहनेसे अलभ्य हो गयी हैं।

प्रस्तुत पुस्तकके प्रकाशक महोदय बाबू शंकरदानजी नाहटा-की कई दिनोंसे यही मनोभावना थी कि वर्तमान समयमें इस तरहकी पुस्तकके अभावके कारण साधर्मिक भाइयोंको बड़ी अड़चण पड़ रही है। अतः कुछ शैली बदल कर इस तरहकी

एक नयी पुस्तक संपादन करायी जाये, पर ठीक संयोग न मिलनेके कारण विलम्ब होता गया। इधर गत वर्षमें आपके सुयोग्य पुत्र-रत्न बाबू भैरूँदानजी तथा सुभयराजजीने हमसे समागम कर प्रस्तुत पुस्तकके सम्पादन कर देनेकी बात कही। उस समय हमारा स्वास्थ्य ठीक नहीं था, एवं कार्य-भार अधिक रहनेसे अव-काश भी बहुत कम था, किन्तु दोनों सज्जनोंके आग्रह तथा हमारे प्रिय मित्र बाबू अमोचन्दजी गोलेछाके विशेष अनुरोध करने पर इस पुस्तकके सम्पादनका कार्य हमें ही अङ्गीकार करना पड़ा।

प्रस्तुत ग्रन्थको लेते समय हमारा यह अनुमान था कि सात-आठ मासमें सम्पूर्ण ग्रन्थ तैयार हो जायगा। तदनुसार उक्त दोनों सज्जनोंको उतने समयमें पूरा कर देनेका निश्चय-समय दिया, पर होनहार कुछ और ही था। किसी तरह समयानुसार पन्द्रह फार्म तक तो कार्यक्रम ठीक रहा। अनन्तर नाना प्रकारके विघ्न पड़ते गये। हमारा स्वास्थ्य भी खराब हो गया। एवं कुछ ऐसे ही आवश्यक कार्य आ पड़े जिसमें हमें बम्बई, अहमदा-बाद आदि बार-बार आना-जाना पड़ा। इससे और भी देरी पर देरी होती गयी। अस्तु!

प्रारम्भमें प्रस्तुत पुस्तकका विषयानुक्रम और ढंगसे रखने-का विचार था, इसलिये उसी क्रमके अनुसार आरम्भ-क्रम रखा गया; किन्तु उस क्रमसे पुस्तकके बहुत बढ़ जानेकी सम्भावना हो गयी। अतः वह क्रम न रखकर दूसरा क्रम कर दिया गया। यद्यपि क्रम-परिवर्त्तनके कारण पुस्तकका ढङ्ग अवश्य ही बदल गया; पर फिर भी हमने हर एक विषयको विभक्त करके अलग-

अलग कर दिया है, जिससे पाठकोंके समझनेमें अड़चण न होगी। शुरूमें श्रावकोंके पाँचों प्रतिक्रमण अनन्तर साधु-प्रतिक्रमण, चैत्यवन्दन, स्तुति, स्तवन, सज्झाय, रास, लावणी, छन्द, पूजायें सूतक विचार, भक्ष्याभक्ष्य विचार, तपस्याओंके स्तवन और उनकी विधियें आदि प्रायः सभी उपयोगी और आवश्यक चीजें उद्धृत कर दी गयी है। भक्ष्याभक्ष्यके सम्बन्धमें, खूब विवेचन देकर समझा दिया गया है। बाईस अभक्ष्य और बत्तीस अनन्त-काय किसे कहते हैं?, किस ऋतुमें कौनसे पदार्थ भक्ष्य और अभक्ष्य है?, श्रावकोंके लिये कौन कौनसे पदार्थ भक्ष्य माने गये हैं?, सचित्ताचित्त किसे कहते हैं?, श्राविकाओंको कैसा व्यवहार करना चाहिये। इत्यादि बातें सुविस्तृत रूपसे ठीक तरह समझा दी गयी हैं। हिन्दीके पाठकोंको ज्ञान करानेके लिये यह पहलाही साधन है। आशा है, पाठकगण प्रस्तुत पुस्तकको प्रेम-पूर्वक उप-योगमें ले कर हमारा और प्रकाशक महोदयका परिश्रम सफल करेंगे।

आरम्भमें प्रकाशक महोदयका यह विचार था कि प्रस्तुत ग्रन्थका लागत मूल्य रख कर प्रचार कराया जाये। और उसके जितने दाम आवें उनमें और और पुस्तकें प्रकाशित कर-वायी जाय, पर आपका यह विचार अन्त तक स्थिर नहीं रहा। शेषमें अन्तिम निर्णय यही रहा कि विना दाम ही प्रचार कराया जाय। तदनुसार ज्ञानभण्डार, पुस्तकालय, पाठशाला, साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविकाओंको उपहार स्वरूप देनेका निश्चय किया है। अतएव हर एक साधर्मीक बन्धुओंको चाहिये कि

इस पुस्तकको मंगवा कर अवश्य पढ़ें। ऐसा आवश्यक और उपयोगी ग्रन्थ मंट मिलना असम्भव है।

पाठकोंसे हमारा अन्तिम यह निवेदन है, कि प्रस्तुत पुस्तकके सम्पादन और मुद्रण कार्यमें अनेक दोष छूट गये हैं। किसी किसी स्थल पर अक्षम्य दोष भी रह गये हैं। जिनके रह जानेसे हमें अत्यन्त दुःख है। ऐसा होनेका कारण हमारे स्वास्थ्यकी अस्वस्थता एवं समयकी शीघ्रता है। आशा है, पाठक गण हमारी इन कठिनाइयोंकी ओर ख्याल करते हुए हमें क्षमान्वित करेंगे। शुभमस्तु।

कलकत्ता
२०१, हरिसन रोड,
ता० ३०-७-१९२७

आपका—
काशीनाथ जैन।



ध्यानसे पढ़िये।

इस पुस्तककी या और किसी विषयके पुस्तककी आशातना-अवज्ञा नहीं करनी चाहिये। क्योंकि ज्ञानकी अवज्ञा करनेसे ज्ञानावरणीय कर्मोंका बन्ध होता है। पूजनकी पुस्तकोंमें भी लिखा है, कि "आगमनी आशातना नवी करीये" अर्थात् शास्त्रकी अवहेलना नहीं करनी चाहिये। प्रत्युत उक्त वाक्यको बार-बार मनन करते हुए ज्ञानकी आशातनाका भयकर जिस तरह बन सके ज्ञानका अधिक आदर और विनय-पूर्वक बहुमान करना चाहिये। पुस्तकको पासमें रखकर खान-पान न करना, अशुद्ध हाथोंसे या पेशाब कर लेनेके बाद बिना-हाथ धोये पुस्तकको नहीं छूना चाहिये। ज्ञानको पासमें रखकर शयन नहीं करना चाहिये। थूंक लगी हुई अंगुलीसे स्पर्श नहीं करना चाहिये। पुस्तकके समक्ष पाऊँपर पाऊं लगाकर नहीं बैठना चाहिये। पुस्तकको ज़मीन पर नहीं रखना चाहिये। मैली जगह पर या अकाल समयमें नहीं पढ़ना चाहिये। पाऊं अथवा चरवले पर पुस्तक रखकर पठन करना ठीक नहीं। क्योंकि नाभीके नीचेका अवयव अपवित्र होता है। और चरवलेसे भूमि-मार्जन किया जाता है, इसलिये पुस्तक-को संपुट-साँपड़े पर रखकर तथा मुखके आगे मुंहपत्ती या वस्त्र देकर अध्ययन करना कहा है।

"मुँहके आगे मुँहपत्ती रखनेकी प्रथा दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है, यह बहुत ही दोषास्पद है। मुँहपत्तीके न रखनेसे

श्वास, थूँक आदिसे ज्ञानकी अत्यन्त आशातना होती है, इसलिये हर एक पाठकको चाहिये कि बिना मुखपर मुंहपत्ती या वस्त्र रखे किसी पुस्तकको न पढ़े। एक समय गौतमस्वामीने शासन नायक वीर प्रभुसे यह प्रश्न किया कि, इन्द्र सावद्य भाषा बोलते हैं या निरवद्य? इसपर भगवान्ने कहा कि मुखके आगे वस्त्र आदि रखकर बोलनेसे निरवद्य भाषा होती है। अन्यथा वह सावद्य समझनी चाहिये। अतएव अष्ट प्रवचन माताके रक्षक यति-मुनियोंको भी आलस्य त्यागकर मुंहपत्ती (जोकि आजकल नाम-मात्र हो गयी है)के सदुपयोग रखनेका ख़याल रखना अत्यन्त आवश्यक है। इससे समीपवर्ती श्रावक-श्राविकाओंको भी मुंह-पत्तीके सम्बन्धमें सदुपयोग रखनेका पूरा उपदेश मिलता है।

मार्गमें चलते समय ज्ञानको नाभीके ऊपर और मस्तकके नीचे रखना चाहिये। जिस तरह राजा, सेठ-साहूकारके आनेके समय उनका बहुमान किया जाता है। उसी तरह ज्ञानका भी वन्दन, पूजन करके बहुमान करना चाहिये। यदि ज्ञानावरणीय कर्मोंका शीघ्र ही क्षय करना हो तो आपके द्वारा ज्ञानकी किसी तरह आशातना न हो वैसा निरन्तर शुद्ध उपयोग रखनेका प्रयत्न कीजिये। ज्ञानावरणीय कर्मोंके नाश होनेसे लोकालोक प्रकाशक उत्तम केवल ज्ञानकी प्राप्ति होती है।

निवेदक—
सम्पादक।



धर्मप्रेमी स्वर्गीय बाबू अभयराजजी नाहटाका संक्षिप्त परिचय।

आपका जन्मस्थान बीकानेर था। आपने ओसवाल जातिके नाहटा वंशमें चैत्र वदी ६ सं० १९५५ वि० में जन्म लिया था। आपके पिताका नाम श्रीमान् सेठ शंकरदानजी है। आपके पूर्वज बीकानेर राज्यान्तर्गत डांडूसर ग्रामके रहनेवाले थे। पीछेसे व्यापारिक सम्बन्धके कारण बीकानेर शहरमें रहने लगे। श्रीमान् सेठ शंकरदानजी नाहटा व्यापारके कार्योंमें बड़े दक्ष हैं। अपने बाहुबलसे इन्होंने अच्छी सम्पत्ति अर्जन की है और इस समय कलकत्ता आदि कई नगरोंमें आपकी दुकानें चल रही हैं। शोकके साथ लिखना पड़ता है, कि आपका एक अत्यन्त होनहार पुत्र अकालहीमें आपको शोक-सागरमें डुबाकर चल बसा, जिसका संक्षिप्त जीवन परिचय नीचे दिया जाता है।

आप (श्रीयुत अभयराजजी) के माता पिता, चार सहोदर भ्राता और कुटुम्बी इस समय बीकानेरमें हैं। आपकी स्त्रीका देहावसान आपकी मृत्युके तीन वर्ष पश्चात् हो गया। आपके केवल एक पुत्रीको छोड़कर अन्य कोई सन्तान नहीं है।

आपने बचपनमें मारजा (वाणिका अध्यापक) के यहाँ

बड़े होनेपर आपने स्थानीय श्रीजैन पाठशालामें प्रवेश कर दशम कक्षातक अङ्गरेजी, संस्कृत तथा हिन्दीकी शिक्षा प्राप्त की थी। आपका हिन्दी भाषामें विशेष प्रेम था।

आपमें धर्मका अङ्कुर बचपनहीसे था। इस अङ्कुरने युवावस्थामें आपकी मनोवृत्तिको जैन जातिमें घुसी हुई कुरीतियोंको दूर करनेकी ओर झुकाया। आप सदा अब इस बातकी चिन्तामें रहने लगे कि समाजकी इन कुरीतियोंको कैसे दूर किया जाये। बहुत कुछ सोचने विचारनेके पश्चात् आपने अपने मनमें यह निश्चय किया कि अविद्या अन्धकारको नष्ट किये बिना कोई भी सामाजिक सुधार करना दुष्कर ही नहीं बल्कि असम्भव है। अस्तु अब सब ओरसे अपने मनको हटाकर आपने विद्या-प्रचारहीमें अपनी शक्तिको लगाना प्रारम्भ किया।

सर्व प्रथम आपने स्थानीय श्रीजैन पाठशाला ही को, जिसमें आप पहले बचपनमें विद्याध्ययन कर चुके थे, सुधारना अपना परम कर्त्तव्य समझा। पहले आप इसके उपमन्त्री पदपर रह कर कार्य करने लगे। आपके उत्साह और कार्यको देखकर और लोगोंका भी ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ, जिसका फल यह हुआ कि जैन समाजके कुछ उत्साही पुरुषोंने यथासाध्य तन, मन, धनसे आपको इस कार्यमें सहायता प्रदान की। थोड़े शब्दोंमें कह देना पर्याप्त होगा कि जीवन पर्यन्त आपने इस पाठशालाकी सेवा की और जो कुछ उन्नति इस पाठशाला की हुई वह आपहीके परिश्रमका फल है। सबसे बड़ी बात जो आपने की वह शिक्षण-प्रणालीका सुधार था। जिससे बालकोंके हृदयमें सजाति

स्वधर्म तथा स्वदेशके प्रति श्रद्धा और प्रेमभाव उत्पन्न हो और जैन जातिका भविष्य अवनतिके अन्धकारसे निकल कर उन्नतिके प्रभाकरसे उज्ज्वल हो और कुछ अंशोंमें आपकी आशा फलवती भी हुई।

आपको विद्याध्ययनके समय सभा सोसाइटियोंसे अधिक प्रेम था। और इसीसे श्रीजैन पाठशालाके अन्तर्गत ही आपने "शिक्षाप्रचारक जैन पुस्तकालय"की स्थापना की थी। इसका मुख्योद्देश्य जैन समाजमें शिक्षा-प्रचार करना तथा व्याख्यानादि द्वारा समाज-सुधार करना था। यही संस्था अब इस समय श्रीजैन महावीर मण्डलके नामसे प्रसिद्ध है जो स्वजातिकी असीम सेवा कर रही है। आज दिन यहाँ जैन समाजमें वेश्या-नृत्य तथा अन्यान्य कुरीतियोंका उन्मूलन होना आपहीके सद् परिश्रमका फल है।

आपने बीकानेरहीमें नहीं प्रत्युत कलकत्ता शहरमें भी जैन श्वेताम्बर मित्र मण्डलका भी बहुत कुछ सुधार किया। इसमें इन्होंने एक पाठशाला की नितान्त आवश्यकता बतला कर स्थापना करवायी और आप इसके अवैतनिक उपमन्त्री पद पर रहकर यथाशक्ति सेवा की। आज तक यह पाठशाला अपना काम सुचारु रूपसे कर रही है।

आप तीर्थयात्राके बड़े प्रेमी थे। और इतनी ही अवस्थामें सिद्धाचल, गिरनार, आबू समेतशिखर पावापुरी तथा चम्पापुरी आदिकी यात्राएं कर डाली थीं।

पिछले दिनोंमें आप श्वास रोगसे पीड़ित

थे। चिकित्सा करनेमें कोई कोर कसर न रखी गयी। बीकानेर, कलकत्ता, भवाली और जयपुर आदि स्थानोंमें सयाने वैद्यों और डाक्टरोंका इलाज हुआ। अन्तमें आप जयपुरमें वैद्यराज लच्छी-रामजीके पास रह कर इलाज करने लगे। इनके इलाजसे कुछ लाभ भी हुआ। इन्हीं दिनोंमें इन्दौरमें वैद्य-सम्मेलन हुआ। आप सभा, सम्मेलन आदिके विशेष प्रेमी थे। अतः ऐसी अवस्थामें भी आप उक्त वैद्यजीके साथ इन्दौर-वैद्य-सम्मेलनमें सम्मिलित हुए। वहाँ जाने पर आपका स्वास्थ्य कुछ अधिक खराब हो गया और आप यहाँसे लच्छीरामजीके चेलेके साथ जयपुर लौट आये। अति खेद है कि इनका दुःख बढ़ता ही गया और यहीं शिवजी रामजीके बागमें वैसाख वदी ७ सम्वत् १९७७ वि०को २२ वर्षकी अवस्थामें आपका शरीरान्त हुआ।

आप इस समय संसारमें नहीं हैं, परन्तु आपका कार्य सदा आपका सुचरित्र कहकर भविष्यमें होनेवाले नवयुवकोंको सत्पथ दिखला रहा है। आप यदि कुछ दिन और जीवित रहते तो न जाने और कौन-कौनसे कार्य करके जाति और देशको लाभ पहुंचाते। इतनी ही थोड़ी अवस्थामें आपने ऐसे-ऐसे काम कर दिखाये जिनको श्रवण कर यहाँकी जैन जातिमें कई सज्जन आश्चर्य-चकित हो जाते हैं। सभा इत्यादि सङ्गठित करना, व्याख्यान देना दिलाना आदि कार्य आपने ही बीकानेरकी जैन समाजमें अच्छी तरहसे जारी किया। जैन जातिको ऐसे वीर युवकका अभिमान होना चाहिये और सदा इस वीरका कृतज्ञ होना चाहिये।

निवेदक—संपादक.

विषयानुक्रमणिका

देववन्दन तथा प्रातःकाल और सायंकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुतियें

चैत्यवन्दन ।

स्तवन ।

नाम	पृष्ठ

रास।

नाम	पृष्ठ
छन्नु जिनस्तवन	५०४
मांगलिक सरणां	५०८

सज्झाय-संग्रह।

पूजा-संग्रह ।

विधि-संग्रह ।

तपस्या-स्तवन और विधियें।



अतीत, वर्तमान और अनागत चोविसीके तीर्थङ्करोंकी नामावली ।

अतीत चोविसी

१ श्रीकेवलज्ञानीजी	२ श्रीनिर्व्वाणीजी
३ श्रीसागरजी	४ श्रीमहायसंजी
५ श्रीविमलदेवजी	६ श्रीसर्व्वानुभूतिजी
७ श्रीश्रीधरजी	८ श्रीदत्तस्वामीजी
९ श्रीदामोदरजी	१० श्रीसुतेजनाथजी
११ श्रीस्वामीजी	१२ श्रीमुनिसुव्रतजी
१३ श्रीसुमतिनाथजी	१४ श्रीशिवगनिजी
१५ श्रीअस्तागजी	१६ श्रीनमीश्वरजी
१७ श्रीअनिलनाथजी	१८ श्रीयशोधरजी
१९ श्रीकृतार्थजी	२० श्रीजिनेश्वरजी
२१ श्रीशुद्धमतीजी	२२ श्रीशिवकरजी
२३ श्रीस्यन्दनजी	२४ श्रीसंप्रति स्वामीजी

वर्तमान चोविसी

श्रीऋषभदेवजी	२ श्रीअजितनाथजी
श्रीसंभवनाथजी	४ श्रीअभिनन्दनजी
श्रीसुमतिनाथजी	६ श्रीपद्मप्रभूजी
श्रीसुपार्श्वनाथजी	८ श्रीचंद्रप्रभूजी
श्रीसुविधिनाथजी	१० श्रीशीतलनाथजी
१ श्रीश्रेयांसनाथजी	१२ श्रीवासुपूज्यस्वामीजी

१३ श्रीविमलनाथजी
१४ श्रीअनन्तनाथजी
१५ श्रीधर्मनाथजी
१६ श्रीशांतिनाथजी
१७ श्रीकुंथुनाथजी
१८ श्रीअरनाथजी
१९ श्रीमल्लिनाथजी
२० श्रीमुनिसुव्रतस्वामीः
२१ श्रीनमिनाथजी
२२ श्रीनेमनाथजी
२३ श्रीपार्श्वनाथजी
२४ श्रीमहावीरस्वामीजी

अनागत चोविसी

१ श्रीपद्मनाभजी
२ श्रीसूरदेवजी
३ श्रीसुपार्श्वजी
४ श्रीस्वयंप्रभुजी
५ श्रीसर्वानुभूतिजी
६ श्रीदेवश्रुतजी
७ श्रीउदयप्रभुजी
८ श्रीपेढालजी
९ श्रीपोट्टिलप्रभूजी
१० श्रीशतकीर्तिदेवजी
११ श्रीसुव्रतनाथजी
१२ श्रीअममनाथजी
१३ श्रीनिष्कषायदेवजी
१४ श्रीनिष्पुलाकदेवजी
१५ श्रीनिर्ममनाथजी
१६ श्रीचित्रगुप्तनाथजी
१७ श्रीसमाधिनाथजी
१८ श्रीसंवरनाथजी
१९ श्रीयशोधरजी
२० श्रीविजयनाथजी
२१ श्रीमल्लिप्रभूजी
२२ श्रीदेवप्रभूजी
२३ श्रीअनन्तप्रभूजी
२४ श्रीभद्रंकरजी



॥ नमो वीतरागाय ॥

श्रीवृहत्खरतरगच्छीय—

पंच-प्रतिक्रमण-सूत्र ।

१—नमस्कार सूत्र ।

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्व-साहूणं । एसो पंच-णमुक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥

२—स्थापनाचार्यजीकी तेरह पडिलेहणा ॥

शुद्ध स्वरूप धारूँ (१) ज्ञान (२) दर्शन (३) चारित्र (४) सहित सद्दहणा-शुद्धि (५) प्ररूपणा-शुद्धि (६) दर्शन-शुद्धि (७) सहित पाँच आचार पालूँ (८) पलावूँ (९) अनुमोदूँ

(१०) मनो-गुप्ति (११) वचन-गुप्ति (१२) काय-गुप्ति आदरूँ (१३)।

३—खमासमण सूत्र।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।

४—सुगुरुको सुख-शाता-पृच्छा।

इच्छकारी सुहराई सुह-देवसि सुख-तप शरीर निराबाध सुख-संजम-यात्रा निर्वहते हो जी। स्वामिन् ! शाता है ? आहार पानीका लाभ देना जी।

५—अब्भुट्ठिओ (गुरु-खामणा) सूत्र।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओ हं अब्भिंतर-देवसिअं खामेउं। इच्छं, खामेमि देवसिअं।

जं किंचि अपत्तिअं पर-पत्तिअं, भत्ते-पाणे विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अन्तर-भासाए, उवरि-भासाए, जं

किंचि मज्झ विणय-परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

६—मुहपत्ती पडिलेहणके २५ बोल।

*१ सूत्र-अर्थ सच्चा सद्दहूँ, २ सम्यक्त्व-मोहनीय, ३ मिथ्यात्व-मोहनीय, ४ मिश्र-मोहनीय परिहरूँ। ५ काम-राग, ६ स्नेह-राग, ७ दृष्टि-राग परिहरूँ।

†१ ज्ञान-विराधना, २, दर्शन-विराधना ३ चारित्र-विराधना परिहरूँ। ४ मनो-गुप्ति ५ वचन-गुप्ति, ६ काय-गुप्ति आदरूँ। ७ मनो-दण्ड, ८ वचन-दण्ड, ९ काय-दण्ड परिहरूँ।

‡१ सुगुरु, २ सुदेव, ३ सुधर्म आदरूँ;

---

* ये सात बोल मुहपत्ती खोलते समय कहने चाहिएँ।

† ये नव बोल दाहिने हाथके पडिलेहणके समय कहने चाहिएँ

‡ इन नव बोलोंका चिन्तन बाँये हाथके पडिलेहणके समय करना चाहिए।

४ कुगुरु, ५ कुदेव, ६ कुधर्म परिहरूँ । ७ ज्ञान, ८ दर्शन, ९ चारित्र आदरूँ ।

७—अंगकी पडिलेहणाके २५ बोल *

कृष्ण लेश्या १, नील लेश्या २, कापोत लेश्या ३ परिहरूँ (मस्तक)। ऋद्धि-गारव १, रस-गारव २, साता-गारव ३, परिहरूँ (मुख)। माया-शल्य १, निदान-शल्य २, मिथ्यादर्शन-शल्य ३ परिहरूँ (हृदय)। क्रोध १, मान २, परिहरूँ (दहिना कन्धा)। माया १, लोभ २ परिहरूँ (बायाँ कन्धा)। हास्य १, रति २, अरति ३ परिहरूँ (बायाँ हाथ)। भय १, शोक २, दुगंछा ३ परिहरूँ (दाहिना हाथ) पृथ्वीकाय १, अप्काय २, तेऊकाय ३ परिहरूँ (बायाँ पैर)। वायुकाय १, वनस्पतिकाय २, त्रसकाय ३ परिहरूँ (दाहिना पैर)।

* ये बोल कहते समय जिस स्थानका नाम कोसमें लिखा है, उस स्थानपर मुहपत्ति (मुखवस्त्रिका) रखते जाना चाहिये।

८—सामायिक सूत्र।

करेमि भंते! सामाइयं। सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥

९—इरियावहियं सूत्र।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि। इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए। गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा-संकमणे जे मे जीवा विराहिया—एगिंदिया, बेइंदिया; तेइंदिया, चउरिंदिया; पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया; ठाणाओ ठाणं संकामिया; जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

१०—तस्स उत्तरी सूत्र ।

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्ली-करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

११—अन्नत्थ ऊससिएणं सूत्र ।

अन्नत्थ उत्ससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि

१२—लोगस्स सूत्र ।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं

सुमइंच। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस—वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥ ३॥ कुंथुं अरंच मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥ ४॥ एवं मएअभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥ ५॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥ ६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥ ७॥

१३—जयउ सामिय सूत्र।

जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उज्जिंत पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंडण, भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरि

पास। दुहदुरिअखंडण अवर विदेहिं तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिं के वि तीआणागय-संपइअ वंदुं जिण सव्वेवि ॥ १ ॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढमसंघयणि उक्कोसय सत्तरिसय जिण वराण विहरंत लब्भइ; नवकोडिहिं केवलीण, कोडिसहस्स नव साहु गम्मइ। संपइ जिणवर वीस, मुणि बिहुं कोडिहिं वरनाण, समणह कोडिसहस्सदुअ थुणिज्जइ निच्च विहाणि ॥२॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ। चउसय छायासीया, तिअलोए चेइए वंदे ॥ ३ ॥ वन्दे नवकोडिसयं, पणवीसं कोडि लक्ख तेवन्ना। अट्ठावीस सहस्सा, चउसय अट्ठासिया पड़िमा ॥ ४ ॥

१४—जं किंचि सूत्र।

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिण-बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि।१।

* पाठान्तर 'संपइ'।

१५—नमुत्थुणं सूत्र।

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं ⊛ तित्थयराणं सयं-संबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं पुरिस-वर-पुंडरीआणं पुरिस-वर-गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं लोग-नहाणं लोग-हियाणं लोग-पईवाणं लोग-पज्जोअगराणं, अभय-दयाणं चक्खु-दयाणं मग्ग-दयाणं सरण-दयाणं बोहि-दयाणं, धम्म-दयाणं धम्म-देसयाणं धम्म-नायगाणं धम्म-सारहीणं धम्म-वर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं, अप्पडिहय-वर-नाण-दंसणधराणं विअट्ट-छउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअ-गाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलम-रुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धि-गइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं। नमो जिणाणं जिअ-भयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ

⊛ पाठान्तर 'तित्थगराणं'।

भवित्संतिणागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १ ॥

१६—जावंति चेइआइं सूत्र।

जावंति चेइआइं, उड्डे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

१७—जावंत केवि साहू सूत्र।

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥

१८—परमेष्ठि-नमस्कार।

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

१६—उवसग्गहरं स्तोत्र।

उवसग्ग-हरं पासं, पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं। विसहर-विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥ १ ॥ विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह-रोग-मारी-दुट्ठ-

जराजंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरा मरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर-निब्भरेण हिअएण । ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास-जिणचंद ॥

२०—जयवीयराय सूत्र ।

जय वीयराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! । भव-निव्वेओ मग्गा-णुसा-रिया इट्ठफल-सिद्धी ॥ १ ॥ लोग-विरुद्ध-च्चाओ, गुरु-जण-पूआ परत्थकरणं च । सुह-गुरु-जोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

२१—आचार्य आदिको वन्दन ।

आचार्यजी मिश्र, उपाध्यायजी मिश्र,

मान श्रीपूज्य-आचार्यजीका

नाम लेकर) मिश्र, सर्व साधु मिथ्र।

२२—सव्वस्सवि सूत्र।

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

२३—इच्छामि ठाइउं सूत्र।

॥ इच्छामि *ठाइउं काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ता चरित्ते सुए सामाइए; तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥

* पाठान्तर 'ठामि'।

२४—अरिहंतचेइयाणं सूत्र।

अरिहन्तचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तियाए, पूअण-वत्तियाए, सक्कार-वत्तियाए सम्माणवत्तियाए, बोहि लाभ-वत्तियाए, निरुवसग्गवत्तियाए॥ सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं।

२५—पुक्खर-वर-दीवड्ढे सूत्र।

पुक्खर-वर-दीवड्ढे,धायइ-संडे अ जंबु-दीवे अ। भरहेरवय-विदेहे धम्माइगरे नमं सामि ॥ १ ॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्स सुर-गण-नरिंद-महियस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ-मोह-जालस्स ॥ २ ॥ जाई-जरा-मरण-सोग-पणासणस्स। कल्लाण-पुक्खल वि-साल-सुहावहस्स॥ को देव-दाणव-नरिंद-गण-च्चियस्स। धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं॥३॥ सिद्धे भो। पयओ णमो जिणमए नंदी

सया संजमे। देवंनागसुवन्नकिन्नरगण-स्सब्भूअभावच्चिए ॥ लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं। धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तियाए० ॥

२६—सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र।

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणंपरंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स। संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहि आ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठनि-

ट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

२७—वेयावच्चगराणं सूत्र ।

वेयावच्च-गराणं संति-गराणं सम्मद्दिट्ठिस-माहिगराणं करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ० ॥

२८—सुगुरु वन्दन सूत्र ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि अहोकायं कायसंफासं । खमणिज्जो भे किलामो । अप्प-किलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कमं । *आवस्सिआए पडिक्कमामि । खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं

* दुबारा पढ़ते समय 'आवस्सिआए' पद नहीं कहना । रात्रिक प्रतिक्रमण में 'राइवइक्कंता', चातुर्मासिक प्रतिक्रमण में 'चउमासी वइक्कंता', पाक्षिक प्रतिक्रमण में 'पक्खो वइक्कंतो, सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में 'संवच्छरो वइक्कंतो', ऐसा पाठ पढ़ना ।

किंचि मिच्छाए मणा-दुक्कडाए वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

२६—देवसिअं आलोउं सूत्र।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअं आलोउं। इच्छं। आलोएमि जो मे०।

२०—आलोयणा।

आजके चार प्रहरके दिनमें मैंने जिन जीवोंकी विराधना की होय। सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अपकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक-वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख दो इन्द्रिय वाले, दो लाख तीन इन्द्रिय वाले, दो लाख चार इन्द्रिय वाले, चार

लाख देवता, चार लाख नारक, चार लाख तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, चौदह लाख मनुष्य। कुल चौरासी लाख जीवयोनियोंमेंसे किसी जीवका मैंने हनन किया, कराया या करते हुएका अनुमोदन किया वह सब मन, वचन, काया करके मिच्छा मि दुक्कडं ॥३०॥

३१—अठारह पापस्थानक आलोउं।

पहला प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पाँचवाँ परिग्रह, छठा क्रोध, सातवाँ मान, आठवाँ माया, नववाँ लोभ, दशवाँ राग, ग्यारहवाँ द्वेष, बारहवाँ कलह. तेरहवाँ अभ्याख्यान, चौदहवाँ पैशुन्य, पन्द्रहवाँ रति-अरति, सोलहवाँ पर-परिवाद, सत्रहवाँ माया- मृषावाद, अठारहवाँ मिथ्यात्व-शल्य; इन पापस्थानोंमें से किसीका मैंने सेवन किया, कराया या करते हुएका अनुमोदन किया, वह सब मिच्छा मि दुक्कडं।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, देव-गुरु-धर्मकी आशातना की हो; पन्नरह कर्मादानोंकी आसेवना की हो; राज-कथा, देश-कथा, स्त्री-कथा, भक्त-कथा की हो; और जो कोई पर निंदादि पाप किया हो, कराया हो, करते हुएका अनुमोदन किया हो, सो सब मन, वचन, काया करके, रात्रि-अतिचार आलोयण करके, पडिक्कमणमें आलोउं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥३१॥

३२—वंदित्तु—श्रावकका प्रतिक्रमण सूत्र।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्व साहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्मा-इआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो,नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥३॥ जं बद्धमिंदिएहिं,

चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे [य] अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥६॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥७। पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइआरे। सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥८॥ पढमे अणुव्वयम्मि, थूलगपाणाइवायविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥ वहबंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए। पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१०॥ बीए अणुव्वयम्मि, परिथूलगअलियवयणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥११॥ सहसा-रहस्स-

गुणव्वए निंदे ॥१६॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ। उवभोगपरीभोगे, वीयम्मि गुणव्वए निंदे ॥२०॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोलि दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं- ॥२१॥ इंगालीवणसाडी,—भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव य दं,—तलक्खरसकेसविसविसयं ॥२२॥ एवं खु जंतपिल्लण,—कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं। सरदहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गिमुसलजंतग—तणकट्ठे मंतमूलभेसज्जे। दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२४॥ न्हाणुवट्टणवन्नग—विलेवणे सद्दरूवरसगंधे। वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहिगरणभोगअइरित्ते। दंडम्मि अणट्ठाए, तइयम्मि गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे,

अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे। सामाइय वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे। देसावगासिअम्मि, वीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही—पमाय तह चेव भोयणाभोए। पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥ सचित्ते निक्खिवणे पिहिणे ववएसमच्छरे चेव। कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु। संते फासुअदाणे, तं निन्दे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसपओगे। पंचविहो अइयारो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए। मणसा माणसि-

अस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदणव
यसिक्खागा, रवेसु सन्नाकसायदंडेसु। गुत्तीए
अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥
सम्मदिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरइ
किंचि। अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्ध-
धसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्प-
रिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेई, वाहि
व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहाविसं कुट्ठ-
गयं, मंतमूलविसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं,
तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥ एवं अट्ठविहं कम्मं,
रागदोससमज्जिअं। आलोअंतो अ निंदंतो,
खिप्पं हणइ सुसावओ ३९॥ कयपावोवि मणु-
स्सो, आलोइअ निंदिअ य गुरुसगासे होइ
अइरेगलहुओ, ओहरिअभरु व्व भारवहो ॥४०॥
आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ
होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेणकालेण
॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, नय संभरिआ पडि-

क्रमणकाले मूलगुणउत्तरगुणे तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स— अब्भुट्ठिओमि आरा-हणाए विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइँ ताइँ वंदे, इह संतो तत्थ सताइँ ॥४४॥ जावत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए। चउवीसजिणविणिग्गयकहाइ, वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं। असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।

मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणई ॥४६॥ एवमहं आलोइअ, निंदिय गरहिअ दुगंछिउं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

३३—आयरिअउवज्झाए सूत्र।

आयरिअउवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल-गणे अ। जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥१॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअसीसे। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥२॥ सव्वस्स जीव-रासिस्स भावओ धम्मनिहिअनियचित्तो। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥३॥

३४—सकलतीर्थ नमस्कार।

सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने व्यन्त-राणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने। पाताले पन्नगेन्द्रे स्फुट-मणिकिरणै ध्वस्तसान्द्रान्धकारे, श्रीमत्तीर्थङ्क

राणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥१॥
वैताढ्ये मेरुशृङ्गे रुचकगिरिवरे कुण्डले हस्ति
दन्ते, वक्षस्कारे कूटनन्दीश्वरकनकगिरौ नैषधे
नीलवन्ते। चैत्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे
चक्रवाले हिमाद्रौ, श्रीमत्तीο ॥२॥ श्रीशैले
विन्ध्यशृङ्गे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा,
सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्ण
शैले। सह्याद्रौ वैजयन्ते विमलगिरिवरे गुर्जरे
रोहणाद्रौ, श्रीमत्तीο ॥३॥ आघाटे मेदपाटे
क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च
घाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे। कर्णाटे
हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे, श्रीम
त्तीο ॥४॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे
मेखले पिच्छले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयति-
लके सिंहले केरले वा। डाहाले कोशले वा
विगलितसलिले जङ्गले वा ढमाले, श्रीमत्तीο
॥ ५ ॥ अङ्गे वङ्गे कलिङ्गे सुगतजनपदे सत्प्र

यागे तिलङ्गे, गौडे चौडे मुरण्डे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौण्ड्रे। आर्द्रे माद्रे पुलिन्द्रे द्रविडकवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे, श्रीमच्चै० ॥६॥ चन्द्रायां चन्द्रमुख्यां गजपुरमथुरापत्तने चोज्जयिन्यां, कोशाम्ब्यां कोशलायां कनकपुर वरे देवगिर्यां च काश्याम्। नासिक्ये राजगेहे दशपुरनगरे भद्दिले ताम्रलिप्त्यां, श्रीमच्चै० ॥७॥ स्वर्गे मर्त्येऽन्तरिक्षे गिरि शिखर ह्रदे स्वर्णदीनी रतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुञ्जे। ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजल विषमे दुर्गमध्ये त्रिसन्ध्यं, श्रीमच्चै० ॥ ८ ॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जम्बु वृक्षे, चौज्जन्ये चैत्यनन्दे रतिकररुचके कौण्डले मानुषाङ्के। इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यन्तरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके भवन्ति त्रिभुवनवलये यानि चैत्यालयानि ॥९॥ इत्थं श्रीजैन चैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः, प्रोद्यत्क

ल्याणहेतुं कलिमलहरणं भक्तिभाजस्त्रिसन्ध्यम्। तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानन्दकारी ॥ १० ॥

३५—परसमयतिमिरतरणिं।

परसमयतिमिरतरणिं, भवसागरवारितरणवरतरणिम्। रागपरागसमीरं, वन्दे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्धसंसारविहारकारि-दुरंतभावारिगणा निकामम्। निरंतरं केवलिसत्तमा वो, भयावहं मोहभरं हरन्तु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरूढगूढ—संमोहपङ्कहरणामलवारिपूरम्। संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥३॥ परिमल-भरलोभालीढलोलालिमाला—वरकमलनिवासे हारनीहारहासे। अविरलभवकारागारविच्छि-त्तिकारं, कुरु कमलकरे मे मङ्गलं देवि सारम्॥४॥

३६—संसारदावानल स्तुति।

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं। मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥१॥ भावावनामसुरदानवमानवेन-चूलाविलोलकमलावलिमालितानि। संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥२॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाऽविरललहरीसंगमागाहदेहं। चूलावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥३॥ अमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमाला-झङ्काराराबसारामलदलकमलागारभूमि निवासे! छाया-संभारसारे! वरकमलकरे! तारहाराभिरामे!, वाणीसंदोहदेहे! भवविरहवरं देहि मे देवि! सारम् ॥ ४ ॥

३७—भयवं दसण्णभद्दो।

भयवं दसण्णभद्दो, सुदंसणो थूलभद्द

वइरो य । सफलीकयगिहवासा, साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया भावा । फासुअदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाणमाईणं ॥२॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तंपि संभरइ जीवो । जं च न संभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय—मसुहं वायाइ भासियं किंचि । असुहं काएण कयं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥४॥ सामाइयपोसहसं-ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो । सो सफलो बोद्ध-व्वो, सेसो संसारफलहेऊ ॥५॥ मैंने सामायिक विधिसे किया, विधिसे पूर्ण किया. विधिमें किसी प्रकारकी अविधि हुई हो तो मिच्छामि दुक्कडं । दस मनके, दस वचनके, बारह कायाके इन बत्तीस दोषोंमें से कोई दोष लगा हो तो वह मन, वचन, काया करके मिच्छामि दुक्कडं ॥

२८—जयतिहुअण स्तोत्र ।

जय तिहुअण-वर-कप्परुक्ख, जय जिण धन्नंतरि । जय तिहुअण-कल्लाण-कोस, दुरिअ-करि-केसरि ॥ तिहुअणजण-अविलंघिआण, भुवण-त्तय-सामिअ । कुणसु सुहाइं जिणेस पास, थंभणयपुर-ट्ठिअ ॥ १ ॥ तइ समरंत लहंति झत्ति, वर-पुत्त-कलत्तइ । धण्ण-सुवण्ण-हिरण्ण-पुण्ण, जण भुंजइ रज्जइ ॥ पिक्खइ मुक्ख असंख-सुक्ख, तुह पास पसाइण । इअ तिहुअण वर-कप्प-रुक्ख, सुक्खइ कुण मह जिण ॥ २ ॥

जर-जज्जर परिजुण्ण-कण्ण, नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण । चक्खु-क्खीण खएण खुण्ण, नर सल्लिय सूलिण॥ तुह जिण सरण-रसायणेण, लहु हुंति पुणण्ण-व । जय-धन्नंतरि पास महवि, तुह रोग-हरो भव ॥ ३ ॥ विज्जा-जोइस-मंत तंत-सिद्धीउ अपयत्तिण । भुवणऽब्भुअ अट्ठविह सिद्धि,

सिज्झहि तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तओ वि, जण होइ पवित्तउ। तं तिहुअण-कल्लाण-कोस, तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद-पउत्तइ मंत-तंत-जंताइ विसुत्तइ। चर-थिर-गरल-गहुग्ग-खग्ग-रिउ-वग्गवि गंजइ ॥ दुत्थिय-सत्थ अणत्थ-घत्थ, नित्थारइ दय करि। दुरियइ हरउ स पास-देउ, दुरिय-करि-केसरि ॥ ५ ॥ तुह आणा थंभेइ भीम-दप्पुद्धुर-सुर-वर-रक्खस-जक्ख-फणिंद-विंद-चोरानल-जलहर ॥ जल-थल-चारि-रउद्द-खुद्द-पसु-जोइणि-जोइय। इय तिहुअणअविलंघिआण, जय पास सुसामिय ॥ ६ ॥ पत्थिय-अत्थ अणत्थ-तत्थ, भत्ति-भर-निब्भर। रोमंचंचिय-चारु-काय किन्नर-नर-सुर-वर ॥ जसु सेवहि कम-कमल-जुयल, पक्खालिय-कलि-मलु। सो भुवण-त्तय-सामि पास, मह मद्दउ रिउ-बलु ॥ ७ ॥ जय जोइय-मण-कमल-भसल, भय—पंजर-कुंजर। तिहुअण-

जण-आणंद-चंद, भुवण-त्तय-दिणयर ॥ जय मइ-मेइणि-वारिवाह, जय-जंतु-पियामह। थंभणय-ट्ठिय पासनाह, नाहत्तण कुण मह ॥८॥ बहुविह-वन्नु अवन्नु सुन्न, वन्निउ छप्पन्निहि। मुक्ख-धम्म-कामत्थ-काम, नर नियनिय-सत्थि हि॥ जं झायहि वहु दरिसणत्थ, बहु-नाम-पसिद्धउ। सो जोइय-मण-कमल-भसल, सुहु पास पवद्धउ ॥ ९ ॥ भय-विब्भल रणझणिर-दसण, थरहरिय-सरीरय। तरलिय-नयण विसन्न सुन्न, गग्गर-गिर करुणय ॥ तइ सहस-त्ति सरंत हुंति, नर नासिय-गुरु-दर। मह विज्झव सज्झसइ पास, भय-पंजर-कुंजर ॥१०॥ पइं पासि वियसंत-नित्त-पत्तंत-पवित्तियवाह-पवाह-पवूढ-रूढ-दुह-दाह सुपुलइय॥ मन्नइ मन्नु सउन्नु पुन्नु, अप्पाणं सुर-नर। इय तिहुअण-आणंद-चन्द, जय पास-जिणेसर ॥११॥ तुह कल्लाण-महेसु घंट-टंकारव-पिल्लिय।

उल्लिर-मल्ल महल्ल-भत्ति, सुर-वर गंजुल्लिय॥ हल्लुप्फलिय पवत्तयंति, भुवणेवि महूसव। इय तिहुअण-आणंद-चंद, जय पास सुहुब्भव॥१२॥ निम्मल-केवल-किरण-नियर-विहुरिय-तम-पह-यर। दंसिय-सयल-पयत्थ-सत्थ, वित्थरिय-पहा-भर॥ कलि-कलुसिय-जण-घूय-लोय-लोयणह अगोयर। तिमिरइ निरु हर पासनाह भुवण-त्तय-दिणयर॥ १३॥ तुह-समरण-जल-वरिस-सित्त, माणव-मइ-मेइणि। अवरावर-सुहुमत्थ-बोह-कंदल-दल-रेहिणि॥ जायइ फल-भर-भरिय हरिय-दुह-दाह अणोवम। इय मइ-मेइणि-वारिवाह, दिस पास मइं मम॥१४॥ कय-अविकल-कल्लाण-वल्लि, उल्लूरिय-दुह-वणु। दाविय-सग्गपवग्ग-मग्ग, दुग्गइ-गम-वारण॥ जय-जन्तुह जणएण तुल्ल, जं जणिय हियावहु। रम्मु धम्मु सो जयउ पासु, जय-जन्तु-पियामहु॥ १५॥ भुवणारण्ण-निवास-

दरिय-पर-दरिसण-देवय-जोइणि-पूयण-खित्त-वाल-खुद्दा-सुर-पसु-वय ॥ तुह-उत्तट्ठ सुनट्ठ सुट्ठु, अविसंठुलु चिट्ठहि । इय तिहुअण-वण-सीह पास, पावाइं पणासहि ॥१६॥ फणि-फण-फार-फुरन्त-रयण-कर-रंजिय-नह-यल-फलिणी-कंदल-दल-तमाल-नीलुप्पल-सामल । कमठा-सुर-उवसग्ग-वग्ग-संसग्ग-अगंजिय । जय पच्च-क्ख-जिणेस पास थंभणयपुर-ट्ठिय ॥ १७ ॥ मह मणु तरलु पमाणु नेय, वायावि विसंठुलु । नेय तणुरवि अविणय सहावु, अलस-विहलं-घलु ॥ तुह माहप्पु पमाणु देव, कारुण्ण-पवित्त-त्तउ । इय मइ मा अवहीरि पास, पालिहि विलवंतउ ॥ १८ ॥ किं किं कप्पिउ नय कलुणु, किं किं व न जंपिउ । किं व न चिट्ठिउ किट्ठु देव, दीणयमवलंबिउ ॥ कासु न किय निप्फलल ललिज, अम्हेहि दुहत्तिहि । तहवि न पत्तउ ताणु किंपि, पइ पहु परिचत्तिहि ॥ १९ ॥ तुहु

सामिउ तुहु मायबप्पु, तुह मित्त पियंकरु। तुहु गइ तुहु मइ तुहुजि ताणु, तुहु गुरु खेमंकरु॥ हउ दुहभरभारिउ वराउ, राउ निब्भग्गह। लीणउ तुह कम-कमल-सरणु, जिण पालहि चंगह॥२०॥ पइ किवि कय नीरोय लोय, किवि पाविय सुहसय। किवि मइमंत महंत केवि, किवि साहिय-सिव-पय। किवि गंजिय-रिउ-वग्ग केवि, जस-धवलिय-भू-यल मइ अवहीरहि केण पास, सरणागय-वच्छल॥२१॥ पच्चुवयार-निरीह नाह, निप्फन्न-पओयण। तुह जिण पास परोवयार-करणिक्क परायण॥ सत्तु-मित्त-सम-चित्त-वित्ति, नय-निंदय-सम-मण। मा अवहीरय अजुग्गउवि, मइं पास निरंजण॥२२॥ हउ बहुविह-दुह-तत्त-गत्तु-तुह दुह-नासण-परु। हउ सुयणह करुणिक्क-ठाणु, तुहु निरु करुणाकरु॥ हउ जिण पास असामि सालु, तुहु तिहुअण-सामिय। जं अवहीरहि

महं झखंत, इय पास न सोहिय ॥ २३ ॥
जुग्गाऽजुग्ग-विभाग नाह, न हु जोयहि तुह-
सम । भुवणुवयार-सहाव-भाव-करुणा-रस-
सत्तम ॥ सम विसमइं किं घण नियइ, भुवि
दाह समंतउ । इय दुहि-बंधव पास-नाह, मइ
पाल थुणंतउ ॥२४॥ नय दीणह दीणयं मुयवि,
अन्नुवि किवि जुग्गय । जं जोइवि उवयार
करहि, उवयार समुज्जय ॥ दीणह दीण
निहीणु जेण, तइ नाहिण चत्तउ । तो जुग्गउ
अहमेव पास, पालहि मइं चंगउ ॥ २५ ॥ अह
अन्नुवि जुग्गय-विसेसु किवि मन्नहि दीणह ।
जं पासिवि उवयारु करइ, तुह नाह समग्गह ॥
सुच्चिय किल कल्लाणु जेण, जिण तुम्ह पसी-
यह । किं अन्निण तं चेव देव, मा मइ अव-
हीरह ॥ २६ ॥ तुह पत्थण न हु होइ विहलु,
जिण जाणउ किं पुण । हउ दुक्खिय निरु सत्त-
चत्त, दुक्कहु उस्सुय-मण ॥ तं मन्नउ निमिसेण

एउ, एउ वि जइ लब्भइ। सच्चं जं भुक्खिय-वसेण, किं उंबरु पच्चइ ॥२७॥ तिहुअण-सामिअ पासनाह मइ अप्पु पयासिउ। किज्जउ जं निय-रूव-सरिसु न मुणउ बहु जंपिउ ॥ अण्णु ण जिण जगि तुह समोवि, दक्खिन्न-दयासउ। जइ अवगन्नसि तुह जि अहह, कह होसु हयासउ ॥ २८ ॥ जइ तुह रूविण किणवि पेय-पाइण वेलवियउ। तुवि जाणउ जिण पासु तुम्हि, हउं अंगीकरउ ॥ इय मह इच्छिउ जं न होइ, सा तुह ओहावणु। रक्खंतह नियकित्ति णेय, जुज्जइ अवहीरणु ॥ २६ ॥ एह महारिय जत्त देव, इहु न्हवण-महूसउ। जं अणलिय-गुण-गहण तुम्ह, मुणि-जण-अणि-सिद्धउ ॥ एम पसीअसु पासनाह, थंभणयपुर-ट्ठिय। इय मुणिवरु सिरि-अभयदेउ, विन्नवइ अणिंदिय ॥ ३० ॥

३९—जय महायस ।

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय-सुह-फलय, जय समत्थ-परमत्थ-जाणय जय जय गुरु-गरिम गुरु। जय दुहत्त-सत्ताण ताणय थंभणय-ट्ठिय पासजिण, भवियह भीम-भवुत्थु भय अवणिं-ताणंतगुण, तुज्झ तिसंझ नमोत्थु ॥ १ ॥

४०—श्रुतदेवताकी स्तुति ।

सुवर्ण-शालिनी देयाद्, द्वादशाङ्गी जिनोद्भवा। श्रुतदेवी सदा मह्य—मशेष-श्रुत-संपदम् ॥ १ ॥

४१—क्षेत्र-देवताकी स्तुति ।

यासां क्षेत्र-गताः सन्ति, साधवः श्रावकादयः। जिनाज्ञां साधयन्तस्ता रक्षन्तु क्षेत्र-देवताः ॥ १ ॥

४२—नमोऽस्तु वर्धमानाय ।

इच्छामो अणुसट्ठिं, णमो खमासमणाणं ।

नमोऽस्तु वर्धमानाय, स्पर्धमानाय कर्मणा। तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥१॥ येषां विकचारविन्दराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या सदृशैरतिसङ्गतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः कषायतापार्दितजन्तुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः। स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥ ३ ॥ श्वसित-सुरभि-गन्धा-ऽऽलीढ-भृङ्गी-कुरङ्गं मुखशशिनमजस्रं, बिभ्रति या बिभर्ति। विकच-कमलमुच्चैः साऽस्त्वचिन्त्य-प्रभावा, सकलसुख-विधात्री, प्राणभाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥

४३—श्रीस्तम्भनपार्श्वनाथ चैत्यवन्दन।

श्रीसेढी-तटिनी-तटे-पुर-वरे, श्रीस्तम्भने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याभयदेव-सूरि-विबुधाधीशैः समारोपितः। संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवफलैः, स्फूर्जत्फणा-पल्लवः पार्श्वः कल्पतरुः स मे प्रथय

तां, नित्यं मनो-वाञ्छितम् ॥ १ ॥ आधिव्याधि हरो देवो, जीरावल्ली शिरोमणिः। पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नत-नाथो नृणां श्रिये ॥ २ ॥

४४—सिरि-थंभणय-ठिय-पास-सामिणो।

सिरि-थंभणय-ठिय पास-सामिणो सेस-तित्थ-सामीणं तित्थ-समुन्नइ-कारण-सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एसिमहं सरणत्थं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए। भत्तीए गुण-सुट्ठियस्स संघस्स समुन्नइ-निमित्तं ॥ २ ॥

४५—चउ-क्कसाय सूत्र।

चउ-क्कसाय-पडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जय-मयण-बाण-मुसुमूरणु। सरस-पिअंगु-वण्णु गय-गामिउ, जयउ पासु भुवण-त्तय सामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु-कंति-कडप्प-सिणिद्धउ, सोहइ फणि मणिकिरणालिद्धउ। नं नव-जलहर-तडिल्लय-लंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥ २ ॥

४६—अर्हन्तो भगवन्त।

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धि-स्थिता, आचार्या जिन—शासन्नोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः। श्री सिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ १ ॥

४७—लघु-शान्ति स्तव।

शान्तिं शान्ति-निशान्तं-शान्तंशान्ताऽशिवं नमस्कृत्य। स्तोतुः शान्ति-निमित्तं, मन्त्र-पदैः शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥ ओमिति-निश्चत-वचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्। शान्ति-जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषक-महा-सम्पत्ति-समन्विताय शस्याय। त्रैलोक्य-पूजिताय च, नमो नमः शान्ति-देवाय ॥३॥ सर्वामर-सुसमूह—स्वामिक-संपूजिताय निजिताय। भुवन-जन-पालनोद्यत—तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्व-

दुरितौघ-नाशन—कराय सर्वा-ऽशिव-प्रशम
नाय । दुष्ट ग्रह भूत पिशाच—शाकिनीनां प्रम
थनाय ॥५॥ यस्येति नाम मन्त्र—प्रधान वा-
क्योपयोग-कृत-तोषा । विजया कुरुते जन-
हित—मिति च नुता नमत तं शान्तिम् ॥६॥
भवतु नमस्ते भगवति !, विजये ! सुजये !
परापरैरजिते ! । अपराजिते ! जगत्यां, जयतीति
जयावहे भवति ! ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य,
भद्र-कल्याण-मंगल-प्रददे । साधूनां च सदा
शिव-सुतुष्टि-पुष्टि-प्रदे-जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां
कृत-सिद्धे !, निर्वृति-निर्वाण-जननि ! सत्त्वा
नाम् । अभय-प्रदान-निरते !, नमोऽस्तु-स्वस्ति-
प्रदे ! तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे
नित्यमुद्यते ! देवि ! । सम्यग्दृष्टीनां धृति-रति-
मति-बुद्धि-प्रदानाय ॥१०॥ जिन-शासन-निर
तानां, शांति-नतानां च जगति जनतानाम् ।
श्रीसम्पत्-कीर्ति-यशो—वर्द्धनि ! जय देवि !

विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल-विष-विषधर, दुष्ट-ग्रह-राज-रोग-रण-भयतः राक्षस-रिपु-गण-मारि—चौरेति-श्वापदादिभ्यः ॥१२॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति। तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वम् ॥ १३ ॥ भगवति! गुणवति! शिव-शान्ति—तुष्टि-पुष्टि-स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम्। ओमिति नमो नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रौं फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर—पुरस्सरं संस्तुता जया देवी। कुरुते शान्तिं नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्व-सूरि-दर्शित—मन्त्र-पद-विदर्भितः स्तवः शान्तेः। सलिलादि-भय-विनाशी, शान्त्यादि करश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोगम्। स हि शान्ति-पदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥१७॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः।

मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥१८॥
सर्व-मङ्गल-माङ्गल्यं, सर्व-कल्याण-कारणम् ।
प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥१६॥

४८—भुवनदेवताकी स्तुति ।

चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवन-वासिनी ।
निहत्य दुरितान्येषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥१॥

४६—वर-कनक सूत्र ।

ओंवर-कणय-संख-विद्दुम—मरगय-घण-संनिहं विगय-मोहं । सत्तरि-सयं जिणाणं, सव्वा-मर- पूइयं वन्दे ॥१॥ स्वाहा ॥ ओं भवणवइ-वाणमंतर—जोइस-वासी विमाण-वासी य । जे केवि दुट्ठ-देवा, ते सव्वे उवसमंतु मे ॥ २ ॥ स्वाहा ॥

॥ वृहद्-अतिचार ॥

॥ नाणम्मि दंसणम्मि य, चरणम्मि तवे य तह य विरियम्मि । आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १,

दर्शनाचार २, चारित्राचार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांचविधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष-दिवसमांहि. सूक्ष्म बादर, जाणतां अणजाणतां, हुओ होय, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार,—काले विणए बहु-माणे, उवहाणे तह य निन्ह-वणे । वंजण-अत्थ-तदुभए, अट्ठविहो नाणमा-यारो ॥१॥ ज्ञान काल-वेलामांहि पढिउं गुणिउं नहीं, अकाले पढिउं, विनय-हीन बहु-मान हीन उपधान-हीन श्रीउपाध्याय कने नही पढिउं, अथवा अनेरा कने पढिउं, अनेरो गुरु कह्यो । व्यंजन, अर्थ, तदुभय कूडो पढ्यो । देव-वांदणे पडिक्कमणे, सिज्झाय करतां, पढतां गुणतां कूडो अक्षर काने-मात्रे-अधिको-ओछो आगल-पाछल भण्यो । सूत्र-अर्थ कूडा भण्या, भणीनें विसा-र्यो । तपोधन तणे धर्मे काजो अणऊधरे

दांडी अणपडिलेही, वसतो अणसोधी; असिज्झाई अणोझा-काल-वेलामांहि दशवैकालिक-प्रमुख सिद्धान्त भण्यो गुण्यो। योग कह्यांपखे भण्यो। ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, सांपडा, सांपडी, वही, दस्तरी, ओलीया, कागल-प्रमुख प्रतें आशातना हुई, पग लागो, थूंक लागो, ओसीसे मूक्यो, कने छतां आहार-नीहार कीधो, ज्ञान-द्रव्य भक्षण-उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापराधे विणाश्यो, विणसतो उवेख्यो, छती शक्तें सार-संभाल न कीधो। ज्ञानवंत प्रतें मच्छर वह्यो, अवज्ञा-आशातना कीधी, कोई प्रतें भणतां गुणतां प्रद्वेष-मत्सर अंतराय-अपघात कीधो। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः—पर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ए पांच ज्ञान तणी असद्दहणा कीधी। कोई तोतलो बोबडो हस्यो, वितर्क्यो। आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो। अष्ट-

विधि ज्ञानाचार विपइओ जिको अतिचार पच्च-दिवसमांहे सूक्ष्म बादर, जाणतां अजाणतां, हुवो होय, ते सहु मन, वचन, कायाइं करी मि०॥

दर्शनाचारना आठ अतिचार,—निस्संकिय निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढ-दिट्ठी अ। उव-वूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥१॥ देव-गुरु-धर्म-तणे विषे निःशंकपणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नहीं। 'सघलाइ मत भला छे' एहवी श्रद्धा कीधी। धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निःसन्देह बुद्धि धरी नही। चारित्रिया साधु-साधवी तणां मल-मलिन गात्र देखी दुगंछा उपजावीढा। मिथ्यात्वीतणी पूजा-प्रभावना देखी मूढदृष्टिपणो कीधो। संघमांहे गुणवंततणी अनुपबृंहणा, अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति अभक्ति चिंतवी, संघ मांहे थिरिकरण वात्सल्य, शक्ति छते प्रभावना न कीधी। देवद्रव्य विनासिउं, विणसंतु उवेखिउं,

छती शक्ते सार-संभाल न कीधी । साधर्मिकशु' कलह-कर्म कीधु' । जिन-भवन-तणी चोरासी आशातना कीधो । गुरु प्रतें तेत्रीस आशातना कीधो । अधौत वस्त्रें देव पूजा कीधी । तिहु' ठाम पाखें देव-पूजा-वास-कूपी-कलशतणो ठवको लागो । मुख-तणी वाफ लागी । ठवणा-रिय हाथ थको पडिओ, पडिलेहवो वीसार्यो । नवकरवालीनें पग लागो । दर्शनाचार विषइओ जिको अतिचार० ॥ ३ ॥

चारित्राचारना आठ अतिचार;—

पणि-हाण-जोग-जुत्तो,पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं। एस चरित्तायारो,अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥१॥ इरिया-समिति १,भासा-समिति २,एषणा-समिति ३, आयाण-भंडमत्त-निक्खेवणा-समिति ४, उच्चार-पास-वणखेल-जल्ल-संघाण-पारिठा-वणियासमिती ५, मनो-गुप्ति १, वचन-गुप्ति २, काय-गुप्ति ३, ए... गुप्ति

रूडी परें पाली नहीं। साधुतणें धर्मे सदैव श्रावकतणे पोसह-पडिक्कमणे लीधे अष्टविध चारित्राचार-विषईओ जिको अतिचार०॥

विशेषतः श्रावकतणें धर्मे श्रीसम्यक्त्व-मूल बारह व्रत। श्रीसम्यक्त्व-तणा पांच अतिचार;—संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगोसु। संका,—श्रीअरिहंत-तणां बल, अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियानां चारित्र, जिन-वचन-तणो संदेह कीधो। आकांक्षा;—ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, गोत्रदेवता। ग्रह-पूजा विणाइग, हनुमंत इत्येवमादिक ग्राम, गोत्र, देश, नगर, जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें, आतंकें इहलोक-परलोकार्थे पूज्या, मान्या। बोद्ध, सांख्यादिक संन्यासी, भरडा, भगत, लिंगिया, योगी, दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट, मंत्र चमत्कार देखी परमार्थ

जाणया विण भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र सिख्यां सांभल्यां। श्राध, संवत्सरी, होली, वलेव, माही पूनिम, अजा पडिव, प्रेतवीज, गोरत्रीज, विणायग-चोथ, नाग-पांचम, भुलणा-छठा, शील-सातम-ध्रो-आठम, नउली-नवम अहव-दसम, व्रत-इग्यारस, वत्स-वारस, धन-तेरस, अनंत-चौदश, आदित्य-वार, उत्तरायण, नवो-दक, जाग-भोग-उतारणा-कीधा। पिंपले पाणी घाल्यां, घलाव्यां। घर, वाहिर, कूई, तालाव, नदी, समुद्र, कुंडमें पुण्य-हेतु स्नान कीधां, दान दीधां। ग्रहण, शनिश्चर, माह-मास, नवरात्रि नाहिया, अजाणतां थाप्यां। अनेराई व्रत व्रतोला कीधां, कराव्यां। विचि किच्छाः—धर्म संवंधिया फल तणो संदेह कीधो। जिण, अरिहंत, धर्मना आगर, विश्वो पकार-सागर-मोक्ष-मार्ग दातार, देवाधिदेव-बुद्धें शुद्ध भावें न पूज्या, न मान्या। महा

त्माना भात-पाणी-तणी दुगंछा कीधी। कुचा रित्रिया देखी चारित्रिया उपरें अभाव हुओ। मिथ्यात्वी-तणी प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी। प्रीति मांडी, दाक्षिण्य लगें तेहनो धर्म मान्यो। श्री समकित विषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष-दिवस मांहि सूक्ष्म-बादर, जाणतां अजाणतां, हुओ होय, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामि०।

पहिले प्राणातिपात-विरमण व्रतें पांच अति चार। वह-बंध-छविच्छेए, अइभारे भत्त-पाण-वुच्छेए॥ द्विपद-चउपद प्रतें रीश-वशें गाढो घाउ-प्रहार घाल्यो, गाढ बंधने बांध्यां, घणे भारे पीड्या, निर्लाञ्छन कर्म कीधां, चारा-पाणी-तणी वेला सार-संभार न कीधी। लहिणे-देणे किणही-प्रतें लंघाव्युं, तेणें भूखे आपण जिम्या। अणगल पाणी वावरयूं रुडे गलणे गल्युं नही। अणगल पाणी झील्यां, लूगडां धोयां।

इंधण अणसोध्युं जाल्युं। ते मांहि साप, कानखजूरा, सुलहला, मांकड, जूआ, गोगिंडा, साहतां मूआ, दूखव्यां, रूडे थानक न मूक्या। कीडी, मकोडी, उदेही, घीनेली, कातरा चूडेली, पतंगियां, देडकां, अलसिया, ईली, कूति, डांस, मसा, वगतरा, माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा, चांपिया, दूहव्या। माला हलावतां पंखी, काग, चिडकलानां इंडा फूटां। अनेरा एकेंद्रियादिक जिके जीव विणठा, चांप्या, दूहव्या। हालतां चालतां अनेरुं कांइ काम काज करतां, विध्वंसपणुं कीधुं, जीव-रचा रूडे न कीधी। संखारो सूकव्यो। सल्या धान तावडे दीधां, दलाव्यां, भरडाव्यां। खाटला तावडे झाटक्या, मूक्या, मूकाव्या। जीवाकुल भूमि लीपावी। वाशी गार राखी, रखावी। दलणे, खांडणे, लीपणे रूडी जयणा न कीधी। आठम चउदशना नियम भांग्या। धणी करावी।

पहला प्राणातिपात-व्रत-विषइओ अनेरो०॥१॥

बीजे स्थूल-मृषावाद-विरमण व्रतं पांच अतिचार। सहसा-रहस्स-दारे, मोसुवएसे य कूड लेहे य॥ सहसात्कार;—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकांते वात करतां देखी 'तुम्हें तो राज-विरुद्ध चिंत वोछो' इत्यादिक कह्युं। स्वदार-मंत्र-भेद कीधो। अनेराई किणहीनो मंत्र आलोचमर्म प्रकाश्यो। किणहीनें कूडी बुद्धि दीधी। कूडो लेख लिख्यो। कूडी साख भरी। थापण-मोसो कीधो। कन्या-ढोर-गाय-भूमि-संबंधिया लेहणें देहणें व्यवसाय-वाद-वढावढि करतां मोटकुं झूठ बोल्युं। हाथ-पग-भणी गाल दीधी। करडका मोड्या। अधर्म वचन बोल्यां। बीजे मृषावाद-व्रत-विषइओ० ॥२॥

त्रीजे अदत्तादान-विरमण व्रतना पांच अतिचार। तेनाहडप्पओगे। घर, बाहिर, क्षेत्र,

खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी, दीधी, वावरी। चोरीनी वस्तु मोल लीधी। चोर, धाडी प्रतें संवल दीधुं, संकेत कह्युं। विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो। नवा पुराणा, सरस विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधा। खोटे तोले मान माप वहोर्यां। दाण-चोरी कीधी। साटे लांच लीधी। माता, पिता, पुत्र, कलत्र, परिवार वंची जूदी गांठ कीधी। किण हीनें लेखे पलेखे भूलव्युं। पडी वस्तु ओलवी लीधी। त्रीजे अदत्तादान-व्रत विषइओ०॥३॥

चोथे स्वदार-संतोष मैथुन व्रतें पांच अतिचार॥ अपरिग्गहिया इत्तर, अणंग-वीवाह-तिव्व-अणुरागे॥ अपरिगृहीतागमन, इत्वर-परिगृहिता-गमन, विधवा, वेश्या, स्त्री, कुलाङ्गना, स्वदार शोक तणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्यां, आठम चउदश अनेराई पर्व तिथि तणा नियम भांग्या। घरघरणां

कीधां, कराव्यां, अनुमोदीयां । कुविकल्प चिंत
व्या। अनंग क्रीडा कीधी। पराया विवा
जोड्या। काम भोग तणे विषे तीव्राभिला
कीधो। कुस्वप्न लाधां। नट विट पुरुषशु हां
कीधु। चौथे मैथुन-व्रत वि० ॥ ४ ॥

पांचमे परिग्रह-परिमाण-व्रते पांच अति
चार॥ धण धन्न खित्त वत्थू। धन, धान्य, क्षेत्र
वस्तु, रूप्य, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुष्पद ए
नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि
देखी मूर्च्छा लगे संक्षेप न कीधो। माता
पिता, पुत्र, कलत्रादि तणे लेखें कीधो। परिग्रह
परिमाण लेई पढ्यो नही, पढ़ी विसारिओ
नियम विसारिओ। पांचमे परिग्रह परिमाण
व्रत विषइओ० ॥ ५ ॥

छट्ठे दिग्-विरमण-व्रते पांच अतिचार।
गमणस्स य परिमाणे॥ ऊर्ध्वदिसि, अधोदिसि
तिर्यग्दिसि जायवा आववा तणो नियम उं

कोई अजाणे भांगो। एक गमा संकोडी विजो गमा वधारी। विस्मृत लगे अधिक भूमि गया। पाठवणी आघी मोकलो॥ छट्ठे दिग्व्रते वि०॥ ६॥

सातमें भोगोपभोग-परिमाण-व्रत॥ जेहना भोजन आश्री पांच अतिचार अने करमहूंती पन्नरे, एवं वीश अतिचार॥ सच्चित्ते पडिवद्धे, अपोल दुप्पोलयं च आहारे। सच्चित तणे नियम लीधे अधिक सच्चित्त लीधुं, तथा सच्चित मली वस्तु, अपक्वाहार, दुष्पक्वाहार, तुच्छोपधि तणु भक्षण कीधुं। होला, उंबी-पहुंक, काकडी, भडथां कीधां। सुल्यां धान प्रमुख भक्षण कीधां। सच्चित्त-दव्व-विगई—पाणह तंबोल-वत्थ-कुसुमेसु। वाहण-सयण-विलेवण-बंभ-दिसि-ण्हाण-भत्तेसु॥१॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभार्या-संक्षेप्या नहिं, लेई नियम भांग्या। बावीस अभक्ष, बत्तीस अनंतकाय

मांहि आदु, मूला, गाजर, पींडालू, सूरण, सेलरां, काचो आंवली, गोल्हां खाधां। चोमासा-प्रमुख-मांहे वासी कठोलनी रोटी खाधी। त्रिहुं दिवसनुं दही लीधुं। मधू, महुडां, माखण, माटी, वेंगण, पीलू, पीचू, पंपोटा, पींपो, विष, हिम, करहा, घोलवडां, अणजाण्यां फल, टींवरुं, अथाणुं, आमणवोर, काचुंमोठुं, तिल, खसखस, काचां कोठिंवडां खाधां। रात्रि-भोजन कीधुं। लगभगतो वेलाये व्यालू कीधुं। दिवस उग्या विण शिराव्या। तथा पन्नरे कर्मादान-इंगालि-कम्मे, वण-कम्मे, साडी-कम्मे, भाडी-कम्मे, फोडी-कम्मे, दंत-वाणिज्ये, लाखा-वाणिज्ये, रस-वाणिज्ये, केश-वाणिज्ये, विष-वाणिज्ये, जंतपीलण-कम्मे, नीलं छण-कम्मे, दवग्गि-दावणया, सरदह-तलाव-सोसणया,-असई-पोसणया, ए-पांचकर्म्म, पांच वाणिज्य, पांच सामान्य, महारंभ लीहाला

कराव्या। इंटवाह, नीवाह पचाव्या। धाणी, चणा, पकान्न करी वेच्या। वासी माखण तपाव्यां। अंगीठा कीधा, कराव्या। तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरान्त राख्या। कूकडा, सूडा प्रमुख पोष्या, अनेरुं जे कांई बहु सावद्य कठोर कर्मादिक समाचर्युं॥ सातमा भोगोपभोग-व्रत-विषइओ० ॥७॥

आठमा अनर्थ-दंड-विरमण-व्रतना पांच अतिचार॥ कंदप्पे कुक्कुइए॥ कंदर्प लगे विटनी परे हास्य, कुतूहल, मुखादि-अंग-कुचेष्टा कीधी। मूरखपणा लगे कुणहीने असंबद्ध वाक्य बोल्या। खांडा, कटारी, कुसी, कुहाडा, रथ, उखल, मूसल, अगन, घरटी आदिक सज करी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अनेरो कांइ पापोपदेश दीधो। अंघोल, नाण, दांतण, पग-धोअण पाणी तेल अधिक आण्यां हींडोले हींच्या। राज-कथा

देश-कथा भक्त-कथा स्त्री-कथा पराई वात कीधी। आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां। कर्कश वचन बोल्या। करडका मोड्या। संभेडा लाया। भेंसा, सांड, कूकडा, मिंढा, श्वानादि झूझतां कलह करतां जोयां। खाधी लगें अदेखाई चिंतवी। माटी, मीठुं, कण, कपासिया काज विणचांप्या तेह ऊपर बयठा। आली वनस्पति खुंदी। स्नान पाणी घीरस तेल गुल आम्ल वेतस वेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां, ते मांहि कीडी, कंथुआ, मांखी, उंदर, गिरोली प्रमुख जीव विणठा। सूडा प्रमुख जीव क्रीडा-हेतें बांधी राख्या। घणी निद्रा कीधी। राग-द्वेष लगें एकने ऋद्धि-परिवार वांछी, एकने मृत्यु-हाणि विमासी। आठमा अनर्थ-दंड-व्रत वि०॥

नवमा सामायिक व्रतें पांच अतिचार॥ तिविहे दुप्पणिहाणे। सामायिक लीधे मन

आहट दोहट चिंतव्युं। वचन सावद्य बोल्युं। काय अणपडिलेह्युं। हलाव्युं। छती वेलाइं सामायिक न लीधुं। सामायिक लई उघाडे मुखे बोल्या, उंघ आवी कीधी। वीज दीवा तणी उजाही लागी। कण, कपासीया, माटी, मीठुं, नील-फूल, हरि-कायना संघट्ट हुआ। पुरुष तिर्यंचना संघट्ट हुआ। तथा स्त्री तिर्यंची आभडी। मुहपत्तीयों संघट्टी। सामायिक अण पूरिउं पारिउं, पारउं विसारिउं। नवमे सामा यिक-व्रत-विषइओ० ॥ ९ ॥

दशमे देशावकाशिक व्रते पांच अतिचार;—
आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाइ रूवाणुवाइ बहिया पुग्गल-पक्खेवे ॥ नियमित भूमिकामांहिं बाहिर थकी कांई अणाव्युं। आप कन्हाथी बाहिर मोकल्युं। साद करी, रूप देखाडी, कांकरी नाखी आपणपणुं छतुं जणाव्युं॥ दशमे

देशावकाशिक-व्रत-विषइओ० ॥१०॥

इग्यारमे पोषधोपवास व्रते पांच अतिचार;- संथारुच्चार-विहो पमाय तह चेव भोअणाभोए॥ पोसह लीधे संथारा तणी भूमि बाहिरला थंडिला दिवसे शोध्यां पडिलेह्यां नहीं। मातरुं अणपडिलेह्यु वावरिउं, अणपुंजी भूमिकाइ परठविउं, परठवतां चिंतवण न कीधो, 'अणुजाणह जस्सुग्गहो' न कह्यो, परठव्या पूठे वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्यु। पोसह सालामांहि पइसतां नीसरतां निस्सिही आवस्सही कहेवी विसारी। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेऊकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय, तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ। संथारा पोरसि तणो विधि भणवो वीसारिओ। पोरसीमांहि उंध्या। अविधि संथारुं पाथरयु। काल वेलाये पडिक्कमण न कीधु। पारणादिक तणी चिन्ता निपजावी। कालवेला देव वांदवा वीसारिया।

पोसह असूरो लीयो, सवारो पारीयो। पर्व्व तिथि आवी पोसह लीधो नहीं॥ इग्यारमे पोषधोपवास-व्रत-विषइओ० ॥ ११ ॥

बारमे अतिथि-संविभाग-व्रते पांच अतिचारः—सचित्ते निक्खिवणे॥ सचित्त वस्तु हेठे उपरि थके महात्मा प्रते असूझतु दान दीधु। अदेवा तणी बुद्धे सूझतु फेडी असूझतु कीधु। देवा तणी बुद्धे असूझतु फेडी सूझतु कीधु। आपणु फेडी परायु कीधु। विहरवा वेला टली गया। पछें असुर करी महातमा तेड्या। मच्छरलगें दान दीधु। गुणवंत आवे भगति न साचवी। छती शक्ति साधर्मिक-वात्सल्य न कीधु। अनेराई धर्म्मक्षेत्र सीदाता छती शक्तें उद्धरया नहीं॥ बारमें अतिथि-संविभाग-व्रत-विषइयो० ॥ १२ ॥

संलेहणा तणा पांच अतिचार। इहलोए परलोए॥ इहलोगासंसप्पओगे परलोगासंसप्प-

ओगे जीविआसंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे। इहलोक-मनुष्य भवे मान, महत्त्व, लोक तणी सेवा, ठकुराई, बलदेव-वासुदेव-चक्रवत्ति-पद वांछयां। परलोके इंद्र-अहमिंद्र-देवाधिदेव-पदवी वांछी। सुख आव्ये जीववा तणी वांछा कीधी। दुःख आव्ये मरवा तणी वांछा कीधी। काम-भोग-तणी इच्छा कीधी॥ संलेहणा-व्रत-वि०॥

तपाचार बारभेदें॥ छ अभ्यन्तर, छ बाहिर। अणसणमूणोयरिया०। अणसण कहीये उपवास, ते पर्वतिथि छतो शक्ते कीधुं नही। ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही। द्रव्य-संक्षेप विगय-प्रमुख- परिमाण कीधुं नही। आसनादिक काय-किलेश न कीधो। संलीणता—अंगोपांग संकोच्या नहीं। नवकारसी, पोरसी, गंठसी, मूठसी, साड्ढपोरसि, पुरिमड्ढ, एकासणो, बेआसणो, नीवी, आंबिल

प्रमुख पच्चक्खाण पारवां वीसारयां, बेसतां नवकार भणयो नहो, ऊठतां दिवस-चरिमं न कीधु नीवी, आंबिल, उपवासादिक तप करी काचु पाणी पीधु, वमन थयु ॥ बाह्य-तप-व्रत-विषइओ० ॥

अभ्यंतर तप पायच्छित्तं विणओ। गुरुकनें मन सुद्धे आलोयणा लीधीं नहीं। गुरु-दत्त प्रायच्छित्त तप लेखा शुद्ध पहुंचाड्यं नहीं। देव—गुरु-संघ-साहम्मी प्रतें विनय साचव्यो नहीं। वाचना, प्रच्छना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पंच विधि सिज्झाय कीधी नहीं। धम्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायु नही। कर्मक्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यन्तर तप विषइओ ॥

वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणिगूहियबलविरिओ, परिक्कमइ जो जहुत्तठाणेसु ॥ जुं जइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरियायारो ॥१॥

पढवे, गुणवे, विनय, वेयावच्च, देवपूजा, सामायिक, दान, शील, तप, भावना प्रमुख धर्म्म कृत्य तणो विषे मन, वचन, काय तणुं छतुं बल वीर्य गोपव्युं । रूडा पञ्चाङ्ग खमासमण न दीधां । वेठां पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचार-व्रत-विषइओ० ॥

नाणाइ अट्ठ अइ वय, सम संलेहण, पण पनर कम्मेसु । बारस तव विरिअ तिगं, चउ वीसं सय अईयारा ॥१॥ पडिसिद्धाणं करणे ॥ जिन-प्रतिषिद्ध बावीस अभक्ष्य, बत्तीस अनंतकाय, बहु-बीजभक्षण, महाआरंभ, महापरिग्रहादिक कीधां । नित्यकृत्य, देवपूजा, सामायिकादिक तथा तीर्थयात्रादिक न कीधां । जीवाजीवादि विचार सद्दहिया नहीं, आपणी कुमति लगें उत्सूत्र—प्ररूपणा कीधी । प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ

६, राग १० द्वेष ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अरतिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८, ए अढारह पापस्थानकमाँहि जें कोइ कीधो करा व्यो अनुमोद्यो एवंप्रकारे श्रावक—धर्मे श्रीस म्यक्त्व मूल बारह व्रत चोवीसा सो अतिचार मांहि जिको कोई अतिचार पत्तदिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

५१—कमलदल-स्तुति ।

कमल-दल-विपुल-नयना, कमल-मुखी कम ल-गर्भ सम गौरी। कमले स्थिता भगवती ददातु श्रुत-देवता सौख्यम् ॥१॥

५२—भुवनदेवता-स्तुति ।

भुवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ०। ज्ञानादिगुणयुतानां,स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम्।

विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ।१।

५३—क्षेत्रदेवता-स्तुति।

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं। अन्नत्थ।
यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया।
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

५४—पच्चक्खाण-सूत्र।

* नमुक्कारसहिअ-पच्चक्खाण।

(१)

उग्गए सूरे नमुक्कार-सहिअं मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्व-समाहि-वत्तिआगारेणं; विगईओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सह सागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्त विवेगेणं पडुच्च मक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं; देसावगासियं भोग-परिभोगं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं

महत्तरागारेणं सव्व-समाहि-वत्तिआगारेणं वोसिरइ ॥

(२)

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं— असणं, पाणं, खाइमं, साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं वोसिरइ ॥१॥

२–पोरसी-साड्ढपोरिसी-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ । उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं— असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अण्णत्थणाभोगेणं—सहसागारेणं पच्छण्ण-कालेणं दिसामोहेणं साहु-वयणेणं सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं; विगईओ पच्चक्खाइ इत्यादि ।

३ पुरिमड्ढ-अवढ-पच्चक्खाण । –

सूरे उग्गए, पुरिमड्ढं अवड्ढं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ; चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसा-

गारेणं, पच्छण्णकालेणं दिसा-मोहेणं साहु-वयणेणं; महत्तरागारेणं सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं; विगईओ पच्च० ।

४— एकासण-बिआसण-पच्चक्खाणं ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसा-मोहेणं साहु-वयणेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं; एकासणं बिआसणं वा पच्चक्खाइ, दुविहं तिविहंपि आहारं असणं, खाइमं, साइमं, अण्ण० सह० सागारिआगारेणं, आउंटण-पसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारि० मह० सव्व० देसावगासिय० इत्यादि ॥ ४ ॥

५—एगलठाण-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं—असणं,

पाणं, खाइमं, साइमं अण्ण० सह० पच्छण्ण० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगट्ठाणं पच्चक्खाइ, दुविहं, तिविहं, चउव्विहंपि आहारं—असणं, खाइमं, साइमं, अण्ण० सह० सागा० गुरु० पारि० मह० सव्व० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ।५।

६—आयंबिल-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थ० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० आयंबिलं पच्चक्खाइ, अण्णत्थ० सह० लेवालेवेणं, गिहत्थ-संसिट्ठेणं, उक्खित्त-विवेगेणं, पारिट्ठा० मह०, सव्व० एकासणं पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहारं—असणं, खाइमं, साइमं; अण्ण० सह० सागा० आउंटण० गुरु० पारि० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ ६ ॥

७—निव्विगइय-पच्चक्खाण ।

साड्ढ-पोरिसिं वा

उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थ० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० निव्विगइयं पच्चक्खाइ, अण्णत्थ० सह० लेवा० गिहत्थ० उक्खित्त० पडुच० पारि-ट्ठा० मह० सव्व० एकासणं पच्चक्खाइ, तिविहं पि आहारं— असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थ० सह० सागा० आउंटण० गुरु० पारिट्ठा० मह० सव्व० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ७ ॥

८—चउविहाहार-उपवास-पच्चक्खाण।

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ। चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अण्णत्थ० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥८॥

९—तिविहाहार-उपवास-पच्चक्खाण।

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं-असणं, खाइमं साइमं, अण्णत्थ० सह० पाणहार पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, पुरिमड्ढं, अवड्ढं वा पच्चक्खाइ अण्णत्थ० स

पच्छण्ण० दिसा० साहु० सव्व० देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ ६ ॥

१०—दत्ती-पच्चक्खाण।

पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, पुरिमड्ढं, अवड्ढं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे, चउविहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं साइमं, अण्णत्थ० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगट्ठाणं दत्तियं पच्चक्खामि, तिविहं चउविहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अण्णत्थ० सह० सागा० गुरु० सह० सव्व० विगइओ पच्चक्खाइ इत्यादि पूर्ववत्, देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ १० ॥

११—दिवसचरिम-चउव्विहाहार-पच्चक्खाण।

दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, [illegible] वत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ [illegible]

१२—दिवसचरिम-दुविहाहार-पच्चक्खाण।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, दुविहंपि आहारं असणं, खाइमं; अण्णत्थ० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ १२ ॥

१३—पाणाहार-पच्चक्खाण

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ १३ ॥

१४—भवचरिम-पच्चक्खाण

भवचरिमं पच्चक्खाइ, तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थ० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ १४ ॥

१५—देसावगासिय-पच्चक्खाण

अहंणं भंते ! तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पच्चक्खामि दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। दव्वओ णं देसावगासियं, खित्तओ णं इत्थ वा अण्णत्थ वा, कालओ णं जाव

धारणा, भावओ णं जाव गहेणं न गहेज्जामि, छलेणं न छलेज्जामि, अण्णेण केणवि रोगायंकेण वा एस मे परिणामो न परिवडइ ताव अभिग्गहो, अणत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ १५ ॥

५५—पच्चक्खाण-आगार-संख्या।

दो चेव नमुक्कारे, आगारा छच्च हुंति पोरिसिए। सत्तेव य पुरिमड्ढे, एगासणम्मि अट्ठेव ॥ १ ॥ सत्तेगट्ठाणस्स उ, अट्ठेव य अंबिलम्मि आगारा। पंचेव अब्भत्तट्ठे छप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अभिग्गहे, निव्वीए अट्ठनव य आगारा। अप्पावरणे पंचउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥

अथ सप्त स्मरणानि

५६—अजित-शान्ति-स्तवन।

अजिअं जिअ-सव्व-भयं, संतिं च पसंत-सव्व-गय-पावं। जयगुरु संति-गुण-करे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ (गाहा) ववगय-मंगुल-भावे, ते हं विउल तव-निम्मल-सहावे। निरुवम-मह-प्पभावे, थोसामि सुदिट्ठ-सब्भावे ॥ २ ॥ (गाहा) सव्व-दुक्ख-प्पसंतीणं, सव्व-पाव-प्पसंतिणं। सया अजिअ-संतीणं, नमो अजिअ-संतिणं ॥ ३ ॥ (सिलोगो) अजिअ-जिण! सुह-पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम! नाम-कित्तणं। तह य धिइ-मइ-प्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम! संति! कित्तणं ॥४॥ (मागहिआ) किरिया-विहि-संचिअ-कम्म-किलेस-विमुक्ख-यरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महा-मुणि-

सिद्धि-गयं। अजिअस्स य संति-महा मुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ-कारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ (आलिंगणयं) पुरिसा जइ दुक्ख-वारणं, जइ य विमग्गह सुक्ख-कारणं। अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥६॥ (मागहिआ) अरइ-रइ-तिमिर-विरहिअमुवरय-जर-मरणं,सुर-असुर-गरुल-भुयग-वइ-पयय-पणिवइयं। अजि-अमहमवि अ सुनय-नय-निउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि-दिविज-महिअं सययमु-वणमे ॥ ७ ॥ [संगययं] तं च जिणुत्तम-मुत्तम-नित्तम-सत्तधरं, अज्जव-मद्दव-खंति-विमुत्ति-समाहि-निहिं। संतिकरं पणमामि दमुत्तम-तित्थयरं, संति-मुणी मम संति-समाहि-वरं दिसउ ॥ ८ ॥ [सोवाणयं] सावत्थि पुव्व-पत्थिवं च वर-हत्थि-मत्थय-पसत्थ-वित्थिन्न-संथियं, थिर-सरिच्छ-वच्छं मयगल-लीलाय-

माण-वरगंध-हत्थि-पत्थाण-पत्थियं संयवारिहं। हत्थि-हत्थ-बाहुं धंत-कणग-रुअग-निरुवहय-पिंजरं पवर-लक्खणो-वचिय-सोम-चारु-रूवं, सुइ-सुह-मणाभिराम-परम-रमणिज्ज-वर-देवदुंदुहि-निनाय-महुरयर-सुह-गिरं ॥ ६ ॥ [वेड्ढओ] अजियं जिआरि-गणं, जिअ-सव्व-भयं भवोह-रिउं। पणमामि अहं पयओ पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ (रासालुद्धओ) कुरु-जणवय-हत्थिणाउर-नरीसरो पढमं तओ महा-चक्कवट्टि-भोए मह-प्पभाओ जो बावत्तरि-पुरवर-सहस्स-वर-नगर-निगम-जणवय-वई बत्तीसा-राय-वर-सहस्साणुयाय-मग्गो। चउदस-वर-रयण-नव-महा-निहि-चउ-सट्ठि-सहस्स-पवर-जुवईण सुंदर-वई चुलसीहय-गय-रह-सय-सहस्स-सामी छन्नवइ-गाम-कोडि-सामी-आसी जो भारहम्मि भयवं ॥ ११ ॥ (वेड्ढओ) तं संतिं संतिकरं संतिण्णं सव्व-भया। संतिं

थुणामि जिणं संतिं वेहेउ मे ॥ १२ ॥ [रासा-नंदियं] इक्खाग विदेह-नरीसर नर-वसहा मुणि-वसहा नव-सारय-ससि-सकलाणण वि-गय-तमा विहुअ-रया। अजिउत्तम तेअ-गुणेहिं महा-मुणि-अमिअ-बला विउल-कुला पणमामि ते भव-भय-मूरण जग-सरणा मम सरणं ॥१३॥ (चित्तलेहा) देव-दाणविंद-चंद-सूर-वंद हट्ठ-तुट्ठ-जिट्ठ-परम-लट्ठ-रूव धंत-रुप्प-पट्ट-सेय-सुद्ध-निद्ध-धवल-दंतपंति संति सत्ति-कित्ति-मुत्ति-जुत्ति-गुत्ति पवर, दित्त-तेअ-वंद धेअ सव्व-लोअ-भाविअ-प्पभाव णेअ पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ (नारायओ) विमल-ससि-कलाइरेअ-सोमं, वितिमिर-सूर-कराइरेअ-तेअं। तिअस-वइ गणाइरेअ-रूवं, धरणिधर-प्पवराइ-रेअ-सारं ॥ १५ ॥ (कुसुमलया) सत्ते य सया अजियं, सारीरे अ वले अजिअं। तव-संजमे य अजिअं, एस थुणामि जिणमजिअं ॥ १६ ॥

(भुअगपरिरंगिअं) ॥ सोम-गुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-ससी, तेअ-गुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-रवी । रूव-गुणेहिं पावइ न तं तिअस-गण-वई, सार-गुणेहिं पावइ न तं धरणि-धर-वई ॥ १७ ॥ (खिज्जिअयं) ॥ तित्थ-वर-पवत्तयं तम-रय-रहिअं, धीर-जण-थुअच्चिअं चुअकलि-कलुसं । संति-सुह-प्पवत्तयं ति-गरण-पयओ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥१८॥ (ललिअं) ॥ विणओणय-सिरि-रइअंजलि-रिसि-गण-संथुअं थिमिअं, विबुहाहिव-धणवइ-नरवइ-थुअ-महिअच्चियं बहुसो । अइरुग्गय-सरय-दिवायर-समहिअ-सप्पभं तवसा, गयणंगण-विअरण-समुइय-चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ (किसलयमाला) ॥ असुर-गरुल-परिवन्दिअं, किन्नरोरग-णमंसिअं । देव-कोडि-सय-संथुअं, समण-संघ-परिवंदिअं ॥ २० ॥ (सुमुहं) ॥ अभयं अणहं, अरयं अरुयं ।

अजिअं अजिअं, पयओ पणमे ॥ २१ ॥ (विज्जुविलसिअं) ॥ आगया वर-विमाण-दिव्व-कणग-रह-तुरय-पहकर-सएहिं हुलिअं। ससंभमोअरण-खुभिअ लुलिय-चल-कुण्डलंगय-तिरीड-सोहन्त-मउलि-माला ॥२२॥ (वेढओ) ॥ जं सुर-संघा सासुर-संघा वेर-विउत्ता भत्ति-सुजुत्ता, आयर-भूसिअ-संभम-पिंडिअ-सुट्ठु-सुविम्हिय-सव्व-बलोघा । उत्तम-कंचण-रयण-परूविअ-भासुर-भूसण-भासुरिअंगा, गाय-समोणय-भत्ति-वसागय-पंजलि-पेसिअ-सीस-पणामा ॥२३॥ (रयणमाला) ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं । पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइया स-भवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ (खित्तयं) ॥ तं महामुणि-महंपि पंजली, राग-दोष-भय-मोह-वज्जिअं । देव-दाणव-नरिंद-वंदिअं, संति-मुत्तम-महातवं नमे ॥ २५ ॥ (खित्तयं) ॥ अंब-

रंतर-वियारणिआहिं, ललिअ-हंस-वहू-गामिणिआहिं। पीण-सोणि-थण-सालिणिआहिं, सकल-कमल-दल-लोअणिआहिं ॥ २६ ॥ (दीवयं) ॥ पीण-निरंतर-थण-भर-विणमिअ-गायलयाहिं, मणि-कंचण-पसि-ढिल-मेहल-सोहिअ-सोणि-तडाहिं। वर-खिंखिणि-नेउर-सतिलय-वलय-विभूसणियाहिं, रइकर-चउर-मणोहर-सुन्दर-दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ ॥ [चित्तखरा] देव-सुन्दरीहिं पाय-वन्दिआहिं, वन्दिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डण-पगारएहिं केहिं केहि वि अवंग-तिलय-पत्त-लेह-नामएहिं चिल्लएहिं संगयं-गयाहिं, भत्ति-सन्निविट्ठ-वंदणागयाहिं हुन्ति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ (नारायओ) ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअ-मोहं। धुअ-सव्व-किलेसं, पयओ पणमामि ॥ २९ ॥ (नंदिअयं) ॥ थुअ-वंदिअस्सा रिसि-गण-देव-

गणेहिं, तो देव-वहूहिं पयश्रो पणमिश्रस्सा। जस्स जगुत्तम-सासणश्रस्सा, भत्ति-वसागय-पिंडिश्रआहिं। देव-वरच्छरसा-वहुश्राहिं, सुर-वर-रइ-गुण-पंडिश्रश्राहिं॥ ३०॥ (भासुरयं) वंस-सद्द-तंति-ताल-मेलिए, तिउक्खराभिराम-सद्द-मीसए कए श्र, सुइ-समाणणे श्र सुद्ध-सज्ज-गीश्र-पाय-जाल-घंटिश्राहिं, वलय-मेहला-कलाव-नेउराभिराम-सद्द-मीसए कए श्र देव-नट्टिश्राहिं, हाव-भाव-विब्भम-प्पगारएहिं, न-च्चिऊण श्रंग-हारएहिं वन्दिश्रा य जस्स ते सुविक्कमा कमा, तयं तिलोय-सव्व-सत्त-सन्ति-कारयं, पसंत-सव्व-पाव-दोसमेस हं नमामि संतिमुत्तमं जिणं॥ ३१॥ (नारायश्रो)॥ छत्त-चामर-पडाग-जूश्र-जव-मंडिश्रा, झय-वर-मगर-तुरग-सिरिवच्छ-सुलंछणा। दीवसमुद्द मंदर-दिसागय-सोहिश्रा, सत्थिय-वसह-सीह-रह-चक्क-वरंकिया॥३२॥ (ललिश्रयं) सहाव-

लट्ठा सम-प्पइट्ठा, अदोस-दुट्ठागुणेहिं जिट्ठा। पसाय-सिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥३३॥ (वाणवासिआ) ॥ ते तवेण धुअ-सव्व-पावया, सव्व-लोअ-हिअ-मूल-पावया। संथुआ अजिय-सन्ति-पायया, हुंतु मे सिव-सुहाण दायया ॥ ३४ ॥ (अपरान्तिका) ॥ एवं-तव-बल-विउलं, थुअं मए अजिअ-संति-जिण-जुअलं। ववगय-कम्म-रय-मलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥ (गाहा) ॥ तं बहु-गुण-प्पसायं,मुक्ख-सुहेण परमेण अविसायं। नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ पसायं ॥३६॥ (गाहा) ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं। परिसाविअ सुह-नंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ (गाहा) ॥ पक्खिअ चाउम्मासे, संवच्छरिए अ अवस्स-भणिअव्वो। सोअव्वो सव्वेहिं उवसग्ग-निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो

अ निसुणइ, उभओ-कालंपि अजिय-सन्ति-थयं। न हु हुन्ति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासन्ति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम-पयं, अहवा कित्तिं सुविस्थडं भुवणे। ता तेलुकुद्धरणे, जिण-वयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥

इति श्रीवृहदजितशान्तिस्तवनं प्रथमं स्मरणम्।१।

॥ अथ द्वितीयं लघु-अजितशान्तिस्मरणम् ॥

उल्लासि-क्कम-नक्ख-निग्गय-पहा-दण्ड-च्छलेणंगिणं, वंदारूण दिसंतइव्व पयडं निव्वाण-मग्गावलिं। कुन्दिन्दुज्जल-दन्त-कन्ति-मिसओ नीहन्त-नाणंकुरु क्केरे दावि दुइज्जसोलस-जिणे थोसामि खेमङ्करे ॥१॥ चरम-जलहि-नीरं जो मि णिज्जअलीहिं, खय-समय-समीरं जो जिणिज्जा गईए। सयल-नहयलं वा लंघए जो पएहिं, अजियमहव सन्तिं सो समत्थो थुणेउं ॥२॥ तहवि हु वहु-माणूल्लास-भत्ति-ब्भरेण, गुण-कणमिव कित्तेहामि चिन्तामणिं व्व।

अलमहव अचिन्ताणन्त-सामत्थओ सिं फलिहइ लहु सव्वं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥३॥ सयलजय-हिआणं नाम-मित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुट्ठानिट्ठ-दोघट्ट-थट्टं। नमिर-सुर-किरीडुग्घिट्ठ-पायारविन्दे, सययमजिअ-सन्ती ते जिणन्दे-भिनन्दे ॥४॥ पसरइ वर-कित्ती वड्ढए देह-दित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती। फुरइ परम-तित्ती होइ संसार-छित्ती, जिण-जुअ-पय-भत्ती हीअ-चिंतोरु-सत्ती ॥५॥ ललिअ-पय-पयारं भूरि-दिव्वंग-हारं, फुड-घण-रस-भावोदार-सिंगार-सारं। अणिमिस-रमणिज्जं डंसण-च्छेअ-भीया, इव पुण मणिबंधाकास-नट्टोवयारं ॥६॥ थुणह अजिअ-संती ते कया-सेस-संती, कणय-रय-पसंगा छज्जए जाणि मुत्ती। सरभस-परिरंभारंभि-निव्वाण-लच्छी, घण-थण-घुसिणिक्कुप्पंक-पिंगीकयव्व ॥७॥ बहुविह-नय-भंगं वत्थु णिच्चं अणिच्चं, सदस-

दणभिलप्पालप्पमेगं अणेगं । इय कुनय-विरुद्धं सुप्पसिद्धं च जेसिं, वयणमवयणिज्जं ते जिणे संभरामि ॥८॥ पसरइ तिय-लोए ताव मोहंधयारं, भमइ जयमसण्णं ताव मिच्छत्त-छण्णं । फुरइ फुड फलंताणंत-णाणंसु-पूरो, पयडमजिअ-संति-ज्झाण-सूरो न जाव ॥९॥ अरि-करि-हरि-तिण्हुण्हं'बु-चोराहि-वाही, समर-डमर-मारी रुद्द-खुद्दोवसग्गा । पलयमजिअ-संती-कित्तणे झत्ति जंती, निविडतर-तमोहा भक्खरालुंखि अव्व ॥१०॥ निचिअ दुरिअ दारु दित्त झाणग्गि-जाला-परिगयमिव गोरं, चिंतिअ' जाण रूवं । कणय-निहस रेहा-कंति-चोर' करिज्जा, चिर-थिरमिहलच्छि' गाढ-संथंभि-अव्व ॥११॥ अ-डवि-निवडियाणं पत्थिवुत्तासिआणं, जलहि-लहरि-हीरंताण गुत्ति-ट्ठियाणं। जलिअ-जलण जाला- लिंगिआणं च झाणं, जणयइ लहु संतिं

। ॥१२॥ हरि-करि

पक्क-पाइक्क-पुन्नं, सयल-पुहवि-रज्जं छड्डिअं आण-सज्जं। तणमिव पडिलग्गं जे जिणा मुत्तिमग्गं, चरणमणुपवन्ना हुंतु ते मे पसन्ना ॥ १३ ॥ छण-ससि-वयणाहिं फुल्ल-नित्तुप्पलाहिं, थण-भर-नमिरीहिं मुट्ठि-गिज्झोदरीहिं। ललिअ-भुअ-लयाहिं पीण-सोणि-त्थणाहिं, सम-सुर-रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिसकिडिभ-कुट्ठ-गंठि-कासाइसारा, खय-जर-वण-लूआ-सास-सोसोदराणि। नह-मुह-दसणच्छी-कुच्छि-कन्नाइ-रोगे, मह-जिण-जुअ-पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इअ गुरु-दुह-तासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर-दुग-थुत्तं वच्छरे वा पवित्तं। पढह सुणह सिज्झाएह झाएह चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेण घाएह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाऽजिअसत्तु पुत्त ! सिरि-अजिअ-जिणे-सर !, तह अइरा-विस-सेण-तणय ! पंचम-चक्कीसर !। तित्थंकर ! सोलसम ! संति !

जिण-वल्लह संथुअ !, कुरु मंगलमवहरसु दुरि-
यम-खिलंपि थुणंतह ॥ १७ ॥

इति श्रीलघु-अजितशान्तिस्तवनं द्वितीयं स्मरणम्॥ २ ॥

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

नमिऊण पणय-सुर-गण,-चूडामणि-किरण-रंजिअं मुणिणो । चलण-जुअलं महाभय,-पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सडिय-कर-चरण नह-मुह,-निबुड्ड-नासा विवन्नलायण्णा । कुट्ठ-महा-रोगानल,-फुलिंग-निद्दड्ढ-सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा-राहण,-सलिलंजलि-सेअ-वुड्ढिअ-च्छाया । वण-दव-दड्ढा गिरि-पाय-यव्वपत्ता पुणो लच्छिं ॥ ३ ॥ दुव्वाय-खुभिय-जलनिहि,-उब्भड-कल्लोल-भीसणारावे । संभंत-भय-विसंठुल,-निज्जामय-मुक्क-वावारे ॥४॥ अवि-दलियजाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं

कूलं। पास-जिण-चलणजुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥ खर-पवणुद्धुय-वणदव,-जालावलि-मिलिय-सयल-दुम-गहणे। डज्झंत-मुद्धमिय-वहु,-भीसण-रव-भीसणम्मि वणे॥६॥ जग-गुरुणो कम-जुअलं, निव्वाविय-सयल-तिहु-अणाभोअं। जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत-भोग-भीसण,—फुरिआरुण-नयण-तरल-जीहालं। उग्ग-भुअंगं नव-जलय,-सच्छहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंति कीडसरिसं, दूर-परिच्छूढ-विसम-विस-वेगा। तुह नामक्खर-फुड-सिद्ध,-मंत गुरुआ नरा लोए ॥६ ॥ अडवीसु भिल्ल-तक्कर,-पुलिंद-सद्दूल-सद्द भीमासु। भय-विहुर-वुन्न-कायर,-उल्लूरिअ-पहिअ-सत्थासु ॥१०॥ अविलुत्तविहव-सारा, तुह नाह ! पणाम-मत्त-वावारा। ववगय-विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय-इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनल-नयणं, दूर विआरिय-मुहं महा-

कायं । नह-कुलिस-घायविअलिअ,-गइंद-कुंभ-त्थलाभोअं ॥१२॥ पणय-ससंभमपत्थिव;-नह-मणि-माणिक्क-पडिमस्स । तुह-वयणपंहर-णधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससि धवलदंत-मुसलं, दीह-करुल्लाल-वड्ढिउच्छाहं । महु-पिंगनयण-जुअलं, ससलिल-नव-जलहरा-रावं ॥ १४ ॥ भीमं महा-गइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति । जे तुम्ह चलणजुअलं मुणि-वइ ! तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिक्खखग्गा,-भिग्घाय-पविद्ध-उद्धुय-कबंधे । कुंत-विणिभिन्न करि-कलह-मुक्क सिक्कार-पउरम्मि ॥ १६ ॥ निज्जिय-दप्पुद्धररिउ,—नरिंद-निवहा भडा जसं धवलं । पावंति पाव-पसमिण ! पास-जिण ! तुह प्पभावेण ॥१७॥ रोग-जलजलण-विसहर-चोरारि-मइंद-गय-रण-भयाइं । पास-जिणनाम-संकित्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महाभयहरं, पास-जि

दस्स संथवमुआरं । भविय-जणाणं दयरं, कल्लाण-परंपर-निहाणं ॥१६॥ राय-भय-जक्ख-रक्खस,—कुसुमिण-दुस्सउण-रिक्ख-पीडासु । संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइ-णो य माणतुंगस्स । पासो पवां पसमेउ, सयल-भुवणच्चिअ-चलणो ॥ २१ ॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं तृतीयं स्मरणम् ॥

अथ गणधरदेव-स्तुतिरूपं चतुर्थं स्मरणम् ॥

तं जयउ जए तित्थं, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण । सम्मं पवत्तियं भव्व-सत्त-संताण-सुह-जणयं ॥१॥ नासियसयल-किलेसा, निहय-कुलेसा पसत्थ-सुह-लेसा । सिरिवद्धमाण-तित्थस्स मङ्गलं दिन्तु ते अरिहा ॥२॥ निद्दड्ढ-कम्म-बीआ, बीआ परमेट्ठिणो गुण-समिद्धा । सिद्धा ति-जयपसिद्धा, हणन्तु दुत्थाणि तित्थ-

स्स ॥ ३ ॥ आयारमायरंता पंच-पयारं सया पयासन्ता । आयरिआ तह तित्थं निहयकुतित्थं पयासन्तु ॥ ४ ॥ सम्म-सुअ-वायगा वायगा य सिअवाय-वायगा वाए । पवयण-पडणीय-कए वणिंतु सव्वस्स सङ्घस्स ॥ ५ ॥ निव्वाण-साहणुज्जुय-साहूणं जणिय-सव्वसाहज्जा । तित्थ-प्पभावगा ते हवंतु परमेट्ठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयं णाणं निव्वाण-फलं च चरणमवि हवइ । तित्थस्स दंसणं तं मंगुलमवणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निच्छउमो सुअधम्मो, समग्ग-भव्वंगि-वग्ग-कय-सम्मो । गुण-सुट्ठिअस्स संघस्स मंगलं सम्ममिह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्तधम्मो, संपाविअ-भव्व-सत्त-सिव-सम्मो । नीसेस-किलेसहरो, हवउ सया सयल-संघस्स ॥ ९॥ गुण-गण-गुरुणो गुरुणो, सिव-सुह-मइणो कुणंतु तित्थस्स । सिरि-वद्धमाण-पहुपयडिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥१०॥ जिय-पडिवक्खा

जक्खा, गोमुह-मायङ्ग-गयमुह-पमुक्खा। सिरि-वम्भसन्तिसहिआ, कय-नय-रक्खा सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा पडिहयडिम्बा; सिद्धा सिद्धाइया पवयणस्स। चक्केसरि-वइरुट्टा, सन्ति-सुरा दिसउ सुक्खाणि ॥१२। सोलस विज्जा-देवीउ, दिन्तु सङ्घस्स मङ्गलं विउलं। अच्छुत्ता-सहिआओ, विस्सुअ-सुयदेवयाइ समं ॥१३॥ जिण-सासण-कय-रक्खा जक्खा चउवीस-सासण-सुराबि। सुहभावा संतावं, तित्थस्स सया पणा-सन्तु ॥ १४ ॥ जिण-पवयणम्मि निरया, विरया कुपहाउ सव्वहा सव्वे। वेयावच्चकरावि अ तित्थस्स हवन्तु सन्तिकरा ॥१५॥ जिण-समय-सिद्ध-सुमग्ग-वहिय-भव्वाण जणिय-साहज्जो। गीय-रई गोअजसो, सपरिवारो सिवं दिसउ ॥१६॥ गिह-गुत्त-खित्त-जल-थल-वण-पव्वयवासी देव-देवीओ। जिण-सासण-ट्ठिआणं, दुहाणि सव्वाणि निहणंतु ॥१७॥ दस-दिसिपाला स-

निखत्तपालया नव गहा स-नक्खत्ता । जोइणि-
राहु-गह-काल-पासकुलिअद्ध-पहरेहिं ॥ १८ ॥
सहकाल-कंटएहिं सविट्ठि-वच्छेहिं कालवेलाहिं ।
सव्वे सव्वत्थ सुहं, दिसन्तु सव्वस्स सङ्घस्स
॥१६॥ भवणवई वाणमन्तर,-जोइस-वेमा-णिआ
य जे देवा । धरणिन्द-सक्क-सहिआ, दलन्तु
दुरियाइं तित्थस्स ॥ २० ॥ चक्कं जस्स जलंतं,
गच्छइ पुरओ पणा-सिय-तमोहं । तंतित्थस्स
भगवओ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो
जयउ जिणो वीरो, जस्सज्ज वि सासणं जए
जयइ । सिद्धि-पह-सासणं कुपह-नासणं सव्व-
भय-महणं ॥ २२ ॥ सिरि-उसभसेण-पमुहा,
हय-भय-निवहा दिसन्तु तित्थस्स । सव्व-जि-
णाण गणहारिणोऽणहं वञ्छियं सव्वं ॥ २३ ॥
सिरि-वद्धमाण-तित्थाहिवेण तित्थं समप्पियं
जस्स । सम्मं सुहम्म-सामी, दिसउ सुहंस यल-
संघस्स ॥ २४ ॥ पयईए भद्दिया जे, भद्दाणि

दिसन्तुसयल-संघस्स। इयर-सुरा वि हु सम्मं जिण-गणहर-कहिय-कारिस्स ॥ २५ ॥ इय जो पढइ तिसंझं, दुस्सज्झं तस्स नत्थि किंपि जए। जिणदत्ताणाए ठिओ, सनिट्ठिअट्ठो सुही होई ॥ २६ ॥

इति श्रीगणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणम्।

॥ अथ गुरुपारतन्त्र्यनामकं पञ्चमं स्मरणम् ॥

मय-रहियं गुण-गण-रयण, सायरं सायरं पणमिऊण। सुगुरु-जण-पारतंतं, उवहिव्व थुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय-मोह-जोहा, निहय-विरोहा पणट्ठ-संदेहा। पणयंगि-वग्ग-दाविअ-सुह-संदोहा सगुण-गेहा ॥ २ ॥ पत्त-सुजइत्त-सोहा,समत्त-पर-तित्थ जणिय-संखोहा। पडिभग्ग-मोह-जोहा, दंसिय-सुमहत्थ-सत्थोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ-सत्थ-वाहा, हय-दुह-दाहा सिवंब-तरु-साहा। संपाविअ-सुह-लाहा, खीरो-

दहिणुव्व अग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुण-जण-जणिय-चुजा सज्जो निरवज्ज-गहिय-पवज्जा । सिव-सुह-साहण-सज्जा, भव-गिरि-गुरु चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्ज-सुहम्म-पमुहा, गुण-गण-निवहा सुरिंद-विहिअ-महा । ताण तिसंझं नामं, नामं न पणासइ जियाणं ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअ-जिण-देवो, देवायरिओ दुरंत-भवहारी । सिरिनेमि-चन्द-सूरी उज्जोअण-सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥ सिरि-वद्धमाण-सूरी, पयडीकय-सूरि-मंत-माह-प्पो । पडिहय-कसाय-पसरो, सरय-ससंकुव्व सुह-जणओ ॥ ८ ॥ सुह-सील-चोर-चप्परण-पच्चलो निच्चलो जिण-मयम्मि । जुगपवर-सुद्ध-सिद्धन्त-जाण-ओ पणय- सुगुणजणो ॥ ९ ॥ पुरओ दुल्लह-महिव,—ल्लहस्स अणहिल्लवाडए पयडं । मुक्कावि आ रिऊणं, सीहेणव दव्वलिंगि गया ॥ १० ॥ दसमच्छेरय-निसि-विप्फुरन्त-सच्छन्द-सूरि-मय-तिमिरं । सूरेणव सूरि-

जिणे,-सरेण इय-महिअ-दोसेणं ॥ ११ ॥ सुक-
इत्त-पत्त-कित्ती, पयडिअ-गुत्ती पसन्त-सुह-मुत्ती
पहय-परवाइ-दित्ती, जिणचंद-जईसरो मंती
॥ १२ ॥ पयडिअ-नवंग-सुत्तत्थ,—रयणकोसो
पणासिअ-पओसो। भव-भीय-भविअ-जण-
मण,-कय-संतोषो विगय-दोसो ॥ १३ ॥ जुग-
पवरागम-सार;—प्परूवणा-करण-बन्धुरो धणि-
अं। सिरि-अभयदेव-सूरी, मुणि-पवरो परम-
पसम-धरो ॥ १४ ॥ कय-सावय-संतोसो, हरिव्व
सारंग-भग्ग-संदेहो। गय-समय-दप्प-दलणो,
आसाइअ-पवर-कव्व-रसो ॥ १५ ॥ भीम-भव-
काणणम्मि अ, दंसिअ गुरु वयण-रयण-संदो-
हो। नीसेस-सत्त-गुरुओ, सूरी जिणवल्लहो
जयइ ॥ १६ ॥ उवरिट्ठिअ-सच्चरणो, चउरणु-
ओग-प्पहाण-सच्चरणो। असम-मयराय महणो,
उड्ढ-मुहो सहइ जस्स करो ॥ १७ ॥ दंसिअ-
निम्मल-निच्चल,-दन्त-गणोगणिअ-सावओत्थ-

भञ्जो । गुरु-गिरि-गरुश्रो सरदुव्व, सूरी जिण-वल्लहो होत्था ॥ १८ ॥ जुग-पवरागम-पीउस-पाण पीणिय-मणा कया भव्वा । जेण जिणव-ल्लहेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १६ ॥ विप्फु-रिय-पवर-पवयण,-सिरोमणी वूढ-दुव्वह-खमो य । जो सेसाणं सेसुव्व, सहइ सत्ताण ताण-करो ॥ २० ॥ सच्चरित्राण-महीणं, सुगुरूणं पारतन्तमुव्वहइ । जयइ जिणदत्त-सूरी, सिरि-निलश्रो पणय-मुणि-तिलश्रो ॥ २१ ॥

इति श्रीगुरुपारतन्त्र्यनामकं पञ्चमं स्मरणम् ।

॥ अथ षष्ठं स्मरणम् ॥

सिग्घमवहरउ विग्घं,जिण-वीराणाणुगामि-संघस्स । सिरि-पास-जिणो थंभण-पुर-ट्ठिओ निट्ठिआनिट्ठो ॥ १ ॥ गोयम-सुहम्म-पमुहा, गणवइणो विहिअ-भव्व-सत्त-सुहा । सिरि-वद्ध-माण-जिण-तित्थ-सुत्थयं ते कुणन्तु सया

मक्काइणो न्रा जे, जिण-वेयावच्च-कारिणो संति। अवह्-रिय-विग्घ-संघा, हवन्तु ते संघ-सन्तिकरा ॥ ३ ॥ सिरि-थंभणय-ट्टिय-पास-सामि-पय-पउम-पणय-पाणीण। निद्दलिय-दुरिय-विंदो, धरणिंदो हरउ दुरियाइं ॥ ४ ॥ गोमुह-पमुक्ख जक्खा, पडिहय-पडिवक्ख-पक्ख-लक्खा ते। कय-सगुण-संघरक्खा, हवन्तु सं-पत्त-सिव-सुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्का-पमुहा, जिण-सासण-देवया वि जिण पणया। सिद्धा-इया-समेया, हवन्तु संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काएसा सच्चउर-पुरट्ठिओ वद्धमाण-जिण-भत्तो। सिरि-बम्भ-सन्ति-जक्खो, रक्खउ संघं पयत्तेण ॥७॥ खित्त-गिह-गुत्त-सन्ताण-देस-देवा-हिदेवया ताओ। निव्वुइ-पुर-पहिआणं, भव्वाण कुणंतु सुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि-चक्कधरा, वि-हिपहरिउच्छिण्ण-कन्धरा धणियं। सिव-सरण-लग्ग-संघस्स, सव्वहा हरउ विग्घाणि ॥ ८ ॥

तित्थवइ-वद्धमाणो, जिणेसरो सङ्घओ सुसंघेण। जिणचन्दोऽभयदेवो, रक्खउ जिणवल्लहपहू मं ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो दिणेसरो व्व हय-तिमिरो। जिणचंदा-ऽभयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा जे अ ॥ ११ ॥ गुरु-जिण-वल्लह-पाए,-ऽभयदेव-पहुत्त-दायगे वंदे। जिण-चन्द-जिणेसर-वद्धमाण-तित्थस्स वुड्ढि-कए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नन्ति कुणन्ति जे य कारंति। मणसा वयसा वउसा, जयंतु साहम्मिआ ते वि ॥१३॥ जिणदत्तगुणे नाणा-इणो सया जे धरन्ति धारन्ति। दंसिअ-सिअ-वाय-पए, नमामि साहम्मिआ ते वि ॥ १४ ॥

इति षष्ठं स्मरणम् ॥६॥

॥ अथ उवसग्गहरनामकं सप्तमं स्मरणम् ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं। विसहर विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥१॥ विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ

जो सया मणुओ। तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ
जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो,तुज्झ
पणामो वि बहु-फलो होइ। नर-तिरिएसु वि
जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह
सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कप्प-पायवब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥
इअ संथुओ महायस!, भत्ति-ब्भर-निब्भरेण
हिअएण। ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे, भवे
पास! जिण-चंद!॥ ५ ॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं सप्तमं स्मरणम् ॥७॥

समाप्तानि सप्त स्मरणानि।

अथ श्रीभक्तामर-स्तोत्रम्।

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा,--मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम्। सम्यक् प्रणम्य जिन! पाद-युगं युगादा,—वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम्॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकल

वाङ्मय-तत्त्व-बोधा,-दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुर-लोक-नाथैः । स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥ युग्मम् ॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पादपीठ ! स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम् । बालं विहाय जल-संस्थितमिन्दु-बिम्ब,—मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ? ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र ! शशाङ्क-कान्तान्, कस्ते क्षमः सुरगुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या ? । कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं, को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ? ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश !, कर्तुं स्तवं विगत-शक्तिरपि प्रवृत्तः । प्रीत्यात्म-वीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति किं निज-शिशोः परिपालनार्थम् ? ॥५॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास-धाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् । यत् कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारु-चूत-कलिका-निक-

रैक-हेतु ॥६॥ त्वत्संस्तवेन भव-संततिः संनिबद्धं, पापं चणात् चयमुपैति शरीरभाजाम् । आक्रान्त-लोकमलि-नीलमशेषमाशु, सूर्यांशु-भिन्नमिव शार्वरमन्ध-कारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद,—मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात् । चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु, मुक्ताफल-द्युतिमुपैति ननूद-बिन्दु ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवनमस्त-दोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति । दूरे सहस्र-किरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवन-भूषण ! भूतनाथ !, भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः । तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्म-समं करोति ? ॥१०॥ दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष-विलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः। पीत्वा पयः शशि-कर-द्युति दुग्धसिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ? ॥११॥ यैः

शान्तराग-रुचिभिःपरमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रि-
भुवनैक-ललाम-भूत!। तावन्त एव खलु तेऽप्य-
णवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं न हि रूप-मस्ति
॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र- हारि,
निःशेष-निर्ज्जित-जगत्त्रितयोपमानम्। बिम्बं
कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य, यद्व वासरे भवति
पाण्डु पलाश-कल्पम् ॥ १३ ॥ सम्पूर्ण-मण्डल-
शशाङ्क-कलाकलाप,—शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव
लङ्घयन्ति। ये संश्रितास्त्रि-जगदीश्वर-नाथमेकं,
कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम्?॥ १४ ॥
चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभिर्नीतं मना-
गपि मनो न विकारमार्गम्। कल्पान्त-काल-
मरुता चलिताचलेन, किं मन्दराद्रि-शिखरं च-
लितं कदाचित्?॥१५॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्ज्जित-
तैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽ-
परस्त्वमसि नाथ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं

कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोपि सहसा युगपज्जगन्ति। नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महा-प्रभावः, सूर्यातिशायि-महिमाऽसि मुनीन्द्र लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारं, गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम् । विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प-कान्ति, विद्योतयज्जगदपूर्व-शशाङ्क-बिम्बम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीपु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दु-दलितेपुतमस्सुनाथ ? । निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जल-भार-नम्रैः ?॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिपु नायकेपु । तेजः स्फुरन्मणिपु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा, दृष्टेपु येपु हृदयं त्वयि तोपमेति। किं वीचितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता। सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिं, प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशु-जालम् ॥२२॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस,-मादित्य-वर्णममलं तमसः परस्तात्। त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः ॥२३॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माण-मीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम्। योगीश्वरं विदित-योगमनेकमेकं, ज्ञान-स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय-शंकरत्वात्। धाताऽसि धीर! शिव-मार्ग-विधेर्विधानाद्, व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नम-स्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ!, तुभ्यं नमः क्षितितला-मल-भूषणाय। तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय ॥२६॥

शेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् । आक्रामति क्रम-युगेन निरस्त-शङ्क,-स्त्वन्नाम-नाग-दमनी हृदि यस्य पुंसः ॥३७॥ वल्गत्तु-रङ्ग-गज-गर्जित-भीम-नाद,-माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् । उद्यद्दिवाकर-मयूख-शिखा-पविद्धं, त्वत्कीर्त्तनात् तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह,-वेगावतार-तरणातुरयोध-भीमे । युद्धे जयं विजित-दुर्ज्जय-जेय-पक्षा,-स्त्वत्पादपङ्कज-वनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥ अम्भोनिधौ क्षुभितभीषण-नक्र-चक्र,—पाठीन-पीठ-भयदोल्बण-वाडवाग्नौ । रङ्गत्तरङ्ग-शिखर-स्थित-यानपात्रा,-स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४० ॥ उद्भूत -भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युत-जीविताशाः । त्वत्पादपङ्कज-रजोऽमृत-दिग्ध-देहा, मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-

तुल्य-रूपाः ॥ ४१ ॥ आपाद-कण्ठमुरु-शृङ्खल-वेष्टिताङ्गा, गाढं बृहन्निगड-कोटि-निघृष्टजङ्घाः। त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्त-द्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि,—संग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम्। तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्। धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं, तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

॥ इति श्रीभक्तामरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशान्तिः ॥

भो भो भव्याः! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हताभक्ति-भाजः। तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादि-प्रभावा,-दारोग्य-श्री-धृति-मतिकरी क्लेश-वि-

ध्वंस-हेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावत-विदेह-सम्भवानां, समस्त-तीर्थकृतां जन्मन्यासन-प्रकम्पानन्तर-मवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषा-घण्टा-चालना-नन्तरं सकल-सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृङ्गे विहित-जन्माभिषेकः शान्ति-मुद्घोषयति, ततोऽहं कृता-नुकारमिति कृत्वा, 'महाजनो येन गतः स पन्थाः' इति भव्य-जनैः सह समागत्य, स्नात्र-पीठे स्नात्रं विधाय शान्तिमुद्घोषयामि। तत्पूजा-यात्रा-स्नात्रादि-महोत्सवानन्तरम्, इति कृत्वा कर्णं दत्त्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं २, प्रीयन्तां २, भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः, सर्वदर्शिनः। त्रैलोक्य-नाथाः, त्रैलोक्य-महिताः, त्रैलोक्य-पूज्याः, त्रैलोक्येश्वराः, त्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानि १, निर्वाणि २, सागर ३, महायश ४, विमल ५ सर्वानु-

ति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ६, सुतेजः १०, स्वामि ११ मुनिसुव्रत १२ सुमति १३ शिवगति, १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १६ जिनेश्वर २० शुद्धमति २१ शिवकर २२ स्यन्दन २३ संप्रति २४ एते अतीत-चतुर्विंशति-तीर्थंकराः ॥

ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, सम्भव ३, अभिनन्दन ४ सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चन्द्रप्रभ ८, सुविधि ६, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुन्थु १७ अर १८, मल्लि १६, मुनिसुव्रत २० नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २६, वर्द्धमान २४ एते वर्तमान-जिनाः ॥

ॐ श्रीपद्मनाभ १, शूरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७ पेढाल ८, पोट्टिल ८, शतकीर्ति १० सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४,

निर्मम १५, चित्रगुप्त १६ समाधि १७, संवर १८ यशोधर १६; विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य्य २३, भद्रंकर २४, एते भावि-तीर्थंकराः जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु। ॐ मुनयो मुनि-प्रवरा रिपु-विजय-दुर्भिक्ष-कान्तारेषु दुर्ग-मार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यम्॥ ॐ श्री नाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६; प्रतिष्ठ ७, महसेन ८, सुग्रीव ६, दृढ़रथ १०; विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुम्भ १६, सुमित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२; अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४, इति वर्त्तमानचतुर्विंशति-जिन-जनकाः॥

ॐ श्री मरुदेवी १, विजया, २ सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५; सुसीमा ६ पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ६, नन्दा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३ सुयशा १४, सुव्रता १५,

अचिरा १६, श्री ७, देवी १८, प्रभावती १९ पद्मा २०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४, इति वर्त्तमान-जिन, जनन्यः॥

ॐ श्रीगोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुम्बुरु ५, कुसुम ६, मातङ्ग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३ पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गन्धर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, भृकुटि २१ गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशान्ति २४, इति वर्त्तमान-जिन-यक्षाः॥

ॐ चक्रेश्वरी १ अजितबला २ दुरितारि ३ काली ४ महाकाली ५ श्यामा ६, शान्ता ७ भृकुटि ८ सुतारका ९ अशोका १० मानवी ११ चण्डा १२ विदिता १३ अङ्कुशा १४ कन्दर्पा १५ निर्वाणी १६ बला १७ धारिणी १८ धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गान्धारी २१, अम्बिका २२, पद्मावती २३ सिद्धायिका २४ इति वर्त्त

चतुर्विंशति-तीर्थंकर-शासनदेव्यः।

ॐ ह्रीँ श्रीँ धृति-कीर्त्ति-कान्ति-बुद्धि-लक्ष्मी-मेधा-विद्या-साधन-प्रवेश-निवेशनेषु सुगृहीत-नामानो जयन्ति ते जिनेन्द्राः। ॐ रोहिणी १ प्रज्ञप्ति २ वज्रशृङ्खला ३ वज्राङ्कुशा ४ चक्रेश्वरी ५ पुरुषदत्ता ६ काली ७ महाकाली ८ गौरी ६ गान्धारी १० सर्वास्त्रमहाज्वाला ११ मानवी १२ वैरोट्या १३ अच्छुप्ता १४ मानसी १५ महामानसी १६ एताः षोडश विद्या-देव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा॥ ॐ आचार्योपाध्याय-प्रभृति-चातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमण-सङ्घस्य शान्तिर्भवतु। ॐ ग्रहाश्चन्द्र-सूर्याऽङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चर-राहु-केतु-सहिताः सलोकपालाः सोम-यम-वरुण-कुबेर-वासवादित्य-स्कन्द-विनायका ये चान्येऽपि ग्राम-नगर-क्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां २ अक्षीण-कोश-कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा॥ ॐ पुत्रमित्र-भ्रातृ-कलत्र-सुहृत

संबन्धि-बन्धु-वर्ग सहिता नित्यं चामोद-प्रमोद-कारिणो भवन्तु। अस्मिंश्च भूमण्डले आयतन-निवासिनां साधु-साध्वी-श्रावक श्राविकाणां रोगोपसर्ग-व्याधि दुःख-दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-मङ्गल्योत्सवा भवन्तु। सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि शाम्यन्तु, शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने । त्रैलोक्य-स्यामराधीश,-मुकुटाभ्यर्चितांह्घ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्ट-रिष्ट-दुष्ट-ग्रह-गति-दुःस्वप्न-दुर्निमित्तादि । संपादित-हित-संपद्, नाम-ग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघ-पौर-जन-पद,-राजाधिप-राज-संनिवे-शानाम् । गोष्ठिक-पुरमुख्याणां, व्याह-रणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य

शान्तिर्भवतु, श्रीपौर-लोकस्य शान्तिर्भवतु, श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु, श्रीराज-संनिवेशानां शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु। ॐ स्वाहा २ ॐ ह्रीं श्रीँ पार्श्वनाथाय स्वाहा। एषा शान्तिः प्रतिष्ठा-यात्रा स्नात्रावसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा कुङ्कुम-चन्दन-कर्पूरागुरु-धूप-वास-कुसुमाञ्जलि-समेतः स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः शुचिः शुचिवपुः पुष्प-वस्त्र-चन्दनाभरणालंकृतः, चन्दनतिलकं विधाय कण्ठे कृत्वा शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्ति-पानीयं मस्तके दातव्यमिति। नृत्यन्ति नृत्यं मणि-पुष्प-वर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि। स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥१॥ अहं तित्थयर-माया, सिवा-देवी तुम्ह-नयर-निवासिनी अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असुहोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥ २ ॥

शिवमस्तु सर्व-जगतः, पर हित- निरता भवन्तु

भूत-गणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवतु लोकः ॥२॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥

इति वृद्धशान्तिः समाप्ता ॥

अथ जिनपञ्जर-स्तोत्रम् ।

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं आचार्येभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं श्रीगौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥१॥ एष पञ्च-नमस्कारः, सर्व-पाप-क्षयंकरः । मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ जये विजये, अर्हं परमात्मने नमः । कमलप्रभ-सूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं

यः पठेदिदम्। मनोऽभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥ ४ ॥ भूशय्याब्रह्मचर्य्येण, क्रोध-लोभ विवर्जितः। देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥ ५ ॥ अर्हन्तं स्थापयेद् मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके। आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च। सूर्य-चन्द्र-निरोधेन, सुधीः सर्वार्थ-सिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदन-द्वेषी, वाम-पार्श्वे स्थितो जिनः। अङ्ग-संधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवङ्करः ॥ ८ ॥ पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षे,-दाग्नेयीं विजितेन्द्रियः। दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतीं च त्रिकालवित् ।६। पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः। उत्तरां तीर्थकृत् सर्वामीशानीं च निरञ्जनः ॥१०॥ पातालं भगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः। रोहिणी प्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे-दजितोऽपि विलोचने।

संभवः कर्ण-युगलं, नासिकां चाभिनन्दनः ॥१२॥ ओष्ठौ श्रीसुमती रक्षेद्, दन्तान् पद्मप्रभो विभुः । जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्रप्रभो विभुः ॥ १३ ॥ कण्ठं श्रीसुविधी रक्षेद्, हृदयं च श्रीशीतलः । श्रेयांसो बाहु-युगलं, [illegible] कर-द्वयम् ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षेद्, [illegible]न्तोसौ स्तनावपि । सुधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्री-शान्तिर्नाभि-मण्डलम् ॥ १५ ॥ श्री[illegible] रक्ष,—दरो रोम-कटी तटम् । मल्लि[illegible] वंशं, जङ्घे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ [illegible] नमी रक्षेत्, श्रीनेमिश्चरणद्वयम् । श्रीपार्श्व[illegible] सर्वाङ्गं, वर्धमानश्चिदात्मक[illegible] ॥ १७ ॥ पृथ्वी-जल-तेजस्क,—वाय्वाकाश[illegible] जगत् । [illegible] शेष-पापेभ्यो, वीतरागो [illegible]जनः ॥ [illegible] राजद्वारे श्मशाने वा, [illegible] व्याघ्र-चौराग्नि-सर्पादि-[illegible] अकाल-मरण-प्राप्ते, दारिद्र[illegible]

अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोग-पीड़िते ॥२०॥
डाकिनी-शाकिनी-ग्रस्ते, महा-ग्रह-गणार्दिते।
नद्युत्तारेऽध्व-वैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत्
॥२१॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपञ्जर-
म्। तस्य किञ्चिद्भयं नास्ति, लभते सुख सम्प-
दम् ॥ २२ ॥ जिनपञ्जरनामेदं, यः स्मरत्यनु-
वासरम्। कमलप्रभराजेन्द्र,—श्रियं स लभते
नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः
स्तोत्रमेतज्जिनपञ्जराख्यम्। आसादयेत्स क-
मलप्रभाख्य,—लक्ष्मीं मनो-वाञ्छित-पूरणाय
॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीय-वरेण्य-गच्छे, देवप्रभा-
चार्य-पदाब्जहंसः। वादीन्द्र-चूडामणिरेष जैनो,
जीयाद् गुरुः श्रीकमल-प्रभाख्यः ॥ २५ ॥

॥ इति श्रीजिनपञ्जर-स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

अथ श्रीऋषिमण्डल-स्तोत्रम् ।

आद्यन्ताक्षर-संलक्ष्य,-मक्षरं व्याप्य यत् स्थितम् । अग्नि-ज्वाला-समं नाद-बिन्दु-रेखा-समन्वितम् ॥ १ ॥ अग्नि-ज्वाला-समाक्रान्तं, मनो-मल-विशोधकम् । देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलम् ॥ २ ॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः । सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्य ॐ सिद्धेभ्यो नमोनमः । ॐ नमः सर्वसूरिभ्य उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः सर्वसाधुभ्य ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनमः । ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्यश्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेतदर्हदाद्यष्टकं शुभम् । स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग्बीजसमन्वितम् ॥ ६ ॥ आद्यं पदं शिखां रक्षेत्, परं रक्षेत्तु मस्तकम् । तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिकाम् ॥७॥ पञ्चमं तु मुखं रक्षेत्, षष्ठं रक्षेच्च घण्टिकाम् ।

नाभ्यन्तं सप्तमं रचेद्, रचेत् पादान्तमष्टमम् ॥ ८ ॥ पूर्व-प्रणवतः सान्तः, सरेफो द्व्यब्धिपञ्चपान्। सप्ताष्टदशसूर्याङ्कान्, श्रितो बिन्दुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्याः, पञ्चातो ज्ञानदर्शन—चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीँ सान्तसमलंकृतः ॥१०॥ ॐ ह्राँ। ह्रीँ। ह्रुँ। ह्रूँ। ह्रेँ। ह्रैँ। ह्रौँ। ह्रः। असिआउसा-ज्ञान-दर्शनचारित्रेभ्यो नमः। जम्बूवृक्षधरो द्वीपः, क्षारोदधि समावृतः। अर्हदाद्यष्टकैरष्ट-काष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥११॥ तन्मध्यसंगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः। उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारामण्डलमण्डितः ॥१२॥ तस्योपरि सकारान्तं, बीजमध्यास्य सर्वगम्। नमामि बिम्बमार्हन्त्यं, ललाटस्थं निरञ्जनम् ॥१३॥ अक्षयं निर्मलं शान्तं, बहुलं जाड्य-तोज्झितम्। निरीहं निरहङ्कारं, सारं सारतरं घनम् ॥१४॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्त्विकं राजसं मतम्। तामसं चिरसंबुद्धं, तै-

जसं शर्वरीसमम् ॥१५॥ साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परम्। परापरं परातीतं, परंपरपरापरम् ॥१६॥ एक वर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तुर्यवर्णकम्। पञ्चवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं १७ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं भ्रान्तिवर्जितम्। निरञ्जनं निराकारं, निर्लेपं वीतसंश्रयम् ॥ १८ ॥ ईश्वरंब्रह्म-संबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरु। ज्योतीरूपं महादेवं, लोकालोक-प्रकाशकम् ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णान्तः, सरेफो बिन्दुमण्डितः। तुर्य-स्वर-समायुक्तो, बहुधा नाद-मालितः ॥२०॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, वृषभाद्या जिनोत्तमाः। वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥२१॥ नादश्चन्द्र-समाकारो, बिन्दुर्नील-समप्रभः। कलारुण-समासान्तः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥ २२ ॥ शिरः संलीन ईकारो, विनीलो वर्णतः स्मृतः। वर्णानुसार-संलीनं, तीर्थकृन्मण्डलंस्तुमः ॥ २३ ॥ चन्द्रप्रभ-पुष्पदन्तौ, नाद-

स्थिति-समाश्रितौ। विन्दुमध्यगतौ नेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रभ-वासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ। शिर-ई-स्थिति-संलीनौ, पार्श्व-मल्ली-जिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्वे, हरस्थाने नियोजिताः। माया वीजाक्षर-प्राप्ता,—श्चतुर्विंशतिरर्हताम् ॥ २६ ॥ गत-राग-द्वेष-मोहाः, सर्व-पाप-विवर्जिताः। सर्वदाः सर्व-कालेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमाः ॥२७॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादित-सर्वाङ्गं, मा मां हिनस्तु डाकिनी ॥ २८ ॥ देव देवस्य० मा मां हिनस्तु राकिनी ॥२९॥ देवदे० मा मां हिनस्तु लाकिनी ॥ ३० ॥ देवदे० मा मां हिनस्तु काकिनी ॥३१॥ देवदे० मा मां हिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मा मां हिनस्तु हाकिनी ॥३३॥ देवदे० मा मां हिनस्तु याकिनी ॥३४॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु पन्नगाः ॥३५॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु हस्तिनः ॥३६॥ देवदे०

मा मां हिंसन्तु राक्षसाः ॥३७॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु वह्नयः ॥३८॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु सिंहकाः॥ ३९॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु दुर्जनाः ॥४०॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु भूमिपाः ॥४१॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्य या भुवि लब्धयः । ताभिरभ्युद्यत-ज्योतिरहं सर्व-निधीश्वरः ॥४२॥ पाताल-वासिनो देवा, देवा भूपीठवासिनः । स्वर्वासिनोऽपि ये देवाः, सर्वे रक्षन्तु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधि-लब्धयः । ते सर्वे मुनयो देवा, मां संरक्षन्तु सर्वदा ॥४४॥ दुर्जना भूत-वेतालाः, पिशाचा मुद्गलास्तथा । ते सर्वेऽप्युपशाम्यन्तु, देवदेव-प्रभावतः ॥४५॥ ॐ ह्रीँ श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चण्डी सरस्वती । जयाम्बा विजया नित्याक्लिन्ना जिता मद-द्रवा ॥ ४६ ॥ कामाङ्गा कामबाणा च, सानन्दा नन्दमालिनी । माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥४७॥ एताः सर्वा महा-

देव्यो, वर्त्तन्ते या जगत्त्रये। मह्यं सर्वाः प्रयच्छन्तु, कान्तिं कीर्त्तिं धृतिं मतिम् ॥ ४८॥ दिव्यो गोप्यः सुदुःप्राप्यः, श्रीऋषिमण्डलस्तवः। भासितस्तीर्थनाथेन, जगत्त्राणकृतेऽनघः ॥४९॥ रणे राजकुले वह्नौ, जले दुर्गे गजे हरौ। श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवम् ॥५०॥ राज्य-भ्रष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टा निजं पदम्। लक्ष्मी-भ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥५१॥ भार्यार्थी लभते भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतम्। वित्तार्थी लभते वित्तं, नरः स्मरण-मात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत्। तस्यैवाष्टमहासिद्धिर्गृहे, वसति शाश्वती ॥५३॥ भूर्जपत्रे लिखित्वेदं, गलके मूर्ध्नि वा भुजे। धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्व-भीति-विनाशकम् ॥५४॥ भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः। वात-पित्त-कफोद्रेकैः-र्मुच्यते नात्र संशयः ॥५५॥ भूर्भुवः-

स्वत्रयीपीठ-वर्त्ति न शाश्वता जिनाः । तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टैर्यत् फलं तत्फलं श्रुतौ ॥५६॥ एतद्‌ गोप्यं महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित् । मिथ्यात्ववासिने दत्ते, बाल-हत्या पदे पदे ।५७। आचाम्लादि तपः कृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीम् । अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥५८॥ शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठन्ति दिने दिने । तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति न चापदः ॥५६॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् । स्तोत्रमेतद्‌ महातेजो, जिनबिम्बं स पश्यति ॥६०॥ दृष्टे सत्यर्हतो बिम्बे, भवे सप्तमके ध्रुवम् । पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनन्दितः ॥६१॥ विश्ववन्द्यो भवेद्‌ ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते । गत्वा स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥६२॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परम् । पठनात्स्मरणाज्जापाल्लभ्यते पदमुत्तमम ॥६३॥ (इति श्रीऋषि-

गडलस्तोत्रं क्षेपकश्लोकान्निराकृत्य मूलमन्त्रकल्पानुसारेण लिखितं गणिभिः श्रीक्षमाकल्याणोपाध्यायैः, तदेवात्रास्माभिर्मुद्रितम्)

॥ अथ श्रीगोडीपार्श्वजिन-वृद्धस्तवनम् ॥

॥ (दूहा) वाणी ब्रह्मावादिनी, जागे जग विख्यात। पास तणां गुण गावतां मुज मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणहलपुरे, अहमदावादे पास। गोडीनो धणी जागतो, सहुनी पूरे आस ॥ २ ॥ सुभ वेला सुभ दिन घड़ी, मुहुरत एक मंडाण। प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥ (ढाल) गुणहि विशाला मंगलीक माला, वामानो सुत साचोजी। धण कण कंचण मणि माणक दे, गोडीनो धणी जाचोजो (गु०) ॥४॥ अणहिलपुर पाटण मांहे प्रतिमा; तुरक तणें घर हुंतोजी। अश्वनी भूमि अश्वनो पीडा, अश्वनी वालि विगूती जी (ग०) ॥५॥ जागंतो जक्ष जेहने कहिये, सुहणो

तुरकनैं आपे जी ।॥ पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुझो संतापे जी (गु०) ॥६॥ प्रह ऊठीने परगट करजे, मेघा गोठीने देजे जी। अधिक म लेजे ओछो म लेजे, टका पांचसै लेजे जी (गु०) ॥ ७ ॥ नहिं आपिस तो मारीस मुरडीस, मोर बंध बंधास्ये जी। पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ, लाछि घणी घर जास्यै जी (गु०) ॥८॥ मारग पहिलो तुझनैं मिलस्यै, सारथवाह जे गोठी जी। निलवट टीलो चोखा चेढ्या, वस्तु वहै तसु पोठी जी (गु०) ॥९॥ (दूहा) ॥ मनसु बीहनो तुरकडो, मानैं वचन प्रमाण। बीबी नें सुहणा तणो, संभलावै सहिनाण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वडा देव है कोय। अवस ताव परगट करो, नहींतर मारै सोय ॥११॥ पाछली रात परोडीयै, पहली बांधै पाज। सुहणा माहें सेठने, संभलावै जक्ष-राज ॥ १२ ॥ (ढाल) एम कही जक्ष आयो राते,

सारथवाहने सुहणें जी। पास तणी प्रतिमा तुं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी (एम०) ॥१३॥ पांचसै टका तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी। जतन करी पहुंचाडे थानिक, प्रतिमा गुण संभारेजी (एम०) ॥१४॥ तुझने होसी बहु फल दायक, भाई गोठीने सुणजे जी। पूजीस प्रणमीश तेहना पाया, प्रह उठीने थुणजे जी (ए०) ॥ १५ ॥ सुहणो देईने सुर चाल्यो, आपणे थांनक पहुंतो जी। पाटण मांहें सारथवाहु, हींडे तुरकने जोतो जी (ए०) ॥१६॥ तुरके जातां दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाडें जी। संकेत पहुतो साचो जाणि, बोलावै बहु लाडें जी (ए०) ॥१७॥ मुझ घरि प्रतिमा तुझनें आपुं, पास जिणेसर केरी जी। पांचसै टका जो मुझ आपै, मोल न मांगु फेरी जी (ए०) ॥१८॥ नाणो देई प्रतिमा लेई, थानक पहुंतो रंगे जी। केसर ... मृगमद

बोली, विधसुं पूजा रंगे जी (ए०) ॥ १९ ॥ गादी रूडी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखै जी । अनुक्रम आव्या परिकर माहें, श्रीसंघने सुर साखै जी (ए०) ॥ २० ॥ उच्छव दिन २ अधिका थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी । ठाम २ ना दरसण करवा, आवै लोक प्रभातो जी (ए०) ॥२१॥ (दूहा) ॥ इक दिन देखै अव-धसुं, परिकर पुरनो भङ्ग । जतन करूं प्रतिमा तणो, तीरथ अछै अभङ्ग ॥ २२ ॥ सुहणो आपै सेठने, थल अटवी उज्जाड । महिमा थास्यै अति घणी, प्रतिमा तिहां पहुंचाड ॥ २३ ॥ कुशल खेम तिहां अछै, तुझनें मुझने जाणि । संका छोड़ी काम करि, करतो मकरि संकाणि ॥२४॥ (ढाल) ॥ पास मनोरथ पूरा करै, वाहण एक वृषभ जोतरै । परिकरथी परियाणों करै, एक थल चढ़ि बीजो उतरै ॥२५॥ बारै कोस आव्या जेतलै, प्रतिमा नवि चालै तेतलै । गोठी मनह

दिमासण थई, पास भुवन मंडावुं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूँ प्रयाण, कटको कोइ न दीसै पाहाण। देवल पास जिनेसर तणो, मंडावुं किम गरथें विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्री संघ रहस्यै किहां, सिलावटो किम आवे इहां। चिन्तातुर थयो निद्रा लहै, यचराज आवीने कहै ॥ २८ ॥ गुंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीजे तिहां। स्वस्तिक सोपारीने ठाणि, पाहण तणी उल्लटस्यै खाणि ॥ २६ ॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ, अमृत जलनो सरसी कूओ। खारा कुवा तणो इह सैनाण, भूमि पड्यो छै नीलो छाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोही वसै कोड पराभवियो किसमिसै। तिहां थकी तुं इहां आणजे, सत्य वचन माहरो मानगे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन थिर थापियो, सिलावटने सुहणो दियो। रोग गमीने पूरूँ आस, पास तणो मंडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपन मांहे

मान्यो ते वेण, हेम वरण देखाड्यो नैण। गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटने गया तेडवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवै सूरमो, जिमें खीर खांड घृत चूरमो। घडैं घाट करैं कोरणी, लगन भलें पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंभ २ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली। रङ्ग मंडप रलियामणों रसै, जोतां मानवनो मन वसै ॥ ३५ ॥ नोपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग समो मांडे आवास। दिवस विचारी इंडो घड्यो ततखिण देवल ऊपर चढ्यो ॥३६॥ शुभ लगन शुभ वेला वास, पब्बासण बेटा श्रीपास। महिमा मोटी मेरु समान, एकलमिल वगडे रहैवान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांभली, तवन मांहि सूधो सांकली। गोठी तणा गोतरिया अछै, यात्रा करीने परने पछे ॥ ३८ ॥ (दोहा) ॥ विघन विडारन यच्च जगि, तेहनो अकल सरूप। प्रीत करे श्रीसङ्घने, देखाडै निज रूप

॥ ३९ ॥ गछ्यो गोडी पास जिन, आपे अरथ भंडार। सांनिध करे श्री सङ्घने, आसा पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणे नील हय, नीलो थई असवार। मारग चूका मानवी, बाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ (ढाल) वरण अढार तणो लहे भोग, विघन निवारे टाले रोग। पवित्र थई समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥४२॥ निरधननो घरि धन नो सुत, आपे अपुत्रीयाने पुत्र। कायरने सूरापण धरे, पार उतारे लच्छी वरे ॥ ४३ ॥ दोभागीने दे सोभाग; पग विहूणाने आपे पग। ठाम नहीं तेहने द्यै ठाम, मनवंछित पूरें अभिराम ॥ ४४ ॥ निराधार ने द्ये आधार, भवसायर उतारे पार। आरतियानी आरत भंग, धरे ध्यान ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समस्यां सहाय दीये यत्त राज, तेहना मोटा अछे दिवाज। बुद्धि हीण ने बुद्धि प्रकाश, गूंगाने वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुख-

नो दातार, भय भंजण रंजण अवतार। बंधन तूटे वेणी तणा, श्री पार्श्व नाम अक्षर स्मरणा ॥ ४७ ॥ (दूहा) श्री पार्श्वनाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल। हस्त जूथ दूरे टलै, दुद्धर सिंह सियाल ॥ ४८ ॥ चोर तणा भय चूकवे, विष अमृत उडकार। विष धरनो विष ऊतरे, संग्रामें जय जय कार ॥ ४९ ॥ रोग सोग दालिद्र दुख, दोहग दूर पलाय। परमेसर श्री पासनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥ (कडखानी चाल) उंजितु २ उंज उपसम धरी, ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री पार्श्व अक्षर जपंते। भूत ने प्रेत झोटिंग व्यन्तर सुरा, उपसमे वार इकवीस गुणंते (उं) ॥ ५१ ॥ दुद्धरा रोग सोगा जरा जंतने, ताव एकान्तरा दुत्तपंते। गर्भवन्धन व्रणं सर्प विच्छू विषं, बालिका बालमेवा झखंते (उं०) ॥ ५२ ॥ साइणी डाइणी रोहिणी रंकणी, फोटका मोटका दोष हुंते। दाढ उंदर-

तणी कोल नोला तणी, स्वान सीयाल विकराल दंते ॥ ५३ ॥ (उं०) धरणेंद्र पद्मावती समर सोभावती, वाट आघाट अटवी अटंते। लखमी लोर्दु मिलैं सुजस वेला उलै, सयल आस्या फलै मन हसंते (उं०) ॥ ५४ ॥ अष्ट महाभय हरें कानपीड़ा टलै, ऊतरै सूल सीसग भणंते। वदत वर प्रीतसुं प्रीतिविमल प्रभू, श्री पास जिण नाम अभिराम मन्ते (उंजितु) ॥ ५५ ॥ इति श्रीगोड़ी पार्श्वनाथजी वृद्ध स्तवनं समाप्तम्

॥ श्री गौतम स्वामिजी का रास ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल, कमला कय वासो; पणमिवि पभणिसु सामीसाल, गोयम गुरु रासो। मण तणु वयण एकंत करिवि, निसुणहु भो भविया; जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरि

भरह खित्त, खोणी तल मंडण; मगह देस सेणिय नरेश, रिऊ दल बल खंडण। धणवर गुव्वर गाम नाम, जिहां गुण गण सज्जा; विप्प बसे वसुभूइ तत्थ, तसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इन्दभूइ भूवलय पसिद्धो; चाउदह विज्जा विविह रूव, नारी रस लुद्धो। विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर; सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जणवि, पंकज जल पाडिय; तेजहिं तारा चन्द सूरि, आकास भमाडिय। रूवहि मयण अनंग करवि, मेल्यो निरधाडिय, धीरम मेरु गंभीर सिंधु, चंगम चय चाडिय ॥४॥ पेक्खवि निरुवम रूव जास, जण जंपे किंचिय; एकाकी किल भीत्त इत्थ, गुण मेल्या सिंजिय। अहवा निच्चय पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिय; रंभा पउमा गउरी गङ्ग.

कोय, जसु आगल रहियो; पंच सयां गुण पात्र छात्र, हींडे परवरियो । करय निरंतर यज्ञ करम, मिथ्यामति मोहिय; अणचल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासंमि, खोणीतल मंडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वर गुब्वर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ सुन्दर, तसु पुहवि भज्जा, सयल गुण गण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्जानिलो, गोयम अतिहि सुजान ॥ ७ ॥ भास ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चोविह संघ पइट्ठा जाणी । पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥८॥ देवहि समवसरण तिहां कीजें, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे । त्रिभुवन गुरु सिंहासन बेठा, ततखिण मोह दिगंत पइट्ठा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा । देव दुंदुभि आगासे वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुम वृष्टि अरचे तिहां देवा

चउसठ इंद्रज मागे सेवा। चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवरजग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसभर वर वरसंता; जोजन वाणि व-खाण करंता। जाणिवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥१२॥ कंत समोहिय जलहलकंता, गयण विमाणहि रणरणकंता। पेक्खवि इन्दभूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंडक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता। तो अभिमाने गोयमजंपे, इण अवसर कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाणयुं बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले। मो आगल कोइ जाण भणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न पावापुर सुरमहिय, पत्त नाह संसारतारण, तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण वहु सुक्ख कारण, जिणवर जग उज्जोय करै, तेजहि कर दिनकार

सिंहासण सामी ठव्यो, हुओ तो जय जयकार ॥ १६ ॥ भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इन्दभूइ भूयदेव तो, हुंकारो कर संचरिय, कव-णसु जिणवरदेव तो । जोजन भूमि समोसरण, पेक्खवि प्रथमारंभ तो, दह दिस देखे विबुध वधू, आवंती सुररंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंभ ध्वज, कोसीसे नवघाट तो, वइर विवर्जित जंतुगण, प्रातीहारिज आठ तो । सुर नर किन्नर असुरवर, इंद्र इंद्राणी राय तो, चित्त चमक्किय चिंतवए, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहसकिरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाल तो; एह असंभव संभव ए, साचो ए इंद्रजाल तो । तो वोलावइ त्रिजग गुरु, इंद्रभूइ नामेण तो; श्रीमुख संसय सामी सवे, फेडे वेद पएण तो ॥१९॥ मान मेल मद ठेल करे, भग-तिहिं नाम्यो सीस तो, पंच सयांसुं व्रत लियो

खिवि करे, अगनिभूइ आवेय तो; नाम लेई आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण, थाप्या वीर इग्यार तो, तो उपदेशे भुवन गुरु, संयमशुं व्रत बार तो। बिहुं उपवासें पारणो ए, आपणपे विहरंत तो; गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंद्रभूइ इंद्रभूइ चढियो बहुमान, हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंतो; जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंत तो; बोधिबीज संजाय मनें, गोयम भवहि विरत्त, दिक्खा लेई सिक्खा सही, गणहर पय संपत्त ॥ २२ ॥ भास ॥ आज हुओ सुविहाण, आज पचेलिमा पुण्य भरो, दीठा गोयम सामि, जो नियनयणें अमिय सरो। समवसरण मझार, जे जे संसय ऊपजे ए, ते ते पर उपगार कारण पूछे मुनि पवरो ॥ २३ ॥ जीहां २ दीजें दीख. तीहां केवल उपजे ए; आप कनें अण-

हुंत, गोयम दीजें दान इम। गुरु उपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय; एणिछल केवल नाण, गगज राखे रंग भरे॥ २४॥ जो अष्टापद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण, आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सो ज मुनि। इय देसणा निसुणेद, गोयम गणहर संचरिय, तापस पन्नर सएण, तो मुनि दीठो आवतो ए॥ २५॥ तप सोसिय निय अंग-अम्हां संगति न उपजे ए, किम चढसे दृढ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए। गिरुओ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए, तो मुनि चढियो वेग, अलंबवि दिनकर किरण॥ २६॥ कंचण मणि निप्फन्न, दंडकलस ध्वजवड सहिय, पेखवि परमाणन्द, जिणहर भरतेसर महिय। निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणह विंव, पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय॥ २७॥ वयर-सामीनो जीव, तिर्यक्

जृंभक देव तिहां प्रतिबोध्यो पुडरीक, कंडरिक अध्ययन भणी। वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे, लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥२८॥ खीर खांड घृत आण, अमिय वूठ अंगूठ ठवे, गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे। पंच सयां शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे, साचा गुरु संयोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पञ्च सयां जिणनाह, समवसरण प्रकारत्रय, पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे। जाणे जणवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम, जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुआ पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण पन्नरेसे, उप्पन्न परिवरिय, हरिदुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवि जगगुरु वयण, तिहि नाण अप्पाण निंदइ। चरम जिनेसर इम भणे, गोयम म करिस खेव, छेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला वेव ॥३१॥ भास ॥

समियो ए वीर जिणन्द, पूनमचन्द जिम उल्ल-
सिय, विहरियो ए भरहवासम्मि, वरस बहुत्तर
संवसिय। ठवतो ए कणय पउमेण, पाय
कमल संघें सहिय, आवियो ए नयणानंद, नयर
पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेसियो ए गोयम
सामि, देवसमा प्रतिबोध करे; आपणो ए तिस-
ला देवि, नंदन पुहतो परमपए। वलतो ए
देव आकाश, पेखवि जाणयो जिण समो ए,
तो मुनि ए मन विखवाद, नाद भेद जिम
ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि,
आप कनासुं टालियो ए, जाणतो ए तिहुअण
नाह, लोक विवहार न पालियो ए। अतिभलों
ए कीधलो सामि, जाणयो केवल मागसे ए,
चिन्तव्यो ए बालक जेम, अहवा केडे लागसे
ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, भगतिहि
भोलेभोलव्यो ए, आपणो ए उचलो नेह, नाह न
संपे साचव्यो ए। साचो ए वीतराग, नेह न

हेजेंलालियो ए तिणसमे ए, गोयमचित्त, राग वैरागे वालियो ए ॥३५॥ आवतो ए जो उल्लट्ट, रहितो रागे साहियो ए, केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए। तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए, गणधरु ए करय वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पच्चास, गिहवासें संवसिय, तीस वरस संजम विभूसिय, सिरि केवल नाण पुण, वार वरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो वाणवइ वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ भास ॥ जिम सहकारे कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिम चन्दन सोगंध निधि। जिम गंगाजल लहिस्या लहके, जिम कणयाचल तेजे झलके, तिम गोयम सोभाग निधि ॥ ३८॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरू

वर कशाय वतंसा, जिम महुयर राजीव वनें, । जिम रयणायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारा-गण विकसे, तिम गोयम गुरु केवल घनें ॥३६॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहे, सुर तरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिस जिम सहसकरो। पञ्चानने जिम गिरिवर राजे, नरवई घरजिम मयगल गाजे, तिम जिन सासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहे ए। जिम भूमीपति भुयवल चमके, जिम जिन मन्दिर घण्टा रणके, गोयम लब्धे गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिन्तामणि कर चढीयो आज, सुर तरु सारे वंछिय काज, का-मकुम्भ सहु वशि हुआ ए। कामगवी पूरे मन कामी, अष्ट महासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरि ए ॥ ४२ ॥ पणवक्खर पहिलो पभणीजें, माया वीजो श्रवण सुणीजे, श्रीमिति

सोभा संभवाए। देवां धुर अरहिंत नमीजे, *विनय पहु उवझाय थुणीजे, इण मन्त्रे गोयम नामो ए ॥ ४३ ॥ पर घर वसतां काय करीजे, देस देसांतर काय भमीजे, कवण काज आयास करो। प्रह ऊठी गोयम समरीजे, काज समग्गल ततखिण सीजे, नव निधि विलसे तिहां परे ए ॥४४॥ चवदय सये बारोत्तर वरसे गोयम गणहर केवल दिवसे, कियो कवित्त उपगार परो। आदिहिं मंगल ए पभणीजे, परव महोच्छव पहिलो दीजे, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥४५॥ धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए। विनयवंत विद्या भण्डार, तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार, वड जिम साखा विस्तरो ए। गोयम सामी रास भणीजे, चउविह संघ रलिया-

* यह श्री विनयप्रभ उपाध्या जी श्री जिन कुशल सूरि-जी के जिनका स्वर्गवास वि सं० १३८९ में हुआ था, शिष्य थे।

यत कीजें, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन छडा दिवरावो, माणक मोतीना चौक पुरावो, रयण सिंहासण वेसणो ए। तिहां वेसी गुरु देसना देसी, भविक जीवना काज सरेसी, नित नित मङ्गल उदय करो ॥ ४७ ॥

इति श्री गौतमस्वामि-रास सम्पूर्ण।

॥ अथ वृद्धनवकार ॥

॥ किंकप्पत्तरुरे अयाण चिंतउ मणभिंतरि, किं चिंतामणि कामधेनु आराहो बहुपरि ॥ चित्तावेलो काज किसे देसांतर लंघउ, रयणरासि कारण किसे सायर उल्लंघउ ॥ चवदे पूरव सार युग लद्धउ ए नवकार, सयल काज महियल सरे दुत्तर तरे संसार ॥ १ ॥ केवलि भासिय रीत जिके नवकार आराहे, भोगवि सुक्ख अणंत अंत परम प्पयसा हे ॥ इण झाणे सुर रिद्धि पुत्त सुह विलसै बहु परि, इण झाणे देव-

लोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो जपे अचिंत चिंतामणि एह, समरण पाप सवे टले रिद्धि सिद्धि नियगेह ॥ २ ॥ निय सिर ऊपर झाण मज्झ चिंतवे कमल नर, कंचणमय अठदल सहित तिहां मांहे कनकवर ॥ तिहां बेठा अरिहंतदेव पउमासण फिटकमणि, सेयवत्थ पहरेवि पढम पय चिंते नियमणि ॥ निव्वारय चउ गइ गमण पामिय सासय सुक्ख, अरिहंत झाणे तुम लहो जिम अजरामर सुक्ख ॥ ३ ॥ पनर भेय तिहां सिद्ध बीय पद जे आराहे, राते विद्रुमतणे वन्ननिय सोहग साहे ॥ राती धोती पहर जपैं सिद्धहिं पुव्वे दिसि, सयल लोय तिह नरहि होइ ततखिणसेंवसि ॥ मूलमंत्र वशीकरण अवर सहू जगधंद, मणमूलो ओपध करे बुद्धि हीणजाचंध ॥ ४ ॥ दक्खिण दिसि पंखडी जपे नमो आयरिआणं, सोवनवन्नह सीस सहित उवए सहिनाणं ॥ रिद्ध सिद्ध

कारणे लाभ ऊपर जे ध्यावे, पहरे पीलावत्थ तेह मन वंछिय पावे ॥ इण झाणे नव निधि हुवेए रोग कदे नवि होय, गज रथ हय वर पालखो चामर छत्त सिर जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवझाय सीस पाढंता पच्छिम, आराहिज्जे अंग पुव्व धारंत मणोरम ॥ पच्छिम दिस पंखडीय कमल ऊपर सुहझाण, जोवौ परमानंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रखे विदुर तिहां नर वहु फल होइ, मन सूधे विण जे जपे तिहां फल सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ सव्वे साधु उत्तर विभाग सामला वइठा, जिण धर्म लोय पयासयंत चारित्र गुण जिठा ॥ मण वयण काएहिं जपे जे एके झाणे, पंचवन्न तिहां नाण झाण गुण एह पमाणे ॥ अनंत चोवीसी जग हुइए होसी अवर अनंत, आदि कोइ जाणे नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमुक्कारो पद दिसिअ गणेहिं, सव्व पावप्पणासणो पद जप-

नेरेहिं ॥ वायव दिसि झाएह मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुं दिसि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रभाव धरणिंद हुओ पायालह सामी, समलीकुप्रर उपन्न भिल्ल सुर लोयह गामी ॥ संवल कंवल बे वलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव थयो नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन वंछिय करे जोगी लियो मसाण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ९ ॥ छींके वैठो चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह नामी ॥ वाछरू आचारंत वाल जल नदी प्रवाहे, वीध्यों कंटही उयर मंत्र जपियो मनमांहे ॥ चिंत्या काज सवे सरे इरत परत विमास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥१०॥ चौर धाड संकट टले राजा वसि होवे, तिर्थंकर

सो होइ लाख गुण विधिसु जोवे ॥ साइण डाइण भूत प्रेत वेत्ताल न पोहवे, आधि व्याधि ग्रहतणी पीडते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सवे नासे एणही मंत, मयणासुदरितणी परे नव पय झाण करंत ॥ ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणु, नाणहीण छऊमच्छ एह गुण पार न जाणूं ॥ जिम सत्तुंजय तित्थराउ महिमा उदयवंती, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तित्थंकर गणहर पणिय चवदह पूरव सार, इण गुण अंत न को कहे गुण गिरुवो नवकार ॥ १२ ॥ अड संपय नव पय सहित इगसठ लहु अक्खर, गुरु अक्खर सत्तेव इह जाणो परमक्खर ॥ गुरु जिण वल्लह सूरि भणे सिव सुक्खह, कारण, नरय तिरय गय रोग सोग वहु दुक्ख निवारण ॥ जल थल महियल वनगहण समरण हुवे इक चित्त पंच परमेट्ठि मंत्र इणि सेवा देज्यो

नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्टि महिमा गर्भित वृद्ध नवकार मंत्र सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्री कल्याणमन्दिर स्तोत्रम् ॥

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम्। संसारसागरनिमज्जदशेपजन्तु-पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विर्तीर्थेश्वरस्य कमठस्मय-धूमकेतो-स्तस्याह-मेप किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप—मस्मादृशाः कथमधीश! भवन्त्यधीशाः?। धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः? ॥३॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत। कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मा-न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः? ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव

नाथ ! जडाशयोऽपि, कर्त्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य। वालोऽपि किं न निजवाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः ? ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश !, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ? । जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति। तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि॥७॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति, जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धाः। सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग—मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र !, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि। गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ६ ॥ त्वं तारको

जिन ! कथं भविनां ? त एव, त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः । यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥१०॥ यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन । विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्द्धरवाडवेन ? ॥ ११ ॥ स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना-स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः । जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन ?, चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा वत कथं किल कर्मचौराः ? । प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ? ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप-मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे । पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य-दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः ?

॥१४॥ ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति। तीव्रानला-दुपलभावमपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥ अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ?। एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुध्या, ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीय भवत्प्रभावः। पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ? ॥१७॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः। किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपि शङ्खो, नो गृह्यते ? विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः। अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ? ॥ १९ ॥

चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव, विष्वक्
पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ?। त्वद्गोचरे सुमनसां
यदि वा मुनीश !, गच्छन्ति नूनमध एव हि
बन्धनानि ॥ २० ॥ स्थाने गभीरहृदयोदधिसं-
भवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति ।
पीत्वा यतः परमसंमदसङ्गभाजो, भव्या व्रज-
न्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् !
सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः
सुरचामरौघाः । येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्ग-
वाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥२२॥
श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न---सिंहासनस्थ-
मिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् । आलोकयन्ति
रभसेन नदन्तमुच्चै—श्चामीकराद्रिसिरसीव
नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शितिद्यु-
तिमण्डलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ।
सानिध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !, नीरा-
गतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ? ॥ २४ ॥ भो

भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन—मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम्। एतन्निवेदयति देव! जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः। मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र—व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन, कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन। माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितोविभासि ॥२७॥ दिव्यस्रजो जिन! नमन्त्रिदशाधिपाना—मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान्। पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव ॥२८॥ त्वं नाथ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान्। युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो! यदसि कर्मविपाकशून्यः॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जन-

पालक ! दुर्गतस्त्वं, किंवाऽचरप्रकृतिरप्यलिपि-
स्त्वमीश ।। अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥
प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा—दुत्थापि-
तानि कमठेन शठेन यानि । छायाऽपि तैस्तव
न नाथ ! हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमोभिरयमेव
परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्जदूर्जितघनौघम-
दभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, ते नैव तस्य
जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वके-
शविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड—प्रालम्बभृद्भयदवक्र-
विनिर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो
यः, सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥
धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य—मारा-
धयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः । भक्त्योल्लसत्पु-
लकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयं तव विभो ! भुवि
जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ

मुनीश !, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि। आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ? ॥ ३५ ॥ जन्मान्तरेऽपि तव पाद युगं न देव !, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम्। तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि। मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ? ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या। जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य, भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय, दुःखाङ्कुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसङ्ख्य

सारशरणं शरणं शरण्य—मासाद्य सादितरिपु-प्रथितावदातम्। त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधान-वन्ध्यो, वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन! हा हतोऽस्मि ॥४०॥ देवेन्द्रवन्द्य! विदिताखिलव-स्तुसार!, संसारतारक विभो! भुवनाधिनाथ। त्रायस्व देव! करुणाहृद मां पुनीहि, सीदन्त-मद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ! भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं कि-मपि संततिसंचितायाः। तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्त-रेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जि-नेन्द्र!, सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्षा, ये संस्तवं तव विभो! रचयन्ति भव्याः ॥४३॥ जननयनकु-मुदचन्द्रप्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा। ते विग-लितमलनिचया,अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते।४४।युग्मम्

॥ इति श्रीकल्याणमन्दिर-स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

लघुजिनसहस्रनाम स्तोत्रम्।

नमस्त्रिलोकनाथाय, सर्वज्ञाय महात्मने॥ वक्ष्ये तस्यैव नामानि, मोक्षसौख्याभिलाषया ॥ १ ॥ निर्मलः साश्वतोशुद्धः, निर्विकल्पो निरामयः। निःशरीरी निरातंकः, सिद्धसूक्ष्मो निरंजनः॥ २ ॥ निष्कलंको निरालंबो, निर्मोहो निर्मलोत्तमः। निर्भयो निरहंकारो, निर्विकारोथ निष्क्रियः॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजः शान्तः, निर्भेद्यो निर्ममः शिवः। निस्तरंगो निराकारो, निष्कर्मो निष्कलप्रभुः॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपमज्ञान, निरागो निरघो जिनः। निःशब्द प्रतिमश्श्रेष्ठ, उत्कृष्टो ज्ञन-गोचरः॥५॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो, नैष्टकः शब्दवर्जितः। अनिंद्यो महपूतात्मा, जगत् शिखरशेखरः॥६॥ निःशब्दो गुणसंपन्नाः, पाप-ताप-प्रणाशनः। सोपि योगात् शुभं प्राप्तः, कर्मद्योतिवलावहः॥७॥ अजरो अमरः सिद्ध, अचिंतः अव्ययो विभुः। अमुर्त्तः

अच्युतो ब्रह्म, विष्णरीशः प्रजापतिः ॥ ८॥
अनिंद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो भवः।
अप्रमेयो जगन्नाथः, वोधरूपो जिनात्मकः ॥९॥
अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञान लोचनः।
अछेद्यो निर्मलो नित्यः, सर्वशल्यविवर्जितः॥१०॥
अजेयसर्वतोभद्रः, निष्कषायो भवांतकः।
विश्वनाथः स्वयंबुद्धः, वीतरागो जिनेश्वरः॥११॥
अंतको सहजानंद, अवाङ्मानस गोचरः।
असाध्यशुद्धचैतन्यः, कर्मणोकर्मवर्जितः ॥१२॥
अनंत विमलज्ञानी, स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः।
कर्म्मार्जितो महात्मानः, लोकत्रयशिरोमणिः
॥ १३ अव्यावाधो वरः शंभु, विश्ववेदो पिता-
महः। सर्वभूतहितो देव। सर्वलोकशरण्यकः
॥१४॥ आनन्दरूपचैतन्यो, भगवांस्त्रिजगद्गुरुः।
अनंतानंतधीशक्तिः, सत्यव्यक्तव्ययात्मकः
॥ १५ ॥ अष्टकर्म्मविनिर्मुक्तः, सप्तधातुविव-
र्जितः। गौरवादित्रयादूरः सर्वज्ञानादि संयुतः

कृतिं नाचरो वर्णी, व्योमरूपो जितात्मकः ।३३। व्यक्ताव्यक्त जसंबोधः, संसारच्छेदकारणः । निरवद्यो महाराध्यः, कर्म्मजित् धर्म्मनायकः ॥ ३४ ॥ बोधसरसु जगद्वंद्यो, विश्वात्मा नरकांतकः । स्वयंभूपापहृत्पूज्यः, पुनीतो विभवः स्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो महातीतः, रूपातीतो निरंजनः । अनंतज्ञानसंपर्णो, देवदेवेश नायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्यो भवविध्वंसी, योगिनां ज्ञातगोचरः ॥ जन्ममृत्युजरातीतः, सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक् भव्यसंवंद्यः, पवित्रो गुणसागरः । प्रसन्नः परमाराध्यः, लोकालोकप्रकाशकः ॥३८॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी, इंद्रवंद्यः सुरार्चितः, निष्प्रपंचो निरातङ्को । निःशेषक्लेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोक संसेव्यो, लोकालोकविलोकनः । लोकोत्तमो त्रिलोकेशो, लोकाग्रे शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि, ये पठंति पुनः पुनः ।

ते निर्वाणपदं यान्ति, मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्रीभद्रबाहुस्वामिना विरचितं लघुजिनसहस्रानामकं स्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ साधु प्रतिक्रमणसूत्र ॥

चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केवलिपरणत्तो धम्मोमंगलं चत्तारि-लोगुत्तमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालोगुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवलिपरणत्तो धम्मोलोगुत्तमो चत्तारिसरणंपवज्जामि अरिहंतेसरणंपवज्जामि सिद्धेसरणंपवज्जामि साहूसरणंपवज्जामि केव-लिपरणत्तं धम्मंसरणंपवज्जामि इच्छामि पडि-कमिउं । पगामसिज्जाए । निगामसिज्जाए । संथाराउवट्टणाए । परियट्टणाए । आउंटण पसारणाए । छप्पइयसंघट्टणाए । कुइए । कक्करा-ईए । छीए । जंभाइए । आमोसे । ससरक्खामोसे । आउलमाउलाए । सोअणवत्तियाए । इच्छीवि-

मणविप्परिआसियाए। पाणभोअणविप्परिअ सिआए। जो मे देवसिओ अइयारो कओ। तस्स मिच्छामि दुक्कडं। पडिक्कमामि। गोअरचरिआए भिक्खायरिआए। उग्घाड कवाड उग्घाडणाए साणावच्छादारा संघट्टणाए। मंडीपाहुडिआए। बलिपाहुडिआए। ठवणापाहुडिआए संकिए सहस्सागारे। अणेसणाए। पाणेसणाए आणभोयणाए। पाणभोयणाए। बीअभोयणाए। हरियभोयणाए। पच्छाकम्मियाए पुरेकम्मिआए। अदिट्ठहडाए। दगसंसट्ठहडाए। रयसंसट्ठहडाए। पारिसाडणिआए। पारिठावणिआए। ओहासणभिक्खाए। जं उग्गमेण ओप्पायणेसणाए। अपरिसुद्धं पडिग्गहिअं परिभुत्तं वा। जं न परिठविअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं। पडिक्कमामि चाउक्कालं सज्झायस्स अकरणयाए। उभओकालं भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए दुप्पडिलेहणाए। अप्पमज्जणाए

दुप्पमज्जणाए । अइक्कमे । वइक्कमे । अइयारे । अणायारे । जो मे देवसिओ अइआरो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं । पडिक्कमामि एगविहे असंजमे ॥ १ ॥ पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं । रागबंधणेणं दोसबंधणेणं । पडिक्कमामि ॥ २ ॥ तिहिं दंडेहिं । मणदंडेणं । वयदंडेणं । कायदंडेणं । पडिक्कमामि तिहिं गुत्तीहिं मणगुत्तीए । वयगुत्तीए कायगुत्तीए । पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं । मायासल्लेणं । नीयाणासल्लेणं । मिच्छादंसणसल्लेणं । पडिक्कमामि । तिहिं गारवेहिं । इढ्ढीगारवेणं । रसगारवेणं । सायागारवेणं । पडिक्कमामि । तिहिं विराहणाहिं । नाणविराहणाए । दंसणविराहणाए । चरित्तविराहणाए । पडिक्कमामि । चउहिं कसाएहिं । कोहकसाएणं । माणकसाएणं । मायाकसाएणं । लोभकसाएणं । पडिक्कमामि । चउहिं सण्णाहिं । आहार सण्णाए । भय सण्णाए । मेहुणसण्णाए ।

परिग्गहसरणाए। पडिक्कमामि। चउहिं विकहाहिं। इच्छिकहाए। भत्तकहाए। देसकहाए। रायकहाए। पडिक्कमामि। चउहिं झाणेहिं। अट्टेणं झाणेणं। रुद्देणं झाणेणं। धम्मेणंझाणेणं। सुक्केणं झाणेणं। पडिक्कमामि। पंचहिं किरियाहिं। काइयाए अहिगरणियाए। पाउसियाए। पारतावणिआए। पाणइवायकिरियाए। पडिक्कमामि। पंचहिं कामगुणेहिं। सद्देणं। रूवेणं। रसेणं। गंधेणं। फासेणं। पडिक्कमामि। पंचहिं महव्वएहिं। पाणाइवायाओ वेरमणं। मुसावायाओ वेरमणं। आदिन्नादाणाओ वेरमणं। मेहुणाओ वेरमणं। परिग्गहाओ वेरमणं। पडिक्कमामि। पंचहिं समिइहिं। इरिआसमिइए। भासासमिइए। एसणासमिइए। आयाणभंडमत्तनिखेवणा समिइए। उच्चारपासवण खेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमिइए। पडिक्कमामि। छहिं जीवनिकाएहिं।

पुढविकाएणं। आउकाएणं। तेउकाएणं। वाउकाएणं। वणस्सइकाएणं। तस्सकाएणं। पडिक्कमामि। छहिं लेसाहिं। किण्हलेसाए। नीललेसाए। काउलेसाए। तेउलेसाए। पउमलेसाए। सुक्कलेसाए। पडिक्कमामि। सत्तहिं भयट्ठाणेहिं। अट्ठहिं मयट्ठाणेहिं। नवहिं बभचेरगुत्तीहिं। दसविहे समणधम्मे। एगारसहिं उवासगपडिमाहिं। बारसहिं भिक्खुपडिमाहिं। तेरसहिं किरियाठाणेहिं। चउदसहिं भूअगामेहिं पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं। सोलसहिं गाहासोलसएहिं सत्तरसविहे असंजमे। अट्ठारसविहे अबंभे। एगुणवीसाए नायझयणेहिं। वीसाए असमाहिठाणेहिं। इकवीसाए सबलेहिं। बावीसाए परीसहेहिं। तेवीसाए सुअगडज्झयणेहिं। चउवीसाए अरिहंतेहिं। पणवीसाए भावणाहिं। छव्वीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेहिं। सत्तावीसाए अणगारगु-

णेहिं। अट्ठावीसाए आयारपकप्पेहिं। एगुणतीसाए पावसुअपसंगेहिं। तीसाए मोहणीअट्ठाणेहिं। इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं। बत्तीसाए जोगसंगहेहिं। तित्तीसाए आसायणाएहिं। अरिहंताणं आसयणाए। सिद्धाणं आसायणाए। आयरिआणं आसायणाए। उवज्झायाणंआसायणाए। साहूणं आ०। साहूणीणं आ०। सावयाणं आसायणाए। सावियाणं आ०। देवाणं आसायणाये। देवीणं आ०। इहलोगस्स आ०। परलोगस्स आ०। केवलिपण्णत्तस्सधम्मस्स आ०। सदेवमणुआसुरस्सलोगस्स आ०। सव्वपाणभूअजीवसत्ताणं आ०। कालस्स आ०। सुअस्स आ०। सुअदेवयाए आसा०। वायणारिअस्स आ०। जंवाइद्धं वच्चामेलिअं हीणक्खरं। अच्चक्खरं। पयहीणं। विणयहीणं। घोसहीणं। जोगहीणं। सुट्ठु दिन्नं, दुट्ठु पडिच्छिअं। अकाले कओ सज्झाओ

काले न कओ सज्झाओ । असज्झाए सज्झाइयं। सज्झाइए न सज्झाइयं। तस्स मिच्छामि दुक्कडं । णमो चउवीसाए तित्थयराणं उसभाइमहावीर-पज्जवसाणाणं इणमेव निग्गंथं पावयणं। सच्चं । अणुत्तरं । केवलियं । पडिपुन्नं । नेआउअं । संसुद्धं । सल्लगत्तणं । सिद्धिमग्गं । मुत्तिमग्गं । निज्जाणमग्गं । निव्वाणमग्गं । अवितहमविसंधि । सव्वदुक्खपहीणमग्गं । इच्छंठियाजीवा। सिज्झंति । बुज्झंति । मुच्चंति । परिनिव्वायंति । सव्वदुक्खाणमंतंकरंति । तंधम्मं सद्दहामि । पत्तियामि । रोएमि । फासेमि । पालेमि । अणुपालेमि। तं धम्मं सद्दहंतो । पत्तिअंतो । रोअंतो । फासंतो । पालंतो । अणुपालंतो । तस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स । अभुट्ठिओमि । आराहणाए । विरओमि विराहणाए । असंजमं । परिआणामि । संजमं उवसंपज्जामि । अबंभं परिआणामि । बंभंउवसंपज्जामि । अकप्पं परि-

आणामि। कप्पं उवसंपज्जामि। अन्नाणं परिआणामि। नाणं उवसंपज्जामि। अकिरिअं परिआणामि। किरिअं उवसंपज्जामि। मिच्छत्तं परिआणामि। सम्मत्तं उवसंपज्जामि। अबोहिं परिआणामि। बोहिं उवसंपज्जामि। अमग्गं परिआणामि। मग्गं उवसंपज्जामि। जं संभरामि। जं च न संभरामि। जं पडिक्कमामि। जं च न पडिक्कमामि। तस्स सव्वस्स देवसिअस्स अइयारस्स पडिक्कमामि। समणोहं। संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे अनियाणो दिट्ठिसंपन्नो। मायामोसविवज्जिओ। अड्डाइज्जेसु। दीवसमुद्देसु। पन्नरससुकम्मभूमीसु॥ जावंतिकेविसाहू। रयहरणगुच्छ पडिग्गहधारा॥ पंचमहव्वयधारा, । अट्ठार सहस्स सीलंगधारा॥ अक्खयायार चरित्ता। ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि। खामेमि सव्वजीवे,सव्वे जीवा खमंतुमे॥ मित्ति मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झ

न केणई ॥१॥ एवमहं अलोइय, नंदिअ गरहिय दुगंच्छियंसम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणेचउव्वीसं ॥२॥ इति श्री साधू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

॥ अथ पख्खी सूत्र ॥

तित्थकरे अ तित्थे, अतित्थसिद्धे य तित्थसिद्धे अ। सिद्धे यजिणेअ रिसी, महरिसि नाणं च, वंदामि ॥ १ ॥ जे अ इमं गुण रयणसायर, मविराहिऊण तिणिसंसारा। ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणाभिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मोअ। खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया मद्दवं चेव ॥३॥ लोगंमि संजया जं करंति, परम रिसि देसियमुआरं ॥ अहमवि उवट्ठिओ तं, महव्वय उच्चारणं काउं ।४। सेकिंतं महव्वय उच्चारणा। महव्वय उच्चारणा पंचविहा पणत्ता ॥ राई भोअण वेरमणछट्ठा। तंजहा। सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥१॥

सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥२॥ सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥३॥ सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥४॥ सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥५॥ सव्वाओ राइभोअणाओ वेरमणं॥६॥

नत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाओवेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चक्खामि से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएज्जा। नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा, पाणे अइवायंतेवि। अन्नेनसमणुज्जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से पाणाइवाए चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ। दव्वओणं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु। खित्तओणं पाणाइवाए सव्वलोए कालओणं पाणाइवाए दियावा

रात्रोवा । भावत्रोणं पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा । जंपिय मये इमस्स धम्मस्स केवलि पणत्तस्स अहिंसा लख्खणस्स सच्चाहिठ्ठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरणसोवणियस्स उवसमप्पभवस्स नव वंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खाविच्चियस्स कुख्खीसंवलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालिअस चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलख्खणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहिआए अणभिगमेणं अभिगमेण वा पमाएण रागदोस पडिवध्धआए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुआए चउक्कसाओवगएणं पंचिंदिओवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोख्ख मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गह-

गेसु पाणाइवाओ कओवा कारिओवा कीरंतोवा परेहिं समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुपन्नं सवरेमि सव्वं अणागयंपच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सिओहिं नेव सयंपाणे अइवाइज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायावि ज्जा पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणिज्जा तं जहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं भवइ भिक्खूवा भिक्खूणीवा संजयविरय पडिहय पच्चक्खाय पाव-कम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्स-वेरमणे हिएसुहे खमेनिस्सेसिए आणुगामिए पार-गामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोण-याए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महा-

गुणे महाणुभावे महापुरिसाणु चिन्ने परमरिसिदेसिए पसस्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिक्कटु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि पढमे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओवेरमणं ॥ १ ॥ अहावरेदोच्चे भंते महव्वए मुसावायाओवेरमणं सव्वं भंते मुसावायं पच्चक्खामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसयं मुसंवइज्जा नेवन्नेहिं मुसंवायाविज्जा मुसंवयंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । से मुसावाए चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मुसावाए सव्वदव्वेसु खित्तओणं मुसावाए लोएवा अलोएवा

कालओणं मुसावाए दियावा राओवा भावओणं मुसावाए रागेणवा दोसेणवा जम्मए इमस्स धम्मस्स केवलिपरणात्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतीप्पहाणस्स अहिरणसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभ चेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वितिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसावइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अवोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाएमोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुणणभारियाए सायासुक्खमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासि

अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे तं दुक्खखयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि दोच्चे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओवेरमणं॥५॥अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणाओवेरमणं सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चक्खामि से गामेवा नगरेवा रन्नेवा अप्पंवा बहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंत्तंवा अचित्तमंत्तंवा नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ

भावओ दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणधारणि-
ज्जेसु दव्वेसु खित्तओणं अदिन्नादाणे गामेवा
नगरेवा रन्नेवा कालओणं अदिन्नादाणे दिया-
वा राओवा भावओणं अदिन्नादाणे रागेणवा
दोसेणवा जंमए इमस्स धम्मस्स केवलि-
पण्णत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स
विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसुवण्ण-
यस्य उवसमप्पभवस्स नवबंभचेर गुत्तस्स अ-
प्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स
निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स
गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खण-
स्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अ-
विसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणग-
मणपज्जवसाण फलस्स पुव्विंअन्नाणयाए अस-
वणयाए अबोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेणवा
पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए
मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओव-

गणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-
सुक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवग्ग
हणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा घि-
प्पंतंवा परेहिं समणुन्नाओ तं निन्दामि गरि-
हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं
अ इयं निंदामि पडुप्पन्नंसंवरेमि अणागयं प-
चक्खामि सव्वं अदिन्नादाणं जावज्जीवाए अ-
णिस्सिओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेव-
न्नेहिं अदिन्नं गिण्हा विज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि
अन्नेनसमणुजाणिज्जा तंजहा अरिहंतसक्खियं
सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पस-
क्खियं एवं हवइ भिखूवा भिक्खूणीवा संजय वि-
रय पडिहयपच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राओवा
एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा
एस खलु अदिन्नादाणस्स वेरमणे हिएसुहे खमे
निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं
पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं स-

व्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए अणुट्ठिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरे चउत्थे भंते महव्वए मेहुणाओ वेरमणं सव्वं भंते मेहुणं पच्चक्खामि से दिव्वंवा माणुसंवा तिरिक्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणंसेवाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुज्जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से मेहुणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खि-

त्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मेहुणे रूवेसुवा रूवेसहगएसुवा खित्तओणं मेहुणे उड्ढलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मेहुणे दियावा राओवा भावओणं मेहूणे रागेणवा दोसेणवा जंमए इमस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स नववंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंवलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वत्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजु तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्ससंसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अवोहियाए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं

पंचेदिओवसट्टेणं पडिपुणणभारियाए सायासोख्ख मणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविज्जंतोवा परेहिं समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुप्पन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चख्खामि सव्वं मेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयंमेहु णंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणंसेवाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नं न समणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं साहुसख्खियं देवसख्खियं अप्पसख्खियं एवं हवइ भिख्खूवा भिख्खूणीवा संजय विरय पडिहय पच्चख्खाय पावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्ते वा जागरमाणेवा एसखलु मेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरण-

याए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणि-याए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मुक्खयाए वोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥४॥ अहावरेपंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्वं भंते परिग्गहं पच्चक्खामि से अप्पंवा वहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहंपरिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। से परिग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ

कालओ भावओ दव्वओणं परिग्गहे सचित्ता-
चित्तमीसेसु दव्वेसु खित्तओणं परिग्गहे गामेसुवा
नगरेसुवा रन्नेसुवा कालओणं परिग्गहे दियावा
राओवा भावओणं परिग्गहे अपग्घेवा महग्घेवा
रागेणवा दोसेणवा जंमए इमस्स धम्मस्स
केवलिपण्णत्तस अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठि-
यस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरणसो-
वण्णियस्स उवसमप्पभवस्स नववंभचेरगुत्तस्स
अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खोसंब-
लस्स निग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदो-
सस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तील-
क्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स अविसंवाइयस्स
संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसा-
णफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबो-
हियाए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएण
रागदोस पडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए मंद-
याए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउकसाओव-

गण्णं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमण्णुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु परिग्गहो गहिओवा गाहाविओवा घिप्पंतोवा परेहिं समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं परिग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयंपरिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हाविज्जा परिग्गहंपरिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइ भिक्खूवा भिक्खूणीवा संजयविरयपडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलु मेहुणस्सवेरमणे हिए सुए खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्ख-

णयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए वोहिलाभाए संसारुत्तारणयए त्तिकट्टु उवसंपज्जिनाणं विहरामि पंचमे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओपरिग्गहाओवेरमणं ॥५॥ अहावरेछट्ठे भंते महव्वए राइभोयणाओवेरमणं सव्वं भंते राईभोयणं पच्चक्खामि से असणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइंभुंजिज्जा नेवन्नेहिंराइंभुंजाविज्जा राइंभुंजंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से राई भोयणे चउव्विहेपण्णत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं राईभोयणे

असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तओणं राईभोयणे समयखित्ते कालओणं राईभोयणे दियावा रत्तिंवा भावओणं राईभोयणे तित्तेवा कडुएवा कसाएवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा दोसेणवा जंमए इमस्स धम्मस्स केवलिपणत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरणसोवणियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खोसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वत्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचिअस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहियाये अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगा-

खगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहं-वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तं-वा भुंजावियंवा भुञ्जंतंवा परेहिंसमणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं राइ भोयणं जावज्जी-वाए अणिस्सिओहं नेवसयं राईभुंजिज्जा नेव-न्नेहिंराई भुंजाविज्जा राई भुंज्जंतेवि अन्नं न समणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्ध-सक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पस-क्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खुणीवा संजय-विरय पडिहय पच्चक्खायपावकम्मे दियावा रा-ओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागर-माणेवा एसखलुराईभोयणस्सवेरमणे हिएसुए-खमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वे-सिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं

सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणयाए तिकट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि छट्ठे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ इच्चेइयाइं पंचमहव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। अप्पसत्थायजेजोगा परिणामायदारुणा पाणाइवायस्सवेरमणे एसवुत्त अइक्कमे ॥१॥ तिव्वरागायजाभासा तिव्वदोसानहेवय मुसावायस्सवेरमणे एसवुत्त अइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गहंअजाइत्ता अविदिन्नेअउग्गहे अदिन्नादाणस्सवेरमणे एसवुत्त अइक्कमे ॥ ३ ॥ सद्दारूवारसागंधा फासाणंपावआरणे मेहुणस्सवेरमणे एसवुत्त

अइक्कमे ॥ ४ ॥ इच्छापुच्छायगेहीय कंखालोभे-
अदारुणे परिग्गहस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे
॥ ५ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओस-
मणधम्मे पढमंवयमणुरक्खे विरयामोपाणाइ-
वायाओ ॥ ६ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहि-
त्ताठिओसमणधम्मे वीयंवयमणुरक्खे विरिया-
मोअलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते
अविराहित्ताठिओसमणधम्मे तइयंवयमणुरक्खे
विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसणनाण-
चरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे चउत्थंव-
यमणुरक्खे विरयामोमेहुणाओ ॥ ६ ॥ दंसण-
नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे पंच-
मंवयमणुरक्खे विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥
दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे
छट्ठंवयमणुरक्खे विरयामोराईभोयणाओ ।११।
आलियविहारसमिओ जुत्तागुत्तोठिओसमणधम्मे
पढमंवयमणुरक्खे विरियामोपाणाइवायाओ।१२।

आलियविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमण धम्मे बीयंवयमणुरक्खे विरियामोअलियवयणाओ ॥ १३ ॥ आलियविहारसमिओजुत्तोगुत्तोठिओ-समणधम्मे तईयंवयमणुरक्खे विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ १४ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरक्खे विरियामोमेहुणाओ ॥ १५ ॥ आलियविहारस-मिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमणधम्मे पंचमंवयम-णुरक्खे विरयामो परिग्गहाओ ॥ १६ ॥ आलि-यविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमणधम्मे छट्ठंवयमणुरक्खे विरयामोराईभोयणाओ ।१७। आलियविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमण-धम्मे तिविहेणपडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिच्छत्तं एगमेवअ-न्नाणं परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥१६॥ अणवज्जजोगमेगं सम्मत्तंएगमेवनाणंतु उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २० ॥

दोचेवरागदोसे दुणियभाणाइं अट्टरुद्दाइं
परिवज्जंत्तोगुत्तो रख्खामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥
दुविहं चरित्तंधम्मं दुन्नियेभाणाइं धम्मसुक्काइं
उवसंपन्नोजुत्तो रख्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥
किण्हानीलाकाउ तिन्नियलेसाऊअप्पसत्थाओ
परिवज्जंतोगुत्तो रख्खामिमहव्वएपंच ॥ २३ ॥
तेउपम्हासुक्का तिन्नियलेसाओसुप्पसत्थाओ उव-
संपन्नोजुत्तो रख्खामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥
मणसामणसच्चविउ वायासच्चेणकरणसच्चेण
तिविहेणविसच्चविओ रख्खामिमहव्वएपंच ।२५।
चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसन्नातहाकसायाय
परिवज्जंतोगुत्तो रख्खामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥
चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहंसंवरंसमाहिंच
उवसंपन्नोजुत्तो रख्खामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥
पंचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिव-
ज्जंतोगुत्तो रख्खामिमहव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचे-
दियसंवरणं तहेवपंचविहमेवसज्जायं उवसंपन्नो-

जुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥ छज्जीवनिकायवहिं छप्पियभासाओ अप्पसत्थाओ परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥ छव्विहमब्भिंतरियं बज्झंपियछव्विहंतवोकम्मं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयट्ठाणाइं सत्तविहंचेवनाणविब्भिंगा परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिंडेसणपाणेसण उग्गह सत्ति कया महज्झयणा उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥ अट्ठमयट्ठाणाइं अट्ठयकम्माइं तेसिंबंधिंच परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३४ ॥ अट्ठयपवयणमाया दिट्ठाअट्ठविहनिट्ठिअठेहिं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणाइं संसारत्थायनवविहाजीवा परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ नवबंभचेरगुत्तो दुनवविहंबंभचेरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदस-

विहं असंवरंतहयसंकिलेसंच परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिट्ठाणा दसचेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ आसायणंचसव्वं तिगुणं एक्कारसंविवज्जंतो परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंतिदंडविरओ तिगरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लो तिविहेण पडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ४१ ॥ इच्चेयंमहव्वयउच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइवलंववसाओ साहणट्ठोपावनिवारणं निकायणा भावविसोही पडागाहरणं निजूहणा राहणा गुणाणं संवरजोगो पसत्थझाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमट्ठो उत्तमट्ठो एसखलुतित्थं करेहिं रइरागदोस महणेहिं देसिओ पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय संजमं उवइसिउं तिल्लुक्क सक्कयंठाणं अब्भुवगया नमोत्थु ते सिद्धवुद्ध मुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंत मप्पमेय

नमोत्थुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुते अरहओ नमोत्थुते भगवओ तिकट्टु इच्चेसा खलुमहव्वयउच्चारणाकया इच्छामोसुत्तकित्तणं काउं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिं इमंवाइयं छव्विहमावस्सयं भगवंतं तंजहा सामाइयं चउवीसत्थओ वंदणयं पडिक्कमणं काउसग्गो पच्चक्खाणं सव्वेहिं विएय मि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सनिज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नतावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभवे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स अंतोचउमासीए अंतोसंवच्छरस्स जंवाइयं पडिढयं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जि-

त्ताएं विहरामि अंतोपरुखस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमोपडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तंपडिवज्झामो तस्समिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा दसवेआलियं कप्पियाकप्पियंचुल्लकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नंदीअणुयोगदाराइं देविंदथुओ तंदुलवेआलियं चंदाविज्झयं पमायप्पमायं वीयरागसुयं विहारकप्पो चरणविसोही आउरपच्चक्खाणं महापच्चक्खाणं सव्वेहिंपिए यंमि अंगवाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्ता-

या पडुवियाया तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रो-एमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावेसद्दहं-तेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं अणुपालं-तेणं अंतोपख्खस्स जंवाइयं पढियं परिअट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुख्खख्ख-याए कम्मख्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणंविहरामि अंतोपख्खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं न पुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलो-एमो पडिक्कमामी निंदामी गरिहामी वउट्टेमो-विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो आहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो तस्समिच्छा-मिदुक्कडं नमोतेसिं खमासमणाणं जेहिंइमंवा-इयं अंगबाहिरियं उकालियं भगवंतं तंजहा उत्तरज्झयणाइं दसाओकप्पोववहारो इसिभा-सियाइं महानिसीहं जंबुद्दीवपन्नत्ती सूरपन्नत्ती

चंदपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्तो खुड्डियाविमाण-
परिभत्ती महल्लियाविमाणपविभत्ती अंगचूलि-
या वंगचूलिया विवाहचूलिया अरुणोववाए वरु-
णोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए वेलंधरो-
ववाए देविंदोववाए उट्ठाणसुए समुट्ठाणसुए
नागपरियावलियाओ निरयावलियाओ कप्पि-
याओ कप्पवडिंसयाओ पुप्फियाओ पुप्फचुलि-
याओ वह्नीदसाओ आसीविसभावणाओ दि-
ट्ठीविसभावणाओ चारणसुमिणभावणाओ म-
हासुमिणभावणाओ ते अग्गिनिसग्गाणं सव्वे-
हंपिएय'मि अंगवाहिरए उकालिए भगवंते
ससुत्ते सअत्थे सगंथे सन्निजुत्तोए ससंगह-
णीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं
पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तिया-
मो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो ते
भावे सद्दहंतेहिं पत्तिय'तेहिं रोय'तेहिं फासंते-
हिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स जंवा-

इयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपक्खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोयमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहंतवोकम्मं पायच्छित्तंपडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कडं नमोतेसिं खमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगंगणिपिडगं भगवंतं तंजहा आयारो सूयगडो ठाणं समवाओ विवाहपन्नत्ती नायाधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइअदसाओ पण्हावागरणं विवागसुयं दिट्ठिवाओ सुदिट्ठिसुहाओ सव्वेहिं पिएयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे भगवंते ससुत्ते सअत्थे सगंथे

सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्टंति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ सुय देवया भगवइ; नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥ तेसिंखवेउसययं, जेसिंसुयसायरेभत्ती १ इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं





देववन्दन तथा प्रातःकाल और सायंकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुतियें ॥

॥ द्वितीया की स्तुति ॥

महीमंडणं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलनाणगेहं । महानंद लच्छी, बहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, भवस्संति ते सव्व भव्वाण ताया । तहा संपयं जे जिणा वट्टमाणा, सुहं दिंतु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥२॥ दुरुत्तार संसार कुव्वारपोयं, कलंकावली पंक पक्खाल तोयं । मणोवंछियच्छे सुमंदारकप्पं, जिणंदागमं वंदिमो सुमहप्पं ॥३॥ विकोसे जिणंदाणणं भोजलीणा, कलारूवलावण्ण सोहग्ग पीणा । वहं तस्स

चित्तं णिच्चं पि झाणं, सिरी भारई देहि मे सुद्धनाणं ॥४॥ इति श्रीसीमंधरजीकी स्तुतिः ॥

॥ पंचमी की स्तुति ॥

पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानक्षमं, पंचानुत्तरसीमदिव्यपदवी वश्याय मन्त्रोत्तमम् । येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि तत्कारिणां, श्रीपंचाननलांछनः सतनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम् ॥ १ ॥ ये पंचाश्रवरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः । कृत्वा पंचहृषीकनिर्जयमथो प्राप्ता गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतभृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥२॥ पंचाचारधुरीणपंचमगणाधीशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितं पंचेषु पंचत्वदम् । दीपाभं गुरुपंचमारतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी, पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो या

पंचदिव्यं व्यधात् । प्रहवो पंचजने मनोमतकृतो स्वारत्न पश्चालिका, पंचम्यादितपोवतां भवतु सा सिद्धायिका त्रायिका ॥४॥ इति पंचमीस्तुतिः

॥ अष्टमी की स्तुति ॥

चउवीसे जिनवर प्रणमुं हुं नितमेव, आठम दिन करियें चन्द्रप्रभुनीसेव। मूरति मन मोहे जाणे पूनिम चंद, दीठां दुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इन्द्र पूजे प्रभु जीन पाय, इन्द्राणी-अपछरा कर जोड़ी गुण गाय। नन्दीश्वर द्वीपें मिलि सुरवरनी कोड। अठाई महोच्छव, करता होडा होड ॥२॥ शेत्रुंजा शिखरें जाणी लाभ अपार, चउमासें रहिया गणधर मुनि परिवार। भवियणने तारे देई धरम उपदेश। दूध-साकरथी पण वाणी अधिक विशेप ॥ ३ ॥ पोसो-पडिक्कमणुं करिये व्रत-पच्चक्खाण, आठम तप करतां

आठ करमनी हाण। आठ मङ्गल थाये दिन-दिन कोडि कल्याण॥ जिनसुखसूरि कहे इम जीवत जनम प्रमाण॥ इति अष्टमी स्तुति॥

मौन एकादशी की स्तुति।

—०—

अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलम् तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपलं केवलमलम्। वल-क्षैकादश्यां सहसि लसदुद्दाममहसि, चितौ कल्याणानां क्षपति विपदः पंचकमदः॥ १॥ सुपर्वेंद्रश्रेण्यागमनगमनैर्भूमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं। जिनानामप्यायुः क्षणमतिसुखं नारकसदः, चितौ० ॥ २॥ जिना एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्त्तॄणामिति च विदितं शुद्धसमये। अनिष्टारिष्टानां चितिरनुभवेयुर्बहुमुदः, चि०॥ ३॥ सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचन्द्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्काखिलभवननाथाः समुदिताः।

तपो यत्कर्त्तॄणां विदधति सुखं विस्मितहृदः, चितौ० ॥ ४ ॥ इति मौन एकादशी स्तुति ॥

॥ चौदश की स्तुति ॥



प्रथम तीर्थंकर आदिजिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गच्छ चोरासी जेहने थाप्या जाकी करणी एह। तेहने पाखी चउदस कीजे बीजे अंग कहाय, पाखो सूत्र प्रथम तुम देखो जिम जिम संशय जाय ॥ १ ॥ चउवीसे जिन पूजा कीजे मानो जिनकी आण, कल्पसूत्रनी पाखी चौदस जोवो चतुर सुजान। इण पर ठाम ठाम तुम देखो चौदस पाखी होय, भूला कांई भमो तुम प्राणी सांचो जिनधर्म जोय ॥२॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्र केरी साख, भविक जीव इक आराधो टीका चूर्णी भाष्य। आवश्यकसूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद-पुरवधर इनपर बोले ते निश्चय मन-

गावो ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो मन वांछित फल होय, जे जे आज्ञासूधो पाले ज्यानां विघन हरेय। सेवक इणपर करे वीनती सूधो समकित पाय, खरतर गच्छ मंडण कुमति विहंडण माणिक्यसूरि गुरुराय ॥ ४ ॥

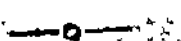
॥ पार्श्वनाथजीकी स्तुति ॥

हरिगीत छंद।

॥ द्रं द्रं कि धपमप धुधुमि धोंधों धसकिधर धप धोरवं, दोंदों किं दों दों दाग्डिदि दाग्डिदिकि द्रमकिद्रण रण, द्रं णवं। झझि-झूं कि झूं झूं झणण रणरण, निजकि निजजन, रञ्जनम्, सुरशैल शिखरे भवतु सुखदं पार्श्वजिनपतिमज्जनम् ॥ १ ॥ कटरेंगिनि थोंगिनि किटति गिगडद्दां धुधुकि धुटनट पाटवम्, गुणगुणण गुणगण रणकि णेंणें गणण गुणगण, गौरवम्। झझि झूं कि

झूँ झूँ, झणण रण रण, निजकि निजजन, सज्जना, कलयन्ति कमला, कलितकलमल मुकल मीश महेजिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठूँकि ठूँठूँ ठर्हिक ठहिक ठर्हिक ठर्हिपट्टा ताड्यते, तललोंकि लोंलों, त्रेंपि त्रेंपिनि, डेंपि डेंपिनि वाद्यते। उँ उँ कि उँ उं, थुंगि थुंगिनि, धोंगिधोंगिनि कलरवे। जिनमतमनंतं महिम तनुतां नमति सुरनर मुत्तमम् ॥ ३ ॥ पुंदांकि पुंदां पुपुड्दि पुंदां पुपुड्दि दोंदों अम्बरे। चाचपट चचपट रणकि णोंणों डणण डें डें, डंम्बरे॥ तिहां सरगमपधुनि निधपमगरस सस-ससस सुर सेवता, जिननाट्यरङ्गे कुशलमुनि शं दिशतु शासन देवता ॥ ४ ॥

॥ आंबिलकी स्तुति ॥



॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी, करुणासागर निजगुण

आगर शुभ समता रस धामी जी॥ श्रीसिद्ध-चक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रङ्गे जी, ते मानव श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर सङ्गे जी ॥ १ ॥ अरिहन्त सिद्ध आचारिज पाठक, साधु महा गुणवन्ता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवन्ता जी ॥ एहनुं ध्यान धरन्तां लहियें, अविचल पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जिणें ए नीति प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास जगीशें जी ॥ उजवाली सात-मथी करियें, नव आंबिल नव दिवसें जी ॥ तेर सहस वलि गुणिये गुणणुं, नवपद केरो सारो जी ॥ इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥ विमल कमलदल लोयण सुन्दर, श्रीचक्केसरि देवी जी ॥ नवपद सेवक भविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गच्छ नायक सद्गुरु, श्रीजिन भक्ति

मुनिंदा जी ॥ तासु पसायें इणपरिपभणे, श्री जिनलाभ सूरिंदा जी ॥ ४ ॥

॥ पर्युषण की स्तुति ॥

॥ वलि वलि हुं ध्यावु गाऊँ जिनवर वीर, जिनपर्व पजुसण दाख्यां धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासें हूंती दिन पंचास, संवच्छरी पडिक्कमणुं करियें त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार, करियें भलें भावें भरियें पुण्य भंडार ॥ वलि चैत्य प्रवाडें फिरतां लाभ अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकल्प सूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परभावना धूप अगर उक्खेव, इम भवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि साहम्मीवच्छल करियें वारंवार, केइ भावना भावे केइ तपसी शीलधार॥ अडदीह पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध्य कहे जिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥

॥ श्रीनेमिनाथजी की स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज, मयणमल्ल-अक्षोभितं, घन सघनश्याम शरीर सुन्दर शंख लंछन शोभितं ॥ शिवादेवि नंदन त्रिजग वंदन भविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर वंदू नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदे श्री-आदिजिनवर वीरजिन पावापुरं, वासुपूज्य चंपा पुरिय सीधा नेम रेवय गिरिवरे ॥ समेतशिखरे वीस जिनवर मुगति पहुता मुनिवरू, चउवीस जिनवर तेह वंदू सयल संघे सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणिये, छ छेद ग्रंथ प्रसत्थ अत्था चार मूल वखाणिये ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिन मत गाइये, एह वृत्ति चूर्णी भाष्य पंतालीश आगम ध्याइये ॥ ३ ॥ दुहुं दिसें बालक दोय जेहने सदा भवियण सुखकरू, दुख हरे अंबा लुंब सुन्दर दुरिय दो-हग अपहरू ॥ गिरनार मंडण नेमि जिनवर

चरणपंकज सेवियें, श्रीसंघ सहुने सदा मंगल करो अंबा देवियें ॥ ४ ॥

॥ दीपमालिका की स्तुति ॥

॥ पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्यंकपर्यासनः, क्ष्मापालप्रभुहस्तपालविपुलश्रीशुक्लशालामनु ॥ गोसे कार्त्तिकदर्शनागकरणे तूर्यारकांते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्रभुम् ॥ १ ॥ यद्गर्भागमनोद्भव व्रतवरज्ञानाप्तरा सिद्धणे, संभूयाशु सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् क्षणात् ॥ श्रीमन्नाभिभवादिवीरचरमास्ते श्री जिनाधीश्वरा; संघायानघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यने नांसि च ॥ २ ॥ अर्थात्पवमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाभिध, स्तत्पश्चाद्गणनायका विरचयांचक्रुस्तरां सूत्रतः ॥ श्रीमत्तीर्थसमथनैक समये सम्यग्दृशां भूस्पृशां, भूयाद्भावुककारक प्रवचनं चेतश्चमत्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थभावपरा सिद्धायिका देवता, चंचच्चक्रधरा

सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन चंद्रगिस्सुमतिनो भव्यात्मनः प्राणिनो, या चक्रे वमकष्टक्षतिनिधनं शार्दूलविक्रीडितम् ॥ ४ ॥

॥ वीस विहरमान की स्तुति ॥

पंचविदेहविषं विहरंता। वीस जिनेसर जग जगवंता ॥ चरणकमल तसु नामूं सीस। अहनिस समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पंच मेरुपासे भलकंता। सोहे वीस महा गजदंता ॥ तिण ऊपर छे जिनहर वीस। ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥ २ ॥ गणहर कहिय दुवालस अंग। थांनक वीस भणया तिहां चंग ॥ तिण ऊपर जे आणे रंग। ते नर पामे सुक्ख अभंग ॥ ३ ॥ जिनशासनदेवी चउवीस। पूरे मुझ मनतणी जगीस ॥ संघतणा जे विघ्न निवारे। तिहुअण जन मन वंछिय सारे ॥ ४ ॥

॥ पार्श्वजिनकी स्तुति ॥

समदमोत्तमवस्तुमहापणं, सकलकेवलनि-

मलसद्गुणं । नगरजेसलमेरविभूषणं, भजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरेश्वरनम्रपदांबुजाः, स्मरमहीरुहभंगमतंगजाः । सकलतीर्थकराः सुखकारका, इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जिनशासनं, विपुलमंगलकेलिविभासनं । प्रबलपुण्यरमोदयधारिका, फलति तस्य मनोरथ मालिका ॥ ३ ॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी, जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी । नरनरेश्वरकिन्नरसेविता, जयतु सा जिनशासनदेवता ॥ ४ ॥

॥ आदिनाथजीकी स्तुति ॥

वरमुत्तियहारसुतारगणं, वरचित्तकलत्तसुपत्तधणं । पंकय छप्पयदेवगणं, सिरिअब्भुय वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंसियपायजुआ, पणमोहमहीरुहमत्तगया । परिपालिअनिच्चलजीवदया, मम हुंति जिनागमसुक्खसया ॥ २ ॥ पणयंगिमहातमरोरहरं, कल्लाण

पयोरुहनुद्धिदकरं । सुहमग्गकुमग्गपयासकरं, पणमामि जिनागममन्हिकरं ॥३॥ सिरइन्दसमुज्ज-लगायलया, सुहझाणविणम्मियणगलया । असुरिंदसुरिंदसुरप्पणया, मम वाणि सुहाणि कुण-सुसया ॥ ४ ॥

॥ आदिजिन की स्तुति ॥

प्रणमूं परम पुरुपपरमेसर, परमातमपद धारीजी । प्रथम जिनेसर प्रथम नरेसर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिन राज जगत गुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । ऋपभजिनेसर लोक-दिनेसर, आतमसंपद भूपोजी ॥ १ ॥ पांच भरत वलि पांचे एरवत, पंच विदेह मझारोजी । काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या सिव पद सारोजी । वलिय अनागत काल अनंता, थास्ये इणही प्रकारोजी । संप्रति काले वीस विदेहे, वंदु वहु सुखकारोजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीजिनराज वखाण्या, गूथ्यां श्रीगणधारोजी । अंग दुवालस अतिसे

उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय भंग प्रमाणे, जिहां षट्द्रव्य विचारोजी । ते आगम मन शुद्ध आराध्यां, तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुन्दर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्केसरिदेवीजी । श्रीजिनशासन सानिध करणी द्यो, वंछित नित सेवीजी ॥ कल्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजिनचंद मुणिंद पसाये, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥४ इति॥

॥ अजितनाथजी की स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्रणमे देव अने देविंद ॥ भवलहरी गहरी सव मन धरी अमंद । श्रीसूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अतिशय वलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेहना गुणपेंतीस अगणित ऋद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक वंदुँ जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुत्र अरथ अनोपम जिन भाषित सिद्धांत । ...

दिक हेतुयुक्ति नवि भ्रांत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सहनाणी। सुणिये नित भविका आगमकेरी वाणी ॥ ३ ॥ शासननी साची देवी सानिधकारी। दुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥ साचे मन समरे ते सुख लाभ अपारी। जिनलाभ पयंपे होज्यो जय-जय कारी ॥ ४ ॥

॥ श्रीमहावीर स्वामी की स्तुति ॥

यदंह्रिनमतादेव, देहिनः संति सुस्थिताः। तस्मै नमोस्तु वीराय ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान्। नाभेयजिनादिजिनपति। नौमि यद्वचनपालनपरा जलांजलिंददतु दुःखेभ्यः ॥ २ ॥ वदंति वृन्दारुगणाग्रतो जिनाः, सदर्थतो यद्रचयंति सूत्रतः। गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे, तदंगिनामस्तुमतंनुमुक्तये ॥ ३ ॥ शक्रः सुरासुरवरैस्सहदेवताभिः, सर्वज्ञशासनसुखाय-समुद्यताभिः श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान्। भव्यान् जनान्नयतु नित्यममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥

॥ लघ्वी स्त्रोछंदसि वीर स्तुतिः ॥

वीरं देवं नित्यं वंदे १

जैनाः पादा युष्मान् पांतु २

जैनं वाक्यं भूयाद्भूत्यै ३

सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यम् ॥ ४ ॥

श्रीवीरजिन स्तुति ।

मूरति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंछन सात हाथ तनु मांन, दिन-दिन सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदित पद अरविंद, कामित भरपूरण अभिनव सुरतरुकंद ॥ भवियणने तारे प्रवहणसम निसदीस, चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवा वीस ॥ अरथे करि आगम भाख्या श्रीभगवंत, गणधर ते गूंथ्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके एकांत, समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी वारे

विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥ अहनिसि कर जोडी सेवे सुरनर इंद, जंपे गुणगण इम श्रीजिन लाभ सूरिंद ॥ ४ ॥

॥ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

नाभेयं संभवं तं, अजियसुविहयं, नंदणं सुव्वयव्वा ॥ सुप्पासं पउमनाहं, सुविधशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयांसं धर्मशातिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुंथुं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं, नमिमविनमिसो, पंच कल्याण एसु ॥ १ ॥ गब्भे हाणेसु जम्मे, वय गहणखणे, केवले लोयकाले, पत्थाणिव्वाणठाणे, पगवण समए, संथुआ भावसारं ॥ देवेहिं, भवणवणसए, विंतरे किंन्नरोहिं, तं मझं दिंतु मोक्खं, सयलजिनवरा, पंच कल्याण एसु ॥ २ ॥ हेउं तित्थंकराणं, जमिहअणवमं, भावतित्थंकरंतं । सव्वन्नूणं च पासा, अहमविनियमा, जायए सव्वकालं ॥ अन्नुन्नप्पत्तिएहिं, नियमसहणं, बीयअंकूररूवं । अव्वावाहं जिणाणं

जयउ पवयणं, पंच कल्याण एसु ॥३॥ गोरीगंधा रीकाली, नरवरमहिषी, हंससंगोरिहव्वा। सव्वछा माणमंबा, वरकमलकरा, रोहिणीवत्तअंबा ॥ पन्नत्ती वत्तपउमा, धणइसरणई, खित्तगेहाइवासा। संतिं संघे कुणंतु, गहगणसईया, पंच कल्याण एसु ॥४॥ इति श्रीचतुर्विंशतिजिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ श्रीशत्रुंजयको स्तुति ॥

सेत्रुंजामंडण आदिदेव। हूं अहनिस समरू तास सेव ॥ रायणतल पगलां प्रभूतणा। पूजि सफल फल सोहामणा ॥ १ ॥ तेवीस तीर्थंकर समवसरया। विमलाचल ऊपर गुण भरया ॥ गिरि कडणे आया नेमनाथ। ते जिनवर मेलो मुगतिसाथ ॥२॥ सोहम सांमी उपदिस्या। जंबुगणधरने मन वस्या ॥ पुडरगिरि महिमा जे मांह। ते आगम समरू मनउच्छाह ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुख कवडयच्छ। मन वंछित पूरण कल्पवृच्छ।

सिद्धक्षेत्रसिहरे सद्गुदेवता। भणें नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥४॥ इति श्रीशत्रुंजय स्तुति ॥

॥ नेमिनाथजीकी स्तुति ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपहाए। दीचा वर केवल ज्ञान अने निरवांए ॥ जसु तीन कल्याएक सुखकर सुरतरुकंद। तसु भवियए प्रएमो पाययुगलअरविंद ॥ २ ॥ अठावय चंपा पावापुर शुभ ठाए आइम वारम जिए चउवीसम जिएभाए ॥ अजितादिक वीसे पुहता सिवपुर वास। समेतशिखरपर प्रएमुं अधिक उल्हास ॥ २ ॥ जिनवर मुख हूंती सुणि त्रिपदी ततकाल। गएधारक गूंथ्या द्वादश अंग विशाल ॥ नयभंग पदारथ सत्त २ नव तत्त। भवियएने तारे सायर जिम वोहित्थ ॥ ३ ॥ चक्केसरि अंवा पउमादेवी प्रत्यच्च। श्रीसंघ मनोरथ पूरे वासुरवृत्त ॥ ध्यावे सुख पावे श्रीजिनलाभ सूरीश। जिनवर सुप्रसादे आस फले सुजगीस ॥४॥

॥ श्री शितलनाथजी की स्तुति ॥

॥ सुख समकितदायक कामित सुरतरुकंद । दृढरथ नृप राणी नंदाकेरो नंद ॥ भद्दिलपुर स्वामी फेडे भवना फंद । चित चोखे नमिये श्री शीतलजिनचंद ॥ १ ॥ अतीत अनागत हुआ होस्ये अनंत । संप्रति काले जे चेत्र विदेह विचरंत ॥ त्रिहु भवणे ठवणा सासय असासय हुंत । ते सगला त्रिकरण प्रणमुं श्रीअरिहंत ॥ २ ॥ कालिक उत्कालिक अंग अनंग पविध । नयभंग निच्चेपा स्याद्वाद मितसिद्ध ॥ भविजन उपगारी भारी जिन उपदेश । श्रुत श्रवणे सुणतां नासे कोडि कलेश ॥ ३ ॥ ब्रह्मजन्च असोका सासन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकित धार ॥ चिंता दुख चूरे पूरे मनह जगीस । ध्यान तेहनो धरिये कहे जिनलाभसूरिश ॥ ४ ॥

॥ समवसरण विचारगर्भित स्तुति ॥

॥ मिल चोविह सुरवर विरचे त्रिगडो सार

अढी गाउ उंचो पिहुलो जोंयण पार ॥ विच क
नकसिंहासन पदमासन सुखकार। श्रीतीरथना
यक वैसे चोमुखधार ॥ १ ॥ तीन छत्र सिरोवर
चामर ढोले इंद। देवदुंदुभि वाजे भांजे कुमति
फंद ॥ भामंडल पूंठे उलके जांण दिनंद।
तिहुअण जन भवि मन मोहे सयल जिनंद ॥२॥
द्रव्यभाव सुठवणा नाम निक्षेपा च्यार। जिण
गणहर भाख्या सूत्र सिद्धांत मझार ॥ जिनवर-
नी पडिमा जिन सरखी सुखकार। शुभ भावे
वंदो पूजो जग जयकार ॥३॥ दुख हरणी मंगल
करणी जिनवर वाणी। भवच्छेद कृपाणी मीठो
अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतिबूझो
भवि प्राणी। सुयदेवि पसायें पामे जयति सुना-
णी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री चैत्री पूणिमाकी स्तुति ॥

॥ सेत्रुंजागिरि नमिये ऋषभदेव पुंडरीक।
शुभ तपनी महिमा सुण गुरुमुख निरभीक ॥ शुद्ध

मन उपवासे विधिसुं चैत्य वंदनीक। करिये जिन आगल टाली वचन अलीक ॥१॥ शक्रस्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस। अक्षत गिणतीसे चढता तिम चालीस॥ पंचासनी पूजा भापइ इम जगदीस। तेहिज नित प्रणमुं स्वामी जिन चोवीस ॥२॥ सुदि पक्षनी पूनम चेत्र मास शुभ वार। विधिसेती लहिये आगम साख विचार॥ इम सोले वरसलग धरिये ज्ञान उदार। करतां नर नारी पामे भवनो पार ॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद। चक्केसरीदेवी सेविय नर सुरवृंद॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणंद। जंपे गणनायक श्रीजिनलाभसूरिंद ॥ ४ ॥

॥ नवपदजी की स्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुध वीर जिनंद। जिण नवपद महिमा भापी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मध उज्जल सातमथी नवदीस। नव आंबिल

उवझाय साहू नाण दंसण विनय पहाण ॥ चारित्त ब्रह्म किरिया तपि गोयम जिनभाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो वीसे ठाण ॥ १ ॥ उत्कृष्टे जिनवर एकसो सित्तर धीर । वलि काल जघन्ये जिनवर वीस गंभीर ॥ जिन थाय अनंत अतीत अनागत काल । ए वीसे थानक आराधी गुणमाल ॥ २ ॥ आवश्यक बे वेला जिनवंदन त्रिण काल । थानकपद गिणवो सहस दोय सुकमाल ॥ काउसग गुण स्तवना पूजा प्रभावना सार । इम शासन वच्छल करतां भवनो पार ॥ ३ ॥ समरीजें अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जरक जरकणी सुरपती वेयावच्च कर नाथ ॥ थानकतप विधसुं जे सेवे मन रंग । देवचंद्र आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥

॥ नवपदजी की स्तुति ॥

अनुपम गुण आगर सुरक सागर वंदित सुरनर वृन्दाजी ॥ नवपदमांहे मुख्य वखाण्या

ऋषभादिक जिनचंदाजी। भाव धरी ने जे भवि वंदे वेदे कर्म निकंदाजी। नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो पावो सुरक अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवझाया सकल मुनि सुखकारीजी। दंसण-नाण-चरण-तप नवपद धारे चित संसारीजी। नवमें भव भवि सिवपद पावे प्रवचन वाणी सालीजी। वीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे भाखीजी॥ २ ॥ द्वादस आठ छत्तीसे गुण वलि पणवीस सगवीस सारोजी। सडसठ इक्कावन वलि जेती सितर पचास प्रकारोजी॥ आसू चैत्रक मास धवल पख सातम थीं नव दिहसेंजी। तेरसहस नव पदनो गुणनो नव आंबिल नव दिहसेंजी॥ ३ ॥ विमलयच चक्केसरीदेवी रिध-सध वंछित दाताजी। उली नव-विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशाताजी। खरतर गच्छ जिन आज्ञाकारी पाटोधरपद मुक्ताजी। जिन सौभाग्य सूरिं [illegible] हंससूरिंद गुण उक्ताजी॥ ४ ॥

॥ शत्रुजय की स्तुति ॥

विमलाचल मंडन जिनवर आदिजिणंद
निरमम निरमोही केवलज्ञान दिणंद । जे पू
निवाणूं वार धरी आनंद । सेत्रुंजागिरिसिख
समवसर्या सुखकंद ॥ १ ॥ इण चउवीसीम
ऋषभादिक जिनराय । वलि काल अतीते अनं
चोवीसी थाय ॥ ते सवि इण गिरवर आवी फरस
जाय । इम भावी काले आवस्ये सवि मुनिरा
॥ २ ॥ श्रीऋषभना गणधर पुंडरीक गुणवंत
द्वादस अंग रचना कीधी जेण, महंत ॥ सव
आगम मांहे सेत्रुंज महिम महंत । भाखी जि
गणधर सेवो करि थिर चित्त ॥ ३ ॥ चक्केसरि
गोमुह कवड पमुह सुर सार । जसु सेवा कारण
थापे इन्द्र उदार ॥ देवचंद्रगणि भाखे भविजनने
आधार । सव तीरथमांहे सिद्धाचल सिरदार ॥४॥

॥ श्रीशांतिनाथजी की स्तुति ॥

शांति जिनेसर जग अलवेसर अचिरा उद

अवतरियाजी। विश्वसेन नृप नंदन जगगुरु हथ णापुर सुख करियाजी॥ ईतउपद्रव मारि विकारी शांति करी संचरियाजी। जे भवि मंगल कारण ध्यावे ते हुय गुण-गण दरियाजी॥ १॥ वर्त्तमान जिन सब सुखकारण अतीत अनागत वंदोजी। वारे चक्री नव नारायण नव प्रतिचक्री आनंदोजी॥ रामादिक जे पुरष सलाका वंदत पाप निकंदोजी। द्रव्य निक्षेपे जिनसम जाणो काटे भव भय छंदोजी॥ २॥ अंग उपांगे जिनवर प्रतिमा श्रीजिन सरखी भाखीजी। द्रव्य भाव विहुं भेदे पूजा महानिशीथे साखीजी॥ विपय निवृत्ती सत् आरंभे विनय तपी ते जाणोजी। शुभयोगे नहि आरंभकारी भगवइ अंग प्रमाणोजी॥३॥ थापना सत्ये देवी निर्वाणी श्रीसंघने सुखकारीजी। कारणथी सव कारज सीद्धे जिनवर आज्ञा धारीजी। श्रीजिनकीर्त्ति सूरीश्वर गच्छपति पाठक श्रीऋद्धिसारीजो। समकितधारी देव सहाई सुखसंपत्त दातारीजी॥ ४॥

॥ श्रीसीमधरजिन की स्तुति ॥

॥ मन सुद्ध वंदो भावे भवियण श्रीसीमंधर रायाजी। पांचसें धनुप प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी। श्रेयांस नरपति सत्यकि नंदन वृपभलंछन सुखदायाजी। विजय भली पुखलावइ विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूआ होस्ये वलिय अनंताजी। संप्रति काले पंच विदेहे वरते वीस विख्याताजी॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगवंधव जगत्राताजी। ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥ मोह मिथ्यात तिमिर भव नासन अभिनव सूर समाणीजी। भवोदधि तरणी मोच निसरणी नय निच्चेप पहाणीजी। ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो भविप्राणीजी ॥ ३ ॥ शासनदेवी सुरनर सेवी श्रीपंचागुली माईजी। विघन विडारण संपत्तिकारण सेवकजन सुखदाईजी ॥ त्रिभुवनमोहनी अंतर

जामनी जग जस ज्योति सवाईजी। सांनिध-
कारी संघने होयज्यो श्रीजिनहर्ष सहाईजी ॥४॥

॥ श्रीज्ञानपंचमी की स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति दातार। उत्तम पंचम तपविधि वायक ज्ञायक भाव अपार। श्रीपंचानन लांछन लांछित वंछित दान सुदक्ष। श्रीवर्द्धमान जिनंदसु वंदो ध्यावो भविजन पक्ष ॥ १ ॥ पूरण पंच महाश्रव रोधक बोधक भव्य उदार। पंच अनुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार। जे पंचेंद्रिय दम सिव पहुता ते सगला जिनराय। पांचम तप धर भवियण उपर सुथिर करी सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर पंचम गणधर जाण। पंच ज्ञान विचार विराजित भाजत मद पंच वाण। पंचम काल तिमरभरमांहे दीपकसम सोभंत। पांचम तपफल मूल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत ॥ ३ ॥ पंच परस पुरुषोत्तम सेवाकारक जे नरनार।

निरमल पांचम तपना धारक तेहमणी सुविचार। श्रीसिद्धायिकादेवी अहनिशि आपो सुक्ख अमंद। श्रीजिनलाभ सुरिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥

॥ श्रीमौन एकादशी की स्तुति ॥

अरनाथ जिनेश्वर दीचा नमिजिन ज्ञान। श्रीमल्लि जनम व्रत केवलज्ञान प्रधान। इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार। ए पंचकल्याणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक अधिक गुण धार। इग्यारे वारे प्रतिमा देसक धार। इग्यारे दुगुणा दोय अधिक जिनराय। मन सूधे सेव्यां सब संकट मिट जाय ॥ २ ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास। वलि गुणनो गुणिये विधिसेती सुविलास। जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान। इक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर भुवण वण सम्यग दरसणवंत। जिनचंद्र

सुसेवक वेयावच्च करंत ॥ श्रीसंघ सकलमें आराधक वहु जाए। जिनशासन देवी देव करो कल्याए ॥ ४ ॥

॥ श्रीरोहिणीतप की स्तुति ॥

जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत। रोहिणी तपनो फल भाख्यो श्रीभगवंत। नर-नारी भावे आराधो तप एह। सुख संपत लीला लक्ष्मी पामे तेह ॥ १ ॥ ऋषभादिक जिनवर रोहिणी तप सुविचार। जिनमुख परकासे वेठी परखदा वार। रोहिणी दिन कीजे रोहिणीनो उपवास। मन वंछित लीला सुन्दर भोग-विलास ॥ २ ॥ आगममें एहनो वोल्यो लाभ अनंत। विधसु परमारथ साधे सुधो संत। दुख-दोहग तेहनो नासि जाय सव दूर। वलि दिन-दिन अंगे वाधे अधिको नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिणी तप-फल जाए। सौभाग्य सदा जे पामे चतुर सुजाए। नित घर-घर महोच्छव नित

सिणगार। जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ चतुर्दशी की स्तुतिः ॥

अविरल कमल गवल मुक्ता फल कुवलय कनक भासूरं। परिमल बहुल कमलदल कोमल पदतललुलितनरेश्वरं॥ त्रिभुवन भवन सुदीप्र-दीपक मणिकलीका विमल केवलं। नवनव युगलजलधि परमित जिनवरनिकरं नामाम्यहं ॥१॥ व्यंतर नगर रुचिक वैमानिक कुल गिरि कुंडल-कुंडले। तारक मेरुजलधि नंदीसर गिरि गजदंतसुमंडले॥ वक्षस्कार भवन वन जोत्तर कुरुवैताढ्य कुंजिगा। त्रिजगति जयति विदितशाश्वतजिननतितततिरिहमोपारगा॥२॥ श्रुत रत्नेक जलधि मधु मधु मधुरिम रसभर गुरु सरोवरं। परमततिमिरकिरणहरणोध्दुर दिन कर किरण सहोदरं॥ गमनयहेतुभङ्गगंभीरिमगणधरदेव गीप्पदं। जिनवर वचन मवनिमवतात् सुचिदि-

शतु नतेषु संपदं ॥३॥ श्रीमद्वीर चरम तीर्थाधिप मुख कमलाधि वासिनी । पार्वण चंद्र विशद वदनोज्वल राज मराल गामिनी ॥ प्रदिशतु सकल देव-देवी-गण परिकलिता सतामियं विच कल-धवल कुवलयकल मूर्त्तिः श्रुतदेवी श्रुतोच्ययं ॥४॥

॥ बीजकी स्तुति ॥

मनसुध वंदो भावेभवियण श्रीसीमंधर राजाजी । पांचसे धनुष प्रमाण विराजित कंचन-वरणी कायाजी ॥ श्रेयांस नरपति सत्यकी नंदन वृषभ लंछन सुखदायाजी । विजय भली पुखलाइव विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतित जे जिनवर हूवा होस्ये जेह अनंता जी । संप्रतिकाले पंचविदेहे वरतेवीस विख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत गुणाकर जग वंधव जगत्राता जी । ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिव सुख सताजी ॥२॥ अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी । मोहमिथ्यात्व तिमिर-

भरनाशन अभि नव सूर समाणीजी ॥ भवोदधि तरणी मोक्ष नीसरणी नयनिक्षेप सोहाणीजी । ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो भविप्राणी जी ॥३॥ शासनदेवी सुरनर सेवी श्रीपंचांगुली माईजी । विघन विडारणी संपत्तिकारणी सेवक जन सुखदाईजी ॥ त्रिभुवनमोहनी अंतरजामनी जगजस ज्योतिसवाईजी । सानिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनहर्ष सुहाईजी ॥ ४ ॥

॥ पञ्चमीकी स्तुति ॥

पंच अनंत महंत गुणाकर पंचमि गति दातार । उत्तम पंचमि तप विधि दायक ज्ञायक भाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांछन लांछित वांछित दानसुदक्ष । श्रीवर्द्धमान जिणंदसु वंदो आणंदो भविपक्ष ॥१॥ पूरण पंचमहाश्रव रोधक बोधक भव्य उदार ॥ पंच अणुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंद्रिय दमि शिव पुहता ते सगला जिनराय । पंचमी तप धर भवियण उपर

सुथिर करो सुपसाय ॥२॥ पंचाचार धुरंधर युगवर पंचम गणधर वाण। पंचज्ञान विचार विराजित भाजित मद पंच वाण ॥ पंचम काल तिमिरभर-मांहे दीपक सम सोभंत। पंचम तप फल मूल प्रकाशक ध्यावो जिनसिद्धांत ॥३॥ पंच परम पुरुषोत्तम सेवा कारक जे नर-नार। वलि निरमल पंचमी तप धारक तेहभणी सुविचार ॥ श्रीसिद्धायिका देवी अहनिस आपो सुख अमंद। श्रीजिनलाभ सुरिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ४

॥ ग्यारसकी स्तुति ॥

अरनाथ जिनेसर दीक्षा नमीजिन ज्ञान। श्रीमल्लिजन्म व्रत केवलज्ञान प्रधान॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार। ए पंच कल्याणक समरीजे जयकार ॥१॥ इग्यारे अनुपम एक अधिक गुणधार। इग्यारे वारे प्रतिमा देशक धार। इग्यारे दुगणा दोय अधिक जिनराय। मन सुध सेव्यां भव संकट मिटजाय ॥ २॥ जियांवरस

इग्यारे कीजे व्रत उपवास । वलि गुणनो गुणिये विधिसेती सुविलास ॥ जिन आगम वाणी जाणी जगत प्रधान । एक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥३॥ सुर असुर भुवणवण सम्यगदरसन वंत ॥ जिनचंद्र सुसेवक वेयांवच्च करंत ॥ श्री संघ सकलमें आराधक वहुजाण । जिन शासन देवी देव करो कल्याण ॥ ४ ॥

॥ श्री महावीर स्वामीकी स्तुति ॥

महावीर जिनेश्वर प्रणमुं वारंवार ।
सर्वज्ञ निरंजन करुणारस भंडार ॥
जगनाथ दिवाकर सुखकर हितकर जान ।
जो भविजन सेवे पावे केवलज्ञान ॥ १॥
तीर्थंकर शंकर सकल विश्व आधार ।
अगणित गुण वरिया आतम ज्ञान उदार ॥
शिवपद जग उत्तम आनन्द अनुभव सार।
पदपंकज सेवा सुख सम्पत्ति दातार ॥ २ ॥
श्रुतज्ञान जगतमें करता वहु उपकार ।

शिरताज वखाण्या अनुयोगद्वार मझार ॥
अमृत रस पीवो जिन आगम सुखकन्द।
जो नित प्रति ध्यावे पावे परमानन्द ॥ ३ ॥
जिन आणा मीठी प्रेम धरी चित लाय।
निजगुरु प्रसादे दुःख दुर्गति मिट जाय ॥
आनन्द मनरंगे भवसागर तिरजाय।
श्रुतदेवी सानिध निज करणी हुलसाय ॥४॥

॥ वर्धमानजिन स्तुति ॥

मूरति मन मोहन कंचन कोमल काय। खिद्धारथ नन्दन त्रिशलादेवी सुमाय॥ मृगनायक लंछन सातहाथ तनुमान। दिनदिन सुख दायक स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदितपद अरविंद। कामित भर पूरण अभिनव सुरतरु कंद॥ भवियणनें तारे प्रवहण सम निशि दीस। चौवीशे जिनवर प्रणमुं विसवा वीस ॥२॥ अरथे करि आगम भाख्या श्रीभगवंत। गणधरंते गूंथ्या गुणनिधि ज्ञान अनंत॥ सुरगुरु पण महिमा

॥ श्रीनेमिनाथजी की स्तुति ॥

ग्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादवकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी जास, मति सहित उदार ॥ सुन्दर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अभिराम ॥ तास चमा कल्याण मुनि, निशिदिन नमत कल्याण ॥ ५ ॥

॥ श्रीपार्श्वनाथजी की स्तुति ॥

पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥ नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामासुत सार ॥ श्री गौडीपुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिभुवन पति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥ ध्यान धरंतां एह नुं, प्रगटे परम कल्याण ॥ ६ ॥

॥ श्रीमहावीर प्रभुकी स्तुति ॥

वंदूं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥

जन्म जरा मरणादि रूप, भव-ताप निवारण ॥
श्री सिद्धारथ तात-मात, त्रिशला तनुजात ॥
सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन विख्यात ॥
अमृतरूपें राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥
क्षमाप्रमुख कल्याणमुनि, आपो करि सुपसाय ॥७॥

॥ सरस्वती की स्तुति ॥

अवामा वामादे सकलमुभयः कालघटना। द्विधा भूतं रूपं भगवदभिधेयं भवतिय ॥ त्तदंतमंत्रं मे स्मरहरमयं सेंदुममलं निराकारं शस्वज्जप नरपते सिव्यतु सते ॥ १ ॥ अविरलशब्दघनोघा। प्रक्षालितसकलभूतलकलंकाः ॥ मुनिभिरुपासिक्तचरणा। सरस्वती हरतु मे दुरितं ॥ २ ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनं। दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम् ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां, साधूनां वंदनेन च। न तिष्ठति चिरं पापं, छिद्रहस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ अद्य प्रक्षालितं गात्रं, नेत्रे च सफलो कृते। मुक्तोहं सर्वपापे-

भ्यां, जिनेंद्र ! तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

हत्था जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर पूज्या नहीं, ते परघर काम करंत १ वाडी चंपो मोगरो, सोवन कूपलियांह ॥ पास जिनेसर पूजसां, पांचू आंगलियांह ॥१॥ जीवड़ा जिनवर पूजिये, पूजाना फल होय ॥ राजा नमे परजा नमे, आंण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलाकरे वागमें, वैठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंद्रमा, त्यूं सोभें महाराज ॥४॥ जगमें तीरथ दो वड़ा, सेत्रुंजो गिरनार ॥ उण गिरि ऋषभ समो सरया, उण गिरि नेमकुमार ॥५॥ मोहनी मूरत पासकी, मो मन रही लोभाय ॥ ज्यूं महदीके पातमें, लाली लखी न जाय ॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढ़ी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अजहु न वावडे, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते सांइ पंखियां, वसे जो गढ़ गिरनार ॥ चूंच भरे फल फूलसुं, चाढ़े नेमकुमार ॥ ८ ॥ श्रीकेशरि-

यानाथकूं, नमन करूं चित चाय ॥ ऋद्धि-वृद्धि मोहे दीजिये, दिन-दिन अधिक सवाय ॥ ६ ॥ श्रीकेसरियानाथके, केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके लाडले, वसे पहाडां वीच ॥ १० ॥ इस रागको नाम कल्याण हे, प्रभुजीको नाम कल्याण ॥ सकल सभा कल्याण हे, जब प्रगटी राग कल्याण ॥११॥ सोरठ राग सुहामणो, मुखां न मेली जाय ॥ ज्यूं-ज्यूं रात गलंतडी, त्यूं-त्यूं मीठी थाय ॥१२ धंदो कर धन जोडियो, लाखां उपर कोड़ ॥ मरती वेला मानवी, लियो कंदोरो तोड़ ॥ १३ ॥

दया गुणांरी वेलड़ी, दया गुणांरी खांण ॥ अनंत जीव मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगति-तरु वेलडी, रोपी आद जिनंद ॥ श्रावक कुल मंडन भई, सींची सर्व जिनंद ॥२

चैत्यवन्दन-संग्रह ।

॥ सिद्धाचलजी का चैत्यवंदन ॥

सिद्धो विज्जाइ चक्की नमि विनमी । मुणी पुंडरीओ मुनिंदो ॥ बाली पज्जुन्न संबो भरहसग मुणी सेलगो पंथगोय ॥ रामो कोडी पंच द्रविड नरवई नारदो पंडुपुत्ता । मुत्ता एवं अणेगे विमलगिरिमहं तित्थमेयं नमामि ॥ १ ॥

॥ श्रीस्तभन पार्श्वनाथजी का चैत्यवंदन ॥

श्रीसेढो तट मेरु धाम, थंभणपुर ठांम ॥ सुरतरु सम सिरि पास सांम, राजे अभिरांम १ विबुधेसर सिरि अभय देव संठवियाणं दिय थुइ जलसिरिय नील वर्ण, फण पल्लव मंडिय २ सुर-नर सुह कुसुमावलीए, शिवफल दायक

जांण ॥ आराहओ जदि एग मण, पावो पद कल्यांण ॥ ३ ॥

॥ नवपदजी का चैत्यवंदन ॥

श्रीअरिहंत उदार कांति अति सुन्दर रूप, सेवो सिद्ध अनंत संत आतम गुण भूप ॥ आचारज उवझाय साधु समतारस धाम, जिन भाषित सिद्धांत शुद्ध अनुभव अभिराम ॥ १ ॥ बोध-बीज गुण संपदा ए, नाण-चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परभव आणंद जगमांहि प्रसिद्धो, चिंतामणि सम जास जोग बहु पुन्ये लद्धो ॥ तिहुअण सार-अपार एह महिमा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संभारो ॥३॥ सिद्ध चक्र पद सेवतां ए, सहजानंद स्वरूप ॥ अमृतमय कल्याण-निधि प्रगटे चेतन भूप ॥ ४ ॥

॥ सीमंधरजिन-चैत्यवंदन ॥

॥ सीमंधर परमातमा, शिवसुखना दाता ॥

कोडि पण मुनि मनहरं ॥ श्री विमल गिरिवर शृङ्ग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडिनंत ए गिरिवरं ॥ मुक्ति रमणी वर्या रंगे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ पातालनरसुरलोक मांही, विमलगिरिपरतो परं ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवरशिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याईये ॥ निजशुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योति निपाइये ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परमपदस्थित जयकरं ॥ गिरिराज सेवाकरण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ८ ॥

॥ सिद्धाचलजी का दूसरा चैत्यवंदन ॥

श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र दीठे दुर्गति वारे॥ भाव धरीने जे चढे, तेने भवपार उतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥ पूर्व नवाणु रिखवदेव, ज्यां ठविया प्रभुपाय ॥२ सूरजकुंड सोहामणो, कवडजक्ष अभिराम ॥

नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥३॥

सीद्धाचल जीका चैत्यवंदन ॥

परमेसर परमातमा, पावन परसिद्ध ॥
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणे में दिट्ठ ॥ १ ॥
अचल अकल अविकारसार, करुणारस सिंधु ॥
जगती जन आधार एक, निःकारण वंधु ॥ २ ॥
गुण अनंत प्रभु ताहरा, किमही कह्या न जाय ॥
राम प्रभु जिनध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ।३।



स्तवन-संग्रह

॥ पञ्चतिर्थी का स्तवन ॥

सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम,
अरज सुणो एक जगगुरु मुझ आशाविशराम ॥
पूरव विदेहें विजय भली पुष्कलावई नाम, जिहां
विचरे जिनवर जी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥
धन ते लोक सुणे जे जोजन गामिनी वाण, धन
ते महियल चरण धरे जिहां जिनवर भाण ॥
धन ते भविजन जे रहे प्रभु ताहरे परसंग, वदन
कमल निरखी नित्य माणे उत्सव अंग ॥ २ ॥
सुगुरु मुखें प्रभु सुजस तुम्हीणो सांभल कान,
मिलवाने उलसे मन मांहरुं धरुं एक ध्यान ॥
भगति जुगति करवानी छे मुझ सघली जोड़,

पण प्रभु लग पहुंचीजें तेह नही पग द्रोड़।
आडा डुंगर अति घणा विच वहे नदिया
किम मुझथी अवराये प्रभुजी एटली दूर॥
खडली उलझो करे जोयवा मुख जिनर
पांख डली पाई नही ते विन किम सरे काज॥
वाटड़ली वहतो कोई न मिले सेंगू साथ, क
लियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ॥ ज
शशहर साथें कहुं संदेशा जेह, पण अलगो
ऊपरि वाडे निकले तेह॥ ५॥ जो कोई
प्रभुजी तुमथी एथ अवाय, तो इण भरत
वासी भविजन पावन थाय॥ साहिबनी तो
जर सघले सरखी होय, पण पोतानी प्राप्ति स
फल प्रति जोय॥ ६॥ अलगो छं पण मा
तुम शुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना आवे हि
डे खिण-खिण चित्त॥ हुं छूं सेवक तुं छे
हरो आतमराम, नहिंय विसारूं जीवुं ज्यां ल
ताहरुं नाम॥ ७॥ साचे दिलथी मुझशं धर

धरम सनेह, करुणाकर प्रभु करजो मोपरि महिर अछेह ॥ दूसम काल तणो दुःख टालो दीन दयाल, पालो विरुद संभालो निज सेवकशुं कृपाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग थकी पण करे अरदास, पण महोटानी महिर छतां नवि थाय निराश ॥ केई वसे प्रभु पासें केई वसेछे दूर, राज महिरनी रीतें सकलने जाणे हजुर ॥ ६ ॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वामि सुरंग; ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजें एक पलक जो थाये प्रभु तुझ संग, लाभ उदय जिन चंद्र लहे नित प्रेम अभंग ॥ १० ॥

॥ पंचतीर्थीका दूसरा स्तवन ॥

सफल संसार अवतार ए हु गुणुं, सामि सीमंधरा तुझ भगते भणुं ॥ भेटवा पायकमल भाव हियडे घणो, करिय सुपसाय जे वीनवुं ते सुणो ॥१॥ तुझशुं कूड अरिहंत शुं राखियें, जिस्यो अछे तिस्यो कर जोडि करि भांखियें ॥

अति सबल मुझ हिये मोह माया घणी, एक मन भगति किम करूं त्रिभुवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगडे, रीश चटको चढ़े लोभ वयरी नडे ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम अरिहंत तूं हीयडे नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवसने राति हियड़े अनेरो धरूं, मूढ मन रीझवा वलिय माया करूं ॥ तूंहि अरिहंत जाणे जिस्यो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुख ने दुःख जे हुं सहुं, मन तणी वात अरिहंत किणने कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा, दुःख हरि सुक्ख करि सामि सीमंधरा ॥५॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुणुं, धर्म न कराय प्रभु पाप पोतें घणुं ॥ एक अरिहंत तूं देव बीजो नहिं, एह आधार जग जाणजो अह्म सही ॥६॥ धण कणय माय पिय पुत्त परियण सहू, हस्यो बोल्यो रम्यो रंग रातो बहू ॥ जयो

जयो जगगुरु जीव जीवन धरा, तुझ समोवड नहिं अवर वाल्हेसरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाण सदा सांभलु, वारवर परपदामांहि आवी मिलु ॥ चित्त जाणु सदा सामि पाय उलगु, किम करु ठाम पुंडरगिरि वेगलु ॥ ८ ॥ भोलिड़ा भगति तूं चित्त हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रभु दृष्टिगोचर हुस्ये ॥ जेहने नामे मन वयण तन उल्लसे, दूरथी ढूकडा जेम हियड़े वसे ॥ ६ ॥ भल भलो एणि संसार सहू ए अछे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पछें ॥ ध्यान करतां सुपनमांहि आवी मिले, देखियें नयण तो चित्त आरति टले ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे तेहशुं नेह जे वात तुझ जी कहे ॥ तुझ पद भेटवा अति छणो टलवलुं, पंख जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी आभ कागल करुं, खीरसागर तणां दूध खड़िया भरुं ॥ तुझ मिलवा तणां सामि संदेशड़ा, इन्द्र

पण लखिय न शके अछे एवड़ा॥ १२ ॥ आपणे रंग भरि वात मुख जेटलो, उपजे सामि न कहाय मुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा राजराजेसरा लाड़ने कोड़ प्रभु पूर सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुव्व भवि मोह वश नेह हुवे जेहने, समरियें एणि संसार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल भमरो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंतनुं ध्यान हियड़े वस्युं, वापडुं पाप हिव रहिय करशे किस्युं ॥ ठाम जिम गरुडवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके रही ॥ १५ ॥ पापमें कज्ज सावज्ज सहु परिहरी सामि सीमंधरा तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्ध चारित्र कहिये प्रभु पालशुं, दुःख भंडार संसारमय टालशुं ॥ १६ ॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही, एह में वात अरिहंत आगल कही ॥ एवड़ी मारी भगति जाणी करी, आपजो वापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलस ॥ एम ऋद्धि-वृद्धि,

समृद्धि कारण, दुरित वारण, सुख करो ॥ उव-
झाय वर श्री, भक्तिलाभें, थुणयो श्री, सीमंधरो ॥
जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करो सामि,
मया घणी ॥ कर जोड़ि वलि वलि, वीनवुं
प्रभु पूर आशा मन तणी ॥ १८ ॥

॥ पंचमी वृद्ध स्तवन ॥

प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल ज्ञान उपाय ॥
पांचमि तप भणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥१
चउवीसमो जिनचंद, केवल ज्ञान दिणंद ॥
त्रिगडे गहगह्यो ए, भवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥
ज्ञान वडूं संसार, ज्ञान मुगति दातार ॥ ज्ञान
दीवो कह्यो ए, साचो सर्दह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन
लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकाश ॥ ज्ञान
विना पशु ए, नर जाणे किस्युं ए ॥४॥ अधिक
आराधक जाण, भगवती सूत्र प्रमाण ॥ ज्ञानी
सर्वतु ए, किरिया देशतु ए ॥ ज्ञानी श्वासो-
छ्वास, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही ए,

कोड़ वरस कही ए ॥ ६ ॥ ज्ञान तणो अधिकार, वोल्या सूत्र मझार ॥ किरिया छे सही ए, पण पाछें कही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो ज्ञान हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सूरो ए, शंख दूधें भरयो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मझार, पांचमि अक्षर सार ॥ भगवंत भांखीयो ए, गणधर सांखियो ए ॥ ६ ॥

॥ दूसरी ढाल कालहरा की देशी ॥

पांचमि तप विधि सांभलो, जिम पामो भवपारो रे ॥ श्रीअरिहंत इम उपदिशे, भवियणने हितकारो रे ॥ पां० ॥ १ ॥ मिगसर माह फागुण भला, जेठ आषाढ़ वैशाखो रे ॥ इण षट मासें लीजियें, शुभदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पां० ॥ २ ॥ देव जुहारी देहरें, गीतारथ गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति हुवे तो नंदी रे ॥ पां० ॥३॥ वे कर जोडी भावशुं, गुरु मुख करो उपवासो रे ॥ पांचमि पड़िक्कमणो करो, पढो पंडित गुरु पासो

रे ॥ पां० ॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन आरंभ टालो रे ॥ पांचमि स्तवन थुई कहो, ब्रह्मचरिज पिण पालो रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ पांच मास लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टी रे ॥ पांच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुभ दृष्टि रे ॥ पा० ॥ ६ ॥

॥ तीसरी ढाल उल्लाला की देशी ॥

हिव भवियण रे पांचमी उजमणो सुणो, घर सारू रे वारू धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आवंतां वलि दोहिलो, पुण्य जोगें रे धन पामंतां सोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो वलिय धन पामतां पण, धर्मकाज किहां वली, पांचमी दिन गुरु पास आवी कीजीयें काउस्सग्ग रली ॥ त्रण ज्ञान-दरिसण चरण टीको देइ पुस्तक पूजियें, आपना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा किजिये ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धांतनी रे पांच प्रति वीटांगणां, पांच पूठां रे मखमल सूत्र प्रमुख

तणां ॥ पांच डोरा रे लेखण पांच मजीसणा, वासकूंपा रे कांबी वारू वतरणां ॥ उल्लालो ॥ वतरणां वारू वलीह कमली पांच झिलमिल अति भली, स्थापनाचारिज पांच ठवणी मुहपत्ती पड-पाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच कोथल पंच नवकर वालियां, इण परें श्रावक करे पांचम उजमणां उजवालियां ॥ २ ॥ ढाल ॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजियें, घर सारू रे दान वलो तिहां दीजियें ॥ प्रतिमानी रे आगल ढोवणुं ढोइये, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उल्लालो ॥ जोइयें उपगरण देवपूजा काज कलशभृंगार ए, आरति मङ्गलथाल दीवो धूपधाणुं सार ए ॥ घन-सार केशर अगर सुखड अंगलूहणुं दीस ए, पंच-पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिशं पचवीश ए ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमिना रे सहास्मी सर्व जिमा-डियें, रात्रि जोगे रे गीत रसाल गवाडीये ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान आराधियें, ज्ञान दरिसणरे

उत्तम मारग साधियें ॥ उल्लालो ॥ साधियें मारग एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुरलोकमें नर लोक मांहे ज्ञानवंत ते आगलो ॥ अनुकमे केवल ज्ञान पामी सासतां सुख जे लहे, जे करे पांचमी तप अखंडित वीर जिणवर इम कहे ॥४॥ कलश ॥ एम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेसरो ॥ में थुण्यो श्री अरिहंत भगवंत, अतुल वल अलवेसरो ॥ जयवंत श्री जिन चन्द सूरिज, सकलचन्द नमंसियो ॥ वाचनाचारिज समय सुन्दर, भगति भाव, प्रशंसियो ॥ ५ ॥ इति श्रीपंचमी वृद्धस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ पार्श्वजिन अथवा लघुपञ्चमी का स्तवन ॥

पंचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥ पहिलुं ज्ञानने पछें किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥१॥ नंदिसूत्रमें ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति-श्रुत-अवधि अने मनःपर्यव-केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥२॥

मति अठावीश श्रुत चवदे वीश, अवधि छ असंख्य प्रकार रे ॥ दोय भेद मनःपर्यव दाख्युं केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥ चंद-सूरज ग्रह-नक्षत्र तारा, तेशं तेज आकाश रे ॥ केवलज्ञान समु नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ प्रसाद करीने, महारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पंचमो भेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥

॥ पार्श्व प्रभुका स्तवन ॥

॥ अमल कमल जिम धवल विराजे, गाजे गोडी पास ॥ सेवा सारे जेहनी सुर-नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोभागी साहिब मेरा वे, अरिहा सुग्यानी पास जिणंदा वे ॥ ए आंकणी सुंदर सूरति मूरति सोहे, मो मन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें पेखतां मानुं नव नविय छवि देखाय ॥ २ ॥ सोभा० ॥ अ० ॥ भव-दुःख भंजन जन-मनरंजन, खंजन नयनशं रंग ॥

श्रवण सुणी गुण ताहरा-माहरां, विकस्यां अंगो अंग ॥ ३ ॥ सां० ॥ अ० ॥ दूरथकी हुं आयो वहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथियां पहिडे नहिं साहिवा. एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सां० ॥ अ० प्रभु मुखचंद विलोकित हरपित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे रवि देखिने जिम, जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सां० ॥ अ० ॥ किसके हरि हर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें तुं वसे साहिव, शिवसुखनोही ठाम ॥ सां० ॥ अ० ॥ ६ ॥ माता वामा धन्य पिता जसु श्रीअश्वसेन नरेस ॥ जनमपुरी वणारसी, धन-धन काशीनो देश ॥ सां० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सतरेश बावीशें, वदी वैशाख वखाण ॥ आठम दिन भले भावशुं, मारी जात्र चढी परिणाम ॥ सां० ॥ अ० ॥८॥ सानिध्यकारी विघ्ननिवारी पर उपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जूहारता, मोरी सफल फली सहु आश ॥ सां० ॥ अ० ॥ ९ ॥

॥ विमलनाथजी का स्तवन ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फल्यो जी, कवण कनक फल खाय ॥ गयवर बांध्यो वारणें जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल जिन महारी तुम्हशुं प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिल्याजी, हियडुं हींसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुण खड खावा जाय ॥ आदर साहिबनो लही जी, कुण ल्ये रांक मनाय ॥ वि० ३ रत्न छते कुण काचनें जी, अलवे पसारे हाथ ॥ कुण सुरतरुथी ऊठिनें जी, बावल घाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं करूं जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज भवो भवें जी, तुंहिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ ॥

॥ मौन-एकादशीका स्तवन ॥

॥ समवसरण बेठा भगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत ॥ बारे परपदा बैटी जुड़ी, मागशिर शुदि इग्यारश चड़ी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन

कल्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अर दीक्षा लीधी रूवड़ी ॥ मा० ॥ २ ॥ नमिने ऊपनुं केवलज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा गवडी ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्याणिक हुवे तिम हीज, पंचासनी संख्या परगड़ी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम, दोढसें कल्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथ छे ए तिथि जेवड़ी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें गिणो, लाभ अनंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखड़ी ॥ मा० ॥ ६ ॥ मोनपणें रह्या श्रीमल्लिनाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ ॥ मोन तणी परी व्रत इम पड़ी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो लीजियें, चोविहार विधिशु कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें घडी ॥ मा० ॥८॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जावजीव पण अधिक उल्हास ॥ ए तिथि मोक्ष तणी पावड़ी ॥ मा० ॥९॥ ऊज-

मणुं कीजें श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यार इ-ग्यार ॥ करो काउसग्ग गुरु पाये पड़ी ॥ मा० १० देहरे स्नात्र करीजें वली, पोथो पूजीजें मन रली ॥ मुगतिपुरी कीजें ढूकड़ी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मौन इग्यारस महोटु पर्व, आराध्यां सुख लहि-यें सर्व ॥ व्रत पच्चक्खाण करो आखंडी ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसल शोल इक्याशी समे, कीधु स्तव न सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो थाहड़ी मा० ॥ १३ ॥

॥ श्रीशांतिनाथजी का स्तवन ॥

श्रीसारद मात नमूं सिरनामी, हुं गाउं त्रिभुवनके स्वामी ॥ संतहि संत जपै सब कोई, जां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥ शांति जपी ने कीजै कांमा, सोई कांम हुवै अभिरामा ॥ शांति जपी परदेश सिधावै, ते कुशले कमला ले आवे ॥ २ ॥ गर्भथकी प्रभु मारि निवारी, शांत-हि नाम दियो महतारी ॥ जे नर शांति तणा

गुण गावै, ऋद्धि अचिंती ते नर पावै ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सुहाई, ता नरकूं कुछ आरति नांही ॥ जो कछु वंछै सोही पूरै, दालिद्र दोष मिथ्यामल चूरै ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति प्रकासी, घट घट के भीतर प्रभु वासी ॥ स्वामि सरूप कह्या नवि जावै, कहितां मो मन अचरज थावै ॥ ५ ॥ डार दिया सबही हथियारा, जीता मोहतणा दल सारा ॥ नारि तजी शिवसुं रंग राचै, राज तज्या पिण साहिब साचै ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहीजै देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ऋद्धि सहू प्रभु पास लहीजै, भिक्षा हारी नांम कहीजै ॥७॥ निंदक पूजक हे सम भायक, पिण सेवगकूं सदा सुख दायक ॥ तजी परिग्रह भए जग नायक, नाम अतीत सबै विध लायक ॥८॥ शत्रु-मित्र सम चित्त गिणीजै, नांम देव अरिहंत भणीजै ॥ सयल जीव हितवंत कहीजै, सेवक जांण महा पद दीजै ॥ ६ ॥ सायर जैसा होय

गंभीरा, दूषण नहि इक मांहि सरीरा ॥ मेरु अचल जिन अंतरजामी ॥ पिण न रहै प्रभु एकण ठांमी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रभुजी सब देखे, पिण सुपनो कबहु नवि पेखै ॥ रीस विना बावीस परीसह, सैन्या जोती तें जगदीसह ॥ ११ ॥ मांन विना जग आंण मनावै, माया विना सबसुं मन लावै ॥ लोभ विना गुणरास ग्रहीजै, भिक्षु भये त्रिगडो सेवीजे ॥ १२ ॥ निग्रंथपणै सिर छत्र धरावै, नांम जती पिण चमर ढुलाव ॥ अभय दान दाता सुखकारण, आगै चक्र चलै अरि दारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल भणीजै, कर्म सबीको मूल खणीजै ॥ चौविह संघ जे तीरथ थापै, लक्ष घणी देखी नवि आपै ॥ १४ ॥ विनय वंत भगवंत कहावै, ना किसही कूं सीस नमावै ॥ अकिंचनको बिरुद धरावै, पिण सोवन पंकज पगधावै ॥ १५ ॥ तजि आरंभ निज आतम ध्यावै, शिवरमणीकूं साथ चलावै ॥ राग नही

सेवग पिड़ तारे, दूं प नहीं निगुणा संग वारे ॥१६॥ तेरी महिमा अदभुन कहिये, तेरे गुणाको पार न लहिये ॥ तु प्रभु समरथ साहिब मेरा, हु मन मोहन सेवक तोरा ॥ १७ ॥ तूं त्रिहु लोकतणो प्रतिपाला, मे हु अनाथ तू दीन दयाला ॥ तु शरणागत राखण धीरा, तु प्रभु तारक छै वड़-वीरा ॥ १८ ॥ तुम जेसें वड़भागज पायो, तो मेरो कारज चड्यो सवायो ॥ कर जोडी प्रभु विनवुं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥२० जनमण मरण निवारो तारो, भवसायरथी पार उतारो ॥ श्रीहथणापुर मंडण सोहे, तिहां जिन शांति सदा मन मोहे ॥ २१ ॥ पद्मसूरि गुरुराज पसायें, श्रीगुणसागरके मन भाये ॥ जे नर-नारी एक चित गावे, मन वांछित फल निश्चै पावे २१ .

इति श्रीशांतिनाथ-स्तवनं ॥

॥ चौरासी आशातनाओंका स्तवन ॥

॥ ढाल ॥ विलसै ऋद्धि समृद्धि मिलि ॥ देशी ॥

जय जय जिण पास जगत्र धणी, सोभा ताहरी संसार सुणी ॥ आयो हुं पिण धर आस घणी, करवा सेवा तुम चरण तणी ॥१॥ धन धन जे न पडे जंजालै, उपयोगसुं वैसे जिन आलै ॥ आशातना चउरासी टालै, साश्वता सुख तेहिज संभालै ॥ २ ॥ जे नाखै श्लेपम जिनहरमें, कलह करै गाली जूये रमै ॥ धनुपादि कला सीखण ढूकै, कुरलो तंबोल भखे थूकै ॥ ३ ॥ सुरेवाय वडी लघुनीत तणी, संज्ञा कंगुलिया दोप सुणी ॥ नख केस समारण रुधिर क्रिया, चांदीनी नाखै चांमडियां ॥ ४ ॥ दातण ने वमन पिये कावो, खावे धांणी फूली खावो ॥ सूवे वेसामण विसरावै, अज गज पशु ने दामण दावै ॥ ५॥ सिर नासा कान दशन आखै, नख गाल वपुपना मल नखै ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, विह चन अपणो कर

धन धरणो ॥ ६ ॥ वैसे पग ऊपर पग चढियां, थापे आणा दडे डुंडणियां ॥ सूकवे कप्पड पप्पड वडियां, नासीय छिपे नृप भय पडियां ॥ ७ ॥ शोके रोवे विकथा ज कहे, इहां संख्या वैतालीस लहे ॥ हथियार घडेने पशु बांधे, तापे नांणो परखे रांधे ॥८॥ भांजी निस्सही जिनगृह पेसे, धरे छत्र ने मंडपमें वेसे ॥ पहिरे वस्त्र अनें पनही, चामर वींझे मन ठांम नही ॥६॥ तनु तैल सचित्त फल फूल लिये, भूपण तज आप कुरूप थिये ॥ दरसणथी सिर अंजली न धरे, इगसाडे उत्तरासंग न करे ॥ ११ ॥ छोगो सिरपेच मोड जोडे, दडिये रमनें वेसे होडे ॥ सयणासुं जुहार करे मुजरो, करे भंड चेष्टा कहे वचन बुरो ॥ १० ॥ धरे धरणो भगडे उल्लंठी, सिर गूंथे वांधे पालंठी ॥ पसारे पग पहरे चावडियां, पग भटक दिरावे दुखड़ियां ॥ १२ ॥ करदम लूहे मैथुन मंडे, जू आवलि अंठ तिहां छंडे ॥ उघाड़े गुह्य करे वपटा,

कादे व्यापार तणी कयदा ॥ १३ ॥ जिनहर पर-
नालनो नीर धरै, अंघोले पीवा ठाम भरै ॥ दूषण
जिनभवनमें ए दाख्या, देववंदनभाष्यमें जे
भाख्या ॥ १४ ॥ सुज्ञानी श्रावक सगति छतां,
आशातन टालै वारसतां, परमाद वसै कोई थायै,
आलोयां पाप सहू जायै ॥ १५॥ तंबोल ने भोजन
पांन, जूआ, मल मूत्र शयन स्त्री भोग हुआ ॥
भूषण पनही ए जघन्य दसे, वरज्या जिनमंदिर
मांहि वसै ॥ १६ ॥ द्रव्यत ने भावत दोय पूजा,
एहनाहिज भेद कह्या दूजा ॥ सेवा प्रभुनी मन
शुद्ध करै, वंछित सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥
कलश ॥ इम भव्य प्रांणी भाव आंणी, विवेकी
शुभ वातना ॥ जिनविंब अरचै परी वरजै, चो-
रासी आशातना ॥ ते गोत्र तीथंकर अरजै, नमें
जेहने केवली ॥ उवझाय श्री धमसींह वंदे, जैन
शासन ते वली ॥ १८ ॥

॥ चौवीस तीर्थंकरोंके देह-प्रमाणका स्तवन॥

प्रणमुं ऋषभ जिनेसर पाय, धनुष पांचसै उंचो काय ॥ बीजो अजित जिन मुझ मन वसै, मांन धनुष साढाच्यारसै ॥ १ ॥ तीजो संभव सुख दातार, उंचो काय धनुष सो च्यार ॥ अभिनंदन जिनसुं मन लीन, देह धनुष सो साढातीन ॥ २ ॥ पंचम सुमतिनाथ भगवांन, धनुष तीनसो देहो मांन ॥ पदम प्रभू पूरे मन आस, देह धनुष दोयसे पचास ॥ ३ ॥ सामि सुपारस सत्तम होय, देह प्रमांण धनुष सो दोय। चंद्राप्रभु जिन मुज मन वसै, देह प्रमाण धनुष दोढसै ॥ ४ ॥ सुविधनाथ नमिये सुविवेक, उंच प्रमांण धनुष सो एक ॥ शीतलनाथ नमें जग सवे, देह प्रमांण धनुष जसु निवे ॥ ५ ॥ श्री श्रेयांस नमूं उल्लासी, उंच प्रमांण धनुष तनु असी। वासपूज्य वारम जिन चंद, मान धनुष

सित्तर सुखकंद ॥६॥ विमल विमलगुणकर गंभीर, साठ धनुष जसु मान सरीर। अनंत ज्ञान अनंत प्रकाश, देह प्रमांण धनुष पच्चास ॥७॥ पनरम धरमनाथ जगदीस, मांन धनुष जस पैंतालीस ॥ शांति करण शोलम जिन शांति, देह धनुष चालीस सोभंति ॥८॥ सतरम कुंथु जगदाधार, मांन धनुष पैंत्रीस उदार ॥ अर अठारम दीनदयाल, त्रीस धनुष तन अति सुविशाल ॥ ९ ॥ मल्लिनाथ जिन उगणीसमो, मांन पच्चीस धनुष पय नमो ॥ वीसम मुनिसुव्रत अरिहंत, वीस धनु तनु मांन कहंत ॥ १० ॥ इकवीसम नमिजिनरा जान, धनुष पनरे तसु रूप निधान। वावीसम श्रीनेमजिनंद, दस धन दीपै जांण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री पारसनाथ, नील वरण सोहे नव हाथ ॥ चोवीसमा जिनवर श्री वीर, सात हाथ जगनाथ सरीर ॥१२॥ इण परि ए जिनवर चोवीस, प्रणमें प्रह शस धरिय जगी-

स ॥ तां घर ऋद्धि सिद्धि उच्छ रंग, रंग विनय प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥

॥ चौवीस तीर्थंकरोंके आयुष्य-प्रमाणका स्तवन ॥

ऋषभदेव प्रणमुं जिनराय, लाख चौरासी पूरव आय ॥ बीजो अजित जसु सूत्रे साख, आउ बहुत्तर पूरव लाख ॥ १ ॥ तीर्थंकर संभव तीसरो, आउ लाख पूरव साठरो अभिनन्दन पूरे मन आस, आउ लाख पूरव पच्चास ॥२॥ सुमतिनाथ पंचम जगदीस, आउ लाख पूरव चालीस ॥ श्री पद्मप्रभूनो ए थितजांण, लाख तीस पूरव परिमांण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व लाख पूरव वीस, दस लख पूरव चंद्रप्रभु ईस ॥ सुविधिनाथ लख पूरव दोय, इक लख पूरव शीतल थित होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी लाख, श्री श्रेयांस तणी श्रुत साख । लाख बहुत्तर वरसां तणो, वासुपूज्य परमायुप गिणों ॥५॥ विमल आयु लख

साठ वरीस, वरस अनंत तणो लख तीस॥ लाख वरस दस धरम दिणंद, लाख वरस श्री शांतिजिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस थिति पच्याणवै, श्री कुंथुनाथ तणी संभवै॥ सहस चोरासी अर जिनतणी, मल्लि सहस पचावन भणी ॥७॥ वरस संपूरण त्रीस हजार, मनिसुव्रत परमाउ उदार। द्वीस सहस नमिजिन थित भणी, वरस सहस नेमीसरतणी ।८। पास वरस एक सो सुखकंद, वरस व्रहुत्तर वीरजिणंद॥ ऋषभतणा तेरे अवतार, सात चंद्र शंतीसर वार ॥ ६ ॥ सुव्रत भव नव नव नेमीस, पार्श्व वीर दस सत्तावीस ॥ त्रिहुं २ भव सतरे जगदीस, सगला भव एकसो अड़तीस ॥ १० ॥ सिद्ध लही सहुने धन धन्न, गणधर चवदेसै वावन्न ॥ सहुनें मुनि लख अठावीस, सहस ऊपरै अडतालीस ॥ ११ ॥ लाख चमाल छयाल हजार, पड़धिक सहु साधवी सो च्यार॥ श्रावक लाख पचावन धुरै, अड़तालीस सहस

ऊपर ॥ १२ ॥ एक कोडि श्रावका सुजगीस, लाख पांच सहस अड़तीस ॥ ए संघ चतुर्विध सहु जिनतणो, रंग विनय प्रणमें हित घणो ॥ १३ ॥

॥ तिरसठ शलाका-पुरुषों का स्तवन ॥

॥ ढाल १ ॥ चरम महारय सारथ सारं एदेशी ॥

सद्गुरु चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं पभणसु श्रुत अनुसारं ॥ जेहने नाम लियें निसतारं, आपण सफल हुवें अवतारं पामीजै भव पारं ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्मप्रभु नयनानंदन, सत्तम तेम सुपास ॥ चंद्रप्रभूने सुविध शीतल जिन श्रेयांस, वासुपूज्य जिन सुरमणि, विमल गुणेंकर वास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेसर, कुंथुनाथ अर मल्लि सुहंकर, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्व वीर ए जिन चोवीस ॥ जग वच्छल जगगुरु जगदीस, प्रणमीजै धर प्रेम ॥ ३ ॥

॥ ढाल दूसरी ॥ प्रथम सुपन गज निरख्यो एदेशी ॥

प्रथम भरत नरइंद, वीजो सगर सुरिंद, मघवा तीजो उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शांति चक्रीस, छठा कुंथु गणीस ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमा संभूमि सनाथ ॥ ५ ॥ नवमो पदम नरेस, हरिषेण दसमो कहेस इग्यारम जयनांम, वारस ब्रह्मदत्त नांम ॥ ६ ॥ एह चक्रीसर बार, क्षेत्र भरत सिणगार ॥ मघवा सनतकुमार, पोहता सरग मझार ॥ ७ ॥ सभूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आठ थया सिवगामी, ते प्रणमुं सिरनांमी ॥ ८ ॥

॥ ढाल तीसरी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ एदेशी ॥

पहिलो त्रिपृष्टि जांण, द्विपृष्ट दूसरो, तीजो स्वयंप्रभु जाणिये ए ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगडो, पुरुषसिंह परमांणिये ए ॥ ६ ॥ छठो पुरुष पुंडरीक, दत्त तिम सातमो, लक्ष्मण नांमे आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केसवा,

प्र० छट्ठी ए पिण नमूं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला पांच छठी गया ए ॥ सातमी पंचमी नरं, चोथी आठमो, नवमो तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय नें भद्र, सुप्रभ सुदर्शन, आनंद नंदन शुभ मती ए ॥ रामचंद्र बलभद्र, बलदेव ए नव, आठ थया तिहां सिव गती ए ॥ १२ ॥ बलभद्र ब्रह्म देवलोक, काल उसप्पणी, जास्ये सिव कृष्ण सासने ए ॥ अथवा विपुलाक नाम, तीर्थंकर होस्ये, चवदमो इम बहुश्रुत भणे ए ॥ १३ ॥

॥ ढाल ४ ॥ कुमरपणे प्रभु रहतां काल सुखे गमेए ॥ ए देशी ॥

अस्वग्रीव नें तारक मेरुकवलि मधु तिसाए, निशुंभ वलय प्रहलाद, रावण जरासिंधु जिस्ता ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव नरक गति गामिया ए, ते पिण भावि जिनेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४ ॥

॥ ढाल ५ ॥ सकल संसारनी ॥ ए देशी ॥

शांति नें कुंथु अरि एह भव एकही, चक्रधर

तीर्थंकर दोय पदवी लही ॥ वीर वासुदेव अरिहंत भव जूजूआ, देह तिणसाठ पिण जीव गुणसठ थया ॥ १५॥ वासुदेव वलीय वलदेव केरा पिता, एकहिज थाय नव एण लेखे छता ॥ तीन चक्रधर तणा मिलिय वारै टल्या, एम त्रेसठना ताल इकावन मिल्या ॥ १६ ॥ तीन चक्रवत्ततणी टाल दीजे इसै, गाय सहुनी थई साठ लेखे इसै॥ एह नररयणनो ध्यांन नित जे धरे, तेह सुरपद लही मोक्ष पदवी वरै ॥ १७ ॥

॥ कलश ॥

इम थुणया तीर्थंकर चक्कीसर वासुदेव वलदेव ए, प्रतिवासुदेव सुसेव जेहनी करै सुरनर सेव ए ॥ त्रेसठ शलाका पुरुष उत्तम जगत जयवंतो सदा, प्रह शमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वसतो मुदा ॥ १८ ॥

॥ सिद्धगिरी का स्तवन ॥

श्री विमलाचल सिर तिलो, आदीसर अरी-

हंत ॥ जुगला धर्म निवारणो, भय भंजण भगवंत ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुझ मन ऊलट अति घणो, सो दिन सफल गिणेस ॥ स्वामी श्री रिसहेसरू, जब नयणे निरखेस ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंगम तिरथ विहरता, साधु तणे परिवार ॥ आदि जिनंद समोसर्या, पूरव निन्नाणूं वार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानंदने, जगबंधव जगतात ॥ इण गिर चउमासे रह्या थिवर कहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४॥ पांमे शिव सुख शास्वता, गणधर श्री पुंडर-गिरि तिण कारणें, भगति करो निरभीक । श्री । ॥ ५ ॥ नमि नें विनमि सहोदरू, विद्याधर बल-वंत ॥ सेत्रुंजा शिखर समोसर्या, जे गरुआ गुण वंत ॥ श्री० ॥६॥ थावच्चा मुनिवर सुक, सहस २ परिवार ॥ पंथग वयणे जागियो, सो सेलग अ-णगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांडव पांच महाबली, सुणि जादव निरवाण ॥ ते सीधा सिद्धाचलै, सुर नर करै वखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इम सीधा

इण डुंगरे, मुनिवर कोड़ाकोड़ ॥ पाय चढंता सांभरे, ते प्रणमूं करजोड़ि ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जे वाघण प्रतिबूझवी, ते दरवाजै जोय ॥ गोमुख यच कवड मिली, सानिधकारी होय ॥श्री० १०॥ जे विधसुं यात्रा करै, सुर नर सेवक तास ॥ राजसमुद्र गुण गावतां, अविचल लील विलास श्री० ॥ ११ ॥

॥ श्री सिद्धाचलजी का स्तवन ॥

॥ देशी गरवानी ॥

श्री सिद्धाचल मंड़ण स्वामी रे, जग जीवन अंतरजांमी रे, एतो प्रणमूं हूं सिरनांमी, यात्रीड़ा जात्रा निनाणूं करिये रे ॥ १ ॥ श्रीऋषभ जिनेसर राया रे, जिहां पूरव निनाणं आया रे, प्रभु समवसख्या सुख दाय ॥ या० ॥ २ ॥ चैत्री पूनम दिन वखाणो रे, पांच कोडिसुं पुंडरीक जांणो रे, जे पांम्या पद निरवाण ॥ या० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख संतै रे, वे-वे कोड़िसुं साध

संधाने रे, एतो पोहता पद लोकांत ॥ या० ॥४॥ काती पूनम कर्मने तोड़ी रे, जिहां सीधा मुनि दस कोडी रे, ते वंदो वे कर जोडी ॥ या० ॥५॥ इम भरतेसरने पाटे रे, असंख्यात साधु थिर थाटे रे, पांम्या मुगति तणी ए वाट ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनी परवारे रे, थावच्चा सुत सुखकारे रे, सय पंच सेलग अणगार ॥ या० ॥ ७ ॥ देवकी सुत सुजगीसे रे, सीधा वहु यादववंसे रे, ते नमो रे नमो मन हींसे ॥ या० ॥८॥ पाचे पांडव इण गिर आया रे, सीधा नव नारद ऋषिराया रे, वली संव प्रज्जुन कहाय ॥ या० ॥ ६ ॥ ए तीरथ महिमावंते रे, जिहां सीधा साधु अनंते रे, इम भाख्यो श्रीभगवंत ॥ या० ॥१०॥ उज्जल गिर सम नही कोइ रे, तीरथ सगला मे जोइ रे, जे फरस्यां पावन होइ ॥ या० ॥ ११ ॥ एकाहारी ने संचित्त पहारी रे, पदचारी ने भूमि संथारी रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ या० ॥ १२ ॥ इम

छह री जे नर पाले रे, वहुं दांन सुपात्रे आले रे, ते जनम-मरण भय टाले ॥ या० ॥ १३ ॥ धन २ ते नर ने नारी रे, भेटे विमलाचल इक तारी रे, जइये तेहतणी वलिहारी ॥ या० ॥ १४॥ श्रीजिनचंद्र सूरि सुपसाये रे, जिनहर्ष हिये हुलसाये रे, इम विमलाचल गुण गाये ॥ या० ॥ १५ ॥

॥ श्रीऋषभदेवजी का स्तवन ॥

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिब, वीनतड़ी अवधारो रे ॥ जगना तारू ॥ मुझ तारो जी कृपानिध स्वांमी, जग जसवाद प्रगट छै ताहरो, अविचल सुखदातारो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ मु० ॥ निज गुण भोक्ता पर गुण लोप्ता, आतम शक्ति जगायो रे ॥ज०॥ अविनासी अविचल अविकारी, वासी जिनराया रे ॥ ज० ॥२॥ मु० ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी, हुं तुम चरणे आयो रे ॥ ज० ॥ तुम रीझावण हेते ततखिण, नाटक खेल मचायो रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ मु० ॥ काल अनंत रुलो

एकंद्री, तरु साधारण पांमी रे ॥ ज० ॥ वरस संख्याता वलि विकलेंद्री, वेप धस्या दुख धामी रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर-नर तिरि वली नरकतणी गति, पंचेंद्रीपणो घाल्यो रे ॥ ज० ॥ चोवीसे दंडक मांहि भमियो, अव तो हूँ पिण हास्यो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ भव नाटक नित करतो नव नव, हूं तुझ आगल नाच्यो रे ॥ ज० समरथ साहिव सुरतरु सरिखो, निरखी तुझने याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुझ नाटक देखी रीझया, तो मन वंछित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीझया तो मुख भाखो, वलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥ लालच धरि हूं सेवा सारूं, तुं दुखडा नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता सेती सूँम भलेरो, वहिलो उत्तर आपे रे ज० ॥८॥ मु० तुझ सरिखा साहिव पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ ज० ॥ तो मुझ करमतणी गति अवली, दोस न कांइ तुमारो रे ॥

ज० ॥ मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, सुध समकित सह नाणी रे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित पूरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ज० ॥ १० ॥ मु० ॥ वर्ष अठारै गुणतालीसै, ज्येष्ट सुदी सोमवारो रे ॥ ज०॥ लालचंद प्रतिपद दिन भेटया, बीकानेर मझारो रे ॥ ज० ११ ॥ मु० ॥

॥ महावीरस्वामी का स्तवन ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनती, करजोड़ी हुँ कहुं मननी वात ॥ वालकनी पर वीनवूं, मोरा स्वामी हो, तूं त्रिभुवन तात ॥ वी० ॥ १ ॥ तुम दरशण विन हूं भम्यो, भव मांहे हो स्वामी समुद्र मझार॥ दुक्ख अनंता में सह्या, ते कहितां हो किम आवे पार ॥ वी० ॥ २ ॥ पर उपगारी तूं प्रभू, दुख भंजे हो जग दीनदयाल ॥ तिण तोर चरणे हूं आवियो, सामी मुझने हो निज नयण निहाल ॥ वीं० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण उधर्‌या, तें कीधी हो करुणा मोरा स्वांम ॥ हुंतो

परम भक्त ताहरो, तिण तारो हो नहीं ढीलनो काम ॥ वी० ॥४॥ सूलपाण प्रतिबूझव्या, जिण कीधा हो तुझने उपसर्ग ॥ डंक दियो चंडकोसिये, तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोशालो गुणहीन घणो, जिण बोल्या हो तोरा अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूंकी सुप्रसाद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण छै इंद्रजालियो, इम कहतो हो आयो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रभुतानो वजीर ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उथाप्या ताहरा, ते झगड्या हो तुझ साथ जमाल ॥ तेहनें पिण पनरे भवे, शिवगांमी हो तें कीधो कृपाल ॥ वी० ॥ ॥ ८ ॥ एमत्तो रिष जे रम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी पाल ॥ तिरती मूंकी काछली, ॥ तें तार्यो हो तेहनें ततकाल ॥ वी० ॥९॥ मेघकुमर ऋषि दूहव्यो, चित चूको हो चारित्रथी अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा भंडार॥

वी० ॥ १० ॥ बार वरस वेस्या घरे रह्यो, मूंकी हो संजमनो भार ॥ नंदिषेण पिण ऊधर्यो, सुर पदवी हो दीधी अति सार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस, चोवीस ॥ ते पिण आर्द्र कुमारनें, तें तार्यो हो तोरी एह जगीस ॥ वी०॥ १२ ॥ राय श्रेणक रांणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह ॥ समवसरण साधु-साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी० ॥ १३ ॥ विरत नही नही आखडी, नही पोसो हो नही आदर दीख ॥ ते पिण श्रणिकरायनें, तें कीधो हो सामी आप सरीख ॥ वी० ॥ ॥ १४ ॥ इम अनेक तें ऊधर्या, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥ सार करो हिव माहरी, मनमांहे हो आणो मोरडी वात ॥वी० ॥१५॥ सूधो संजम नहि पलै, नहो तेहवो मुझ दरसण ज्ञान ॥ पिण आधार छै एतलो, इक तोरो हो धरुं निश्चलध्यान वी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि जोवे

हो सम विखमी ठांम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंछित कांम ॥ वी० ॥१७॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो दुख जाये दूर ॥ तुम नांमे वंछित फले, तुम नांमे हो मुझ आनंद पूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलश ॥ इम नगर जेसलमेरु मंडन, तीर्थंकर चोवीसमो ॥ शासनाधीश्वर सिंह लंछन, सेवतां सुरतरु समो ॥ जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निलो, वाचनाचारज समयसुंदर ॥ संथुणयो त्रिभुवन मिलो ॥ १९ ॥

॥ चौवीस दंडक का स्तवन ॥

॥ ढाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करू अरदास जी ॥ तारण तरण विरुद तुझ सांभलि, आयो हूं धर आस जी पू० ॥ १ ॥ इण संसार समुद्र अथागे, भमियो भवजल मांहिजी ॥ गिलगिचिया जिम आयो गिडतो, साहिबे हाथे साहि

जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं ज्ञानी तो पिण तुझ आगै, वीतक किहिये वात जी ॥ चोवोसे दंडक हूं भमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते नरक तणो इक दंडक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच थावरनें तीन विकलेन्द्री ॥ उगणीस गिणती आंण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचेंद्री तिर्यञ्चने मानव, एह थया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतषी नें वैमाणिक, इम दंडक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंद्री तिर्यंच अने नर, पर्याप्ता जे होय जी, ए चोविह देवामें ऊपजै, इम देवां गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आउखै नर तिरि, निहचै देवज थाय जी ॥ निज आंउखै सम के ओछै, पिण अधिके नवि जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ भवनपतीके व्यंतर तांई, समूर्च्छिम तिर्यंच जी ॥ सगर आठमां तांइ पोहचै, गरभज सुकृत संच जी ॥ पू० ॥ ८ ॥ आउ संख्यातै जे गरभज, नर तिरजंच विवेक जी ॥ बादर पृथवी

नें वलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ६॥ पर्याप्ता इण पांचे ठामे, आवि उपजै देव जी॥ इण पांचा माहे पिण आगै, अधिकांई कहुं हेव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगथको मांडी सुर, एकेंद्री नवि थाय जी ॥ अठमथी उपरला सगला, मांनवमांहे जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥

नरकतणी गति आगति इण परे, जीव भमें संसार ॥ दोय गति नें दोय आगत जांणियें, वलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ संख्याते आयु परजापता, पंचेंद्री तिरयंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहिज वे नरकमें, जायें पाप प्रपंच ॥ न० प्रथम नरक लग जाय असन्नियो, गोह नकुल तिम वीय ॥ गृद्ध प्रमुख पंखी त्रीजी लगे, सींह प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४ ॥ पंचमी नरकें सो-मा सापणी, छठी लग स्त्री जाय ॥ सातमियें माणस के माछलो उपजें गरभज आय ॥ न०

॥ १५ ॥ नरकथकी आवे बिहुं दंडकै, तिरयंचके नर थाय ॥ ते पिण गरभज ने परयापता ॥ संख्याती जसु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियां ने नरकथी नीसरथा, जे फल प्रापति होय ॥ उत्कृष्टे भांगे करते कहूं, पिण निश्चै नहीं कोय ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवै, बीजी हरि बलदेव ॥ तीजी लग तीर्थंकर पद लहै ॥ चोथी केवल एव ॥ न० ॥ १८ ॥ पंचम नरकनो सरवविरति लहै, छठी देसविरत्त ॥ सातमी नरकनो समकितहीज लहै, न हुवै अधिक निमत्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ करमपरीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥

मानव गति विन मुगति हुवै नही रे, एहनो इम अधिकार ॥ आउ संख्याते नर सहु दंडकें रे, आवी लहै अवतार ॥ मा० ॥ २० ॥ तेउ वाऊ दंडक बे तजी रे, बीजा जे बावीस ॥ तिहांथी आया थायै मानवी रे, सुख दुख कर्म सरीस ॥

गा० ॥ २१ ॥ नर तिरजंच असंज्ञो आउखें रे, सातमी नरकना तेम ॥ तिहांथी मरिनें मनुष्य हुवे नही रे अरिहंत भाख्यो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव तथा चलो रे, चक्रवर्त ने अरिहंत ॥ सरग नरगना आया ए हुवे रे, नर तिरथी न हुवंत ॥ मा० ॥ २३ ॥ चोविह देव थकी चवि ऊपजे रे, चक्रवर्ति बलदेव ॥ वासुदेव तीर्थंकर ए हुवे रे, वैमानिकथी वेव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ नाभि भने मरुदेवा ॥ ए देशी ॥

हिव तिरयंच तणी गति आगति कहिये अशेष, जीवभमें इण पर भव मांहे करम विशेष ॥ आउ संख्यातो जे नर तिर्यंच विचार, ते सगला तिरयंचा मांहे लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिण तिरयंचा मांहे आवे नारक देव, ते कह्या पहली तिण कारण न कहूं हेव ॥ पंचेंद्री तिर्यंच संख्याते आउखे जेह, ते मरी चिहुंगतिमां जावे इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंद्री आठ

कहावे, तिहांथी आउ संख्याता नर तिरयंचमें आवे ॥ विकल चवीलहै सरवविरति पिण मुगति न पावैं, तेउ वाउथी आयो तेहने समकित नावे ॥ २७ ॥ नारक वरजीनें सगला ही जीव संसार, पृथवी आउ वनस्पतीमांहि लहै अवतार ॥ एती नें इहांथी चवि आवै दसे ठाने, थावर विकल तिरी नरमांहे उतपत पामै ॥ २८ ॥ पृथवीकाय आद देई दस दंडके एह, तेउ वाऊ मांहे आवी ऊपजै तेह ॥ मनुष्य विना नव मांहे तेउ वाउ वे जावै, विकलेन्द्री ते दसमांहि जावै पूठाही आवै ॥ २९ ॥ एम अनादितणो मिथ्यात्वी जीव एकंत, वनस्पती माहे तिहा रहियो काल अनंत ॥ पुढवी पाणी अगनि अनैं चोथो वलि वाय, कालचक्र असंख्याता तांइ जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेइन्द्री तेइन्द्री अने चोरिंद्री मझारै, संख्याता वरसां लगै भमियो करम प्रकारै ॥ सात आठ भव लगि तां नर तिरयंचमें रहियो, हिव मांनवभव

लहिनें साधुनें वेपमें रहियो ॥ ३१ ॥ राग द्वेप छूटे नही किम हुवै छूटकवार, पिण छै माहरै मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण में त्रिकरण सुद्धे अरिहंत लाधो, हिव संसार घणो भमिवोतो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥ तूं मन वंछित पूरण आपद चूरण सांमी, ताहरी सेव लही तो में नवनिध सिद्ध पांमी ॥ अवर न कांइ इच्छ इण भव तूं हिज देव, सूधै मन इक होज्यो भव-भव ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जैसलमेर महिमा दिन दिनें ॥ संवत सतर उगणतीसै, दिवस दीवाली तणै ॥ गुणविमल चंद समान वाचक, विजय हरप सुसीस ए ॥ श्री पासना गुण एम गावै, धरमसी सुजगीज ॥ ३४ ॥



॥ इरियावही मिच्छामिदुक्कड संख्या-स्तवन ॥

॥ प्रभु प्रणमूं रे पास जिनेसर थम्भणो ॥ ए देशी ॥

पद पंकज रे प्रणमो वीर जिनंदना, त्रिकरण शुद्ध रे करि मुनिवर पय वंदणा ॥ एमत्ते रे पड़िक्कमी जिम इरियावहीं, श्री वीरनी रे वाणी तहत्त कर सरदही ॥ उल्लालो ॥ सरदही वांणी मन सुहाणी, चित्त आंणी ते वली ॥ मिच्छामिदुक्कड़ तणी संख्या, कहिसुं जिम कहे केवली ॥ भू दग जलण तिम वाउ, वणसइ विगल पण इंद्री तणी ॥ करतां विराहण करम वंध्या, दुर ते करिवा भणी ॥१॥ चाल ॥ पुडवि दगरे वाउ तेउ वणस्सइ, पण थावर रे बादर सुहम दसे थई ॥ प्रत्येकज रे वणसइ इग्यारह थया, बावीसे रे पज्जत्तग अपज्जत्तया ॥ उल्लालो ॥ पज्जत अपज्जत्तग वखाणया, विगल तिय छह भाल ए ॥ जल-थल-खेचर भुयंग दुइ, पण इंद्रिय तिरि अडयाल ए ॥ तस्मादि साते नरक पुडवी, नारकी तिहां सात जे ॥

ने चवद भेदे करी जाणो, पज्जत्तय अपजत्त जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनहर विध रे सुरगण परमा हम्मिया, किलविपिया रे त्रिविध करम ते निम्मिया ॥ जंभिय दस रे नव लोकांतिक जांणियें, सोलह विधरे व्यंतर देव वखाणियें ॥ उल्लालो ॥ वखाणियें दस विध भुवनपतिना, तार रवि ससि रिसिगहा ॥ चर थिर दसै विध जोइसी सुर, वखाणया जिनवर जिहां ॥ वारह विमाणह पण अनुत्तर, नवग्रीवेके नव भणया ॥ पज्जत्त अपजत्तग अठाणूं, अधिक सत संख्या गिणयां ॥

॥ ढाल ॥ ९ ॥ मेत्र आगम सही ए ॥ देशी ॥

पंचभरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर भूमिका ए ॥ खेत्र ए पनरह करम भूमि जाणीयें असि कसि मसिही आजीविकाए ॥ हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरणयवत सहीए मेरुपिणा पाखली चारि २ खेत्र दस कुरु अकरम भूमीकहीए ॥ ४ ॥ हिमगिर सिहरीय दाढ ची-

यांरि लवण समुद्रमांहि विस्तरी ए ॥ सात २ अं तर दोय पासै दीप छप्पन्न अन्तर धरीए ॥ दो- इसै भेद दुइ आगला जांणी मणय पज्जत अप ज्जतयाए ॥ एक सौ एक समुच्छिम भेद तीन- सै तीन मणआ थयाए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ हिव जनम्या जगगुरु ए ॥ देशी ॥

पणस्य त्रेसठिविध जीवसहूं छे एह अभिहय आदिक दस गुणित करीजै तेह ॥ पणसहस छ- सै वलि त्रीस अधिकते जाणि ॥ ते रागै दोसै दुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ हुइ सहस इग्यारह दुइसय साठि प्रमाण ॥ ए प्रवचनवाणी जाणी हितउर आण ॥ मनवच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक ॥ तेतीस सहस सत सातअसी निःशंक ॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुण किद्ध ॥ इकलक्ख सहसइग तिसय चालीस प्र- सिद्ध ॥ अतीत अनागत वर्त्तमान वलिकाल जे थइयविराधना तिणि त्रिगुण संभाल ॥ ८ ॥ तीन

लाख सहस च्यार वेसें अधिक ते थाय ॥ अरिहंत प्रमुख छह साखें छगुण भाय ॥ इम लाख अठारह वलि सहस चउवीस ॥ इकसो वीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ६ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ चोपइनी ॥ ए देशी ॥

॥ इण परि मिच्छामि दुकडं देई भविक तरया भवजल निधि केई ॥ तरें अछे वलि आगलि तरिसी ॥ निरमल केवल लखमी वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करें आतम करि निरमल ॥ सें मुखभाषें वीर जिणेसर ॥ सूत्रकरि गूंथै ते श्रुतधर ॥ ११ ॥ इम पडिकमी मुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसीस केवल पद पत्तो ॥ त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमीजें ॥ मानव जनम सफल इम कीजें ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुहंकरो ॥ तियलोय सामि सिद्धगामी

सुद्ध धरम धुरंधरो ॥ उन्नकांय लक्ष्मी किति सीसै जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लब्धिवल्लभ तवन करि इम संथुण्यो भावै करी ॥ १३ ॥

॥ पांच समवाय का स्तवन ॥

॥ दोहा ॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, जगदीपक जिनराज ॥ वस्तुतत्व सवि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादथी संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ सप्त भंग रचना विना, बंधन जेसे वात ॥ २ ॥ वाद वदे नय जूजुआ, आप आपणे ठाम ॥ पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एह गज, ग्रहो अवयव अनेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्णगज, अवयव मिली अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नयें करी, जुगति योग शुद्ध वाद ॥ धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नहीं किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्याद्वाद शुद्ध

रुप रे ॥ नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अभंग अनूप रे ॥ ६ ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥ काले उपजे विणसे काले, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ श्री० ॥ काले गर्भ धरै जग वनिता ॥ काले जनमे पूत रे ॥ काले बोलै काले चाले, काले झाले घरसूत रे ॥ ८ ॥ काले दूधथकी दही थायै, काले फल परपाक रे ॥ विविध पदारथ काल उपावे, अंत करे वेबाक रे ॥ ९ ॥ श्रो० ॥ जिन चउवीसै बार चक्कवै, वासुदेव बलवंत रे ॥ काले कवित कोइ न दोसै, जसु करता सुर सेव रे ॥१० ॥ श्री० ॥ उत्सर्पिणी अवसर्प्पिणी आरा, छै छै जूजूये भांते रे, षट् ऋतु काल विशेष विचारो ॥ भिन्न २ दिन रात रे ॥ ११ ॥ श्री० ॥ काले बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ वुढ्ढपणे हुय वलि वली दुर्बल, सकत नही लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

तुंब जलमां तिरे जी, बूडे काग पाहाण ॥ पंख जाति गयणे फिरे जी ॥ इण परें सहिज विनाण ॥ १९ ॥ सु० ॥ वाय सुंडथी उपशमें जी, हरडे करे विरेच ॥ सोझे नही कण कांगडो जी ॥ सकल स्वभाव अनेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषे काठनो जी, भुंयमां थाये पाखाण ॥ संख अस्थिनो नीपजे जी, चेत्र स्वभाव प्रमांण ॥ २१ ॥ सु० रवि तातो शसी सीयलो जी, भव्यादिक बहु भाव ॥ छए द्रव्य आपापणा जी, न तजे कोइ सुभाव ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

काल किसुं करे वापडो रे, वस्तु स्वभाव अकज्ज ॥ जो न होय भवितव्यता जी, तो किम सीजे कज्जा रे ॥ २३ ॥ प्रांणी म करो मन जंजाल, ए तो भावी भाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ ए आकणी ॥ जलधि तरे जंगल फिरे जो, कोडि यतन करे कोय ॥ अणभावी होये नहीं जी, भावी होय

ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥ आंबे मोर वसंतमां जी, डालै केइ लाख ॥ खस्या केइ खांखटी जी, केइ आंबा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ वाउल जिम भव तव्यता जी, जिण जिण दिसे उजाय, परवस मन मानसतणो जी, तृण जिम पूठे धाय रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ नियत वसे पिण चितव्यूं जी, आवी मिलै ततकाल ॥ वरसां सोनुं चिंतव्यो जी नियत कर विसराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ आठमो चक्री सुभूमिते जी, समुद्र पड्यो विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणांजी, नयण हरै गोवाल रे ॥ प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूहा कोयल करै जी, किम राखीस रे प्रांण ॥ आहेड़ी सर ताकियो जी, ऊपर भमें सीचाण रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥ आहेड़ी नागे डस्यो जी, बांण लग्यो सींचाण ॥ कोकूहो ऊडी गयो जी, कोउ नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ शस्त्र हणया संग्राममां जी, रात पड्या जीवंत ॥ मंदिरमांहे मानवी जी, राख्याहो न रहंत रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ मारुणी मनोहरणी ॥ ए देशी ॥

काल स्वभाव नियत मति रूड़ी, करम करे ते थाय ॥ करमें नरय तिरिय नर सुर गति, जीव भवंतरे जाय ॥ ३२ ॥ चेतन चेतज्यो रे, करम न छूटे कोय ॥ ए आंकणी ॥ करमें राम वस्या वन वासे, सीता पामी आल ॥ कर्म लंकापति रावण नुं राज्य थयों विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्मे कीड़ी कर्मे कुंजर ॥ कर्मे नर गुणवंत ॥ कर्मे रोग सोग दुख पीड़ित, जमन जाये विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कर्मे वरस लगे रिसहेसर, उदक न पामे अन्न ॥ कर्मे जिननें जोउ निमारे, खीला रोप्या कन्न ॥ ३५ ॥ चे० ॥ कर्मे एक सुखपाले बैसे, सेवक सेवे पाय ॥ एक हय गय चल्या चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम मानी अंधतणी पर, जग हींडे हाहूतो ॥ कर्मवली ते लहे सकल फल, सुखभर सेजें सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंदर एके कीधो उद्यम ॥ करंडीओ करकोले ॥ मांहे घणा दिवसनो भूखो,

नाग रह्यो डमडोलै ॥ ३८ ॥चे०॥ किन्नर करी मूपक तसु मुखमां, दीयै आपणुं देह ॥ मार्ग लही वन नाग पधार्‍या, कर्म मर्म जोओ एह ॥ चे० ॥

॥ ढाल ५ मी ॥ तो चढियो घन मान गजै ॥ ए देशी ॥

हिव उद्यमवादी भणै ए, ए च्यारै असमच्छ तो ॥ सकल पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरत्थ तो ॥ ४० ॥ उद्यम करतां मानवी ए, स्युं नवि सीझै काज तो ॥ रामैं रयणायर तर्‍यौं ए, लीधो लंका राज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरै ए, जेहमां सत्व न होय तो ॥ देवल वाघ मुख पंखिया ए, पिउ पैसंता जोय तो ॥४२॥ विन उद्यम कीम निकले ए, तिल मांहेथी तेल तो ॥ उद्यमथी उंची चढै ए, जोवो एकेंद्रिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम करतां इक समें ए, जेह न सीझै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यम करि उद्यां विना ए, नवि रंधाये अन्न तो ॥ आवी न पड़े

कोलियो ए, मुखमां चोपे जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म तो ॥ उद्यमथी दूरे टलै ए, जोउ कर्म्मनो मर्म्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्रहार हत्या करी ए, कीधा पाप आरंभ ता ॥ उद्यमथी खट मासमां ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपे २ सरवर भरै ए, कांकरे २ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ़ नीपजे ए, उद्यम सकल निहाल तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलविंदुउ ए, करे पाहाणमां ठाम तो ॥ उद्यमथी विद्या भणै ए, उद्यम जोडै दाम तो ॥ ४९ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ ए देशी ॥

ए पांचेही वाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवै ॥ अमिय रसै जिन वयण सुणीनें, आणंद अंग न मावे रे ॥ ५० ॥ प्राणी समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥ प्रा० ॥ ते मिथ्या मति जांणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ ए पांचे समवाय मिल्यां विन, कोई काज न सीझै ॥

अंगुल जोगै कवल तणी पर, जे बूझे रे ॥ प्रा०॥ ५१ ॥ आग्रह आणी कोइ एकनें, एहमां दियै वड़ाई ॥ पिण सेना मिल सकल रणांगण, जीते सुभट लड़ाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वभावे पट उपजावै, काल क्रमें वणाई ॥ भवितव्यता होय ते नोपजे, नही तो विघन घणाई रे ॥प्रा०॥५३॥ तंतुवाय उद्यम भोक्तादिक, भाग्य सबल सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उतपत जोवो विचारी रे ॥ प्रा० ५४ ॥ नियत वसे हलु कर्म थईनें, निगोदथकी नीकलियो ॥ पुण्यें मनुज भवादिक पांमी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे ॥प्र०॥ ५५ ॥ भवथितनो परपाक थयो तव, पंडित वीर्य उल्लसियो ॥ भव्य स्वभावे शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्द्धमान जिन इण पर वीनवे, शासन नायक गायो ॥ संघ सकल सुखदाई छेहथी, स्याद्वाद रस पायो रे ॥ प्रा०॥

॥ कलश ॥

इम धर्म नायक मुगति दायक, वीर जिनवर संथुण्यो ॥ सय सतर संवत वह्नि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय देव सुरिंद पटधर, विजयप्रभ मुणिंद ए ॥ कीर्तिविजय वाचक सीस इण पर, विनय कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥

॥ चउदह गुणठाणों का स्तवन ॥

॥ थंभणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ ए देशी॥

सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुध वारंवार, आणी भाव अपार ॥ चवदै गुण थानक सुविचार, कहिस्युं सूत्र अरथ मन धार, पांमे जिम भव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आंणो, तीजो मिश्र वखाण् ॥ चोथो अविरत नांम कहाणो, देशविरति पंचम परमांणो, छट्ठो प्रमत्त पिछाण ॥ २ ॥ अप्रमत्त सत्तम सलहीजै, अष्टम अपुरव करण कहीजै, अनित्ति नांम नवम्म ॥ सुखम

लोभ दसम सुविचार, उपशांत मोह नांम इग्यार, खीणमोह बारम्म ॥३॥ तेरम संयोगी गुणधांम, चवदम थयो अजोगी नाम, वरणुं प्रथम विचार कुगुरु कुदेव कुधर्म्म वखाणै, ए लक्षण मिथ्या गुणठाणै, तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

॥ जेह एकांतनय पक्ष थापी रहै, प्रथम एकांत मिथ्यामतो ते कहै ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहै रहै विकलप घणों, संसयी नाम मिथ्यात चोथो भणौ ॥ ६ ॥ समझ नहीं काय निज धंद रातो रहै, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ॥ एह अनादि अनंत अभव्यनें, करिय अनादि थिति अंतसुभव्यनें ॥७॥ जेम नर खीर घृत खंड जिमनें वमें, सरस रस पाय वलि स्वाद केहवो गमें॥ चौथ पंचम छठे ठाण चढ़ने पड़े, किणहि कषाय वस आय पहलै अड़ै ॥ ८ ॥ रहै

विन एक समयादि, षट आवली, तदीय सासा
दन विन इसो सांभलो ॥ हिव इहां मिश्र गुण
ठाण तीजा कहुं, जेह उत्कृष्ट अंतरमहुरत लहै ॥९॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ ए देशी ॥

॥ पहिला च्यार कषाय, सम कर समकितो, कैतो माहि मिथ्यामती ए ॥ ए वेदिज लहे मिश्र, सत्य असत्य जिहां, सर दहणा वेऊ छती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय मांहि, मरण लहै नहीं, आउ बंधनपडे नवो ए ॥ कैतो लहे मिथ्यातकैं समकित लहै, मति रसज्ञी गति परभवे ए ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान, उदय करी लहै, मति विन किहां समकितपणो ए ॥ ते अविरत गुणठाण, तेत्रीस सागर, साधिक थिति पहनी भणी ए ॥ १२ ॥ दया उपशम संवेग, निरवेद आसता, समकित गुण पांचे धरे ए ॥ सद्दु जिन वचन प्रमांण, जिन शासन तणी, अधिक २ उन्नत करे ए ॥ १३ ॥ कोईक समकित पाय, पुदगल

प्रधतां, उत्कृष्टा भवमें रहे ए॥ केइएक भेद
ांठि, अंतरमहूरते, चढ़ते गुण शिवपद लहे
। १४॥ च्यार कषाय प्रथम्म, त्रिण वलि मोहनी
मेथ्या मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास
रही उपशमें, ते उपशम समकित धणी ए ॥१५॥
जेण साते क्षय कीध. ते नर क्षायकी, तिणहिज
व शिव अनुसरै ए ॥ आगलि बांध्यो आउ
ातें तिहां थकी, तीजे चोथे भव तिरै ए ॥१६॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ इण पुर कंबल कोइ न लेसी ॥ ए देशी ॥

पंचम देसविरति गुणठाण, प्रगटै चोकड़ी
त्याख्यान ॥ जेण तजैवा वीस अभक्ष, पांम्यो
ावकपणो प्रत्यक्ष ॥ १७ ॥ गुण इकवीस तिके
ाण धारै, साचा बारै व्रत संभारै ॥ पूजादिक
ट् कारज साधै, इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८॥

गुणथान, इक २ अंतरमहुरत मांन ॥ पंच प्रमाद यन जिण ठान. तेण प्रमत्त छठो गुणथांन ॥२०॥ थिवरकलप जिनकलप आचार, साधे षट् आव-श्यक गार ॥ उदत चोथा च्यार कषाय, तेण प्रमत्त गुणठाण कहाय ॥ २१॥ रूधो रावे चित्त समाध, धरम ध्यान एकांत आराधे ॥ जिहां प्रमाद क्रिया विध नासे, अपरमत्त सत्तम गुण भासे ॥ २२ ॥

॥ ढाल ॥ ५ नदी यमुनाके तीर उडै दोय पंखिया ॥ ए देशी ॥

पहिले अंसे अष्टम गुणठाणातणों, आरंभे दोय श्रेण संख्येपे ते गणों ॥ उपशम श्रेणि चढे जे नर हुवे उपशमी, चपकश्रेणि चायक प्रकृति दस चय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढ़ता परिणाम अपूरव गुण लहे, अष्टम नांम अपूरव करण तिणे कहे ॥ सुकल ध्यांननो पहिलो पायो आदरे, निर मल मन परिणांम अडिम ध्याने धरे ॥ २४ ॥ हिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जांणिये, जिहां

भाव थिररूप निवृत्ति न जांणियै ॥ क्रोध मांन नें माया संजलण हणें, उदै नही जिहां वेद अ-वेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सुखम लोभ कांइक शिव अभिलखै, ते सूखम संपराय दसम पंडित अखै ॥ संत मोह इण नांम इग्यारम गुण कहै, मोह प्रकृति जिण ठांम सहू उपशम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढथो जो काल करै किणही परै, ता थायै अहमिंद्र अवर गति नादरै ॥ च्यार वार समश्रेणि करै संसारमें, एक भवे दोय श्रेण अ-धिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥ चढि इग्यारम सीम समीप पहिले पड़ै, मोह उदय उत्कृष्ट अरध पुद-गल रड़ै ॥ त्तपकश्रेणि इग्यारम गुणठाणो नही, [illegible]थकी प्रारम्भ चढै ध्यांने रही ॥ २८ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ एक दिन कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए देशी ॥

खीणमोह नामे गुणठाणो बारस जाण, मोह खपायां लेहो आगो केवलज्ञान ॥ प्रगटपणे जिहां चारित अखत यथा आख्यात, हिव आगे

चौविह पणविह छव्विह जीव कहाय, चेतन त्रस थावर वेदें गई करणे काय ॥ एगेंदी सुखम बादर ए दोय जिय ठाण, सन्नि असन्नी पणिंदी वी ति चागिंद्री आण॥ २॥ ए सग पज्जत्ता अपज्जता चवदे होय, अनुक्रम जीव ठाण ए सूत्र प्ररूप्या सोय ॥ नाण दंसण चारित वीरज तप तिम उपयोग, ए षड लच्छण लच्छित जीव द्रव्य इह लोग ॥ ३ ॥ इग आहार सरीर इंदिय पज्जत्ती तीन, सासोसास भाषा मन षड ए अनुक्रम लीन ॥ च्यार एगेंदी पंच पज्जती विगलें जोय ॥ पंच असन्नि सन्नितें षड पज्जत्ती होय ॥ ४ ॥ इन्द्रिय पांच उसास आऊ वल ए दस प्राण, च्यार छ सात आठ एगिंदी विगलें जाण, असन्नि सन्नि पंचेंद्री नें नव दस क्रम थाय, प्राणाथी जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्माधम्म आगास तीनूंना त्रिण २ भेद, काल दसम इग आगास पुग्गल च्यार विच्छेद॥ खंधा

देस पएस परमाणू चवद अजीव, धम्माधम्म पुग्गल नभ काल ए पांच न जीव ॥ ६ ॥ चलण सहाई धम्मे थिर संठाण अधम्म, अवगाह पूरण गलणें नभ पुग्गल धम्म ॥ समयावलिय महुत्त दोह पख मास नें साल पल्योपम सागर उसप्पणी सप्पणी काल ॥ ७ ॥ पड इग दो सग सग सग पड़ इग अंक गिणाय, एग मुहुत्तें आवलि संख्या सूत्र कहाय ॥ तीन सात वलि सात तीन ऊसासें माण, केवलनाणी भणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्च गोय मण सुर दुग पंचेंदि जाय, पांच शरीर आदि प्रति सरीर उवंग कहाय ॥ आदि संघेण संठाण चौवर्ण अगुरु लहु गोय, परघ उसास तेम वलिआ तप ने उज्जोय ॥ ९ ॥ सुभखगइ निम्माणत सादि दशु नीमाल, सुर नर तिरि आऊ तित्थंकर पुण्य वयाल ॥ तस वादर पज्जत पतेय थिरं सुभ सोय ॥ सुभग सुसर आइज्ज जसें त्रस दसको होय ॥ १० ॥

नाणंतराय दस कनत्र बीजा नीचअसाय, मिथ्य थावर दशनादग त्रिक पचवीस कसाय ॥ तिरियंच दुग एकेंद्री बि ति चोरिंद्री तेय, कूखगई उपधा अपसत्थ वरण चौ भेयं ॥११॥ पढम संघयण विना संघेण तेम संठाण, एम बयासी प्रकृति पाप ततनी ए जाण ॥ थावर सुहम अपज्ज साहारण अथिरै गेय, असुभ दुभग दू सरणा इज्ज अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय इंदी कसाय अव्वय तिम जोग बायालीस सेप पचीस क्रिया संजोग ॥ काइय अहिगरणीया पावसिया परिताप, प्राणातिपात आरंभकी परिगहियानों ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मिच्छादेसण वत्ती तेम, अपच्चखाणकी दिठ पुठ पाडुच्चिय जेम ॥ सामंतो पनवणिय ने सत्थि सहत्थै जेह, आज्ञानको वेयारण अणभोगा तेह ॥ १४ ॥ अणव कंख पच्चयना उवउगी समुदाय, प्रेम द्वेप इरियावही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परि

सहज इ धम्म भावण चारित्त, पणतिग वावीस दस वारै पण संवर तत्त ॥ १५ ॥ इरिया भापा एषणा सुमतीना भेद होय, आदान भंड उच्चार निस्केवण पांचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती काय-गुत्ती त्रिण जांण, हिव आगे वावीस परिसह कहूं हित आण ॥ १६ ॥ भूख पिपासा सीत उसन डांसा निरवत्थ, अरति जोपा चरिआ नैपिया सिज्जा सत्त ॥ अक्कोसवहजायण अलाभ रोग त्रिण भास, मल सकार यन्ना अन्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मद्दव अज्जव मुत्ती तव संजम सम्म, सत्यं शौच अकिंचन वंभचेरज इ धम्म ॥ पढम अनित्य असरण संसार एग अन-त्त, अशुचि आश्रव संवर निज्जर भवि भावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुभाव वोध दुरलभ इग्या-रम गाम, धरम साधक अरिहंत ए वारै भावना भाव ॥ सापायक छेदोपस्थापन वीजो सोय, परिहार विशुद्ध सूखम संपराय चउत्थो जोय १६

निम अहक्खाय चरित्त सरव जिय लोग प्रसिद्ध, जेह सुविधि आचरणें के जिय पांम्या सिद्ध॥ बारें विध निर्ज्जर तत्व बंधना च्यार प्रकार, प्रकृति ठिई अनुभाग प्रदेश भेदें निरधार॥ २०॥ अणसण उणोदर वृत्ति संखेप रसनो त्याग, काय कलेस सलीनता बाहिर तप षड़ भाग॥ पायच्छित विनय वेयावच्च तेम सिज्झाय, ध्यान काउसग अभ्यंतर तप षड़ विध थाय॥ २१॥ प्रकृति सुभाव काल अवधारण थित निरबंध, अनुभागे रस तेम प्रसेदे दलनो संच॥ पट प्रतिहार धार तरवार मय वलि तेम, निगड चित्र कर कुंभकार भंडारी जेम॥२२॥ अनुक्रम आठ नामना भाख्या जे जे भाव, तिम ज्ञानावरणादिक अड़ना एह सुभाव॥ इम संखेपे विवरण कीनां आधे तत, प्रस्तावै पांम्यो वरण वस्युं हिव मोख तत्त॥ २३॥ संत पदे परूपणा द्रव्य नें खेत्र प्रमाण, फरसन काल पांचमो छठो अंतर जाण॥

भाग सातमो भाव आठ तिम अलप वहुत्त ॥
ए नव भेदें भावन कर्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥
मोक्ष एक पदवी छै जे पदे अविनाभाव, व्योम
कुसुम तिम ससिक शृंग जिम नहीय अभाव ॥
एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मग्गण द्वार, विवरण
कर वरणवस्युं सुणज्यो सुहुम विचार ॥ २५ ॥
संमत्ते चायक सन्नी असन्नी येसन्नी, अणहारी
आहारी अणहारी ऊपन्न द्रव्य प्रमाणे सिद्ध
जीव ॥ द्रव्य होय अनंत, लोग असंखम भाग
एग सिद्ध होय अणंत ॥ २६ ॥ फरसन चेत्रथी
अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सादि अनंती
थित जिन आगमथी सुविदीत ॥ प्रतिपातां भावै
नहि सिद्धां अंतर जोय, सरव जीवथी भाग अ-
नंतम सहू सिद्ध होय ॥ २७ ॥ दंशण नाण जे-
हने बे ते चायक भाव, जीवत जेहनें वलि पर-
णामक भाव समाव ॥ सहुथी थोड़ा वेद नपुं-
सकथी जे सिद्ध तेहथी अधिक

गुण सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादिक नव तत्त तस सम्मत्तं, अणजाणंताने हुय जे सरधा नेरत्त ॥ सरव जिनेसर मुखथी भाख्या वयण ज हत्थ, ए बुद्धी जेहने मन संमत निचल तत्थ ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत, अर्द्ध पुग्गल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उ-सप्पणिय अणंते इग पुग्गल परियट्ट, अनंत अ-तीत अनागत तदगुण वयण प्रगट्ट ॥ ३० ॥ इम नव तत्त भेद पडिभेदै विवरण कीध, श्रावक आग्रह कीन सहाय पूरण रस पीध ॥ कोटिक गण सुभ सदन प्रकास नदी उपमांन, श्रीजिन-लाभचंद कुल पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अज्ञा-नादिक करिवर सिंहे वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वड़ साखानी पडिसाख ॥ ग्यानसार ते पडि-साखानी सूखम डाल, ए नव पद नव रयणे वि-नाणें गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवच्छर निश्चय नय विगई प्रवचन माय, परम सिद्धि पद वाम गतें

ए अंक गिणाय ॥ माघ किसन ससि वार मेरू तिथ परन कीध, च्यार कथा तजि तत्वकथा भज नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व भाषा-गर्भित स्तवनम् ॥

॥ दंडक भाषा-गर्भित स्तवन ॥

दोहा ॥ ऋषभादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥ दंडक रचनायें तवूं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंडक प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विज्जु अगन दीवो दही, दिसि पवण थणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आउ तेउ वलि, वाउ वणस्सइ काय ॥ बी ति चौरिंदी गब्भधर, तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस वेमाणि या, ए दंडक चोवीस ॥ एहना द्वार कहूं हिवे, गणनाये ते बीस ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर जिणेसरनी ॥ ए देशी ॥

सरीर उगाहण संघयणंसणा संठाण, कोहाई लेसिंदिय दो समुग्धाय प्रमाण ॥ दिट्ठी दंसण

गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादिक नव तत्त तस सम्मत्तं, अणजाणंताने हुय जे सरधा नेरत्त ॥ सरव जिनेसर मुखथी भाष्या वयण ज हत्थ, ए बुद्धी जेहने मन संमत निचल तत्थ ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत, अर्द्ध पुग्गल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उसप्पणिय अणंते इग पुग्गल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तदगुण वयण प्रगट्ट ॥ ३० ॥ इम नव तत्त भेद पड़िभेदे विवरण कीध, श्रावक आग्रह कीन सहाय पूरण रस पीध ॥ कोटिक गण सुभ सदन प्रकास नदी उपमांन, श्रीजिनलाभचंद कुल पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अज्ञानादक करिवर सिंहे वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वड़ साखानी पड़िसाख ॥ ग्यानसार ते पड़िसाखानी सूखम डाल, ए नव पद नव रयणे विनाणें गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवच्छर निश्चय नय विगई प्रवचन माय, परम सिद्धि पद वास गतें

ए अंक गिणाय ॥ माघ किसन ससि वार मेरू तिथ परन कीध, च्यार कथा तजि तत्वकथा भंज नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व भाषा-गर्भित स्तवनम् ॥

॥ दंडक भाषा-गर्भित स्तवन ॥

दोहा ॥ ऋषभादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥ दंडक रचनायें तवूं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंडक प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विज्जु अगन दीवो दही, दिसि पवणं थणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आउ तेउ वलि, वाउ वणस्सइ काय ॥ बी ति चौरिंदी गब्भधर, तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस वेमाणिया, ए दंडक चोवीस ॥ एहना द्वार कहूं हिवै, गणनाये ते वीस ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर जिणेसरनी ॥ ए देशी ॥

सरीर उगाहण संघयणसंसणा संठाण, कोहाई लेसिदिय दो समुग्धाय प्रमाण ॥ दिट्ठी दंसण

नाण जोग तिम वलि उवयोग, उपपात वलि चवण ठिई पज्जत्ति प्रयोग ॥ १ ॥ केदिसिनो आ हार सन्नि गई आगयवेय, दार गाहा दुगनो ए अरथ कह्यो संखेव ॥ हिव तेवीस दारनो रहिस समय अनुसार, अलप रुची हुं तेहथी कहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ २ री ॥ देशी सुरती महीनानी ॥ ए देशी ॥

चौ गब्भय तिरि वाउ कायें च्यार सरीर, मनुष्य सें पांच दंडक इगवीस रह्या ति सरीर ॥ थावर च्यारनें जघन्य उक्कोसे देह प्रमाण, भाग असंख्यात इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरवनो जघन्य स्वभावक अंगुल भाग संख्यात, उक्कोसे पणसै धनु सागरने विख्यात ॥ सुरनो सात हाथ गब्भय तिरि वणस्सय काय, जोयण सहस साधक इक सहस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगाउ वेइंदी जोयण वार, एग जोयण चउरेंद्री देह उंचे आकार ॥ आरंभ काले

वैक्रिय देहनो ए परिमाण, भाग एक इग आंगुलनो संख्यातम जांण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक्र इक लाख जोयण इक लाख, नवसैं जोयण तिरयंचने ए सूत्रे साख ॥ साभावकथा दुगणा नारक वैक्रिय काय, एक महूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥ सुरनें पन्न एक उक्कोसविउव्वण काल, विगल संघयणी थावर सुर नारकनी माल ॥ गब्भय तिर तिरनें पड़ विगलनें छेवट्ठ एक, सरव जीवनें च्यार दसेसगणाये लेप ॥ ५ ॥ नर तिरनें पड़ सुरनें समचौरंस संठाण, हुंडग इग नारग विगलेंद्री सूत्र प्रमाण, नाणाविह वय सूई मसूरनो चंद्र आकार, वणसइ वाऊ तेऊनूं बुदबुद अप्पाकार ॥ ६ ॥ सहूनें च्यार कसाय गब्भय पड़ नर तिरि दोय वेमाणिय नागर तेउ वाउ विगल त्रिक होये ॥ जोयसि तेऊ लेस्स सेस रह्याने च्यार, दार ३ [illegible] सुगम [illegible] स्युं विसतार ॥ ७ ॥ समुद्घात सग नरनें

गब्भय तिरि देव, नरग वायुनें च्यार सेसनें तीनुं भेव ॥ दिट्ठी दोय विगलमें थावरने मिथ्यात, सेसने तीन दिट्ठी जिम प्रवचनमें विख्यात ॥ ८ ॥ थावर वितिनें एक अचक्खु दंसण होय, चौरिंद्री ते चक्खु अचक्खु दंसण होय ॥ मनुजने च्यार सेस दंडगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर तिर नारगनें लीन ॥ ९ ॥ थावर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण, गब्भय मण नें तीन अनाणनें पांचू नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें तेरै जोग, मनुजने पंरै च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥ वाऊकायनें पांच तीन थावर संयोग, मनुजने बार नगर तिरदेवनें नव उपयोग ॥ विगल दुगै पण पड़ चौरिंद्री थावर तीन, उववाय इग चवण दार दोनुं समकीत ॥ ११ ॥ एग समै संख्यात असंख्या चवण पपात, गब्भय विकलेंद्री नायर सुरनी ख्यात ॥ मणुआ अथावर वणस्सइ

संख संख अणंत, मणुज असन्नी असंख चवंत तेम उपजंत ॥ १२ ॥ बावीस सात तीन दस व रस सहस उक्किठ, वसणई च्यारनें तीन दिवस तेऊनें जिठ ॥ नर तिर तीन पल्य सुर नागर अयर तेतीस, व्यंतर पल्य अधिक लख वरष पल्य जोइस ॥ १३ ॥ असुरादिक दसनें इक सागर अधिको आय, देसें ऊणा दोय पल्यनो नवेय निकाय ॥ विगलनें बार वरस गुणवास दिवस छम्मास ॥ अंतमुहुत्तजहन्नें पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥ भुवनपती नारग व्यंतर दस वरस हजार, पल्य तेना अडंस वेमाणिय जोइस धार, सुर नर तिरि नारगनें पट थावरनें च्यार ॥ विगलनें पंच पज्जत्ती ए अधरम दार ॥ १५ ॥ सरव जीवनें होय छए दिवसनो आहार ॥ होय न होय पंचादिक दिस ए सब मझार, दीह कालकी चौविह सुर नागर तिरयंच ॥ विगलनें हेउ पणसा सन्नि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गब्भय म-

णजने दीह कालकी सन्ना होय, केइक आचा-
रज कहे दिठिवाय थी दोय ॥ निश्चय पज्जत्ता
पंचिंदि तिरि नर जेह, चौविह देवां माहे आवी
ऊपजै तेह ॥ १७ ॥ संखाउपज्जत पंचेंदी तिरि
नर तेम, पज्जत्ता भू दग पत्तेय वणस्सई जेम ॥
ए सवरमें निश्चै सुरनी आगयि हुंति, पज्जत
संख गब्भय तिरि नर सव नरके जंत ॥ १८ ॥
नरक उद वरत्या नर तिर उपजै न हुवे सेस,
भू अप्प वणस्सइमें नरग विण उपजै असेस ॥
पुढवाई दस पयमें भू आऊ वणजंति, पुढवाई
दस पयमें तेउ वाऊ उवजंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊ
तो गमण पुढवी पद नवमें हुत, पुढवाई दस
पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति
आगति मणुआ सहुमें जाय, तेउ वाऊथी मरीने
जीव मनुज नवि थाय ॥ २० ॥ श्रीपुरसै चौविह
सुर तिरि नर तीनूं वेद, थावर विगल नारकने
एक नपुंसक भेद ॥ पज्जता मण बादर अगन

वेमाणिक तेम भवण नरग व्यंतर जोइस चौप-
ण तिरि, एम ॥ २१ ॥ वेइन्द्री तेइन्द्री पृथवीने
अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि
कहिवाय ॥ हे जिन ए सहु भावमें पांम्या वार
अनंत, तेहनो अनुक्रम गिणतां किमही न आवे
अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंडगमें ते गति
संयोग,लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥
सुरमें पिण दंसण लहि विरत न पांमी मूल,
ते सुर जात सहावे देसविरत प्रतिकूल ॥ २३ ॥
आरजदेश आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेश, तेहथी
तुह दरसणनो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक
तारक कारक वारक दंशण देव, आतम गुण सं
सार समत्त कम्म सयमेव ॥ २४ ॥ खरतर गच्छ
भट्टारक श्रीजिनलाभ सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस
तेहना पद अरविंद ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यान-
सार तसु सीस, तेण तव्या तेवीस दार, दंडग
चोवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रस वारण तेम

चंद निरधार, पोस मास पख उज्जल सातमने सोमवार ॥ श्रावक आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अट्ठम चौमासो कर जैपुर नगर मझार ॥ २६ ॥ इति श्री चौवीस-दंडक स्तवनम् ॥

॥ जीवविचार भाषा-गर्भित स्तवन ॥

॥ दुहा ॥ भुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥ कहस्युं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ढाल १ ली ॥ देशी सुरती महीनानी ॥ ए देशी ॥

एक मुगति बीजा संसारी जीव दु भेद, सत्ता भिनै सिद्ध अनंतै रूप अभेद ॥ संसारी थावर इग तिम त्रस दोय प्रकार, भु अप वाउ तेउ वणस्सइ थावर धार ॥१॥ फिटक रयण मणि विद्रु म हिंगुल वलि हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेडी वन्नी अरणेटो पालेवो पाषाण ॥ भोडल तूरी उस भूमि पाहण जे खाण ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय

विछेद ॥ भूमि आकास उस हिम करग आऊना भेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूं अर तेम ॥ होय घणो दधि अप्पकाय पिण पाहण जेम ॥ ३ ॥ अंगारा झाला भोभर तिम उलकापात, असणि कणग विद्युतादिक अगनि जीव विख्यात उब्भामग उक्कलिका मंडल वलि मुख वात, सुद्ध गूंज तिम घण तणु वाऊ भेदें ख्यात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय वणस्सई जीव दु भेय, एग सरीर अनंत जीव साधारण नेय ॥ कंदा अंकुर कूंपल फूलण वलि जंबाल, भूंफोड़ा अद्दत्तिय सरवे जे फल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वाथलो थेग पालंको साग, गुपत सिरा सांधा गांठो भांजे सम भाग ॥ काटी डाल भूमिमें रोप्यां पल्लव थाय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरी रे एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल छाल फल मूल काठ बीजै जिय एक ॥ वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक

अंतमु हुर्त्ते आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिठी निजर न होय, लोकर लोक प्रकास थकी चलि अलप न कोय ॥ कवडी संख गंडोला लहिगा लटनी जात, चंदन काअलसी मेहर जोका विचात ॥ ८ ॥ माय वाहाकम पौरादिक वेइन्द्री होय, गामी मांकिण जूआ कीडा कीडी दोय ॥ दीपक ईली घीवेली गोगीडा जात, चरम जूका गादहिया गोवर कृम उतपात ॥ ६ ॥ धनकीडा जिम चोरकीड़ा गोवालो तेह, ईली कंथुक इन्द्र-गोप तेइंद्री एह ॥ वीछू ढंकण भमरा भमरी इन्द्री च्यार, तीड़ा माखी डांस मच्छर, कंसारी धार ॥ १० ॥ कवडडोला मांकड़िय पतंग इत्या-दिक भेद, नारक तिरि मणु देव पंचेंद्री च्यार विच्छेद ॥ धम्मा वंसा सेला अंज रिठा जात, मघा माघवई नारग ए नामे सात ॥ ११ ॥ जल चारी थलचारी नभचारी तिरयंच, मच्छ कच्छ सुसमार मगर गाहा जल अंच ॥ चौपय उरपरी

भुजपरी साप भु चारी लेय, तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रम देय ॥ १२ ॥ खेचर चरम रोम पंखी चमचेड़ कपोत, मनुजलोकथी वाहिर समुग विगय पंख होत ॥ सरवे जल थल खेचर समुच्छम गब्भय दोय, कम्म अकम्म भूमि अंतर दीवा मण जोय ॥ १३ ॥ असुरादिक दस होय वाण व्यंतरिया अद्ध, जोइस पंच वेमाणिय दुविहासु तें दिध ॥ पनरे भेदे सिद्ध कह्या ए जीव प्रकार, तनु मानादिक हिव एहनो कहिसुं अधिकार ॥ १४ ॥ देह आउखो एक सरीरे थितनो मांन, प्रांण जेहने जेता तिम वलि योन प्रमाण अंगुल भाग असंख सहू एगिंदी काय, जोयण सहस साधिक पत्तेय वणस्सई काय १५ वो ति चउरेंद्री अनुक्रम उक्किठदेह ऊंचास, वारे जोयण तीन गाउ इग जोयण भास ॥ सत्तमना नेरइया धणु सय पंच प्रमाण, तेहथी अरध २ ऊणा अनुक्रम रयणाण ॥ १६ ॥ जोयण सहस

गब्भधर मच्छ उरगनो देह, गाउ धणुत्र पुहत्त भूचारी पंखी जेह खेचर नव धण उरग भुयंग जायण नव होय, नव गाऊ परिमाण समुच्छम चौपय सोय ॥ १७ ॥ छड़ गाउ ऊंचास चउप्प य गब्भय मांण, तीन कोस उक्कोस मनुजनो काय प्रमांण ॥ भुवन व्यंतर जोइस वेमाणिय ईसाणंत, सात हाथ उक्कोसे ऊंचपणे तणु हुंत ॥ १८ ॥ सनतकुमार माहेंद्रे पड़ ब्रह्म लांतक पांच शुक्र सहस्रारे उक्कोस च्यार कर वांच ॥ आण- त प्राणत आरत अच्युत हाथें तीन, नवग्रैवेयक दोय पंचाणु तरइग लीन ॥ १९ ॥ बावीस सात तीन दस वरस सहस्सें आय भू आऊवाऊ व- णती दिन तेऊकाय ॥ वार वरस गुणचास दि- वस तिम वलि छम्मास, अनुक्रम बेइंद्री तेइंद्री चौरिंद्री रास ॥ २० ॥ सुर नागर तेतीस अयर उक्कोसें आय, चोपय तिरिय मनुजनों तीन पल्योपम आय ॥ जलचर उरपर भुजपर उक्कासे

पुव्वकोडि, पंखीने इग भाग असंख्य पल्यनो जाइ ॥ २१ ॥ सरव सूखम साधारण समुच्छम मणुं जेह, जहन्न उक्कोसें अंतमुहुत्त नियम थिति उगाहण आख्यो संखेपें अधिकार, जे वलि इरथ विसेस २ सूत्रसूं धार ॥ २२॥ असंख्य उसप्पिणी सहु एगिंद्री आपणी काय, उपजै चवै अनंत साधारण वणस्सई काय ॥ संख्याता संवच्छर विगल आपणी देह, सात आठ भव पंचेंद्री तिरि मणुआ जेह ॥ २३ ॥ नारकथी उद वरती जीव नरक नवि जाय, देव चवीने ते वलि देवपणै नवि थाय ॥ इन्द्रीय सासोसास आउ वल ए दस प्राण, च्यार छ सात आठ इग दु ति चौरिंद्रीय जाण ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचेंद्री दस नव अनुक्रम जोय, प्राणथकी जेवि प्रयोग जिय मरणें होय ॥ भोम सायर संसार अपार अनंती वार, भमियो जीव धरम विन जोण अ-सोनें च्यार ॥ २५ ॥ सग सग सग सग दस

थंदे दो दो दो लाख, च्यार च्यार तिम. च
चवद लख सूत्रे साख ॥ भू आप तेउ वाऊ व
पत्तेय साधारण, विति चौपण तिरि नारग सुर
अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आय न पाण
जोणी कुल नही जात, सादि अनंत भंग जि
आगम थित विख्यात ॥ रोग न सोग न भो
जोग नही नारी लिंग, नहीय नपुंसक पुरसत
नही अंग-उपांग ॥ २७ ॥ नाण दरस चारि
वीरज ए च्यार अनंत, सिद्ध थया तेहथी सिद्ध
तै सिद्ध कहंत ॥ इम ए जीवविचार गाथा
मांपारूप श्रावक, आग्रहथी में कीनो सुगम-सुग
सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गच्छ भट्टारक श्रीजिन
लाभ सूरीस, रत्नराज गणि ग्यानसार मुनि सीस
जगीस ॥ संवत ससि रस वारण ससिहर ध
सिरधार, माघ चोथ दिन कीनो जैपुर नगर म
झार ॥ २९ ॥ इति श्री जीवविचार-स्तवन
संपूर्णम् ॥

॥ समवसरण-विचार-गर्भित स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ श्रीजिनशासन सेहरो; जगगुरु पास जिणंद ॥ प्रणमी जेहना पाय कमल, आवी चोसठ इंद ॥ १ ॥ तीर्थंकर आवे तिहां, त्रिगडो करै तइयार ॥ समकित करणी साचवै, एह कहू अधिकार ॥ २ ॥ करै प्रशंसा समकिती, मिथ्यात्वी होवे मूक ॥ सूर्य देख हरखे सहू, जिम अंधारे घूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा ॥ ए देशी ॥

आप अरिहंत भलै आविया जी, गावै अपछरह गंधर्व ॥ समवसरण रचै सुरवराजी, संखेपे ते कहूं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ॥ भुवनपति वीस इंद्रै मिल्याजी, सोलह व्यंतर सार ॥ जोइस दु दस वेमाणिय जुड्या जी, चौसठ इन्द्र सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥ पवन सुर पूंज परसारजै जी, भूमि योजन सम भाउ ॥ मेघकुमर रचै मेघने जी, करिय सुगंध छिड़काव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अ-

गर कपूर सुभ धूपणा जी, करय श्री अगनकुमार
वाण-व्यंतर हिव वेगसूं जी, रचय मणि पीठका
सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहप पंच वरण उरध मुखै
जी, वरपए जाणु प्रमाण ॥ भवणवइ देव त्रिगडो
भलो जी, करय ते सुणउ सुजांण ॥ आ० ॥८॥
रचय गढ़ प्रथम रूपातणोजी, सोवन कांगरै
सार ॥ रवि-ससि-रयण कोसीसकोजी, कनकनो
वोच प्रकार ॥ आ० ॥ ६ ॥ रतनगढ रतनने कां-
गरे जी, रचय वेमाणि सुरराज ॥ भलो त्रीजो
गढ भीतरे जी, जिहां विराजै जिनराज ॥ आ०
भींत उंची धणुं पांचसै जी, सवातेतीस विस-
तार ॥ धनुपसे तेर गढ आंतरो जी, प्रौल पंचास
धण च्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहुं
गढ तणो जी, पावडी वीस हजार ॥ थाक श्रम
नहिय चढतां थकां जी, एक कर उच्च विस्तार ॥
आ० ॥ १२ ॥ पंच धणु सहस पृथवी थकी जी,
उच्च रहे त्रिगढ आकास ॥ तेह तल सहू यथा-

स्थित वसै जी, नगर आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहु २ दिस तिहां जी, नीलमणि मोर निरमांण ॥ दुसय धणु मध्य मणि पीठका जी, उच्च जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ च्यार आसण तिहां चिहुं दिसे जी, मोतीयें भाक-भमाल ॥ सम विच कूण ईसाणमें जी, देव-च्छंदो सुविशाल ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवदुंदुभि नाद उपदिसे जी, जिन गुण गावसी तेह ॥ अम्ह जिम आइ सिर ऊपरे जी, गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ ढाल २ ॥ सफल संसारनी ए देशी ॥

पुव्व दिसि आसणे आय वेसे पहू, सुर कृत चौमुख रूप देखै सहू ॥ दीपै असोक तस वार-गुण देहथी, देखि हरखै सहू मोर जिम मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण छत्र सुविशाल ए, रूप चिहुं २ दिसें चामर ढाल ए ॥ योजनगा-मनी वांण ... उपदिसै वार

परपद भणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अगनि-कूणें करी. गणधर साधवी तिम वेमाणिय सुरी ज्योतषी भुवणनी विंतरी स्त्रीपणें, नैऋतकूण जिनवांण उभी सुणें ॥ त्रिहूंतणा पति वायव-कूणमें जाण ए, सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए ॥ वारह परखदा मद मच्छर छोड ए, भूख त्रिस विसरें सुणें कर जोड ए ॥ ॥ १६ ॥ पूठ भामंडल तेज प्रकास ए जोयण सहस ध्वज उं च आकास ए, झलहलै तेज भ्रुव चक्र गगने सही, महक सहु वारणे धूपधाणा सही ॥ २० ॥ वाहण वहिल सहु धरिय पहिले गढे, होय पग-चार नर नार उंचा चढे ॥ जिनतणी वाणि सु-णि जीव तिरयंच ए, वैर तजि वीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥ पुन्यवंत पुरुष ते परपद वारमें सुणें जिनवाणि धन गणिय अवतारमें ॥ चौ-विह देव जिनदेव सेवा रचै, मणिमयी मांहिलो प्रौल माहे वसै ॥ २२ चिहुं दिसि वाटली वावि

चौजाणियै, विदिसि चौ कूण दोय २ वखाणि-ये ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए, स्नान पाने वपु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अपराजिया, मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया ॥ तुंवरु पुरुष खट्टंग अचि माल ए, रजत-गढ प्रौलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिलो त्रिगडो नहुयपुर जिण ग्राम ए, देव महर्द्धिक रचै तिण ठांम ए ॥ करण वारवार नही कारण कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही होय ए ॥२५ जिण समवसरणनी ऋद्धि दीठी जियै, तेह धन धन्न अवतार पायो तियै ॥ पास अरदास सुणी वंछित पूरज्यो, हिव मुझ ताहरो शुद्ध दरसन हुज्यो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणै ऋद्धि वरणै सहू जिनवर सारखो ॥ सरदहे ते लहे शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखो ॥ प्रकरण सिद्धांत गुरु-परंपरा

सुणो सहु अधिकार ए, संस्तव्यो पासजिनंद पाठक धर्म वर्द्धन धार ए ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार-गर्भित स्तवनं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री ऋषभदेवजीका स्तवन ॥

॥ ढाल ॥ पाटोधरजी पाटियै पधारो ॥ ए देशी ॥

॥ सुण २ सैत्रुंजगिर स्वामी, जग जीवण अंतरजामी, हूं तो अरज करूं सिरनामी ॥ कृपानिध विनती अवधारो, भवसागर पार उतारो, निज सेवक वांन वधारो ॥ कृ० ॥ १ ॥ प्रभू मूरति मोहनगारी, निरख्यां हरखै नर नारी, जाउं वारी हुं वार हजारी ॥कृ० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजै, मुझ ऊपर महिर धरीजै, दिल रंजन दरसण दीजै ॥ कृ० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया, भव २ना पातिक टलिया, प्रभु जी मुझसे मुख मिलिया ॥ कृ० ॥ ४ ॥ समस्त संकट टलि जावै, नव नव नित मंगल थावै, मुझ आतम पुन्य भरावै ॥ कृ० ॥ ५ ॥ करजोडि

वीन्ती कीजै, केसर चंदन चरचीजै, दिन धन २ तेह गिणीजै ॥ क्रु० ॥ ६ ॥ प्रभु दरस सरस लहि तोरो, अति हरषित हुवो चित मोरो, जिम दीठा चंद चकोरो ॥ क्रु० ॥ ७ ॥ परतिख प्रभु पंचम आरै, वीस माहा भय संकट वारै, सहु सेवक काज सुधारै ॥ क्रु० ॥ ८ ॥ सेवो स्वांमि सदा सुखदाई, कमणा न रहै घर कांई, वाधै संपत शोभ सवाई ॥ क्रु० ॥ ९ ॥ नाभिराय कुलं वर चन्दा, भव जन मन नयण आनंदा, उलगै सुर असुर सुरिंदा ॥ क्रु० ॥ १० ॥ जयकारी-ऋषभ जिनंदा, ग्रह सम धर परम आणंदा, वंदे श्रीजिन भक्ति सूरिंदा ॥ क्रु० ॥ ११ ॥

॥ पार्श्वनाथजी का वडा स्तवन ॥

॥ ढाल १ ॥

पास जिनेसर जग तिलो ए, गवडीपुर मंडण गुण निलो ए, तवन करिस प्रभु ताहरो ए, मन वंछित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥ नयरी नांम

वणारसी ए, सुरनयरी जिण च्छे हसी ए ॥ तेण पुरी छै दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु घर नार ए तसु गुणहि न लब्भै पार ए ॥ तास उयर अवतार ए, तसु अ-तिशय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए, अनुक्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए, पूछै भूपतिनें कह्या ए, करजोड़ि कह्या ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मन हरख्यो ॥ वीजै वृषभ उदार, धरणी जिण धर्यो भार ॥ ५ ॥ तीजे सिंह प्रधान, जसु वल कोय न मांन ॥ चउथै देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुर सेवी ॥ ६ ॥ पांचमें पुष्फनी माला, पंच वरण सुविशाला ॥ छठै दीठो ए चंद, ग्रहगण केरो ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो अंध कार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सो-

हती ॥ ८ ॥ नवमें पूरण कूंभ, भरियो निरमल अंभ ॥ देखि सरोवर दसमें, मनह थयो अति विसमें ॥ ६ ॥ समुद्र इग्यारमें ठांमें, खीरजलधि इण नामें ॥ वारम देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥ तेरम रतननी रासि, दह दिसी ज्योति प्रकासो ॥ सुपन चवदमें ए दीठो, पातिक धूमनीठो ॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार, हरख्यो भूप ऊदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, थास्यै उदय हमारै ॥ ११ ॥

॥ दूहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण, आवी मंदिर भक्ति ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकयत्थ ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम उगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते घर पहुता आपणै, दीधां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ ॥

हिव जनम्या जगगुरु जगत्र थयो जयकार, खिण इक नार किये पायो सुक्ख अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीध, कर थानक पोहती वंछित तेहनो सिद्ध ॥१६॥ तिणहीज निसि चोसठ इन्द्र मिली तिहां आवै, लेइ निज भक्तै सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ करी जनम महोच्छव जननी पासै ठावै, तिहांथी सुर सव मिल द्वीप नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ इम रयण विहाणी ऊगो दिवस उदार, घर २ गाई जैकीजै मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिली सहू परिवार, तसु नाम दियो श्री उत्तम पासकुमार ॥१८॥ प्रभु वाधै दिन २ कला करी जिम चंद, त्रिहु ज्ञान विराजित रूप जिसो देविंद ॥ गुणकला विचक्षण विख्यातणो निधांन, जोबनवय आयो परणायो राजान ॥ १९ ॥

॥ ढाल ४ ॥

कुमरपदे प्रभु रहतां काल सुखै गमै ए, आयो मन वैराग संजम लेवा समै ए ॥ तव लोकांतिक देव जणावै अवसरू ए, देइ संवच्छरी दान याचक जन सुखकरू ए ॥ २० ॥ स्वामी संजम लेय इन्द्रादिक सब मिल्या ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदल्या ए, पांमीय केवलज्ञान सुरै महिमा करी ए, थापीय चौविह संघ मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ५ ॥

इम श्री गौडीपासतणा गुण जे नर गावै, ते नर नारी इह परलोग सुवंछित पावै ॥ संघ करी संघपति जिके गवडीपुर जावै, चोर धाड संकट टलै विघन बुराइ न आवै ॥ २२ ॥ धरण-राय पउमावइ जास वहे सिर आंण, आंमल वरण सुसोभित नव कर काय प्रमांण ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणि कांमगवी सम तोलै, श्री गुणशेखर सीस समयरंग इण पर बोलै ॥ २३ ॥

॥ अजित शांतिजिन-स्तवन ॥

मंगल कमला कंद ए, सुख सागर पूनम चंद ए ॥ जगगुरु अजित जिणंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ विहु जिनवर प्रणमेव ए, विहु गुण गाइस संखेव ए ॥ पुण्यभंडार भरेसु ए, मानव भव सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कोडहि लाख पचास ए, सागर जिनशासन भास ए, रिसह जिनेसर वंस ए, उवझाय सरोवर हंस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजियो ए, राजा जितशत्रु तिहां गाजियो ए ॥ विजया तसु घरनार ए, विहु रसयति पासा सार ए ॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतार ए, तिण राय मनाव्यो हार ए ॥ उयर वस्यो दस मास ए, प्रभू पूरी जननी आस ए ॥ ५ ॥ विहु जण मन अणंदियो ए, सुत नाम अजिय जिण तो दियो ए ॥ तिहुअण सयल उच्छाह ए, कम २ वाधे जगनाह ए ॥६॥ हंस धवल सारिस तणी ए, गति सुललित निज गति निरजणी ए ॥

मलपति चालै गैल ए, जाणे नयण अमीरसरेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समो संसार ए, वलि ज्ञान विवेक विचार ए ॥ गुण देखो गज गह गह्यो ए, लंछन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥८॥ जोवन वय जब आवियो ए, तब वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साधै सब काज ए, प्रभु पालै पुहवी राज ए ॥ ९ ॥ हिव हथणापुर ठाम ए, विश्वसेन नरेश्वर नांम ए, राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे वेव ए ॥ १० ॥ चवदह सुपनें परवस्यो ए, अचिरा उयरें सुत अवतर्यो ए ॥ मांनव देव वखाणियो ए, चक्रीसर जिणवर जांणियो ए ॥११॥ देस नयर हुय संत ए, तिण नांम दियो श्रीशांत ए ॥ जिन गुण कुल जांणै कही ए, त्रिहुं भुवणे तसु उपम नही ए ॥ १२ ॥ नयण सलूणो हिरण लोए, वन सिंहे वीहै एकलो ए ॥ नयण समाधि निरोध ए, इण नयणें नारि विरोध ए ॥१३॥ गीतहि राग सु रंग ए, पिण पभणै लोक

कुरंग ए ॥ तो उलग्यो ससि संक ए ॥ तिण पाम्या नाम कलंक ए ॥ १४॥ इण पर मृग अति खलभल्यो ए, भय भंजण सांमि सांभल्यो ए॥ आणंदियो मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लंछन तणो ए ॥ १५ ॥ लीला पति परणे घणी ए, नव नविय कुमर रायां तणी ए ॥ वल छल आवे यण जोगवे ए, पीय राज भली पर भोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमर तणे मंडल समें ए, पंचास सहस वरसां गमे ए ॥ तो तेजे दिणयर जिसो ए, ऊपन्नो चक्करयण तिसो ए ॥ १७ ॥ साधी भरह छखंड ए, वरतावो आण अखंड ए ॥ चवद रयण नव निहि सही ए, वसु सोल सहस जक्खै अही ए ॥ १८ ॥ सहस वहुत्तर पुर वरा ए, वत्तीस मौडवद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमे कोड ए, छिन्न वे नमें वे कर जोड ए ॥ १६ ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र घमघमें ए, वत्तीस सहस नाटिक रमें

ए ॥२०॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्षण लावण्य लीला भरी ए ॥ जंगम सोहग देहरी ए, एसी चौसठ सहस अंतेउरी ए ॥२१॥ अवरज ऋद्धि प्रकार ए, मणि कंचण रयण भंडार ए॥ ते कहिवा कुण जांण ए, वपुवपु रे पुण्य प्रमांण ए ॥ २२ ॥ इम चक्कीसर पंचमो ए, चोथो दूसम सूसम समो ए ॥ वरस सहस पचवीस ए, सव पूरी मनह जगीस ए ॥२३॥ इण पइ विहु तीर्थंकरा ए, चिर पालिय राज त्रिविह परा ए॥ जाणी अवसर ए सार ए, विहु लीधो संजम भार ए ॥ २४ ॥ विहु खम दम धीरज धरी ए, विहु मोह मयण मद परिहरी ए ॥ विहु जिन झाण समाण ए, विहु पांम्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ विहु देवहि कोड़हिमहि ए, विहु चौतीसै अतिसय सहि ए ॥ समवसरण विहु ठाण ए, विहु योजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेऊरी ए, विहु आगलि इन्द्र अंतेउरी ए ॥

टिगमिग चावे जग सहू ए, रंगहि गुण गावें सुरवहू ए ॥ २७ ॥ विहु सिर छत्र चमर विमल, विहु पग तल नव सोवन कमल ॥ विहु जिन-तणें विहार ए, नवि रोग न सोग न मारि ए ॥ ॥ २८ ॥ विहु उवयार भुवन भरी ए, विहु सिद्ध रमणसुं परवरी ए, विहु भंजी भव फंद ए, विहु उदयो परमाणंद ए ॥ २९ ॥ इम बीजो ने सोलमो ए, जांणे चिंतामण सुर तरु समो ए ॥ थुणि अति संभ विहाण ए, तिहां इह परभव नवि हांण ए ॥ ३० ॥ बिहु उच्छव मंगल करण, विहु संघ सयल दुरिय हरण ॥ विहु वर कमल नयण वयण, बिहु श्रीजिनराज भुवण रयण ॥ ३१ ॥ इम भगते भोलिमतणी ए, श्रीअजिय शांति जिण थुय भणि ए॥ सरण विहु जिण पाय ए ॥ श्रीमेरुनंदन उवझाय ए ॥ ३२ ॥

॥ मुहपत्ती पडिलेहण का स्तवन ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान क्रिया जिण उपदिसि जी, सव सुख तणो उपाय ॥ भविक जनधर श्रीजिन उपदेस, छूटे कर्म कलेस ॥भ०॥ ए आंकणी॥ पडिलेहण मुहपत्ती तणी जी, भाखी छै पचवीस ॥ तिहां ए भाव विचारिये जी, इम भाखै जगदीस भ० ॥ २ ॥ प्रथम वे पास विलोकिये जी, सूत्र अरथनी दृष्टी ॥ ए पडिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी पुष्टि ॥ भ० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिश्रनी जी, मोहनी तीननो त्याग ॥ काम-राग स्नेहरागनें जो, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥ भ० ॥ सीप वधू टक गुरुथकी जी, वाम हाथ करनाउ ॥ नव अखोड़ा आदरो जी, नव पखोड़ा गमाउ ॥ ५ ॥ भ० ॥ देवतत्व गुरुतत्वसूं जी, धर्मतत्व ग्रह सार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी,

नानतणो परिहार ॥ ६ ॥ भ० ॥ ग्यान दरसण चारित्रना जी, संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अवधार ॥ भ० ॥७॥ मन वच कायानी सदाजी, गुपति ग्रहीजें शुद्ध ॥ परिहरिये वलि जांणनें जी, तीनें दंड विशुद्ध ॥ भ० ॥ ८ ॥ पड़िलेहण पचवीस ए जी, मुंहपत्ती नी सार ॥ हिव पड़िलेहण अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ भ० ॥ ६ ॥ हास्य अरति रति धोयनें जी, शुद्ध करो वांम वाह ॥ तजभय शोक दुगंछना जी, दक्षिण पिण करे साह ॥ १०॥भ० धुरली लेस्या तीन ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्ध रस साता गारवोजी, करि मुखथी चकचूर ॥ ११ ॥ भ० ॥ काढ सल्य तीन उरथकी जी, माया नियाण मिथ्यात ॥ च्यार कषाय वेव गलथी जी, क्रोधादिक करी घात ॥ १२ ॥ भ० ॥ तज षटकाय विराधना जी, चरण चिन्हे शुद्ध होय ॥ ए पड़िलेहण अंगनी जी, पचवीसे तूं जोय १३

भ० ॥ इम पड़िलेहण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरै करै जी, पांमैं सुक्ख अनेक ॥ १४ ॥ भ० ॥ कलस ॥ इम वीर जिनवरतणा मुखथी, अरथ गणधर सांभली ॥ कहै सूत्रवांणी मन सुहाणी, सुणो भवियण मन रली। उवझाय वर श्रीलब्धिकीरत, मुखथकी ए संग्रही ॥ मुंहपतो पड़िलेहण तणो विध, लच्छिकीरत गणि कही ॥ इति श्रीमुहपत्ती पड़िलेहण स्तवनम् ॥

॥ आलोयण-स्तवन ॥

॥ ढाल ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

ए धन शासन वीर जिनवरतणौ, जास परसाद उपगार थायै घणौ ॥ सूत्र सिद्धांत गुरुमुखथकी सांभली, लहिय समकित अनें विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यांन धर तप जप खप करै, जिणथकी जीव संसार-सागर तिरै ॥ दोष लागा जिके गुरुमुख आलोइयै, जीव निमल हुवै वस्त्र जिम धोइयै ॥ २ ॥ दोष

चार प्रकारना, धुरथकी नामनें अरथ ते धारणा, किणही कारण वसे पाप जे कीजियें, प्रथम ते नाम संकप्प कहीजियें ॥ ३ ॥ कीजीये जेह कंदर्प्प प्रमुख करी, दोप तेवीय परमाद संज्ञा धरी ॥ कूदतां गवतां होय हिंसा जिहां, दर्प्प इण नाम करि दोप तीजो तिहां ॥ ४ ॥ विणसतां जीव जीवनेगिनर करे जिको, चोथो आकुट्टिया दोप उपजे तिको ॥ अनुकमें च्यार ए अधिक एक एकथी, दोप धर प्रायच्छित्त लेह विवेकथी ॥५॥

॥ ढाल २ ॥ अन्य दिवस कोई मागध आयो पुरंदर पास ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्याननां उपगरणतणी आसातन कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमढ्ढ एकासणो आंबिल उपवास, अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु वताई तास ॥ ६ ॥ ए ज़ो खंडित थाये अथवा किहांई गमाय ॥ तो वलि नवा करायां दोप सहू मिट जाय ॥ थापना अणपड़िलेह्यां पुरिमढनो तप धार, गिरतां एका-

सणनें गणता चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार तिहां पुरमढ्ढ जघन्य, एकासण आंबिल अठम चिहुं भेद मन्न ॥ आशातन गुरु देवनी साहमीसुं अप्रीति ॥ जघन्य एकासणनी आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंभ विणास्यां चोथ प्रसिद्ध, बी ति चउरेंद्री त्रसायां एकासणथी वृद्ध ॥ बहु बि ति चौरैंद्रिय हण्या बि ति चउ उपवास, संकल्पादि चिहुं विधि दुगुणा दुगुण प्रकास ॥ ६ ॥ उद्देही कुलियावडा कीड़ी नगरा भंग, बहुत जलोयां मूंक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन कृमि पातन आंबिल इक एक, जीवांणी ढोलंता दोय उपवास विवेक ॥१०॥ संकल्पादिक एक पचेंद्री उपद्रव होय, दोइ त्रिण आठ दसै उपवासै आलोयण जोइ, बहु पंचेंद्री उपद्रव छठ अठमें दस वीस ॥ चिहुं प्रकारे चढती आलोयण सुणले सीस ॥ ११ ॥ पंचेंद्रीनें प्रमुखै कीध प्रहार, एकासण -

पवास नें छठ विचार ॥ साध समचें लोक समचें राज समच, कुड़ा आल दियां दुइ चौथरु छठ प्रत्यच ॥ १२ ॥ उपवास दस दंडायां तेम मरा यां वीस, इक लख असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लग इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास ॥ १३ ॥ सूआवड़ना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन कीधां बहु असतीने पोस ॥ करीय दुवालस वार हजार गुणो नवकार, मिच्छादुक्कड़ देइ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी तांम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पच्चखाण, विण दीधां वांदणां, पड़िकमणा विध पांतरे ए ॥ अणोभा नें असिभाय, तिहा अविधें भणया, इक २ आंबिल आचरे ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र, निवी आंबिल, भांगें आलोयण इमें ए ॥ एक पांच पट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण नवकार अनुक्रमे ए ॥

१६॥ उपवास भंग उपवास, आंबिल ऊपरां; अधिको दंड वखाणिये ए ॥ पांचम आठम आदि, भंग कियां वली, फिर ग्रही पातिक हाणीयै ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग, चूलै घरटियै, दीधै अठम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरणी छूरी आंबिल चढता आदरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध, रात्री भोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परद्रोह चींतव्या, उपवास एक २ जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनरे करमांदान, नियम करो भंग, मद्य मांस माखण भण्या ए ॥ आलोयण उपवास, संकप्पादिक, चिहुं भेदे चढतां लिख्या ए ॥ २० ॥ वोल्या मिरखावाद, अदत्तां दांन त्युं, जघन्य एकासण जाणीये ए ॥ अति उत्कृष्टी एण, जांण आलोयण, उपवास दस २ आंणियै ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत भागे अतीचार, जघन्य छठ

आलायण धार ॥ मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥ परिग्रह विर मण दोप प्रसंग, तीन गुणव्रतमांहे भंग ॥ च्यार शिक्षा व्रतने अतिचारे, आंबिल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलतणी नववाड़ि कहाय, तिहां जो लागो दोप जणाय ॥ त्रियनें फरस हुआं अवि-वेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥ २४ ॥ साधु अने श्रावक पोसीध, एकेंद्री सचित्त संघट्ट कीध ॥ वीसर भोले सचित्त जल पीध, दंड एकासण आंबिल दोध ॥ २५ ॥ विण धायां विण लूह्यां पात्रै, एकासण तिम पुरिमढ्ढ मात्रै ॥ गइ मुहप-त्ती आंबिल सारो, तिम उघै अठम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार छींड़ो राखै, व्रत पचखाण करै पट् साखै ॥ दोषे मिच्छामिदुक्कड़ दाखै, आ-लोयण लेतां अभिलाखै ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहिता नावै पार ॥ तोपिण संक्षेपै तंत सार ॥ निरमल मन करतां विस्तार

॥ २८ ॥ इम श्रीवीर जिनेसर स्वांमी, जसु आगम वचने विधि पांमी ॥ जीतकल्प ठाणांगे आदि, वली परंपर गुरु सुप्रसाद ॥ २९ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सव आलोयनें ॥ ए कांत पूछे गुरु वतावै, शक्ति वय तसु जोयनें ॥ विध एह करसी तेह तिरसी, धरमवंततणे धुरे ॥ ए तवन श्रीधमसिंह कीधो, चौपने फल वधी पुरे ॥ ३० ॥

॥ नंदीश्वर द्वीपका स्तवन ॥

नंदीसर वावन जिनालय, शास्वता चोमुख सोहेरे ॥ ऋषभानन चंदानन वारिषेण, वर्द्धमांन मनमोहे रे ॥ नं० ॥ १ ॥ आठमो द्वीप नंदीसर अद्भुत, वलयाकार विराजे रे ॥ तेहने मध्य चिहुं दिस शोभित, अंजन गिरिवर छाजे रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयण [illegible] ऊंचा, ऊंच पणे [illegible] रे ॥

ण. उवरी सहस कर विसाला रे ॥ नं० ॥ ३ ॥ ते ऊपर प्रासाद प्रभूना, अति उत्तंग उदारा रे॥ साधू जंघा विद्याचारण, वांदे विविध प्रकारा रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चैत्ये ए इकसो चोवीस, बिंब संख्या सब दाखो रे ॥ ध्यावो सेवो भविजन भगते, सुध आगम कर साखी रे ॥ नं० । ५ ॥ उंचपणे सहु जोयण बहुत्तर, सो जोयण आयामा रे ॥ पिहुल पणे पचास जोयणना, प्रभू प्रासाद सुठामा रे ॥ नं० ॥६॥ धनुप पांचसै आयत प्रभुनी, विविध रतनमई काया रे ॥ जिन कल्याणक उच्छव करता, सुरपति भक्ते आया रे ॥ नं० ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं उवरै, चोमुख च्यार विसाला रे वाव २ विच इकर प्रवत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चोसठ सहस जायण उत्तंगे, दस सहस सत पिहुला रे ॥ चिहूं दिसि सोल सहस दधिमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं० ॥ ९ वाव २ नें अंतर विदसें, रतिकर परवत रू

डारे ॥ दोय २ संख्या जगदीसे कह्या नही ए कूडा रे ॥ नं० ॥ १० ॥ जोयण सहस मांन दस ऊंचा, दस २ सहस विस्तारारे ॥ झल्लरि सम संठाण जगत गुरु, निश्चय ए निरधास्या रे॥नं० ॥ ११ ॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण, अंजनगिरि परमाणै रे ॥ जिनपडिमानी संख्या तेहिज, श्री-जिनराज वखाणै रे ॥ नं० १२ ॥ इम प्रासाद प्रभूना बावन, नंदीसर वर दीपे रे ॥ द्रव्य भाव विधि पूजा करतां, मोह महा भड़ जापे रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणें, जीवाभि-गमें जाणो रे ॥ इम अधिकार छै ग्रंथ अनेकै, इहां संका मत आणो रे ॥ नं० ॥ १४ ॥ जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा, ते अनुभव इहाल्या-वोरे ॥ ध्यावो जिम पावो परमातम, जैनचंद्र गुण गावो रे ॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनम् ॥

॥ अढाइ द्वीपै वीस विहरमाण-स्तवन ॥

॥ वंदु मनसुध विहरमाण जिणेसर वीस,

द्वीप अढीमें विचरै जयवंता जगदीस ॥ केवलग्याननें धारै तारैं कर उपगार, किण २ ठामे कुण २ जिन कहस्यूं सुविचार ॥ १ ॥ पैंतालीस लक्ष योजन मानुपक्षेत्र प्रमाण, वलयाकारे आधे पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुद्र सोह द्वीप अढाई सार, तिणमें पनरै करमाभूमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥ पहिलो जंबूद्वीप समै विच थाल आकार, लांबो पिहुलो इक लख जोयणनें विस्तार ॥ मोटो तेहने मध्य सुदरसन नांमें मेर, तिणथी दिसि विदसानी गिणती च्यारे फेर ॥३ मेरुथकी दक्षण दिसि एह भरत सुभ क्षेत्र, पांचसे छव्वीस जोयण छ कला तेहनो क्षेत्र ॥ उत्तरखंडमें एहवो एरवत क्षेत्र कहाय ॥ इण विहु करमांमूमी छए आरा फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस छसे चोरासी जोयण जाण, च्यार कला ए महाविदेह विखंभ वखाण ॥ वावीससै तेरे जोयण एक विजय पहुलाण, एहवी वत्तीस विजय

विराजै जेहने ठाण ॥ ५ ॥ मेरु विचै कर पूरव पश्चिम दोय विभाग, सोलै २ विजय तिहां विचरै श्रीवीतराग ॥ सासते चोथे आरे तारै श्रीअरिहंत, एहवे महाविदेह करमभूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरव विदेह विजय पुष्कलावती आठमी ठांम, पुंडरीकणी नगरी तिहां श्रीसीमंधरस्वांमि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नांम, पच्छिम विदेह बीजो युगमंधिर कीजै प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहिज नवमी वच्छविजय वलि पूरव विदेह, नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमूं धरि नेह ॥ नलिनावर्त्त चोवीसमी पच्छिम विदेह वखाण, वीतशोका नगरी तिहां चोथो सुबाहु सुजांण ॥ ८ ॥ ए च्यारेइ जिणवर जंबूद्वीप मझार, महाविदेह सुदरसण मेरुतणें परकार ॥ एहवो जंबूद्वीप महा गढ जेम गिरिंद, खाई रूपै दोय लख जोयण लवण समंद ॥ ९ ॥

ज्जुमाली मेर ए, इहां किण इतरो नांमे फेर ए ॥ उ० ॥ फेर ए इतरो इहां नांमे, अवर ठामेको नही ॥ एक २ मेरे तीन तीने, करमभूमि तिहां कही ॥ इम भरत एरवत माहाविदेहे, नांम सरखो हेत ए॥ तिणहीज नांमे विजय सगली, सासता धर्म खेत ए॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंडै तिम पुष्कर सही, इहां चेत्रानी रचना विध कही वार २ कहतां ए विसतार ए, पहिला पर लेज्यो सुविचार ए॥उ०॥ सुविचार ए वाकी तेह सगलो, नगर तिमहिज मन गमें ॥ पूरवे पच्छिम जेहनी ते, तेह तिमहीज अनुक्रमें ॥ श्रीचंद्रवाहु भुजंग ईसर नेम च्यार तीर्थंकरा, पूरवे पुष्कर अरध मांहे, सरव जीव सुखं करा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैरसेन वंदूं जिन सतरमो, श्रीमहाभद्र अठारम नित नमो ॥ देवजता उगणीसम देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ उ० ॥ जिण च्यार पुष्कर अरध माहे, कह्या पच्छिम भाग ए, तिहां मेरु विद्युनमालि चिहुं

दिसि, विचरता वीतराग ए॥ चौरासी पूरव लाख वरसां, आउ इक २ जिण तणो॥ पांचसै धनुष सरीर सोहे॥ सोवन वरण सुहामणो २३ ढाल॥ काल जघन्ये ए जिण वीस ए॥ हिव उत्कृष्टै भेद कहीस ए॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर कहै, पांचे भरते जिम पांचे लहै॥ उ०॥ जिण लहै पांचै तेम पांचै, एरवत मिल दस हुवा इक २ विदेहे बत्तीस विजया, तिहां पिण छै जूजूआ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोड़ि नव सय केवली, नव सहस कोड़ी अवर मुनिवर, वंदियै नित ते वली॥ २४॥ ढाल॥ इहां भरते एरवतें आज ए, पंचम आरै नही जिनराज ए॥ धन २ पांचे महाविदेह ए, विचरे वीसै जिन गुणगेह ए॥ उ०॥ गुणगेह दोप अढार वरजित अतिसयां चोतीस ए॥ चौशठि इंद नरिंद सेवित, नमूं ते निसदीस ए॥ तिहां आजे तारण तरण [illegible] दोय कोड़ ए॥ [illegible]

कोड़ा सुसाधु वीजा, नमुं वे कर जोड़ ए ॥ २५ कलश ॥ इम अढी द्वीपे पनर करमा भूमी क्षेत्र प्रमांण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह भाख्या वीस विहरमांण ए ॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सतर गुण तीसे समै, सुखविजय हरख जिनंद सानिध नेह धरि प्रमसों नमें ॥ २६ ॥ इति अढी द्वीप-स्तवन संपूर्णम् ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खंड ३ आधापुष्करद्वीप एवं ३॥ द्वीपमें ५ भरत ५ एरवत ५ महाविदेह १५ कर्मभूमीमें विचरता साश्वता २० विहरमानको मेरा नमस्कार हो ॥

॥ आबूजी तीर्थ का स्तवन ॥

जात्रीड़ाभाई आबूजीनी जात्रा करज्यो, जात्रा भणी ऊमहेज्यो,तुम्हे नरभव लाहो लीज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीरथी मांहे छाजै, आबू मारूडै देस विराजे रे॥ जा० स्वरगथी वादे लागो, उंचो अंबरियै जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास कहावै, निरखंता त्रिपति न थावे रे

जा० ॥ एतो डुंगरियानो राजा, एहनी छै वारह पाजा रे ॥ जा० ॥ २ ॥ छह ऋतु वास वणायो, एतो चंपला अंवला छायो रे ॥ जा०॥ सरवर झरणा झाझा, जिहां तिहां वनवेल्या आझा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ भार अढारे वणराई, एतो इहांहिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिसि परिमल आवै फूलड़ानो रंग सुहावै रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर भूमि विसाला, देवल दीठा रलियाला रे ॥ जा० विमलमंत्री वरदाई, चक्केसरि देवी सहाई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवाड वंस वदीतो, जिण दलपति साहि जी तो रे ॥ जा० ॥ देवल तेण करायो, पाहण आरास मंडायो रे ॥ जा० ॥ ६ । झीणी २ कोरणी कैरयो, दल माखण जेम उकेरयो रे जा० ॥ नवी २ भांति वणाई, जिहां तिहां कोरे-णिया झिणाई रे ॥ जा० ॥ ७ ॥ उत्तरे पाहण जेतो, जोखीजे पाहण तेतो रे ॥ जा० ॥ आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी हितकारी रे ॥

जा० ॥ ८ ॥ उगणिस कोड सोनइया, द्रव्य लागत करि जस लीया रे जा० ॥ करजोड़ीने आगै, मंत्री जिनवर पाय लागै, रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ पुठै चढिया हाथी, मंडाणा पति साह साथी रे ॥जा० इण देवल समवड़ कोई, भूमंडल मांहि न होई रे जा० ॥ १० ॥ वलि तिण वंस विगताला, वस्तुपाल अनै तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नमी ऋद्धि पाई, इहां तियां पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ ते हवो जिणहर पासै, वार क्रोडती लागति भासै रे ॥ जा० ॥ देराणी जेठाणी; आलानी अजब कहाणी रे ॥ जा० १२ ॥ इहां देवल सोह वधारी, नेमनाथजी वाल ब्रह्मचारी रे जा० ॥ कस वट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग री रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल वाडो दीठो, ते लागै नयणै मीठोरे ॥ जा० ॥ तिहां केइ देव पासै, लोक जोवे घणो तमासै रे ॥जा० १४॥ ण गाउ आगल जाइयै, देवल देखी सुख ल-

हिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा च्यारो, आदि-
नाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥१५॥ सोवनमें साते
धातो, झिगमिग रही दिनने रातो रे ॥ जा० ॥
मण चवदेसै चम्मालौ, जिण बिंबनो भाव निहालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली भोम सोभागी,
जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥जा०॥ एहनी करणी
वाहवाहो, इहां लीधो लखमी लाहो रे॥जा०॥१७॥
इण डुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन भावी रे॥
जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै, नाटकिया नाच
करावै रे ॥ जा० ॥ १८ ॥ रातीजोगो दियरावो,
जिनवरना जस गुण गावो रे ॥ जा० साहमी वच्छल कीज्यो, जातड़लोनो जसलीजो रे ॥ जा०
॥ १९ ॥ आगेथी आवी चाली, वातां केइ अचरज वाली रे ॥ जा० ॥ सुणिये छे जे कोई, अहिं
नांणे जोज्यो तेई रे ॥ जा० ॥ २० ॥ ए तीरथथी
गुण गावै, जात्रानो फल ते पावे रे ॥ जा० ॥ ए
तीरथ समतोलै, कुण आवै रूपचंद बोलै रे ॥
जा० ॥२१॥ इति आबजी स्तवनम् ॥

॥ सकल शास्वता चैत्य-नमस्कार-स्तवन ॥

॥ ऋषभानन वर्द्धमान, चंद्रानन जिन, वारिषेण नामे जिणां ए ॥ १ ॥ तेह तणा प्रासाद, त्रिभुवन सासता, प्रणमुं विंब सोहामणा ए ॥ २ चेइहर सग कोडि, लाख वहुत्तर, चेइय प्रतिमा सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोडि, साठ लाख सुन्दर, भुवनपती मांहि मन वसी ए ॥ ४॥ वारे देवलोक प्रासाद, चौरासी लाख, सहस छिन्नू नें सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥

हिवै नवग्रीवेकै पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रण सय त्रेवीसा सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अडत्रीस सहस सत साठ अछे गुण खाण ॥ ६ ॥ नंदीसर वावन कुंडल रुचक वखाण चउ २ चेईहर साठ सवे त्रिहुं ठांण ॥ इकसो चोवीसै गुण प्रतिमा चिहुं नाम, च्यारसै चालिसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥ नंदीसर विदिसै

सोलस कुल गिरि तीस, मेरू वन अस्सी दस कुरु गजदंते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत च्यार २ इखुकार, असो अति सुन्दर वचु सकार मझार ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी द्रह सुजंगीस कंचन गिर वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ९ ॥ वृत दीरघ वैताढ्य, वीस सत रसो आढ्य ॥ सतर महानदी ए, पंच चूला सदी ए ॥ १० ॥ जंबू प्रमुख दस रुक्ख, इग्यारेसै सत्तर सुक्क ॥ कुंड त्रणसय असी ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ ढाल ४ ॥

॥ त्रिण सहस सो एक निवाणुं रे, जिनवर प्रासाद वखाणुं, वीस सो ए अंक गुणिये रे, तीर्थंकर प्रतिमा थुणियै ॥ १२ ॥ त्रिण लाख सहस वलि त्रयासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ सरवालै सव मेलीजै रे, जिनवर प्रासाद नमीजै

निव्यासी कयलखा ॥ हिव प्रतिमा ग्यान कहीजै रे, जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरेसे बेतालीस कोडी रे, अड़वन लख अधिके जोड़ी ॥ छत्तीस सहस अधिक कहीयै रे, प्रतिमा सगली सरदहियै ॥ १५ ॥

॥ ढाल ६ ॥

जोइस वितर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो जी ॥ पायकमल तेहना नित प्रणमियै, सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥ विनय करी जिन प्रतिमा वंदियै, सुन्दर सकल सरूपो जी, पूजै प्रतिमा चोविह देवता, वलिय विद्याधर भूपो जी ॥ २ ॥ वि० ॥ जिनप्रतिमा बोली जिन सारखो, हित सुख मोक्ष निदानो जी ॥ भवियणने भव-सायर तारवा, प्रवहण जेम प्रधानो जी ॥ ३ ॥ वि० ॥ जीवाभिगम प्रमुख मांहि भाखीयो, ए सहू अरथ विचारो जी ॥ सांभलतां भणतां सुख संपदा, हियडै हरख अपारो जी ॥ ४ ॥ वि० ॥

॥ कलश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा संथुणया जिनवर तणा, चिहु नाम जिनचंद तणा त्रिभुवन सकलचन्द सुहावणा ॥ वाचनाचारिज समयसुन्दर गुण भणें अभिराम ए, त्रिहु काल त्रिकरण सुद्ध होयज्यो सदा मुझ परणाम ए ॥ ५ ॥

॥ सूरत शहर शीतल जिन-चैत्यप्रतिष्ठा स्तवनं ॥

भविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानन्दन चन्द ॥ प्रभूजी विराजै रे सूरत बिन्दरै रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ भ० ॥ जगहितकारी रे जिनजी अवतर्या रे, श्रीदृढरथ नृप गेह ॥ श्री वच्छ सोहे रे लांछन सूंदरू रे ॥ कनक वर्ण प्रभु देह ॥ २ ॥ भ० ॥ विषह निवारी रे संजम संग्रह्यो रे, लाधूं केवलनाण ॥ सघन घनाघन जिम धर्म वरसता रे, विचरया त्रिभुवन भाण॥ भ० ३ वदनो प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, च्यार अघाती कर्म ॥ दूर निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्यूं

संपद शर्म ॥ ४ ॥ भ० ॥ संप्रति काले रे श्री जिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिविंव ॥ प्रतिदिन लहिये रे प्रभु सुप्रसादथी रे, मन वांछित अविलंव ॥ ५ ॥ भ० ॥ श्रीजिनवरनो विंव विलोकतां रे, दुष्कृत दूर पुलाय ॥ इन्द्रिय निग्रह सुग्रह संपजे रे, समकित पिण दृढ थाय ॥ ६ ॥ भ० ॥ श्रीसद्गुरुना मुखथी सांभल्या रे, एहवा वचन विलास ॥ ते वहुमाने रे निज चित्तमें धरया रे, नेमी सुत भांईदास ॥७ भ०॥ चैत्य कराव्युं रे सुंदर सोभतो रे, मनधर अधिक उलास ॥ शीतल प्रभुनो रे विंव भरावियो रे, सहसफणा वलि पास ॥ ८ ॥ भ० ॥ वरस अठारह सत्तावीसमें रै, माधव मास मझार ॥ उज्जल द्वादशी दिवसे आवियो रे, विंव अनेक उदार ॥ ९ ॥ भ० ॥ एकसो इक्यासी सहु मेले थया रे, विंवादिक सुविचार ॥ कीध प्रतीष्टा ते दिन तेहनी रे, विधि पूर्वक मन धार ॥१० ॥ भ० ॥ श्रीजिनलाभ सूरीश्वर दीपता रे, श्री-

खरतर गच्छ भाण ॥ तास पसायमें शीतल जिन थुणया रे, विवुध क्षमा कल्याण ॥ ११ ॥ भ० ॥

॥ श्रीधरमनाथ स्वामी का स्तवन ॥

हांरे हूं तो भरवा गइथी तट जमुनाके तीर जो ॥ ए चाल ॥

हांरे मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवड़लो ललचाणो जिनजीनी उलंगे रे लो ॥ हांरे मुंने थास्यै कोइयक समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातड़ली तव थास्यै मंहारी सवि वगेरे लो ॥ १ ॥ हांरे कोइ दुर्जननो भंभेस्यो माहरो नाथ जो, उलवस्यै नही क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हांरे मारे स्वामी सरिखो कुण छै दुनियां मांह जो, जइये रे जिम तेहने घर आस्या करी रे लो ॥ २ ॥ हारे मारे जस सेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्ध जो, ठाली रे सी करवी तेहथी गोठड़ी रे लो ॥ हांरे कांइ झुठूं खाई ते मिठाईने माटे जो, क्यांहीं रे परमारथनी नही प्रीतड़ी रे लो ॥ [illegible] हांरे प्रभु अंतरजामी जीवत [illegible]

जो.वाणयो रे नवि जायो कलियुग वायरो रे लो, हांरे मोरा लायक नायक भगत वच्छल भगवंत जो, वारू रे गुण केरा साहिब सायरू रे लो ॥ ४ हांरे प्रभु लागी मुझने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रह्यांथी होइ उभोगलो रे लो ॥ हांरे कुण जाणं अंतर गतिनी विण माहाराज जो, हेजे रे हसी बोलो छंडी आमलो रे लो ॥ ५ ॥ हांरे तारे मुखनें मटके अटक्यूं माहरो मन्न जो, आंखडलो अणियाली कामणगारीयूंरे लो ॥ हांरे मारे नहणा लंपट जोवे खिण २ तुझ जो, राती रे प्रभु रगे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हांरे प्रभु अलगा ते पिण जांणज्यो करीनें हजूर जो, ताहरी रे वलिहारी हूं जाउं वारणे रे लो ॥ हांरे कवि रूप विबुधनो मोहन करे अरदास जो, गिरुआ थइ मन आंणो उलट अति घणो रे लो ॥

॥ राणपुराको स्तवन ॥

राणपुरे रलियामणो रे लाल, श्रीआदीसर

देव, मन माह्युं रे ॥ उत्तंग तोरण देहरुं रे लाल निरखीजै नित्य मेव ॥ म० ॥ रा०॥ १ ॥ चोवीस मंडप चिहुं दिसे रें लाल, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरो रे ला०, समवड नही संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल, मांडयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ भलें जुहारथा भोयरा रे लोल, सूतां ऊठ सवेर ॥ म० ॥ ३ ॥ रा० देस जाणीतूं देहरूं रे लाल, मोटो देस मेवाड ॥ म० ॥ लक्ख नवाणुं लगाविया रे लाल, घन धन्नो पोरवाड ॥ म० ॥ ४ ॥ रा० खरतर वसई खंतसू रे लाल, निर खंता सुख थान ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल, जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतारथ हुं थयो रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरतणी रे लाल, दूर गयूं दुख दंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल छियंतरे रे लाल, मिगसिर मास म-

कार ॥ म० ॥ राणपुरे यात्रा करीं रे लाल, समयसुन्दर सुखकार ॥ म० ॥७॥

॥ दर्शनद्वार-श्रीआदिजिन-स्तवन ॥

समकित द्वार गुंभारे पैसतां जी, पाप पडल गयां दूर रे ॥ मोहन मारूदेवीनो लाड़लो जी, दीठो मीठो आनन्द पूर रे ॥ स० ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोड़ाकोड़ी हीण रे ॥ स्थिती पढम करणें करी जीवने जी, वीरज अपूरवनो घर लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ भुंगल भांगी आदि कषायनी जी, मिथ्यात मोहन सांकल साथ रे ॥ वार ऊघाड़ा सम संवेगना जी अनुभव भवनें बेठो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधू जीवदया तणुं जी, साथियो पूरो सरधा रूप रे ॥ धुपघटी प्रभुगुण अनुमोदना जी, द्विगुज मंगल आठ अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंग पखालनें जी, केशर चंदन उत्तम ध्यान रे ॥ आतम गुण रुचि मृगमद महमहे जी,

पंचाचार कुशम परधांन रे ॥ ५ ॥ स० ॥ भाव-
पूजानें पावत आतमां जी, पूजो परमेसर पूण्य
पवित्र रे ॥ कारण जोगें कारज नीपजै जी, क्षमा
विजय जिन आगम रीत रे ॥ ६ ॥ स०

॥ श्रीआदीश्वर जिन-स्तवन ॥

आदि जिनेसर अरज सुणीजै, मोहन महिर
धरीजै रे ॥ दिलरंजन प्रभु दरसण दीजै, म्हारो
मनडो रीझै रे ॥ आ० ॥ १ ॥ प्रभु दरसन लहि-
वो जग दुरलभ, विन दरसन नहीं किरिया रे ॥
जे दरसण विन किरिया पालै, ते नवि कहियै त
रिया रे ॥ आ० ॥ २ ॥ नय एकांते दरसन थापै,
पिंड भरे ते पापे रे ॥ आप आपणा मति आलापैं,
ते भूला भव थापे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्ध दरसन
स्याद्वादनें संगे, जे ग्रहे आत्म उमंगे रे ॥ आन-
न्दघन उपजै तसु अंगै, सिद्धरमणने रंगे रे ॥
आ० ॥ ४ ॥ भव कोडाकोडीमें भमतां, तुझ दर
सन नहीं पायो रे ॥ सुकृत संयोगे ताहरे सनमुख,

आज भले हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी म हिर लहिरनो लटकौ, जो जगगुरु हुं पाउं रे ॥ सहजे एक पलकमें अदभुत, आतम गुण उपजा उंरे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानन्दन जग वंदन, स्वामी दरसण दीजै रे ॥ लाभउदय जिनचंद लहीने, सगला कारज सीझै रे ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ श्री अजितनाथजी का स्तवन ॥

॥ अनंत जीन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुझ अनंत अपार, ते सांभलतां ऊपनी रे, रुचि तिण पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥ तारज्यो दीनदयाल, अ० ॥ ता० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जेहनो रे, सामग्री संयोग ॥ मिलतां कार्य नीपजे रे, कर्त्ता तनय प्रयोग ॥ अ० ॥ ता० ॥ २ ॥ कार्य सिद्धि कर्त्ता वसु रे, लहि कारण संयोग ॥ निज पदकारक प्रभु मिल्यारे, होय निमित्तम भोग ॥ अ० ॥ ता० ३ ॥ अज कुलगत केरीस

लहे रे, निज पद सिंह निहाल ॥ तिम प्रभु भक्तें भवि लहे रे, आतम शक्ति संभाल ॥ अ० ता० ॥ ४ ॥ कारण पद कर्तापणें रे, करि आरोप अभेद ॥ निज पद अर्थी प्रभुथकी रे, करे अनेक उमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥ अहवा परमातम प्रभु रे, परमानंद सरूप ॥ स्याद्वाद सत्तारसी रे, अमल अखंड अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख भ्रम टल्यो रे, भास्यो अव्याबाध ॥ समर्यो अभिलाखीपणो रे, कर्त्ता साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ ग्राहकता स्वामित्वता रे, व्यापक भोक्ता भाव ॥ कारणता कारज दसारे, सकल ग्रह्यं निज भाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ श्रद्धा भासन रमणता रे, दानादिक परिणाम ॥ सकल थमा सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता० ॥ ९ ॥ तिणें निर्यामक माहणो रे,

जिन धर्म २ सहू कहै जी, थापै अपणी जो वात ॥
समाचारी जुइ जुइ जो, शंसय पड्यां मिथ्यात ॥
कु०॥८॥ जाण अजांणपणे करी जी. वोल्या उत्सूत्र
वोल ॥ रतने काग उडावता जी, हारयो जनम
निटोल ॥ कु० ॥ ६ ॥ भगवंत भाष्यो ते किहा
जी, किहां मुझ करणी एह ॥ गज पाखर खर
किम सहे जी, सवल विमासण तेह ॥ कु० ॥१०
आप परूं पुं आकरो जी, जांणे लोक तहंत ॥
पिण न करूं परमादियो जी, मासाहस दृष्टांत ॥
कु० ॥ ११ ॥ काल अनंते में लह्या जी, तीन
रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पाड़िया जी, किहां
जइ करूं पुकार ॥ कु० ॥ १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी
करूं जी, उद्यत करूं अविहार ॥ धीरज जीव
धरै नहीं जी, पोते वहु संसार ॥ कु० ॥ १३ ॥
सहज पड्यो मुझ आकरो जी, न गमें भूंडी
वात ॥ परनिंद्या करता थकांजी, जायै दिननें रात
॥ कु० ॥ १४ ॥ किरिया करतां दोहिली जी,

आलस आणे जीव॥धरम पखै धंदे पड्यो जी,नरकै करसी रीव ॥ कृ० ॥ १५ ॥ अणहूंता गुणको कहे जी, ता हरखूं निसदीस ॥ को हितसीख भली दियै जी, तो मन आणूं रीस ॥ कृ० ॥१६॥ वादभणी विद्या भणी जी, पररंजण उपदेश ॥ मन संवेग धरयो नही जी, किम संसार तरेस ॥ कृ० ॥ १७॥ सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणता करम विपाक ॥ खिण इक मनमांहे ऊपजै जी, मुझ मरकट वैराग ॥ कृ० ॥ १८ ॥ त्रिविध २ कर उच्चरू जी, भगवंत तुम्ह हजार ॥ वार २ भांजू वली जी, छूटकवारो दूर ॥ कृ० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधा आरंभ कोड़ ॥ जयणा न करी जीवनी जी, देवदया पर छोड़ ॥ कृ० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कह्या जी, दाख्याँ अनरथ दंड ॥ कूड़ कपट वहु केवली जी, व्रत कीधा सत खंड ॥ कृ० ॥ २१ ॥ अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्तादान ॥ ते दूषण

लागा घणा जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ कु० ॥२२॥ चंचल जीव रहे नही जी, राचै रमणी रूप ॥ काम विटंबन सी कहूं जी, ते तूं जाणे सरूप ॥ कु० ॥ २३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो अधिको लोभ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो जी, न चढी संजम सोभ ॥ कु० ॥ २४ ॥ लाग्या मुझनें लालचें जी, रात्रीभोजन दोप ॥ में मन मूक्यो मोकरो जी, न धर्यो धरम संतोप ॥ कु० ॥२५॥ इण भव परभव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुझ मिच्छामिदुक्कडं जी, भगवंत तोरी साख ॥ कु० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कह्या जी, प्रगट अठारे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, वगस २ माइ वाप ॥ कु० ॥ २७ ॥ मुझ आधार छै एतलो जी, सरदहणा छै शुद्ध ॥ जिनधर्म मीठो जगतमें जी, जिम साकरने दूध ॥ कु० ॥ २८ ॥ ऋपभदेव तूं राजियो जी, सैत्रुंजागिर सिणगार ॥ पाप आलोयां आपणा जी, कर प्रभु मोरी सार ॥

क्षु० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिनधर्मनो जी, पाप आ-लोयां जाय ॥ मनसुं मिच्छामिदुक्कड़ं जी, देतां दूर पुलाय ॥ क्षु० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब तूं देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, भव २ ताहरी सेव ॥ क्षु० ॥ ३१ ॥ ॥ कलश ॥ इम चढिय सेत्रुंजा चरण भेट्या ना-भिनंदन जिन तणा, करजोड़ि आदिजिनंद आगै पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य जिनचंदसूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणों, गणि सकलचंद सुशिष्य वाचक समयसुन्दर गणि भणें ॥ ३२ ॥

आनंदघनजी कृत स्तवन

॥ श्री ऋषभदेव स्वामीका स्तवन ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए चाल ॥

ऋषभ जिनेसर प्रीतम माहरो रे, उर न चाहुं रे कंत ॥ रीज्यो साहिब संग न पहिरे रे, भांगे सादि अनंत ॥ ऋ० ॥ १ ॥ प्रीत सगाइरे जगमां

सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत सगाई रे निरूपाधिक कहो रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ऋ० ॥ २ ॥ कोइ कंत कारण काष्ट भक्षण करे रे, मिलसुं कंतने धाय ॥ ए मेलो नवि कहिये संभवे रे, मेलो ठाम न ठांय ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ कोइ पति रंजन अति घणो तप तपे रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति रंजन में नवि चित धरयुं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ कोइ कहे लीलारे अलख अलख तणी रे, लख पूरै मन आस ॥ दोप रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोप विलास ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखंडित एह ॥ कपट रहित थई आतम अरपणा रे, आनंदघन पद रेह ॥ऋ०॥६॥

॥ श्री अजितनाथ स्वामीका स्तवन ॥

मारुं मन मोहयुं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथडो निहालूं रे वीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥ जे तें जीत्यारे तेणे हं जीतियो

रे, पुरुष किस्युं मुझ नांम ॥ पं० ॥ १ ॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, भूलो सयल संसार। जेणें नयणे करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥ पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही ठाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहुंचे कोय ॥ अभिमते वस्तु वस्तुगते कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य नयणतणे रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे, वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल लवधि लही पंथ निहालसुं रे, ए आस्या अविलंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जांणज्यो रे, आनंदघन मत अंब ॥ पं० ॥ ६ ॥

॥ श्री संभवनाथजी का स्तवन ॥

॥ रातड़ी रमिनें किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संभव देव ते धुर सेवो सवे रे, लहि प्रभू

भेद ॥ सेवन सेवन कारण पहली भूमिका रे, अ
भय अद्वेष अखेद ॥ सं० ॥ १ ॥ भय चंचलता
हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक भाव ॥ खेद
प्रवृत्ति हो करतां थाकियें रे, दोष अबोधि लखा-
व ॥ सं० ॥ २ ॥ चरमावर्त्त हो चरम करण तथा
रे, भव परिणति परिपाक ॥ दोष टले वली दृष्टी
खुले भलो रे, प्रापति प्रवचन वाक ॥ सं० ॥ ३ ॥
परिचय पातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अप
चय चेत ॥ ग्रन्थ अध्यातम श्रवण-मनन करी रे,
परिशोलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण जोगे
हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण
कारण विण कारज साधिये रे, ए जिनमत उन-
माद ॥ सं० ॥ ५ ॥ मुग्ध सुगम करी सेवन आ-
दरे रे, सेवन आगम अनूप ॥ देजो कदाचित से-
वक याचना रे, आनंदघन रसरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥

॥ श्रीअभिनंदन स्वामी का स्तवन ॥

॥ थान नेहज्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अभिनंदन जिन दरशन तरसियै, दरसण दुर्लभ देव ॥ मत २ भेदे रे जो जइ पूछिये ॥ सहु थापे अहमेव ॥ अभि० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिसण दोहलूं, निरणय सकल विशेष ॥ मदमें घेर्यो रे अंधो किम करे, रवि-शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥ २ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरि जोइये, अति दुरगम नय वाद ॥ आगम वादे हो गुरुगम को नहीं, ए सबलो विखवाद ॥ अ० ॥ ३ घाती डूंगर आड़ा अतिघणा, तुझ दरिसण जगनाथ ॥ धीठाइ करी मारग संचरूं, संगु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिसण २ रटतो जो फिरूं, तो रणरोझ समान ॥ जेहने पीपासा हो अमृत पाननी, किम भाजे विष पान ॥ अ० ॥५॥ तरस न आवे हो मरण-जीवन तणो, सीझे जो दरसण काज ॥ दरिसण दुलभ सुलभ कृपाथकी, आनंदघन माहाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ श्रीसुमतीनाथ स्वामी का स्तवन ॥

॥ राग वसंत तथा केदारा ॥

॥ सुमति चरण पंकज आतम अरपणा, दरपण जिम अविकार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जांणिये, परि सरपण सुविचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आतमा, वहिरातम धुरि भेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, परमातम अविच्छेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक ग्रह्यो, वहिरातम अघ रूप ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनो हो साखीधर रह्यो, अंतर आतम रूप ॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी ॥ अतिंद्रिय गुण गण मणि आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ॥ ४ ॥ वहिरातम तज अंतरआतमा, रूप सुग्यानी थइ थिर भाव ॥ परमातमनू हो आतम भाववं आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥

आतम अरपण वस्तु विचारतां, भरम टले मति दोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजे, आनंदघन रस पोष ॥ सु० सुम० ॥ ६ ॥

॥ श्रीशीतलनाथजी का स्तवन ॥

॥ गुणह विशाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी, विविध भंगी मन मोहे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्षणता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी० ॥१॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्षणा रे ॥ हाना दाना रहित परणामी, उदासीनता विक्षणा रे ॥ शी० ॥ २ ॥ परदुःख छेदन इच्छा करुणा, तीक्षण परदुख रीझे रे ॥ उदासीनता उभय विलक्षण, एक ठामे केम सीझे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अभयदान ते मल क्षय करुणा, तीक्षणता गुण भावे रे। प्रेरण विण कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥ शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता, निग्रन्थता संयोगे रे ॥ योगी भोगी वक्ता

मौनी, अनुपयोगी उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु भंग त्रिभंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा, आनंदघन पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥

॥ श्रीकुंथुनाथ स्वामी का स्तवन ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनडो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिम २ जतन करीनें राखूं, तिम २ अलगो भाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ १ ॥ रजनी वासर वसती ऊजड़, गयण पायालें जाय ॥ सांप खायने मुखडूं थोथुं, ए ओखाणा न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगतितणा अभिलापी तपिया, ज्ञाननें ध्यान अभ्यासें ॥ वयरीडुं कांइ एहवुं चिंते, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम धरनें हाथे, नावै किण विध आंकू ॥ किहां कणे जो हठ करी हटकूं, तो व्यालतणी पर वांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ४ ॥ जो

ठग कहूं तो ठग तो न देखूं, साहूकार पिण नाहीं ॥ सर्वमांह ने सहुथी अलगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंडित जन समझावै, समझै न माहारो सालो हो ॥ कुं० म० ॥ ६ ॥ में जाणयुं ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजो वातें समरथ छै नर, एहने कोई न झेले हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण सगलूं साध्युं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानूं, ए कहि वात छे मोटी हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ८ ॥ मनहुं दुराराध्य तें वस आणं, ते आगमथी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रभु माहरो आणो, तो साचूं करजाणुं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥

॥ प्रतिक्रमणमें कहने योग्य पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन ॥

॥ पहला पद ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर भेटियै, भवना

संचित पाप परा सब मेटिये॥ मन धर भाव अनंत चरण युग सेवतां, अणहूंते एक कोड़ि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यांन धरूं प्रभू दूरथकी मैं ताहरो,जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो॥ भव २ तुमहीज देव चरण हूं सिर धरुं, भवसायरथी तार अरज आहीज करूं ॥ २ ॥ भूख त्रिषा तप सीत आतप ए ना सहै, तप जप संजम भार तणी नवी निरवहै॥ पिण जिनवरजीना नांमतणी आसत घणी, एहिज छै आधार जगत गुरु अम्ह भणी ॥ ३ ॥ तुम्ह दरिसण विण स्वांम भवोदधि हूं फिस्यो, सहीया दुक्ख अनेक न कारज को सस्यो ॥ मिलिया हिव प्रभु मुझ सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट चुर जगत जस लीजियै ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति हरी, सैन्या कीध सचेत जरा दूरे करी॥ परचा पूरण पास रयण जिम दीपतो, जयवंतो जिणचंद सयल रिपु जीपतो ॥ ५ ॥

॥ दूसरा पद ॥

मनमोहन महाराज, तीन भुवन सिरताज ॥ आछेलाल. नगर ब्रहानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रधान, निरमल सुगुण निधान ॥ आछेलाल, वामासुत वडभागीयाजी ॥ २ ॥ सेवकनी संभाल, करिय खरी ततकाल ॥ आछेलाल, संकट सहु प्रभु परिहर्या जी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर, प्रगट्यो आनंद पूर ॥ आछेलाल, वाट विषमता पिण टली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीने परसाद वीता सहु विखवाद ॥ आछेलाल, मन वंछित मुझ सहु फल्या जी ॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी थाप, मिलिया छो प्रभु आप ॥ आछेलाल, देज्यो दरिसण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाण, शिष्य चमाकल्याण ॥ आछेलाल, वाचक इम वीनती करै जी ॥ ७ ॥

॥ तीसरा पद ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसादाणी रे ॥ वामा-

सुत वरदाय, निरमल नांणी रे ॥ १ ॥ पांच कमल प्रभु अंग, निरुपम निरख्या रे ॥ तीनकमल मुख संग, आतम हरख्यारे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख, चंद लजाणूं रे ॥ गगन भमे निसदीस, इम मन आंणूं रे ॥ ३ ॥ सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण विराजै रे ॥ हृदयकमल सुविलास, थाल ज्युं छाजै रे ॥ ४ ॥ प्रभु कर चरण विलोक, पंकज हाख्योरे ॥ ततखिण निज संवास, जलमें धाख्यो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार, श्रीजिनराया रे ॥ साचै पुण्य संयोग, साहिब पाया रे ॥ ६ ॥ प्रभुगुण अनुभव नीर, सांग सुरंगे रे ॥ टाल्यो पातिक पंक, आतम संगेरे ॥ ७ ॥ वरस अढार चोतीस, वदि वैसाखै रे ॥ मनुहर पांचम दीस, सहु संघ साखै रे ॥ नगर महेवा मांहि, पास जुहाख्या रे ॥ श्रीजिनचन्द मुणिंद, वांछित साख्यारे ॥ ८ ॥

॥ चौथा पद ॥

वालेसर मुझ वीनती गोडीचा, अलवेसर अवधार हो गोडीचाराय ॥ प्रगट थई पातालथी गोडीचा, सेवक जिन साधार हो गो० ॥वा०॥१॥ आंख थई उतावली, गो० ॥ दरसण देखण काज हो ॥ गो० ॥ पांणीनखमे पातली, गो० ॥ द्यो दरसण महाराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ २ ॥ तूं साहिव सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो छै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो ऊमही, गो० ॥ संप्रति करवा सेव हो, गो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो त्रेवडो, गो० ॥ सगलो भांति संदीव हो, गो० ॥ उंची नीची वातमें, गो० ॥ थे मति घालो जीव हो ॥ गो० ।। वा० ॥ ४ ॥ देव घणां ही देवले, गो० ॥ दीठां ते न सुहाय हो ॥ गो० इक दीठां मन ऊलसे, गो० ॥ इक दीठां उल्हाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ काले वाल्हे माहरे, गो० ॥ कीधो खरीं सभीड हो ॥ गो० ॥ दरसण

देवानी नकी, गो० ॥ पाणीवलि पिण ढील हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तें कीधी तिम तूं करै, गो० राखी चिहुं मांहे लाज हो ॥ गो० ॥ वलि अवसर संभारज्यो, गो० ॥ इम जंपै जिनराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ७ ॥

॥ पांचवां पद ॥

अरज सुणीजै अंतरजामी, पास जिनेसर स्वांमी रे ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, त्रिभुवन जन विसरामी रे ॥ अ० ॥ १ ॥ गुण गिरवा गोडीचा स्वामी, नाथ निरंजन नामी रे ॥ अ० ॥ भव अटवी वन घन विच भमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, अनुभव गुण अभिरामी रे ॥ अ० ॥ चरण कमल सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥

॥ छठा पद ॥

प्यारो पासकी, देखी सूरत मो मन भाय ॥

प्या० ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, देख्यां दिल हरखाय ॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें महिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ नील वरण मनमोहन निरख्यो, नाथ गोडीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगण सेवगकी येही अरज है, भवदुख ताप मिटाय ॥ प्या० ॥ ३ ॥

॥ सातवां पद ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अजब सुरंग अनूप॥ सवाइ प्रभूजी, थांरी सांवली सूरत म्हानु प्यारी लागे राज ॥ वामाजी नंदन वांदवा, चितड़ामें लागी छै चूंप ॥ सवाइ प्रभूजी ॥ १ ॥ अणिया-ली प्रभू आंखडी, वदन सरोज विकास ॥ स० ॥ थां० ॥ नयण सलूणे जी निरखतां, ऊपजै अधिक उल्हास ॥ स० ॥ थां० ॥ २ ॥ अंगज नृप अश्वसेननो, करुणा निधि करतार ॥ स० थां० ॥ पुण्य संयोगे जी पांमीयो, दिल रंजन दीदार ॥ स० थां० ॥ ३ ॥ तो दिन सफलो जांणिये, सो-

य घड़ी सुप्रमांण ॥ स० ॥ भगतवच्छल भल भेटिये, जिनवर चतुरसुजाण ॥ स० ॥ थां० ॥ ४॥ जालम जेसलगढ जयो, श्रीचिंतामणि पास ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंद्रनी, अविचल पूरो ज़ी आस ॥ स० ॥ थां० ॥ ५ ॥

॥ आठवां पद ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम विन देख्यां एक घडी न रहाय, म्हारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे अमारा हीयडलाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास छिये निरधार ॥ म्हारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि० ॥ चंद चकोरा जलधरनें जिम मोर ॥ म्हारा जि० ॥ २ ॥ नयण तुमारा कामणगारा जोर रे, ज़ि० ॥ चितड़ो लीधो जिम तिम करि नें चोर ॥ म्हारा जि० ॥ अरज़ हमारी मानो मोटा देव रे, ज़ि० ॥ आपो भव २ चरणकमलनी सेव म्हारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरीनें आवे जे तुझ

पाम रे, जि० ॥ नवि मूकीजे स्वामी तेह निरास म्हारा जि० ॥ मोटानी तो मोटी थायें बुद्धि रे, जि० ॥ इम जांणिने करज्यो माहरी शुद्ध ॥ म्हारा जि० ॥ ४ ॥ राखज्यो मुझ ऊपर निविड सनेह रे, जि० ॥ अवगुण जांणी छिटक न देज्यो छेह ॥ म्हारा जि० ॥ खरतर गच्छपति श्रीजिनलाभ सूरिंद रे, जि० ॥ तासु पसायें पभणें अनोपमचंद ॥ म्हारा जि० ॥ ५ ॥

॥ नवां पद ॥

सुगण सनेही प्रभुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीने मोसुं महिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं छै प्रभूजी म्हारो अंतरजामी, पूरव पून्यै थांरी सेवा में पांमी राज ॥ साहिब में तो तुझनें जाण्यो छै साचो, कदिय न दिलमांहे आणुं हुं काचो राज ॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो दिलसुं राज करीय सगाई, सुगण प्रभुजीस्युं वधज्यो प्रीत सवाई राज ॥ सु० ॥ दरसण प्रभुजी ताहरो दिलमांहे

नयण कमलदल पांखडी प्रभु,मुखड़ो पूनमचन्द॥ दीपशीखासी नासिका कांइ, दीठा परमानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ कांने कुंडल झिगमिगे प्रभु, कंठे नवसर हार ॥ चंपकलो सोहे भलो कांइ, मुखडे ज्योत अपार ॥ मो० ॥ ३ ॥ तूं छे जगनो वाल हो प्रभु, थारे सेवग कोड ॥ म्हारे तूंहिज साहिबो कांइ, वंदू वेकर जोड, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज मनोरथ सब फल्या, में दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तणा कांइ,सीधां सगलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥

॥ ग्यारहवां पद ॥

जिनजी महिर करीने राज, दरसण वहिलो दीजें ॥ दीजें २ जी महाराज, कारज सगला सीझे ॥ ए आंकणी ॥ मुझ मन भमरतणो पर मोह्यो, छोड़ायो नवि छूटे ॥ प्रेम राग बंधाणो पूरण, ते तो कदेय न खूटे ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रभ तुमने, नहिय विसारुं दिल-

सुं ॥ रात दिवस एहवी मन वरतै, जाणुं जइ मिलुं तुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरव पुण्यथकी में पायो, ए अवसर आजूणो ॥ मिलियो तूं प्रभु पास चिन्तामण, साहिब सहज सलूणो ॥ जि० ॥३॥ थारे तो सेवग छै बहुला, मो सरिखा लख ग्याने, माहरे तो इण जगमें जोतां, थारे नहीं कोइ टाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥ आस हिये इक ताहरी राखूं, बीजो मुख नही भाखूं ॥ अमृत जेम [illegible] गुणरस, खारो जल किम चाखूं ॥ जि० ॥ [illegible] मोहन ए मुद्रानी महिमा, कहतां पार न [illegible] सायर लहर मालानें गिणतां, कहो कुण [illegible] पजावै ॥जि०॥६॥ भगतपणे किंचित [illegible] म्हारी मति सारू ॥ निरुपमा अनु[illegible] लायक, त्रिभुवन जीवन सारू ॥ [illegible] वरस अढार वली इकताले, मि[illegible] चाले ॥ इग्यारस दिन अधिक [illegible] सुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ [illegible]

॥ श्रीतीर्थ मालाका स्तवन ॥

॥ शत्रुंजय ऋषभ समोसर्या, भला गुण भर्या रे ॥ सिद्धा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगतें गया रे नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ भरतें भराव्यां बिंब ॥ ती० आबु चौमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे ॥ विमल वइस वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्व दिशें पावापुरी, ऋद्धें भरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ बिकानेर वंदीयें, चिर नंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे फलोधी थंभण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अं-

जावरो, अमीझरो रे॥ ज़ीरावलो जगनाथ॥ तो० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे॥ गणपुरें रिसहेस॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाडुलाई जादवो, गोडी स्तवो रे॥ श्रीवरकाणो पास॥ ती० नंदीश्वरनां देहरां, बावन भलां रे॥ रुचक कुंडल चारू चार॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा छती रे॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुझ इहां रे॥ समयसुन्दर कहे एम॥ ती० ॥ ८ ॥

॥ महावीर स्वामीके पारणाको स्तवन॥

॥ दूहा॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र॥ मुनि जे ज्ञानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र॥ १ ॥ पात्रतणी अनुमोदना, करतो जीरणसेठ॥ श्रावक अच्युत गति लहे, नवग्रैवेका हेठ॥ २ ॥ दस चउमासा वीरजी, विचरत संजम वास॥ विशालापुर आविया, इग्यारमी चउमास॥ ३ ॥ ढाल॥ चोमासी इग्यारमी जी,

विचरत साहसधीर ॥ विशालापुर बाहरे जी, आव्या श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिशलानंदन जी, भले में भेटया श्रीजिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे भाग्य अनोपम माय ॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो छे देहरो जी, तिहां प्रभु काउसग्ग लीध ॥ पच्चक्खाण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीध ॥ ज० ॥ ३ ॥ जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले श्रावकधर्म ॥ आकारे तिण ओलख्या जी ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अछे उपवासीया जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान काले सही प्रभु जीमस्ये जी, से हाथे देस्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवे जी, होसी सफल मुझ आस ॥ पञ्च मास गिणतां थकां जी पूरी थइ चोमास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी, जीरण कीधी तइयार ॥ प्रभुनो मारग देखतो जी, बेठो घरने बार ॥ ज० ॥ ७ ॥ घर आवे छे पाहुणो जी, निहुल्यो एकण वार ॥ प्रभुजी

कां न पधारसी जी,में निहुल्या वारंवार ॥ ज०॥ ८॥ पीछे करस्युं पारणो जी, हूं प्रभूने पडिलाभ॥ होय मनोरथ एहवो जी, तोय विन वरसे आभ ज० ॥९॥ अवसर ऊव्या गोचरी जी, श्रीसिद्धारथपुत्त ॥ विशालापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत्त ॥ ज० ॥ १० ॥ मिथ्यात्वी जाणे नहीं जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेड़ी प्रते इम कहे जी, कांइक भिक्षा देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू भरने बाकला जी, प्रभूने आंणी दीध ॥ नीरागी तेही लिया जी, तिहां प्रभू पारणो कीध ॥ ज० ॥१२॥ देव वजावे दुंदुभि जी, जय बोले कर जोडि ॥ हेम वृष्टि हुइ तिहां जी, साढीबारे कोडि ॥ ज० ॥ १३ ॥ कहो सेठ तुमे स्युं दियो जी, कियो पारणो वीरलोकां प्रते इम कहे जी, में वहिराइ खीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजादिक सहू ए कहे जी, धन २ पूरण सेठ ॥ ऊंची करणी तें करी जी, अवर सहू तुझ हेठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठ सुणी तवे जी,

वाजित दुंदुभि-नाद ॥ अन्यत्र कियो प्रभु पारण
जी, मनमें थयो विषवाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं ज
गमें अभागियो जी, मेरे न आया सांम ॥ कल्प
वृक्ष किम पांमीये जी, मारूमंडल ठाम ॥ज०
१७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या म
नमांहि ॥ ॥ निरधन जिम २ चिंतवे जी, तिम २
निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८॥ स्वामी तिहां कियो
पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आयां पास
संतानिया जी, तिहां मुनि केवलधार ॥ज०॥ १६
विशालापुर राजियो जी, लोकास्युं आणंद ॥ राय
प्रश्न पूछे इस्यो जी, सुगुरु चरण अरविंद ॥ ज०
॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अछें जी, जीव पुण्य
जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ
महंत ॥ ज० ॥ २१ ॥ राय कहे किण कारणे जी,
जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो जिन वीरने जी,
पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे
केवली जी, पूरण दीनो दान ॥ हेमवृष्टि फल

तेहने जी, अवर न कोई प्रमाण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण बारमें जी, जीरण घाल्यो बंध ॥ विना दान दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज० ॥ २४ ॥ घडी एक सुर दुन्दुभि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहितो जीरण तो सही जी, केवल अविचल ठांम ॥ ज० ॥ २५ ॥ राजा जीरणने दियो जी, अधिक मान सनमान ॥ मुक्तनगरमें थापियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ २६ ॥ दान दियो सुपात्रने जी, ते निष्फल नवि जाय ॥ पात्रदान अनुमोदना जी, जीरण जिम फल थाय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना जी, दान सुपात्र रसाल ॥ दान देवे सुपात्रनें जी, तेहने नमे मुनि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥

॥ श्रीगौड़ी पार्श्व जिन-वृद्ध स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ वाणी ब्रह्मा वादिनी, जागे जग विख्यात ॥ पास तणां गुण गावतां, मुझ मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणहिलपुरे अहमदावादे

पास ॥ गोडीनो धणी जागतो, सहूनी पूरे आस ॥२॥
शुभ वेला शुभ दिन घड़ी, महुरत एक मंडाण ॥
प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जांण ॥ ३ ॥

॥ ढाल १ ॥ गुणहि विशाला मंगलीक माला वामानो सुत साचो जी ॥ धण कण कंचण मणि माणक दे, गोडीनो धणी जाचो जी ॥ गु० ॥ ४॥ अणहिलपुर पाटण मांहे प्रतिमा, तुरकतणे घर हूंती जी ॥ अश्वनी भूमि अश्वनी पीड़ा, अश्वनी वालि विगूती जी ॥ गु० ॥ ५ ॥ जागंतो जक्ष जेहने कहिये, सुहणो तुरकने आपे जी ॥ पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवग तुझ संतापे जी ॥ ६ ॥ गु० प्रह ऊठीने परगट करजे, मेघा गोठीने देजे जी ॥ अधिकम लेजे उछो मले जे, टका पांचसे लेजे जी ॥ ७ ॥ गु० ॥ नहि आपिस तो मारीस मुरडिस, मोर बंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्र धन हय गय हाथी तुज, लच्छीधणी घर जास्ये जी ॥ ८ ॥ गु० मारग पहिलो तुझने मिलस्ये, सारथवाह जे

गोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोख्या, वस्तु वहे तसु पोठी जी ॥ ६ ॥

॥ दूहा ॥ मनसुं विहतो तुरकडो, माने वचन प्रमाण ॥ बीबीने सुहणा तणो, संभलावे सहिनाण १० बीबी बोले तुरकने, वडा देव हे कोय ॥ अवस ताव परगट करो, नहितर मारे सोय ११ पाछली रात परोडिये, पहली बांधे पाज ॥ सुहणा मांहे सेठने, संभलावे यत्त-राज ॥ १२ ॥

॥ढाल॥ एम कही यत्त आयो राते, सारथवाहने सुहणे जी ॥ पास तणी प्रतिमा तूं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी ॥ ए० ॥ १३ ॥ पांचसे टक्का तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी ॥ जतन करी पहुंचाडे थांनक, प्रतिमा गुण संभारे जी ॥ ए० ॥ १४॥ तुझने होसी बहु फल दायक, भाइ गोठी सुणजे जी ॥ पूजे प्रणमे तेहना पाया, प्रह ऊठीने थुणजे जी ॥ ए० ॥ १५ ॥ सुहणो देइने सुर चाल्यो, आपणे थांनक पहुंतो जी ॥

पाटणमांहे सारथवाह, हींडे तुरकने जोतो जी ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जातो दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाडे जी ॥ संकेत पहुतो साचो जाणी, बोलावे बहु लाडे जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुझ घर प्रतिमा तुझने आपूं, श्रीपास जिनेसर केरी जी ॥ पांचसे टक्का जो मुझ आपे, तो मोल न मांगू फेरी जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, थानक पहुतो रंगे जी, केशर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० १९ ॥ गादी रूडी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखे जी ॥ अनुक्रम आव्या परिकर मांहे, श्रीसंघने सुर साखे जी ॥ ए० ॥२०॥ उच्छव दिन २ अधिका थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी ॥ ठांम २ ना दरसण करवा, आवे लोक प्रभातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ इक दिन देखे अवधिसुं, परिकर पुरनो भंग ॥ जतन करूं प्रतिमा तणो, तीरथ अछे अभंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठने, थल अट-

वी ऊजाड़ ॥ महिमा थास्ये अति घणी, प्रतिमा तिहां पहूंचाड़ ॥ २३ ॥ कुशल चेम तिहां अछे, तुझने मुझने जांण, संका छोड़ी काम कर, करता म करी संकांणि ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥ पास मनोरथ पूरा करे, वाहण एक वृशभ जोतरे ॥ परिकरथी परियाणो करे, एक थल चढ़ि बीजो उतारे ॥२५॥ बारे कोस आव्यां जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतले ॥ गोठी मनह विमासण थइ, पास भवन मंडावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूं प्रयाण, कटको कोइ न दीसे पाहाण ॥ देवल पास जिनेसर तणो, मंडावुं किम घरथे विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्ये किहां, सिलावटो किम आवे इहां ॥ चिंतातुर थयो निद्रा लहे, यत्तराज आवी इम कहे ॥ २८ ॥ गहूंली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीजे तिहां ॥ स्वस्तिक सोपारीने ठाणी, पाहण तणी उलटस्ये खांणी ॥ २९ ॥

श्रीफल सजल तिहां किल जुओ, अमृत जल निसरिस्ये कूओ॥ खाराकूआ तणो इह सेनाण, भूमि पड्यो छे नीलो छाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोही वसे, कोढ पराभवियो किसमिसे ॥ तिहांथकी तूं इहां आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ॥३१ गोटीनो मन थिर थापियो, शिलावटने सुहणो दियो ॥ रोग गमीने पूरुँ आस, पास तणो मंडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांहि मान्यो ते वेण, हेम वरण देखाड्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटने गया तेड़वा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सूरमो, जीमे खीर खाँड घृत चूरमो ॥ घड़े घाट करे कोरणी, लगन भले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंभ २ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ॥ रंग-मंडप रलियामणो रचे, जोतां मानवनो मन वसे ॥३५॥ नीपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग समो मंडे आवास ॥ दिवस विचारी इंडो घड्यो, ततखिण देवल ऊपर चढ्यो ॥ ३६ ॥

शुभ लगन शुभ वेला वास, पव्वासण बेठा श्री पास ॥ महिमा मोटी मेरु समान, एकलमिल वगडे रहे वान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांभली, तवनमांहि सूधी सांकली ॥ गोठीतणा गोतरिया अछे, यात्रा करीने परणे पछे ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥ विघन विडारण जच्छ जगि, तेहनो अकल सरूप ॥ प्रीत करे श्रीसंघने, देखाड़े निज रूप ॥ ३९ ॥ गिरओ गौड़ीपास जिन, आपे अरथ भंडार ॥ सानिध करे श्रीसंघने, आस्सा पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असवार ॥ मारग चूका मानवी, वाट दिखावणहार ॥ ४१ ॥

॥ढाल ४॥ वरण अढार तणो लहे भोग, विघन निवारे टाले रोग ॥ पवित्र थइ समरे जे जाप, टाले सघला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधनने घर धननो सूत, आपे अपुत्रियाने पूत ॥ कायरने सूरापणो धरे, पार उतारे लच्छी वरे ४३

दोभागीने दे सोभाग, पग विहूणाने आपे पाय ॥ ठांम नहीं तेहने द्ये ठांम, मन वंछित पूरे अभिराम ॥ ४४ ॥ निरधाराने द्ये आधार, भवसायर उतारे पार ॥ आरतियानी आरत भंग, धरे ध्यांन ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समस्थां सहाय दिये जत्तराज, तेहना मोटा अछे दिवाज ॥ बुद्धिहीनने बुद्धि प्रकाश, गूंगाने द्ये वचन विलास ॥४६॥ दुखियाने सुखनो दातार, भय भंजण रंजण अवतार ॥ वंधन तूटे वेड़ीतणा, श्री पार्श्व नाम अक्षर स्मरणतां ॥ ४७ ॥

॥ दूहा ॥ श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल ॥ हस्तियुद्ध दूरे टले, दुद्धर सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चौरतणा भय चूकवे, विष अमृत उडकार ॥ विषधरना विष उतरे, संग्रामे जय-जयकार ॥ ४९ ॥ रोग-शोग दालिद्र दुख, दोहग दूर पूलाय ॥ परमेसर श्रीपासनो, महिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ ढाल ६ ॥ चाल कड़खा की ॥

ॐ जतत् २ ॐ ज उपशम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्व अक्षर जपंते ॥ भूतने प्रेत झोटिंग व्यंतर सुरा, उपशमे वार इकवीस गुणंते ॥ ५१ ॥ ॐ० ॥ दुष्टरा रोग शोग जरा जंतरा, ताव एकंतरा दुक्तपंते ॥ गर्भबंधन ब्रणं सर्प विछू विषं, चालिका बाल मेवाझखंते ॥ ५२ ॥ ॐ० ॥ साइणी डाइणी रोहणी रंकणी, फोटका मोटका दोष हुंते ॥ दाढ उंदरतणी कोल नोलां तणी, श्वान सियाल विकराल दंते ॥ ५३ ॥ ॐ० ॥ धरणेंद्र पद्मावती समर सोभावती, वाट आघाट अटवी अटंते ॥ लखमी लोंदो मिले सुजस वेला वले ॥ सयल आस्या फले मन हसंते ॥ ५४ ॥ ॐ० ॥ अष्ट महाभय हरे कानपीड़ा टले ॥ ऊतरे शूल सीसग भणंते ॥ वदत वर प्रीतसुं प्रीतविमल प्रभु, श्रीपास जिण नाम अभिराम संते ॥ ५५ ॥

॥ मंगलीक-स्तोत्र ॥

धम्मो मंगल मुक्किठं, अहिंसा संजमो तवो। देवा वित्तं नमं स्संति, जस्स धम्मे सयामणो ॥१॥ जहा दुम्मस्स पुप्फेसु, भमरो आवइ रसं। नय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एवमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो। विहंगमाइ पुप्फेसु, दाणभत्ते सणेरया ॥३॥ वयं च वि त्तिं लब्भामो। नहि कोइ उव हम्मइ। अहागडे सुरीयंति, पुप्फेसु भमरो जहा ॥४॥ महुकार समा वुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया। नाणापिंडरयादिंता, तेण वुच्चंति साहुणो तिव्वेमि ॥ ५ ॥ सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व्व कल्याण कारणं। प्रधानं सव्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १ ॥ मंगलं भगवान्वीरो, मंगलं गौतमः प्रभु। मंगलं स्थूलिभद्राद्या, जनोधर्मोस्तु मंगलम्

॥ नवकार महात्म्य ॥ (छंद)

॥ सुखकारण भवियण समरो नित नवकार,

जिनशासन आगम चवदे पूरव सार॥ इण मंत्रनी महिमा कहितां न लहुं पार, सुरतरु जिम चिंतित वंछितफल दातार॥ १॥ सुर दानव मानव सेव करे कर जोड़, भूयमंडल विचरे तारे भवियण कोडि॥ सुरछंदे विलसे अतिशय जास अनंत,पहिले पद नमिये अरि गंजन अरिहंत॥२॥ जे पनरे भेदे सिद्ध थया भगवंत, पंचमि गति पुहता अष्ट कर्म करि अंत॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक जेह॥ सिद्धना पाय प्रणमुं बीजे पद वलि एह॥ ३॥ गच्छभार धुरंधर सुंदर शशि-हर शोम, कर शारणवारण गुण छत्तीसे थोम॥ श्रुत जांण शिरोमण सागर जेम गंभीर, तीजे पद नमिये आचारज गुण धीर॥ ४॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र भणावे सार, तप त्रिध संयोगे भाखे अरथ विचार॥ मुनिवर गुणयुत्ता ते कहिये उवझाय, चोथे पद नमिये अहनिश तेहना पाय॥ ५॥ पंचाश्रव टाले पाले पंचाचार, तपसी गुण

धार्गा वारो विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर लोकमांहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणमूं परमारथ जिण लाध ॥ ६ ॥ अरि हरि करि साइण डाइण भूत वेताल,सब पाप पणासे विलसें मंगलमाल ॥ इण समर्यां संकट दूर टले ततकाल, जंपे जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥

॥ श्रीसंखेश्वरा पार्श्वनाथ-स्तवनं ॥ (छंद)

॥ सेवो पास संखेसरो मन शुद्धे, नमूं नाथ निश्चे करी एक बुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो छो, अहो भव्य लोको भुला कां भमो छो ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो छो, पड्या पाश मे भूतड़ांने भजो छो ॥ सुराधेनु छंड़ी अजाने अजोछो, महापंथ मंकी कुपंथे व्रजोछो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे, ग्रहे कोण रशभने हस्ति साटे ॥ सुरद्रुम ऊपाड़ने आक वावे, महामूढ ते आकुला अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां कांकरोने ज किहां मेरु शृंग, किहां केशरीनें किहांने

कुरंग ॥ किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा, करो एक चित्ते प्रभु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्र-भावती प्राणनाथं, सहू जीवने करे सह सनाथं ॥ महातत्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेहना दुक्ख दालिद्र दूरे गमावे ॥ ५ ॥ पांमी मानुपीने वृथा क्यु गमो छो, कुशीले करी देहने कां दमो छो, नहि मुक्ति वासं विना वितरागं ॥ भजो भगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥ उदय रत्न भाखे महा हेत आणी, दयाभाव कीजे मोहि दास जांणी ॥ मोरे आज मोतीअडे मेह त्रूठा, प्रभु पास संखेसरो आप तूटा ॥ ७ ॥

गौतम स्वामीका छोटा रास।

॥ वीर जिनेसर केरो शीश, गौतम नांम जपो निश दीश ॥ जो कीजे गौतमनो ध्यांन; ते घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नांमे गिरवर चढे, मन वंछित लीला संपजे ॥ गौतम नांमे नावे रोग, गौतम नांमे सर्व संजोग ॥२॥ जे वैरी

विरुआ वंकड़ा तस नामे नावे ढुंकडा ॥ भूत प्रेत नवी मंडे प्राण,ते गौतमना करू वखाण ॥३॥ गौतम नामे निरमल काय,गौतम नामे वाधे आय॥ गौतम जिनशासन सिणगार, गौतम नामे जय२ कार ॥४॥ शाल दाल सदा घृत घोल, मनवंछित कप्पड तंबोल ॥ घरे सुघरणी निरमल चित्त, गौतम नामे पूत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल भांण, गौतम नाम जपो जगजाण ॥ मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोड़ानी जोड़, वारू विलसे वंछित कोड़ि ॥ महियल मांने मोटा राय, जो पूजे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गोतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम सरसी संगत मिले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान ॥८॥ पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावण्य समय कर जोड़ि, गौतम पूजा संपत को कोड़ि ॥ ६ ॥

॥ सोलह सतीओं का छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये ए ॥ प्रभात ऊठी मंगलीक काजे, सोले सती नाम लीजिये ए ॥१॥ बालकुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी भरतनी बहिनड़ी ए ॥ घट २ व्यापक अक्षररूपे, सोल सती माहि जे वड़ी ए ॥ २ ॥ बाहुबल भगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नामे ऋषभ सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिभुवनमांहे, जेह अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणेथी, शीलवती शुद्ध श्राविका ए ॥ उड़दना बाकला वीर प्रति लाभ्या, केवल लहि व्रत भाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धूआ धारणी, नंदन राज्यमती नेम वल्लभा ए ॥ योवन वेशें कामने जीती, संजम लेइ देव दुल्लभा ए ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांडव नारी, द्रुपदा नाम वखाणिये ए ॥ एकसो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणिये ए ॥ ६ । दशरथ नृपनी नारि निरोपम,

कोशल्या कुलचंद्रिका ए ॥ शीयल सलुणी राम जनीता, पुण्यतणी प्रणालिका ए ॥ ७ ॥ कोशांबिक ठांमे शतानिक नांमे, राज्य करे रंग राजियो ए ॥ तस घर घरणी मृगावती नामे सुरभुवने जश गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शील न काची, राची नही विषयारसे ए ॥ मुखड़ो जोतां पाप पुलाये, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी जेहनी कामण, जनक सुता सीता सती ए ॥ जग सहू जांणे धीज करंता, अनल शीतल थयो शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणी बांधी, कूवाथकी जल काढियो ए ॥ कलंक उतारवा सतिय सुभद्रा, चंपा बार उघाड़ियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित, शिवा शिवपद गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल थइये, वलिहारी तसु नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पांडवरायनी, कूंता नामे कामनी ए ॥ पांडव माता दशे दशारनी, बहिन प्रतिव्रता पदे

मनी ए ॥१३॥ शीलवती नामें शीलव्रत धारिणी; त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नाम जपतां पातिक जाए, दरसन दुरित निकंदि ए ॥१४॥ निषधानगरी नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी ए ॥ संकट पड़ियां शीलज राख्यो, त्रिभुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥१५॥ अनंग अजीता जगजन जीता, पुष्पचूला ने प्रभावती ए॥ विश्व विख्याता कामित दाता, सोलमी संती पद्मावती ए ॥१६॥ वीरे दाखी शास्त्र छे साखी, उदयरत्न भाषे मुदा ए ॥ प्रह उठीने जे नर भणसे, ते लहिस्ये सुख-संपदा ए ॥ १७॥

॥ श्रावक-करणी की सज्झाय ॥

॥ चोपाइ ॥ श्रावक तूं उठे परभात, चार घड़ी ले पाछली रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जेम पामे भव सायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारु छे कुलकर्म ॥ कवण अमारो छे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हैडे धरजे

चुध ॥ पडिक्कमणं करे रयणी तणुं, पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्तें करे पच्चक्खाण, सूधि पाले जिननी आण । भणजे गणजे स्तवन सभाय, जिणहुं तो निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवतां सीम॥ देहरे जांई जुहारे देव, द्रव्यभावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोषालें गुरु वंदन जाय, सुणो वखाण सदां चित्त लाय ॥ निर्दूषण सूजतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ स्वामीवत्सल करजे घणां, सगपण महोटा साहम्मीतणां ॥ दुःखीया हीणा दीना देखि, करजे तास दया सुविशेष ॥७॥ घर अनुसारे देजे दान, महोटाशुं म करे अभिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखड़ी, धर्म न मूकीश एके घड़ी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, ओछा अधिकानो परिहार ॥ म भरिश केनी कूडी साख, कूडा जनशुं कथन म भांख ॥ ९ ॥ अनंतकाय कहिये बत्रीश, अभक्ष्य बाविशे विश्वा वीस ॥ ते भक्षण

नवि कीजें किमे, काचां कुवला फल मत जिमे।१०।
रात्रिभोजनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष॥
साजी साबू लोहने गुलो, मधु धावडी मत वेचो
वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण पास, दूषण
घणां कह्यां छे नास ॥ पाणी गलजे बे बे वार,
अणगल पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां
करजे यत्न, पातक छंडो करजे पुण्य ॥ छाणां
इंधण चूले जोय, वावरजे जिम पाप न होय।१३।
घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म धोइश
चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला
टालजे ॥ १४ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी
परहरजे खाण ॥ किशुं म लेजे अनरथ दंड,
मिथ्या मेल म भरजे पिंड ॥ १५ ॥ समकि-
त शुद्ध हेडे राखजे, बोल विचारिने भांखजे ॥
पांच तिथि म करो आरंभ, पालो शीयल तजो
मन दंभ ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूधने दहि,
ऊघाड़ां मत मेलो सही ॥ उत्तम ठामें खरचो

विरा, पर उपगार करो शुभंवित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार, चारे आहार तणो परिहार । दिवस तणां आलोए पाप, जिम भांजे सघला संताप ॥१८॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जिनवर चरण शरण भव भवें ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जायवा ॥ समेतशिखर आबू गिरनार, भेटीश हुं धन धन्न अवतार ॥२०॥ श्रावकनी करणी छे एह, एहथी थाये भवनो छेह ॥ आठे कर्म पड़े पातलां, पाप तणा छूटे आमला ॥ २१ ॥ वारु लहियें अमर विमान, अनुक्रमें पामे शिवपुर धाम ॥ कहे जिनहर्ष घणे ससनेह, करणी दुःखहरणी छे एह ॥२२॥

॥ गौतम स्वामीका बड़ा रास ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि पभणिसुं सामी साल गोयम गुरुरासो ॥ मणतणु वयणे एकंद करवि निसु-

गह्रु भा भविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गह गहिया ॥१॥ जंबुदीव सिरि भरहखित्त खोणी तल मंडण, मगहदेस सेणिय नरेस रिउ-दल बलखंडण ॥ धणवर गुव्वर गाम नाम जिं-हां गुणगणसज्जा, विप्प वसे वसुभूइ तत्थ तसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताणपुत्त सिरइंद भूय भूव-लयपसिद्धो, चवदह विज्जा विविहरूव नारी रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाण देह रूवहि रंभा वर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण जणवि पंक-ज्जलपाडिय, तेजहिं तारा चंद सूरि आकास भमाडिय ॥ रूवहि मयण अनंग करवि-मेल्यो निरधाडिय, धीरम मेरु गंभीर सिंधु चंगम चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरु-वम रूव जास जण जंपे किंचिय, एकाकी किल भीत्त इत्थ गुण मेल्या संचिय ॥ अहवा निच्चय पुव्व जम्म जिणवर इण अंचिय रंभा पउमा

गवरि गंग रतिहां विधि वचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय सर कविण कोय जसु, आगल रहियो, पंच सयां गुण पात्र छात्र हींडे परवरियो ॥ करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरमनाण, दंसणहें विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासम्मी खोणी तल मंडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरगुब्बर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ, सुंदर तसु पुहवि भज्जा सयल गुण गण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्जा निलो, गोयम अतिही सुजाण ॥ ७ ॥ भास ॥ चरम जिनेसर केवलनाणी, चौविहसंघ पइट्ठा जाणी ॥ पावापुरसामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां किजें, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे ॥ त्रिभुवनगुरु सिंहासन बेठा, ततखिण मोह दिगंत पइट्ठा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मदपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव दुन्दुभि आगासें

वांजीं, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इन्द्रज सांगे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग मह मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसभर वरवरसंता, जोजनवाणि वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजलहलकंता, गयण विमाणहि रणरणकंता ॥ पेखवि इन्द्रभूइ मन चिंते, सुर आवे अमयज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीरतरंडक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता ॥ तो अभिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा कोक अजाणयुं बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले ॥ मो आगल कोइ जाण भणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥ १५ ॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाण संपन्न पावापुर सुरमहिय, पत्तनाह संसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण बहु

सुक्ख कारण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, ते-
जहि कर दिन कार सिंहासणं सामी ठव्यो, हुओ
तो जयजयकार ॥ १६ ॥ भास ॥ तो चढियो
घणमाण गजे, इन्दभूय भूयदेव तो ॥ हुंकारो
करसंचरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन
भूमि समोसरण, पेखवि प्रथमारंभ ॥ तो दह-
दिसि देखे विबुधवधू, आवंती सुररंभ तो ॥१७॥
मणिमय तोरणदंड ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥
वयर विवर्जित जंतुगण, प्रातीहारिज आठ तो ॥
सुर नर किन्नर असुरवर, इन्द्र इन्द्राणी राय तो ॥
चित्त चमक्किय चिन्तव ए, सेवंतां प्रभु पाय तो
॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिअ
रूप विसाल तो ॥ एह असंभव संभव ए, साचो
ए इन्द्र जाल तो ॥ ता वाला वइ त्रिजग गुरु, इन्द्र-
भूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सासि सवे, फेड़े
द प्पएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे,
गतहिं नाम्यो सीस तो ॥ पंच सयांसं व्रत

लियो ए, गोयम पहिलो सोस तो ॥ [illegible]
जम सुणवि करे, अगनि भूइ आवेय तो ॥ [illegible]
लेइ आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो [illegible]
इण अनुक्रम गणहररयण, थाप्या [illegible]
तो ॥ तो उपदेसे भुवन गुरु, संयम [illegible]
तो ॥ विहुं उपवासें पारणो ए, [illegible]
तो, गोयम संयम जग सयल [illegible]
करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ [illegible]
यो वहुमान हुंकारो करि [illegible]
तो तुरंतो ॥ जे संसा सामि [illegible]
फुरंततो ॥ वोधवीज सज्ज्ञा [illegible]
विरत्त ॥ दिक्ख लेई सि[illegible]
संपत्त ॥ २२ ॥ भास ॥ [illegible]
आज पचेलिमां पुण्य [illegible]
मि, जो नियनयणें [illegible]
मझार, जेजे संसा [illegible]
कारण पूछे मुनि [illegible]

लोग्य. तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कनें अणहुंत, गोयम दीजें दान इम ॥ गुरु ऊपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय ॥ तापस परसएण, जो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तपसो सियनिय अंग, अह्मां सगति न ऊपज़े ए ॥ किम चढसे दृढ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुओ ए अभिमान, तापस जो मन चिन्तवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंड कलस ध्वज वड सहिय ॥ पेखवि परमाणंद, जिणहर भरतेसर महिय ॥ निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥२७॥

वयर सामिनो जीव, तीर्यकजृंभक देव तिहां ॥ प्रति बोध्या पुंडरीक, कंडरीक अध्ययन भणी ॥ वलतां गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साथ, चाले जिम जथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांड घृत आण, अमीय वूठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंचसयां शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे ॥ साचा गुरुसंयोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह, समवसरण प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जणवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम ॥ जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुआ पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुकम इण अनुक्रम नाण पन्नरेसें, उपन्न परिवरिय, हरिदुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवी जग गुरु वयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ, चरमजिनेसर इम भणे, गोयम म करिस खेव, छेह जाय आ-

पण सही, होस्यां तुल्लां वेव॥ ३१॥ भास॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्लसिय॥ विहरियो ए भरहवासंमि, वरस वहुत्तर संवसिय॥ ठव तो ए कणय पउमेण, पायकमल संघे सहिय॥ आवियो ए नयनानन्द, नयर पावापुर सुरमहिय॥ ३२॥ पेखियो ए गोयमसामि, देवसमा प्रतिवोध करे॥ आपणो ए त्रिशलादेवि, नंदन पुहतो पर मपए॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाणयो जिण समे ए॥ तो मुनि ए मनविखवाद, नादभेद जिम ऊपनो ए॥ ३३॥ इण समे ए सामिय देखि, आपकनांसूं टालियो ए॥ जाण तो ए तिहु अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए॥ अतिभलो ए कीधलो सामि, जाणयो केवल मांगसे ए॥ चिंतव्यो ए वालक जेम, अहवा केड़ें लागसे ए॥ ३४॥ हूं किम ए वीर जिणंद, भगतहिं भोलें भोलव्यो ए॥ आपणो ए उँचलो नेह, नाह त

संपे साचव्यो ए ॥ साचो ए ए वीतराग, नेह न हेजें टालियो ए ॥ तिणसमे ए गोयम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट, रहितो रागें साहियो ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणधरु ए करय वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए ॥३६॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पचास, गिहवासें संवसिय तीसवरससंजम विभूसिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवइ वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ भास ॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिम चंदन सौगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहिरयां लहके, जिम कणयाचल तेजें झलके, तिम गोयम सोभागनिधि ॥३८॥ जिम मानसरोवर निवसे

जिम सुरतरुवइ कणयवतंसा, जिम महुयर राजीववनें ॥ जिम रयणायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केल घनें ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जगमांहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नरवइ घर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम भूमीपती भुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलबधें गह-गह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढोयो आज, सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंभ सहु वशि हुआ ए ॥ काम गवी पूरे मन कामी, अष्टमहा-सिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥ ॥ ४२ ॥ प्रणव अक्षर पहिलो पभणीजें, माया बीजो श्रवणे सुणीजें ॥ श्रीमिति साभा संभवो

ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजें, विनय पहू उवझाय थुणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥४३॥ परघर वसतां काय करीजे, देस देसांतर काय भमी जें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजें, काज समग्गल ततखिण सीझे, नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय वारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं मंगल ए पभणीजें, परव महोच्छव पहिलो दीजें, रिद्धि-वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीक्खियो ए ॥ विनयवंत विद्या भंडार, तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार, वड जिम साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास भणीजें, चउविह संघ रलियायत कीजें, रिद्धि-वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चन्दन छडो दिवरावो, माणक मोतीना चोक

पूरावो, रयण सिंहासण वेसणो ए ॥ तिहां बेठ गुरू देशना देशी, भविक जीवना काज सरेसी नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीका रास संपूर्ण ॥

राग प्रभाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर । भूख्यां भोजन संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार ॥ जे गु गौतम समरिये, मनवंछित दातार ॥ २ ॥ पुंड रीक गोयम पमुहा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्र ऊठीनें प्रणमता, चवदेसे बावन्न ॥ ३ ॥ खंति खमंगुणकलियं, सुविणियं सव्वलद्धि संपरणं वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नमंसामं ॥ ४ ॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाभिष्टार्थदायिने सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

श्री शत्रुंञ्जय का रास।

दूहा ॥ श्रीरिसहेसर पाय नमी, आंणी मन आनंद ॥ रास भणूं रलियामणो, सेत्रुंजानो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यार सतोतरे, हुआ धनेश्वर सूर ॥ तिण सेत्रुञ्जा माहातम कियो, शिला दैत्य हजूर ॥ २ ॥ वीर जिणंद समवसर्‍या, सेत्रुञ्जा ऊपर जेम ॥ इंद्रादिक आगल कह्यो, सेत्रुञ्जा महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुंजा तीरथ सारिखो, नही छे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तीरथ सगला जोय ॥ ४ ॥ नांमे नव निध संपजे, दीठा दुरित पुलाय ॥ भेटंता भव भय टले, सेवंता सुख थाय ॥ ५ ॥ जंबू नामे द्वीप ए, दक्षिण भरत मझार ॥ सोरठ देस सुहामणो, तिहां छे तीरथ सार ॥ ६ ॥

पहली ढाल—राग रामगिरी।

॥ सेत्रुंजोने श्रीपुण्डरीक, सिद्धक्षेत्र कहं

तहत्तीक॥ विमलाचलने करूं प्रणाम, ए सेत्रुं-
जैना इकवीस नाम ॥ १ ॥ सुरगिरिने महागिरि
पुण्यरास, श्रीपदपर्व्वत इंद्रप्रकाश ॥ महातीरथ
पूरवे सुखकाम ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वतने
दृढशक्ति, मुक्तिनिलो तिण कीजे भक्ति ॥
पुष्पदन्त महापद्म सुठांम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वी
पीठ सुभद्र कैलाश, पातालमूल अकर्मक तास ॥
सर्व काम कीजे गुणग्रांम ॥ ए० ॥४॥ श्रीशत्रुंजयना
इकवीस नांम, जपेज बेठा अपने ठांम ॥ शत्रुंजय
जात्रानो फल ते लहे, महावीर भगवन्त इम
कहे ॥ ए० ॥ ५

॥ दूहा ॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोयण
परिमांण ॥ पिहुलो मूल उंचपण, छव्वीस
जोयण जांण ॥ १ ॥ सत्तर जोयण जांणवो,
बीजे अरे विसाल ॥ वीस जोयण उंचो कह्यो,
मुझ वन्दना त्रिकाल ॥ २ ॥ साठ जोयण तीजे
अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोल जोयण उंचो

सही, ध्यांन धरू' चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुलपण, चोथे अरे मझार, उ'चो दस जोयण अचल, नित प्रणमें नर नार ॥ ४ ॥ बार जोयण पंचम आरे, मूलतणे विसतार ॥ दो जोयण उ'चो अछे, सेत्रुञो तीरथ सार ॥ ५ ॥ सात हाथ छठे आरे, पिहुलो परवत एह ॥ उ'चो होस्ये सो धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

दूसरी ढाल।

केवलनांणी प्रमुख तीर्थंकर, अनन्त सीधा इण ठांम रे ॥ अनन्त वली सिझस्ये इण ठामे, तिण करू' नित परणाम रे ॥ १ ॥ शत्रुञ्जय साधू अनन्ता सीधा, सीझसी वलिय अनन्त रे ॥ जिण शत्रुञ्जय तीरथ नही भेट्यो, ते गरभावास कहन्तरे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव सुखकार रे ॥ रायणरू'ख समोसस्या स्वांमी, पूर्व निनाणू' वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्र चैत्री पुनम दिन, इण सेत्रुंज-

किये ॥ ४ ॥ भरत कहे संघवीपद मुझ, थे आपो हूं अंगज तुझ ॥ इन्द्रे आणया अक्षतवास, प्रभु आपे संघवीपद तास ॥ ५ ॥ इन्द्रे तिण वेला ततकाल, भरत सुभद्रा विहुंने माल ॥ पहिरावी घर संप्रेडीया, सकल सोनाना रथ आपिया ॥६॥ रिषभदेवनी प्रतिमा वली, रत्नतणी दीधी मन रली ॥ भरते गणधर घर तेडिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मूकी सहु देस, भरत तेडायो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी, प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ भक्ति कीधी अतिघणी, संघ चलायो शत्रुंजय भणी ॥ गणधर वाहूवल केवली, मुनिवर कोड साथे लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तिनी सघली ऋद्धि, भरते साथे लीधी सिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नावे पार ॥ १० ॥ भरतेस्सर संघवी कहवाय, मारग चैत्य ऊधरतो जाय ॥ संघ आयो सेत्रुंजा पास, सहुनी पूगी

चौथी ढाल—राग सिंधूड़ो आशावरी।

भरततणे पाट आठमें, दंडवीरज थयो रायो जी॥ भरततणी पर संघ कियो, सेत्रुंजा संघवी कहायो जी॥१॥ शत्रुंजय उद्धार सांभलो, सोल मोटा श्रीकारो जी॥ असंख्यात बीजा वली, तेन कहुं अधिकारो जी॥ से०॥ २॥ चैत्य करायो रूपातणो, सोनानो बिंब सारो जी॥ मूलगो बिंब भंडारीयो, पछिमदिसि तिण बारो जी॥ से०॥३॥ शत्रुंजयनी जात्रा करी, सफल कियो अवतारो जी॥ दंडवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारो जी॥ से०॥ ४॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरज थी जीवाडो जी। इशानेन्द्र कराविया, ए तीजो उद्धारो जी॥ से०॥ ५॥ चोथा देवलोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारो जी॥ तिण सेत्रुंजानो कराविया, ए चोथो उद्धारो जी॥ से०॥ ६॥ पांचमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेंद्र समकितधारो जी॥ तिण सेत्रुंजानो कराविया,

ए पांचमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ भुवनपती इंद्रनो किया, ए छठो उद्धारो जी ॥ चक्रवर्त्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ८ ॥ अभिनंदन पासे सुणयो, शत्रुंजयनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरइंद्र करावियो, ए आठमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ६ ॥ चंद्रप्रभु स्वामीनो पोतरो, चंदशेखर नाम मल्हारो जी ॥ चंद्रयशराय करावियो, ए नवमो उद्धारोजी ॥से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना, शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥चक्रधरराय करावियो, ए दशमो उद्धारो जी ॥से० ॥११ ॥ दशरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रतस्वामी वारो जी॥ श्रीरामचंद्र करावियो, ए इग्यारमो उद्धारो जी ।। से० ॥ १२ ॥ पांडव कहे असे पापिया, किम छूटा मोरी मायो जी ॥ कहे कुंती शत्रुंजयतणी, जात्रा कियां पाप जायो जी ॥ से० १३॥ पांचे पाण्डव संघ करी, शत्रुंजय भेट्यो अपारो जी, काष्ठ चैत्य बिंब लेपना, ए

बारमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाखाणनो, प्रतिमा सुन्दर सरूपो जी ॥ श्रीशत्रुंजयनो संघ करी, थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥१५ ॥ अट्ठोतर सो वरसां गया, विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवाड जावड करावियो, ए तेरतेरमो उद्धारो जी ॥ १६ ॥ से० ॥ संवत बार तिडोतरे, श्रीमाली सुविचारो जी, वाहडदे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारोजी ॥ १७ ॥ से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर सत्यासिये, वैसाख वदि शुभ वारो जी ॥ करमे दोसी करावियो, ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलसो, ए वरते छे उद्धारो जी ॥ नित नित कीजे वन्दना, पांमीजे भवपारो जी ॥ २० ॥ से० ॥

॥दूहा॥ वलि शत्रुंजय महातम कहूं, सांभलो

जिम छे तेम ॥ सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्शनी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ भगवन्तनो भेष मांनतां, लाभ हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमांण समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंजा ऊपर देहरो, नवो नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्त्तिनी स्त्री थई, शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढिने करे उपवास ॥ नारकी मो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती परब मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोड़ि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नाखे छोड़ ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक भणी, भोजन पूण्य विशेष ॥ शत्रुंजय साधु पड़िलाभतां, अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥

पांचमी ढाल ।

शत्रुंजय गयां पाप छूटिये, लीजे आलोयण एमां जी, तप जप कीजे तिहां रही, तीर्थंकर कह्यो तेमां जी ॥ से० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेत्रुंजा चढी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥२॥ वस्तुतणी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेत्रुंजा चढी, एक करे उपवासो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांवा रजतनी, चोरी कीधी जेणे जी ॥ सात दिवस पुरिमड्ढ करे, तो छूटे गिरि एणो जी ॥ ४ ॥ से० ॥ मोती प्रवाला मूंगिया, जिण चोरया नर नारो जी ॥ आंविल कर पूजा करे, त्रिण टङ्क शुद्ध आचारो जी ॥ ५ ॥ से० ॥ धान पाणी रस चोरिया, ते भेटे सिद्धक्षेत्रो जी ॥ सेत्रुंजा तलहटी साधुने, पड़िलाभे सुध चित्तो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ वस्त्राभरण जिणे हरया, ते छूटे इण मेलो जी ॥

आदिनाथनी पूजा करे, प्रह ऊठी बहू वेलो जी ॥ से० ॥७॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुद्ध थाये एमो जी ॥ अधिको द्रव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहू प्रेमो जी ॥ से ॥ ८ ॥ गाय भेंस घोड़ा महा, गज ग्रह चोरणहारो जी ॥ थ ते वस्तु तीरथे अरिहन्त ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे अपणो नामो [illegible] छूटे छम्मासी तप कियां, सामायक [illegible] जी ॥ से० ॥ १० ॥ कुंवारी परिव्राजक, [illegible] अधव गुरुनारो जी ॥ व्रत भांजे [illegible] छम्मासी तप सारो जी ॥ ११ ॥ [illegible] स्त्री वालक ऋषि, एहनो घातक [illegible] जी ॥ प्रतिमा आगे आलोवतां, [illegible] तेहे जी ॥ १२ ॥ से० ॥

[illegible]

संप्रति काले [illegible] उद्धार ॥ शत्रुंजय [illegible]

अवतार ॥१॥ से० छह री पालतां चालिये ए सेत्रुंजा केरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पोहचिये ए, सङ्घ मिल्या बहु थाट ॥ से० ॥ २ ॥ ललित सरोवर पेखिये ए, वलि सत्तानी वावि ॥ तिहां विसरामो लीजिये ए, वड़ने चोंतरे आवि ॥ ३ ॥ से०॥ पालीताणे पाजड़ी ए, चढिये ऊठ परभात ॥ सेत्रुंजानदिय सोहामणी ए, दूरथकी देखन्त ॥ से० ॥ ४ ॥ चढिये हिङ्गलाजने हडे ए, कलि-कुंड़ नमिये पास ॥ बारीमांहे पैसीये ए, आणी अङ्ग उल्लास ॥ से० ॥५ ॥ मरुदेवीटूंक मनोहरू ए, गज चढी मरुदेवी माय ॥ शान्तिनाथ जिण सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥ ६ ॥ वंस पोरवाडे परगड़ो ए, सोमजी साह मलार ॥ रूपजी संघवी करावियो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चोमुख प्रतिमा चरचिये ए, भम-तीमांहे भला बिंब ॥ पांचे पांडव पूजिये ए, अद-भुत आदि प्रलंब ॥ ८ ॥ से० ॥ खरतरवसही

खंतसूं ए, विंत्र जुहारु अनेक ॥ नेमनाथ चवरी नमूं ए, टालुं अलग उदेग ॥ से० ॥ ६ ॥ धरम दुवारमांहिं नीसरू ए, कुगति करूं अतिदूर ॥ आउं आदिनाथ देहरे ए, करम करूं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायक प्रणमूं मुदा ए, आदिनाथ भगवंत ॥ देव जुहारुं देहरे ए, भमतीमांहे भमंत ॥ से० ॥ ११ ॥ शत्रुंजय ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र ॥ कलश अठोतर सो करिये, निरमल नासु गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥ प्रथम आदीसर आगल ए, पुंडरीक गणधार ॥ रायण तल पगला नमूं ए, चोमुख प्रतिमा च्यार ॥१३ से० ॥ रायण तल पगला नमूं ए, चोमुख प्रतिमा च्यार ॥ बीजो भूमि विंबावली ए, पुंडरीक गणधार ॥ १४ ॥ से० ॥ सूरजकुंड निहालिये ए, अति भली उलकाझोल ॥ चेलणतलाइ सिद्ध शिला ए, अंग फरसुं उल्लाल ॥ १५ ॥ से० ॥ आदिपर पाजे ऊतरूं ए, [illegible]

भराम ॥ चैत्यप्रवाड़ी इण पर करी ए, सीधा वंछित कांम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करो सेत्रुं जातणी ए, सफल कियो अवतार ॥ कुसल खेमसुं आवियो ए, संघ सहू परवार ॥ से० ॥ १७ ॥ शत्रुंजय रास सोहामणो ए, सांभलज्यो सहू कोय ॥ घर बेठां भणे भावसुं ए, तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ संवत सोल बयासिये ए, श्रावण वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुंजातणो ए, नगर नागोर मझार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गच्छ खरतर तणो ए, श्रीजिनचंद सूरीस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकलचंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीस जग जांणिये ए, समयसुंदर उवझाय ॥ रास रच्यो तिण रूवडो ए, सुणतां आणंद थाय ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीशत्रुंजयरास संपूर्णम् ॥

सम्मेत शिखरजीका रास ।

दुहा ॥ वादी वीस जिनेसरू, रचस्युं रास रसाल । तीरथ शिखरसमेतनी, महिमा वड़ी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियले, प्रगट्यो शिखरसमेत । कोड़ाकोड़ी मुनिवरू, सिद्ध गए इह खेत ॥ २ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्या पाप पुलाय । भविजन भेटो भावसुं, ज्युं सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनी, कहि न सके कवि कोय । गुण अनंत भगवंतना, तिम ए तीरथ होय ॥ ४ ॥

पहली ढाल चोपाई की ।

गिरवर शिखर समो नहि कोय, एहनी महिमा सब जग होय । वीस जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धरीने रह्या ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी भली, तिहां जितशत्रु नरेसर वली । विजयाराणीने सुत जांण, अजितकुमर

सहु गुणनी खाण ॥ २ ॥ जसु इन्द्रादिक सेवा करे, इन्द्राणी अति उच्छव धरे । तीर्थंकरनी पदवी लही, अंतर अरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनुक्रम इम भोगवतां भोग, पुन्य प्रसाद मिल्यो सहु जोग । अवसर दे संवत्सरी दान, संजम लीना आप सुजाण ॥ ४ ॥ कर्म खपावी पांम्यो, ज्ञान, केवलदर्शन लह्यो प्रधान । विचरे पुहवीमंडलमांहि, भव्यजीव प्रतिबोधन ताहि ॥ ५ ॥ सिंहसेनादिक गणधर भया, पंचाणवे संख्या सहु थया । एक लाख मुनिवर परिवस्या, श्रावक श्रावकणी सहु कस्या ॥ ६ ॥ तीन लाख वलि तीस हजार, साधवियां जाणो सुविचार ॥ श्रावक सहस अट्ठाण सही, दोय लाख संख्या गहगही ॥ ७ ॥ पांच लाख पेंतालीस हजार, श्रावकणी संख्या सुविचार । बहुत्तर लाख पूरवनो आय, कंचनवरण सरीर सुहाय ॥८॥ साढ़ीच्यारसे धनुष सरीर, मान लह्यो प्रभु गुण गंभीर ।

गज लांछन प्रभुजीने जांण, अमृत सम जसु मीठी वांण ॥६॥ अनुक्रम प्रभुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आव्या निज हेत। सहस मुनिवरने परिवार, मासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥ चैत्री सुदि पूनमने दिने, मुक्ति गये प्रभु तीरथ इणे। भूचर खेचर किन्नर सुरी, इन्द्रादिक सहु उच्छव करी ॥ ११ ॥ थाप्यो तीरथ मोटोमही, अठाइ महोच्छव कियो सही। ए तीरथनी जात्रा करे, ते भवियण अत्तयसुख वरे ॥ १२ ॥

दूहा ॥ श्रीसंभव जिनराज जी, गए इहां निर्वाण। शिखरसमेत सुहामणो, प्रगट्यो तीरथ जांण ॥ १ ॥

दूसरी ढाल—सुगण सनेही साजन श्रीसीमंधर स्वाम—ए देशी।

सावत्थीनगरी भरी धन संपद बहु थोक, जैतारि नृप राज करे सुखिया सब लोक। सेनाराणी मीठी वाणी गुणनी खाण, जेहने सुत श्री संभव ... सकल सजाण ॥ १ ॥ कंचनवरणा

सरीर मनोहर प्रभुनो जांण, लंछन अश्वतणो सोहे प्रभुनो परधान। साठ लाख पूरवनो प्रभुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसें उच्च पणे प्रभु देह वखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रभुने गणधर होय, दोय लाख मुनि जेहनें गुणवरता जग जोय। तीन लाख श्रमणी वली ऊपर सहस छत्तीस, भूमंडल विचरे प्रभु श्रीसंभव जगदीस ॥३॥ तीन लाख वलि सहस त्रयाणूं श्रावकलोक, पट लख सहस छत्तीस श्रावकणी संख्या थोक। त्रिमुखयत्त अरु दुरितादेवी सानिधकार, विचरंता प्रभु सकल संघमें जय २ कार ॥ ४ ॥ सहस श्रमण परिवारे प्रभुजी सिखरसमेत, एक मास संलेखण कीनी निजपद हेत। इण गिरि ऊपर पायो प्रभुजी पद निरवांण, तीरथ महिमा महियल मोटी थइय सुजांण ॥५॥

दुहा॥ अभिनंदन जिन वंदिये, पायो पद निरवांण। शिखरसमेत सोहामणो, भेटो तथ सुजाण ॥ १ ॥

तीसरी ढाल—सहस श्रमणसुं सुक संजमधरो—ए देशी।

नगरी अयोध्या सुरपुरि सम भली, संवर राजा सोहे मन रली। सिद्धार्था राणी प्रभु तसु नंद ए, अभिनंदन जिन प्रगट्या चंद ए॥ उल्लालो॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष साढी तीनसे॥ सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकरा, कपि लंछन ते नित वसे। पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोल ए॥ तीन लाख मुनि छ लाख आर्या सहस त्रिंसत् सोल ए॥ १॥ चाल॥ सहस अठ्यासी दो लख श्राद्धनी, संख्या चौलख सत्तावीसनी॥ श्रावकणयांरी संख्या जाण ए, नायकयच्च कलिका ठाण ए॥ उल्लालो॥ ठाण ए शिखरसमेत ऊपर मास एक संलेषणा, इक सहस साधू परवस्या प्रभु मुक्ति पहुंचे पेषणा॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवो मात सुमंगला, श्रीसुमति जिनवर भए नंदन सदा होत सुमंगला॥ २॥ चाल॥ सोवन वर्ण धनुष

तसु तीनसे, लंछन क्रोंच सोहै सुभगे हसै ॥ पूरव लाख पच्यासी आउ ए, इकसौ गणधर गुण गण भाउ ए ॥ उल्लालो ॥ भाउ ए मुनि त्रिण लाख सोहे सहस वीस प्रमाण ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी श्रावक दोय लक्ष जाण ए ॥ संख्या इक्यासी सहस ऊपर श्रावका इम आणिये, पण लाख सोले सहस तुम्बरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात संख्या सहस साधु सुरंग ए, कर मासकी संलेपणा प्रभु मुक्ति पुहता चंग ए ॥ ३ ॥ चाल ॥ इम कोसंबीनगरी तात ए, धरनृप तात सुसीमा मात ए, पदम प्रभु तसु अंगज नाथ ए, लंछन कमलतणो सुभ हाथ ए ॥ उल्लालो ॥ हाथ ए धनुप प्रमाण पूरा अढाई सै तनु कहौ, तीन लाख पूरव थित कहावै एकसो गणधर लहो ॥ लख तीन तीस हजार साधू वीस सहस लख च्यार ए, साधवी दोय लख सहस छिहतर श्रावक संख्या सार ए ॥ ४ ॥ चाल ॥

पाँच लाख वलि पाँच हजार ए, श्रावकयांरी संख्या सार ए ॥ कुसम देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रभु सोहै सही ॥ उल्लालो ॥ सोहए शिखरसमेत ऊपर, आठसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास संलेखन प्रभुनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपद्म प्रभुजी मुक्ति पहुता, गिर शिखर महिमा भई, ॥ तसु चरण पंकज वालवं दे हृदय आनंद गहगही ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आराम ॥ भविजन भ्रमरसु सेवतां, पामे वंछित कांम ॥ १ ॥

चौथी ढाल—श्रीसीमंधर साहिबा—ए देशी।

नगर वणारसी सोभता, राजा तात प्रतिष्ट लालरे ॥ देवी पृथवी मात जी, स्वस्तिक लंछन सिंह लालरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व जिनंद जी, वीस पूरव लख आयु लालरे ॥ धनुप दोयसै देहनो, कंचनवरण सुहाय लालरे ॥ २ ॥ श्री० ॥ पचा-

णवे गणधर कह्या. साधू त्रिण लाख होय लालरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपरे, सहस साधवियां जोय लालरे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ सहस सतावन लक्ष्नी, श्रावक संख्या थाय लालरे ॥ च्यार लाख वली त्रे णवै, सहस श्रावकणी भाय लालरे ॥४॥श्री० मातंगयक्ष शांतासुरी, पांचसे मुनि परवर लालरे॥ करि अणसण मुगते गया, नाम लियां निस्तार लालरे ॥ ५ ॥ नगर चंद्रपुर इण परे, राजा तात महेस लालरे ॥ देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंद्राप्रभु वेस लालरे ॥६॥ श्रीचंद्राप्रभु वंदिये, चंद्रवरण तनु जेह लालरे ॥ लंछन चंद्रतणो भलो, धनुप दोढसे देह लालरे ॥ ७ ॥ श्रीचं० ॥ भविककमल प्रतिबोधतां, सेवे सुर नर यक्ष लालरे ॥ दस लाख पूरव आउखो, तेणवे गणधर दक्ष लालरे ॥ श्रीचं० ॥८॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि श्रमणी तीन लक्ष लालरे ॥ असी सहस संख्या कही, श्रावक वलि दोय लक्ष लालरे

॥ ६॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर वली, श्राविका चउ लक्ष धार लालरे ॥ सहस इकाणवै ऊपरै, प्रभुजीना परिवार लालरे ॥१०॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव भृकुटीसुरी, सहस साधु परिवार लालरे ॥ संलेखन इक मासनी, पुहता मुक्ति मझार लालरे ॥ ११ ॥ श्री० ॥

॥ दुहा ॥ जय श्रीसुविधि जिनेसरु, जगपति दीनदयाल ॥ समेतशिखर मुगते गया, भविजनके प्रतिपाल ॥ १ ॥

पांचमी ढाल—श्रीविमलाचल सिरतिलो—ए देशी ।

नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा माता सुत, भए सुविध सुभ जीव ॥ १ ॥ रजतवरण सम तनु सत, धनुप एक परिमांण ॥ दोय लाख पूरव कह्यो, प्रभुनो आयु सुजांण ॥ २ ॥ अठ्यासी संख्या भए, गणधर परम प्रधान ॥ लख दोमुनि विंशति सहस, इक लख श्रमणी जांण ॥ ३ ॥ दोय लक्ष श्रावक कह्या,

अर गुणतीस हजार ॥ एकत्तर चौ लख सहस, श्रावकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सानिधकार ॥ सहस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ५ ॥ मास संलेखण कर प्रभु, मुक्ति गए इह ठोर ॥ तीरथ महिमा महियलै, प्रगटी च्यारुं ओर ॥ ६ ॥ इमहिज शितलनाथनो, हिव सुणज्यो अधिकार ॥ भद्दिलपुर दढरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥७ लंछन सुभ श्रीवच्छनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेउ धनुष, मान सरीर अमंद ॥ ८ ॥ एक लाख पूरव कह्यो, प्रभुनो आयुप्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सूजांण ॥ ९ ॥ एक लाख चालीस सहस, श्रमणी संख्या ओर ॥ सहस तयांसी दोय लख, श्रावक संख्या जोर ॥ १० ॥ सहस अठावन लक्ख चौ, श्रावकणी सुविचार ॥ देवी अशोका ब्रह्म यच्च, सहु संघ सानिधकार ॥ ११ ॥ सिखरसमेत सहस्र एक, साधूने

परिवार ॥ मुक्तिगए प्रभु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १२ ॥

छट्टी ढाल—धन-धन संप्रति साचो राजा—ए देशी।

सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, त्रिष्णु नरेसर तात जी, कंचनवरण श्रेयांस प्रभूजी, उपज्या वि-ष्णु सुमातजी ॥ १ ॥ नमोरे नमो श्रीत्रिभुवन राजा, खडग लंछन प्रभु पाय जी ॥ धनुष असी देहमांन चोरासी, लाख वरसनो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर बहुत्तर सहस चोरासी, मुनि श्र-मणी तीन लच्च जी ॥ तीन सहस वलि सहस गुणयासी, श्रावक पुण दो लक्ख जी ॥ ३ ॥न०॥ अड़तालीस सहस वलि चौ लख, श्राविका जा-णो सारजी ॥ जच्च अमर सुरी मांनवी जांणो, श्रीसंघ सानिधकार जी ॥ ४ ॥ न० ॥ सहस मुनीसरनै परिवारे, प्रभुजी सिखरसमेतजी ॥ मास संलेखण कर प्रभु पोहता, मुक्तिमहल सुख हेत जी ॥ न० ॥ ५ ॥ हिव कंपिलपुर तात भूप-

नि. श्रीकृतवर्म सुमात जी ॥ स्यामादेवी अंगज ऊपना, विमलनाथ जगतात जी ॥न० ॥ ६ ॥ सूकर लंछन सोवनकाया, साठ धनुष देहीमान जी ॥ साठ लाख वच्छरनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥ न० ॥७॥ साठ सहस मुनि अडसय इक लख, श्रमणी श्रावक जांण जी ॥ आठ सहस दोय लच्च श्राविका, चौ लच्च संख्या आणजी न० ॥ ८ ॥ षणमुख सुरवर विदिता देवी, प्रभुजी शिखरसमेत जी ॥ षट हजार साधू परिवारे, मुक्ति गए सुख हेत जी ॥ न०॥ ६ ॥ नगरी नाम अयोध्या नरवर, सिंहसेन जग सार जी ॥ सुजसा मात तिणे सुत जायो, प्रभुजी अनंतकुमार जी ॥ न० ॥१०॥ लंछन श्येन सोवन सम काया, धनुष पच्चास प्रमांण जी ॥ तीस लाख वच्छरनो आयु, गणधर पचवीस आंण जी ॥ न० ॥ ११ छासठ सहस मुनीवर सोहे, वासठ श्रमणी हजार जी ॥ छ हजार लाख दोय श्रावक,

श्रावकणी इम धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ च्यार लाख वलि चवद हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताल यक्ष श्रीसंघके सानिध कारी, नित प्रति जाय जी ॥ न० ॥ १३ ॥ आठसै मुनिवरनै परिवारै, शिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर गिरि ऊपर, पुहता पद निरवांण जी न० ॥ १४ ॥

॥ दूहा ॥ ऐसे धर्म जिणेसरू, पुहता पद निर्वाण ॥ सिखरसमेत गिरिंद पर, नमो २ जगभांण ॥ १ ॥

सातमी ढाल—जगतगुरु त्रिशलानंदन जी—ए देशी ॥

रत्नपुरी नगरी धणी जी, भानुराय सुजाण ॥ राणी सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥१॥ जगतपति धर्म जिनेसर सार, धनुष पैंतालीस तनु कह्यो जी ॥ वज्र लंछन सुखकार ॥२॥ ज० चोतीस गणधर मुनि कह्या जो, चौसठ सहस प्रमाँण ॥ श्रमणी वासठ सहसस्यूं जी, श्रावक दोय

लच मांन ॥ ३ ॥ ज० ॥ च्यार सहस वलि ऊपरां जी. चो लक्ख एक हजार ॥ श्रावकणी संख्या कही जी, दस लक्ख आयु विचार ॥ ४ ॥ ज० ॥ किन्नर सुर यक्षा सुरी जी, एक सहस परिवार ॥ समेतसिखर मुगते गया जी, वांदूं वार हजार ॥ ५ ॥ ज० हथणापुर विश्वसेनना जी, अचिरा मात उदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवन जयरकार ॥ जगतपति शांति जिनेसर सार ॥६॥ मृग लांछन सोवन समो जी,देहो धनुप चालीस ॥ आयु वरप इक लाखनो जी, छत्तीस गणधर सीस ॥ ज० ॥ ७ ॥ वासठ सहस मूनि छसे जी, इगसठ श्रमणी हजार ॥ दोय लाख श्रावक कह्या जी, उपर नेऊ हजार ॥ ८ ॥ सहस त्रयाणूं श्राविका जी, तीन लाख परिवार ॥ गरुडयक्ष देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥ ६ ॥ नवसे मुनि परवार स्युं जी, आया सिखरमेत ॥ मासखमण कर मुगतिमें जी, पुहता निजपद

हेत ॥ज० ॥ १० ॥ असें हथणापुर भलो जी, राजा सूर सुतात ॥ कुंथुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन तनु श्रीमात ॥ जगतपति कुंथु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ छाग लंछन पेंतीसनो जी, धनुष देहनो मांन ॥ सहस पंच्याणव वरसनो जी, आयु प्रभुनो जान ॥ १२ ॥ ज० पेंतीस गणधर दीपताजी, साठ सहस मुनि जांन ॥ छसै साठ सहस वली जी, श्रमणी संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लखनी जी, श्रावक संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, श्राविका संख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवस्या जी, देवी बला गंधर्व ॥ कुंथुनाथ मुगते गया जो, मास संलेखण सर्व ॥ज०॥१५॥

॥ दुहा ॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिस्युं अब अधिकार ॥ श्रोता सुणज्यो प्रेम धर, थास्यै लाभ अपार ॥ १ ॥

आठमी ढाल—देमी विछियानी।

हांरे लाला श्रीजिनकुशल सूरीसरू—ए देशी॥

हांरे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अयोध्या चंदरे लाला॥ तात सुदर्शन मातजी, नंदादेवीना नंदरे लाला ॥१॥ श्रीअ०॥ लंछन नंद्यावर्त्तनो, तीस धनुष देहीनो मांन रे लाला॥ कंचन वरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला॥ २॥ श्री अ०॥ इक लाख श्रावक ऊपरे, वलि संख्या अधकी जांणरे लाला॥ सहस वहुत्तर तीन लच्च श्राविका संख्या जांणरे लाला॥ श्रीअ०॥ ३॥ देव देवी सानिध करे, इक सहस मुनि परवार रे लाला॥ मुक्ति गए इण गिर प्रभु, कर मास संलेखण सार रे लाला॥श्रीअ०॥४॥ मिथिला नगर प्रभावती, मात पिता श्री कुंभ राय रे लाला॥ लंछन कलस पचीसनो, वपु धनुष सोवन सम कायरे लाला॥ श्रीमल्लिनाथ जिनेसरू॥ ५॥ सहस

पच्चावन वर्षनी,थित गणधर अट्ठावीसरे लाला ॥ भविक कमल प्रति बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ६ ॥ श्री म० ॥ चालीस सहस मूनीसरू, श्रमणी पच्चावन सहस रे लाला ॥ सहस त्रयासी लच्चनी, श्रावकनी संख्या सार रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म० ॥ श्राविका सित्तर सहसनी, लच्च तीन संख्या सुविचार रे लाला ॥ सहसमुनि परवारस्युं,गये मुक्ति संलेखण धार रे लाला ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ राजग्रही राजा पिता, सुग्रीव पद्मावती मात रे लाला ॥ श्याम वरण तनु शोभता, जे कपिल लंछन विख्यात रे लाला ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामीजी ॥ ६ ॥ धनुष वीस देहीतणो, आयु वच्छर तीस हजार रे लाला ॥ अष्टादश गणधर थया, तीस सहस मुनिसर सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १० ॥ श्रमणी सहस पचवीसनी, संख्या बहुतर हजार रे लाला ॥ इक लच्च ऊपरि श्राविका, तीन लच्च पचास हजार रे

लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ वरुणयच्च देवी भली, नरदत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सहस मुनि परवारसे, गए मुक्ति महल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ विजय पिता विप्रा मातजी, सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला ॥ नीलकमल लंछन कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साथ रे लाला ॥ श्रीनमिनाथ जिनेसरू ॥ १३ ॥ दस हजार वरसतणो, गणधर सित्तर परिमाण रे लाला ॥ वीस इकतालीस सहस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण रे लाला ॥ श्रीन० ॥१४॥ इक लख सित्तर सहसनी, तीन लच्च सहस वलि होय रे लाला ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अनुक्रम करि संख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ विचरंता भूमंडले, आया सिखर समेत मझार रे लाला ॥ भृकुटी यच्च गंधारी सुरी, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥

॥ दूहा ॥ परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगत

विख्यात ॥ शिखर शिरोमणि सहस फण, जग जीवन जगतात ॥ १ ॥

नवमी ढाल—आदर जीव क्षमागुण आदर—ए देशी ॥

जय २ परम पुरुष पुरुषोत्तम, पारस पारसनाथ जी ॥ सांवरिया साहिब जगनायक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥ जय २ सिखर समेत शिरोमणि, श्रीसाँवरिया पास जी ॥ ध्यावे सेवे जे नर तेहनी, पूरे वंछित आस जी ॥ २ ॥ज०॥ काशी देस वणारसी नगरी, श्रीअश्वसेन नरिंद जी, वामा माता जग विख्याता, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंछन नील वरण छवि, देहि शुभ नव हाथ जी ॥ आयू इकसो व्रस प्रमाणे, गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ जय० ॥ सोल सहस मुनिवर अरु श्रमणी, कही अडतीस हजार जी ॥ भूमंडल विचरे भवि जनकूं, बोध बीज दातार जी ॥ ५ ॥ जय० ... सहस लाख इक श्रावक, गुण-

चालीस हजार जी ॥ तीन लाख श्रावकणी संख्या, पार्श्वयक्ष सुर सार जी ॥ ६ ॥ जय० ॥ वीस जिनेसर मुगते पुहता, महिमा थइय अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगट्यो जगमें, मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ जय० ॥ छह री पाले जे नर भावै, भेटे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनवंछित फल पावे, ए सुर तरुनो कंद जी ॥ ८ ॥ जय० ॥ वहु विध संघतणी करै भक्ति, संघपति नाम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पांमी, जेहनो सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ जय० ॥ परभव सुरनर संपद पामे, जात्रा करे गहगाट जी ॥ साधर्मी वच्छल मुनिभक्ति,पूजा उच्छव थाट जी ॥ १० ॥ जय० ॥ टूंक २ पर चरण प्रभूना, पूजो भविजन भाव जी ॥ ध्यांन धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक उच्छाव जी ॥११॥ जय० ॥ रास रच्यो श्रीसिखर गिरीनो, सुणतां नवनिध थाय जी ॥ तिण ए भविजन भाव धरीने, सुण-

ज्यो मन थिर लाय जी ॥ १२ ॥ जय० ॥ खरतर गच्छपति महिमाधारी, कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौभाग्य सूरीश्वर, अमृत वचन सुगात जी ॥ १३ ॥ जय० ॥ तासु पसायें रास रच्यो ए,अमृत समुद्रने सीस जी ॥ बालचंद्र निज मति अनुसारे, सोधो विबुध जगीस जी ॥ १४ ॥ जय० ॥ संवत उगणीसै सितडोत्तर, सुदि वैशाख सुढाल जी ॥ रास अजीमगंजमांहे कीनो, भणतां मंगल माल जी ॥ १५ ॥ जय० ॥

इति श्रीसिखर गिरी-रास संपूर्णम् ॥

मुनि-मालिका

पहली ढाल ॥

ऋषभ प्रमुख जिन पाययुग प्रणमूं, सिव-सुख दायक मनह उल्लास ॥ पुंडरीक श्रीगौतम आदिक, गणधर गुरु मन कमल विकास ॥ १ ॥ ग्रह सम सूधा साधु नमुं नित,भावै श्रमण सु-[illegible]ंत ॥ नाम ग्रहण करी पाप ॥

मानंद सुमति विकसंत ॥ २ ॥ प्र० भरत महा-
मुनि प्रथम चक्कीसर, बाहूवल उपशम भंडार ॥
सूरयसादिक आठ मुनिसर, पांम्यो विमलाचल
भवपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ ऋषभवंस जे अनुक्रम
हुवा, मुनिवर कोडी लाख असंख ॥ श्रीशत्रुंजय
शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूंकी कंख ॥
४ ॥ प्र० ॥ सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्त्ति,
साधु महावल संजम सींह ॥ अचलादिक वल-
देव अष्टमुनि, राम ऋषीसर नवमं अवीह ॥५॥
प्र० श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख छ वसुन्दर, श्रीमल्लिनाथ
पूरवभव मित्र ॥ पहुंता परम ऋषीसर शिवपुर,
पाली श्रीजिन आंण पवित्र ॥६॥ प्र० ॥ वंदु वि-
ष्णुकुमार लवधि निधि, खंदक सूरीना सीस
सव पंच ॥ कार्त्तिकसेठ सुसाधु कीर्त्तिधर, श्रम-
ण सुकोसल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० श्रीयदुवंस
अचोभ सुसागर, प्रमुख आठ अणगार प्रधान ॥
श्रीरहनेमि नेमजिन वंधव, निरमल गुणगण र-

यण निधांन ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालिने उवयाली, पुरससेण वारिसेन प्रजुन्न ॥ संब अने अनिरुद्ध ऋषीसर, सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्य ॥ ६ ॥ प्र० ॥ कुमर अनीकजसादिक पट मुनि, गुणगिरुवो श्रीगजसुकमाल ॥ ढंढण ऋषि श्रीथावच्चासुत, सहस साधु संज तसु कृपाल ॥ १० ॥

दूसरी ढाल—राग धन्याश्री ॥

सहस श्रमणसु सुक संजमधरो, पंचसयांसु सेलग मुनिवरो ॥ सिद्ध थया श्रीपुंडरगिरिवरो, करुणाकर प्रणम्यां संपदकरो ॥ उल्लालो ॥ संपद करो समदम रिपीसर साधु सारण सोह ए, अंतर प्रकासे तिमिर नासे, भविकजन मन मोह ए ॥ प्रत्येकबुद्ध प्रबुध्ध नारद मुनि प्रमुख पेंताल ए, दमदंत महाऋषि कुंजवारे साधु नमुं त्रिहु काल ए ॥११॥चाल॥ रंग रिषभदत्त रतनत्रय मुणी, समरुं देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पांडव प्रणमुं मनिपति, केसपएसी बोधक जिनमती ॥उल्लालो॥

जिनदत्ती बालक पुत्र मेहल थिवर आणंद रखियो, अणगार कासव धर्म भाख्यो सोधि सिवपुर सख्खि यो ॥ कालासवेसी पुत्र आतम अरथ साधक उप- समइ, श्रीपुंडरीक महामुनीसर प्रणमिये शुभ संयमी ॥१२॥ चाल ॥ वंदु वलकलचीरो केवली, श्री अयमत्तो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकरकंडू दुमह नमि निग्गया, निज२ देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उल्लालो ॥ श्रीजुवा ए वृषभादि देखा थया वड़ इरागिया, संजमसिरि भज मोहनिद्रा तजिय गे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध या एकण समें, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम म प्रणमुं ग्रह समे ॥ १३ ॥ चाल ॥ खंते चु- त्रकुमारसु ध्याइये, लोहच्चा मुनि चरणे लय इये ॥ काल उदाई प्रमुख महामुणी, संजम द्ध जयंती साहूणी ॥ उल्लालो ॥ साहूणी जा- जगवखाणी, परमपद सुख पांमिया ॥ श्रीध- णभद्र सुभद्र सुन्दर अचल आतमरामिया ॥

श्रीसुप्रतिष्ठय तीस सुव्रत, साधु सुव्रत सेहरो ॥ चारित्र रिष गुणवंत गोभद्र गरुओ गरिमा सागरो १४ ॥ चाल ॥ सिरि सिवराय ऋषीसर वंदिये, दसारण भद्र नमुं दुख छंदिये ॥ अर्जुनमाली सुख संजमधरो, सुदृढप्रहारी सिवरमणी वरो ॥ उल्लालो ॥ सिवरमणी वरो श्रीकूरगडू क्षमावंत प्रसिद्धउ, कोडिन्न दिन्न अनै सेवाली पनर सतक तिडोत्तरा ॥ गोतम प्रवोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥ गिरुआ श्री गुणसागर गाईये, प्रथवीचंद्र प्रणम्यां सुख पाइयै ॥ खंदकुमार सदा अभिनंदिये, नमिह भरह मित्र मन आणंदिये ॥ उल्लालो ॥ आणंदिये मेतार्य मुनिवर भगत्तसुं समरी करी, रुपी इलापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीयै धरी ॥ श्रीइन्द्र नाम नग्रंथ निमम धर्मरुचि धर्मागिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तसु जितशत्रु मुनीसरो ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि २ जसतणो, श्रमण

सुदंसण सील सुहामणो॥ श्रीअन्नयसुत आर्द्र-
कुमार ए, चित्त चतुर नर चित्त चमकार ए॥
उल्लालो॥ चमकार सार सुजात ऋषिवर देव-
सांनिध जस घणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजै
सुजिन पालत हित धणी॥ श्रीधर्मघोष सुसीस
धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए॥ श्रीकपिल ऋषि
हरिकेशव वल मुनि, नित नमुं निरलेव ए॥१७
चाल॥ जति जयघोष विजयघोषै जुओ,सेवुं श्रु-
तधर श्रीदेवलसुओ॥ श्रीइखुकार नृपति कमला-
वती, रांणी भृगुसुं प्रोहित सुभमती॥उल्लालो॥
सुभमती जेहनी जसाभार्या पुत्र दोय वखाणिये,
र छहूं लेइ चारु चारित्र सुगति पहुता जाणिये॥
त्रिय मुनिसर साधु संजम धर्मरुचि महाव्रती,
नेम न्थनाथ अनाथ वंदू समुद्रपाल सुसंयती॥
८॥ चाल॥ कुम्मापुत्र नमुं केवल कल्पो,
वधसुं शीतल सिवकमला मिल्यौ॥ धन धन
न्यो सूरगिरी धोर ए, वीरप्रशंस्यो तप गुण

वीर ए ॥ ३० ॥ श्रीवीर दीक्षित श्रीसुबाहुभद्र, नंदकुमार ए, आदिक दसे रिष चरिय जेहना सुख विपाक उदार ए ॥ श्रीचंडरुद्र सुसीस खंदग क्षमानिधि कहिये इण कालै, कुरुदत्त सुत तीसग सरोरुह रिष नम्यां आस्या फले ॥ १६ ॥ चाल ॥ अंग प्रमुख रिष च्यारे आदरी, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अभयकुमार मुनि अभयंकरो, हल्ल विहल्लसु आतम हितकरो ॥उल्लालो॥ हितकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिषेण आराधियै, सुनक्षत्र नै सर्वानुभूति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू अनै उदायन चरम राजरुषीसरो, श्रीसालभद्र सुधन्न मुनिवर समरंता मंगलकरो ॥ २० ॥

तीसरी ढाल—राग धन्यासरी ॥

वडवेरागी वर नमुं, युगवर जंबूसांमि ॥ प्रभव सिय्यंभव परगड़ो, सुजस जसोभद्र स्वांमि ॥ महामुनिसर नित नमुं जी, नामे

निध्ध वाधे रिद्ध समुद्ध ॥ महा० ॥ २२ ॥ जग संभूति विजय जयो, भद्रवाहु कृतभद्र, जग जोगीसर जागतो, मुनिवर श्रीथूलभद्र ॥ २३ ॥ म० भद्रवाहु स्वामीतणा, च्यार शिष्य मुनिराय ॥ सीत परीषह जिणसह्या, साध्या२ आतम काज ॥ म० ॥ २४ ॥ अज्जमहागिरि जांणिये, अज्जसुहत्थिय विशाल ॥ संप्रति नृप पडिवोहियो, श्रीअयवंतीसुकमाल ॥ म० २५ ॥ आरिजसांमियसंसियो, अज्जसुभद्र सुनीस ॥ अज्जमंगु महिमा निलो, सींहगिरी समुनीस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि थिवर महामुनी, श्रीवयरस्वामी मुनिराय ॥ अरहदिएण मुनि अपहस्यो, भद्रगुपति निरमाय ॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन विद्यावरू, श्रीरचत गुरु दच ॥ पुस मित्र गुण गहगह्यो, प्रभु दुरवलका पच ॥ म० ॥ २८ ॥ विंझ साधु सुविधइ भख्यो, श्रीठंडिल सुविहट्ठ ॥ सूत्रअरथ रतने भस्यो, च- माश्रमण देवड्ढ ॥ म० ॥ २९ ॥

हामुनी, श्रीदुपसै सूर दयाल ॥ शुद्ध क्रिया खरतर सही, जिन आज्ञा प्रतिपाल ॥ म० ॥ ३० ॥ इम पनर कर्मभूमी जिके, हुआ होस्यै अणंत ॥ वर्त्तमान श्रीसाधुजी ॥ रत्नत्रइ गुणवंत ॥ म० ॥ ३१ ॥ ब्राह्मी सुन्दरि रायने, साहुणी चंदनबाल ॥ आदिक सीलवती सती, त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल ॥ म० ३२ ॥ संवत सोल छत्तीस ए, श्रीविमलनाथ सुरसाल ॥ दिक्षा कल्याणक दिने, गुंथी श्रीमुनिमाल ॥ म० ३३॥ रिणी पुरैं रलियामणो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ सूरि विजय राजै सदा, संघ सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्रीमतिभद्र सुगुरुतणें, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंघ वखाणियै, सदा २ जयकार ॥ मं० ॥ ३५॥ मनहर श्रीमुनिमालका, गुणगण परिमल पूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिके, पामे सूख भरपूर ॥ म० ॥ ३६ महा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्ट महासिद्ध घरे फले, सदा २ कल्याण ॥ म० ॥३७॥

छिन्नुं जिन-स्तवन।

॥दोहा॥ वरतमांन चोवीसी वंदू, मन सूधे नित सेव री माई ॥ रुषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम प्रभु सेव री माई ॥ व०॥१॥ श्रीसुपार्श्व चंद्र प्रभु प्रणमुं, सुविध शीतल श्रेयांस री माई ॥ वासुपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंथु परसंस री माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मल्लि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी पास जिनन्द री माई ॥ चोवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमानंद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

दूसरी ढाल—प्रह सम सूरा साधु नमुं जिन—ए देशी।

नित २. अतीत चोवीसी नमिये, जेहना नांम प्रगट ए जांण ॥ केवलज्ञानी ते निरवांणी, सागर महाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥ नि० ॥ सर्व्वानुभूति श्रीधरदत्त जिनवर, दामोदर सुतेजाश्रीस्वांमि ॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, वोअस्ताग नेमीसर नांम ॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल-

यशोधर तेम कृतारथ, श्री जिनेसर सुद्धमति सुजगीस, सिवकर स्यंदन संप्रति नांमे, वंदीजे जिनवर चोवीस ॥ ६ ॥ नि० ॥

तीसरी ढाल—सफल संसारनी—ए देशी ॥

जे भविस्संतिअणागए काल ए, तेह चौविस प्रणमीस त्रिहुं काल ए। प्रथम माहाराज श्रेणिकतणो जीव ए, श्रीपद्मनाभ प्रणमीस सदीव ए ॥ १ ॥ वीरनो पितरियो नाम सुपास ए, हुसी-जिन वीय सुरदेव सुप्रकाश ए। श्रेणिक सुत उदाइ नरिंद ए, तीसरो तेह सुपास जिणंद ए ॥ २॥ शिष्य श्रीवीरनो पोट्टलो साध ए, चोथो स्वयंप्रभू नांम आराधि ए। दृढायुप जीव सिद्धांतमें जाणिये, पंचम सर्वानुभूति प्रमांणिये ॥३॥ कीर्त्ति इण नाम इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते छठो स्वांमि सलहीजिये। संख श्रावक हुस्यै उदय जिन सातमो, आनंदनो जीव पेढाल जिनआठमा

लिङ्ग निरूपण।

[illegible]

चौथी ढाल—आज निहेजो रे दीसे नाहलो—ए देशी ॥

विरहमांन जिन वीसे वंदिये,महाविदेह विख्यात ॥ सीमंधर युगमंदिर श्रीसुबाहु सुजात ॥ वि०६॥ स्वयंप्रभु ऋषभानन अनंतवीरजी,सूरप्रभु तेम विशाल ॥ वज्रधर चंद्राननचंद्रबाहुजी,भुजंग ईश्वर नेमिभाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ वैरसेन महाभद्र नमुं वली, देवयशा यशोरिद्ध अढीद्वीपमे विचरे आज ए, नाम लियां नवनिद्ध ॥ वि० ॥ ८

पांचमी ढाल—रे जीव जिन धर्म कीजिये—ए देशी ॥

च्यार तीर्थंकर सासता,इणहिज अभिधान ॥ ऋषभानन चंद्रानन, वारिषेण वर्द्धमांन ॥ च्यां० ॥ ९ ॥ अठ कोडो छप्पन्न लाख ए, सत्ताण हजार ॥ चउसे छयासो देहरां, त्रिहं लोक मझार ॥ च्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोड़िया, बिंब त्रेपन लाख ॥ सहस अठावीस च्यारसै, अठ्यासी भाख ॥ च्यार० ॥ ११ ॥ त्रिभुजिणवर नांम ए, समस्तासुखदाय ॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा,स-

॥कलश॥ इम त्रिण चोवीसी वीस विरहमांण चऊ जिणवर सासता, संथुणया सतरैसै बयाले अधिक आणी आसता ॥ जिन रतनचिंतामणी-तणी पर प्रबल वंछित पूर ए, प्रहसमै त्रिकरण शुद्ध प्रणमें सदा जिनचंद्र सूर ए ॥ १३ ॥

इति श्री छिन्नूं जिन-स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ मांगलिक सरणां ॥

प्रह ऊठीने समरिजें हो ॥ भवियण मंगलिक सरणा चार ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ भ० दोलतनो दातार ॥ हियडें राखिजें हो ॥ भ० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधातणी हो ॥ भ० ॥ केवलि भांख्यो धर्म ॥ ए चारू जपतां थकां हो ॥ भ० ॥ टूटे आठुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ एचारूं सुखकारि हो ॥ भ० ॥ एचारू मङ्गलिक ॥ एचारू उत्तम कह्यां हो ॥भ०॥ ए चारूं तहतीकहो ॥हि० गेले घाटें चालतांहो ॥ भ० ॥ समरु वार वार ॥ गामें नगरें चालता हो ॥ भ० ॥ विघननिवारण

हार ॥ हि० ॥ ४ ॥ डाकण साकण भूतड़ा हो॥ भ० ॥ सिंह चिताने सूर ॥ वैरी दुसमन चोरटाहो भ० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि० ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥भ०॥ जे ध्यावे नरनार ॥ परभव जातां जीवने हो ॥भ०॥ सरणांको आधार ॥ हि० ॥६॥ राखो सरणाकी आसता हो ॥ भ० ॥ नेड़ो नहिं आवे रोग ॥ वरते आनंद सुख सही हो ॥ भ० ॥ वाला तणो संयोग ॥ हि० ॥ ७ ॥ निशि-दिन याकुं ध्यावतां हो ॥भ०॥ जीव तणो उद्धार । कमी नहिं काइ वस्तुनी हो ॥भ०॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८ ॥ मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ भ० ॥ वरते कोड कल्याण ॥ शुद्धमनें करी समरता हो ॥ भ० ॥ निश्चय पद निर्वाण ॥हि०॥ ९ ॥ ए सरणाने ध्यावतां हो ॥भ०॥ नाम तणो आधार ॥ ए सरणाकी कीरति कही हो ॥भ०॥ ध्यावो मनह मझार ॥ हि० ॥ ॥ १० ॥ संवत् अढारे बावने हो ॥ भ० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥

चोथमल्ल इम वीनवे हो ॥ भ० ॥ सुणजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥११॥ इति श्रीमांगलिक सरणां ॥

सज्झाय-संग्रह ।

॥ उपदेशमाला पोसह सिज्झाय ॥

जग चूड़ामणिभूओ, उसभो वीरो तिलोय सिरि तिलओ ॥ एगो लोगाइच्चो, एगो चक्खु तिहुअणस्स ॥१॥ संवच्छरमुसभ जिणो, छम्मासे वद्धमाण जिणचंदो ॥ इइ विहरिया निरसणा, जए जए ओवमाणेणं ॥२॥ जइता तिलोयनाहो, विसहइं वहुयांई असरिसजणस्स ॥ इय जीयं-तकराइं, एस खमा सव्वसाहूणं ॥ ३ ॥ न चइ-ज्जइ चालेउ, महइ महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग्ग सहस्सेहिं वि, मेरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ भद्दो विणीय विणओ, पढम गणहरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमत्थं, विम्हिय

हियत्रो सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरेण इच्छंति ॥ इय गुरुजण मुह भणियं, कयंजलिउडेहिं सोयव्वं ॥ ६ ॥ जह सुर गणाण इंदो, गहगण तारागणाण जह चंदो। जहय पयाण नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो, न पया परिहवइ एस गुरु उवमा ॥ जंवा पुरत्रो काउं, विहरंति मुणी तहा सोवि ॥ ८ ॥ पडिरूवो तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को ॥ गंभारो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिश्रो ॥ ६ ॥ अपरिस्सावी सोमा, संगहसीलो अभिग्गहमई य ॥ अविकच्छणो अचवलो, पसं तहियत्रो गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं पहं दाउं ॥ अयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥ अणुगम्मए भगवई, रायसुयज्जा सहस्स वंदेहिं ॥ तहवि न करेइ माणं, परियच्छइ तं तहा नूणं १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दमग, स्स अभिमुहा

अज्जचंदणा अज्जा ॥ नेच्छइ आसणगहणं, सो विणओ सव्व अज्जाणं ॥ १३ ॥ वरसमय दिक्खियाए, अज्जाए अज्जदिक्खिकओ साहू ॥ अभिगमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो पुरिसप्पभवो, पुरिस वर देसिओ पुरिसजिट्ठो ॥ लोएवि पहू पुरिसो, किंपुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्सरण्णो, तइया वाणारसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहियं, आसी किररूववंतीणं ॥ १६ ॥ तह विय सारायसिरो, उल्लट्टंती न ताइया ताहिं ॥ उयरट्ठिएण इक्के, ण ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाण वि, मज्झाओ इह समत्त घरसारो ॥ सायपुरिसेहिं विज्जइ, जणेवि पुरिसो जहिं नत्थी ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सक्खियं सुकयं ॥ इह भरहचक्कवट्टी, पसन्नचंदोय दिट्ठंता ॥ १९ ॥ वेसो विट्ठ अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेसं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो,

संकइ वेसेण दिक्खिओमि अहं ॥ उम्मग्गेण पडंतं, रक्खइ राया जणवउ य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहट्ठिओ अप्पसक्खिओ धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं-जं समयं जीवा, आविस्सइ जेण जेण भावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ ॥२३॥ धम्मो मएण हुंतो, तो नवि सीउन्ह वाय-विज्झदिआ ॥ संवच्छरमणसीओ, बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय चिं, तिएण सच्छंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तियं,कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥२५॥ अद्धो निगोवयारी, अविणीओ गव्विआ निरवणामो ॥ साहुजणस्स गरहिओ, जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥२६॥ थोवेण वि सप्पुरिसा, सणंकुमारुव्वकेइ वुज्झंति ॥ देहे खणपरिहाणी, जंकिर देवेहिंसे कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर,विमाण वासीवि परिवडंति मरा ॥ चिंतिज्ज तं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥

॥ २८ ॥ कहतं भन्नइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स दुक्खमल्लिहियए ॥ जं च मरण वसाणे, भव संसाराणुवंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सहस्सेहिं, वोहिज्जंतो नवुज्झई कोई ॥ जह वंभदत्तराया, उदाइनिव मारओ चेव ॥३०॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिचत्ताइ रायलच्छीए ॥ जीवासकम्म कलिमल भरिय मरातो पडंति अहे ॥३१॥ वोत्तूणवि जीवाणं, सदुकरा इंति पावचरियाइं ॥ भयवंजा सा सासा, पच्चाएसो हु इण मोते ॥३२॥ पडिवज्जिऊण दोसे, नियए सम्मं च पायवडियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥३३॥

॥ राईसंथारा-पोसह-सज्झाय ॥

निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं, महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिभंते ३, कहना, अणुजाणह जिट्ठिज्जा, अणुजाणह परमगुरु, गुणगणरयणेहिं मंडिअसरीरा ॥ वहु पडिपुन्ना पोरिसि, राईसंथारए ठामि ॥ १ ॥

अणुजाणह संथारं, वाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुड पाय पसारण, अन्तरं तु पमज्जए भूमिं ॥ ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, उवट्टंतेय काय पडिलेहा ॥ दव्वाई उवओगं, ऊसासनिरुम्भणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सव्वं तिविहेण वोरिरियं ॥ ४ ॥ आसव कसाय वन्धण, कलहा भक्खाण परपरीवाओ, इरइ रई पेसुन्नं, माया मोसं च मिच्छत्तं ॥५॥ वोसिरिसु इमाइंमु, क्खमग्ग संसग्ग विग्घ भूआइं ॥ डुग्गइनिवधणाइं, अट्ठारस पावट्ठणाइं ॥६॥ एगो हं नत्थिमे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदीण मणसो, अप्पाण मणुसासए ॥७॥ एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ ॥ सेसा मे वाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता डुक्खपरंपरा ॥ तम्हा संजोग संवन्धं, सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥ ६ ॥ अरिहंतो मह

देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंता मङ्गलं सिद्धा मङ्गलं, साहू मङ्गलं, केवलि पन्नतो धम्मो मङ्गलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो, चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंता मङ्गलं मझ, अरिहंता मज्झ देवया ॥ अरिहंता कत्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मङ्गलं मझ सिद्धाय मझ देवया ॥ सिद्धाय कत्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ॥ २ ॥ आयरिया मङ्गलं मज्झ, आयरिया मज्झ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥३॥ उवज्झाया मङ्गलं मज्झ, उवज्झाया मज्झ देवया ॥ उवज्झायां कित्तिअत्ताणं, वोसि-

रामित्ति पावगं ॥४॥ साहूणो मङ्गलं मज्झ, साहूणो मज्झ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्किक्के सत्त जोणि लक्खाओ ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणि लक्खाउ ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ॥ तिरिएसु हुंति चउरो, चउदस लक्खा यमणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वन्दामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धहसाख आलोयणह, मज्झह वेर न भाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चउदह राज भमंतु ॥ ते मइ सव्व खमाविया, मज्झवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥

निन्दावारक-सज्झाय ।

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणोरे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ दूर बलंती कां देखो तुह्मे रे, पगमां बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोयां लूगडांरे कहो केम ऊजला होयरे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुणें सहु भर्यां रे, केहनां नलीयां चूए केहनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधूं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेमछुटकवारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे समयसूंदर कहे सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥

सती सीताकी सज्झाय।

जल जलती मिलती घणी रे, झाली झाल अपार रे ॥ सुजाण सीता ॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खैर अङ्गार रे ॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे लाल, ॥ शील तणे परि माण रे ॥सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल-निरखे राणो राण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक पासें आय रे ॥सु० ऊभी जाणे सुरांगना रे लाल, अनुपम रूप दिखाय र ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, ऊभाकरे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ भस्म हुशी इण आगमें रे लाल, राम करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव विन वांछ्यो हुवे रे लाल,सुपनेहो नहिं काय रे ॥ सु०॥ तो मुझ अगन प्रजालजो रे लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आगमें रे लाल, तुरत अगन [illegible] रे ॥ सु० ॥ जाणें द्रह जलशुं भर्यो

रे लाल, झीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम वरषा करे र लाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु०॥ सीता धीजें ऊतोरी रे लाल, साखभरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत सहुको थयां रे लाल, सघले थया उछरंग रे ॥ सु०॥ लछमण राम खुशी थया रे लाल, सीता शील सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जगमांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥सु०॥ कहे जिन हर्ष सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजें पाय रे सु० ॥ ६ ॥

अनाथी मुनिकी सज्झाय ।

श्रेणीकरयवाडी चढयो, पेखियो मुनि एकंत ॥ वर रूपकाते मोहियो, राय पूछे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं रे अनाथी निर्ग्रंथ ॥ तिणमें लीधोरे साधुजीनो पंथ ॥श्रे०॥ ए आंकणी ॥ इण कोसंबी नगरी वसे, मुझपिता परिगल धन्न ॥ परवार परें परवस्योहुछुं, तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे०२॥ इक दिवस मुझ वेदना, ऊपनी ते न खमा-

य ॥ मात पिता सह् जूरी रह्या, तोही पण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मन ओरडी अबला नार ॥ कोरड़ी पीडा में सही, नहिं कीधी रे मोर डी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ वहराजवैद्य बुलाइया, कीधला कोड़ीउपाय ॥ बावनाचंदन लेईया, पण तोहो रे दाह नवि जाय ॥ श्रे० ॥५॥ वेदना जो मुझ उपशमे, तो लेउं संजमभार ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, व्रत लोधो रे हरख अपार ॥ श्रे० ॥६॥ जगमांहे को केहनो नहिं, तेभणी हूं रे अनाथ ॥ वीतरागनो धरम म्हाहरो, कोई नहीं रे सुगतिनो साथ ॥श्रे०॥७॥ कर जोड़ी राजा गुण स्तवे,धन धन तुं अनगार ॥ श्रेणिक समकित तिहां लहे,वांदी पहुंचे रे सरग मझार ॥ श्रे० ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोड़ी ॥ गणि समयसुंदर तेहना, पाय वांदे रे बे कर जोड़ी ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति ॥

प्रति क्रमणको सज्झाय.

कर पडिक्कमणो भावसूं, दोय घड़ी शुभ जांण लालरे॥ परभव जातां जीवनें, संवल साचुं जांण ॥ लालरे ॥ १ ॥ कर पडिक्कमणो भावसुं ॥ ए आंकणी ॥ श्रीमुख वीर समुचरे, श्रेणिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंडी सोना तणी, दीये दिन प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस लग ते वली,एम दीये द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुला, नावे तेह लगार ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चउविसत्थो,भलुं वंदन दोय दोय वार ॥लालरे॥ व्रतसंभारो रे आपणां, ते भव कर्म निवार ॥ लालरे ॥४॥ कर० ॥ कर काउसग्ग शुभध्यान थी. पच्चक्खाण सूधूं विचार ॥ लालरे ॥ दोय सज्झायें ते वली, टालो टालो अतिचार ॥ लालरे ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादथी,लहीयें अमर विमान ॥ लालरे ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे,मुगति तणुं ए निदान ॥ लालरे ॥ ६ ॥

ढंढण ऋषीकी सज्झाय ।

॥ ढंढण ऋषिजीने वन्दना हूं वारी, उत्कृ-ष्टो अणगार, रे हूवारी लाल, अभिग्रह लीधो एहवो, हुं० ॥ लेस्युं शुद्ध आहाररे ॥ हुं० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊठे गोचरी हुं० ॥ न मिले शुद्ध आहाररे ॥ हुंवा० मूल न लै अणसूझतो हुं० ॥ पञ्जर कीधो गातरे हुं० ॥ २ ॥ ढं० ॥ हरि पूछै श्रीनेमने हूं०,मुनिवर सहस अढार रे ॥ हुंवा० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हुं० ॥ मुझनें कहो विचार रे ॥ हूंवा० ॥ ३ ॥ ढं० ॥ ढंढण अधिको दाखियो हुं० ॥ श्रीमुख नेमजिणंद रे हूंवा० ॥ कृष्ण ऊमाह्यो वांदावा हुं० ॥ धन जादव कुल-चन्द रे हूंवा० ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारे मुनिवर मिल्या हुं०, वांद्या कृष्ण नरेस रे हूंवा० ॥ कि-णही मिथ्यात्वी देखने हुं०, आणयोभाव वि-सेसरे हुं० ॥ ५ ॥ ढं० ॥ मुझ घर आवो साधजी हुं०, ...झ छै शुद्धरे हूं० ॥ मुनिवर विह-

रीने पांगुर्या हुं०, आया प्रभुजीने पास रे हुं० ॥ ६ ॥ ढं० ॥ मुझ लवधे मोदक मिल्या हुं०, कहोने तुम्हे किरपाल रे हुं० ॥ लवध नही वच्छ ताहारी हुं०, श्रीपति लवधि निधान रे हुं० ॥७॥ ॥ ढं० ॥ एलेवा जुगतो नही हुं०, चाल्या परठन काज रे हुं० ॥ इंट निवा हे जायने हुं० चुरे करम समाज रे हुं० ॥ ८ ॥ ढं० ॥ आंणी चढती भावना हुं०, ॥ पांम्यो केवल नाण रे हुं० ॥ ढंढण ऋषि मुगते गया हुं०, ॥ कहे जिनहर्ष सुजाण रे हुं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ धन्नाऋषीको सज्झाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नन्दन, मनडै तो मांनी रे नन्दनताह रे ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना, धरमनो रागी मोरा नन्दन, महारो तो मनडो रे किम परचावसु ॥ २ ॥ दस दसी दीसे रे धन्ना, तो विन सूनीं मोरा नन्दन, अनुमति देतां रे जीभ वहे नही

॥ ३ ॥ वत्तीसै नारी हो धन्ना, अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो वोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥ वालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो० ॥ गजगति चाले रे चाल सुहावणो ॥ ५ ॥ ए घर मन्दिर हो धन्ना, ए सुख सज्या, मो० ॥ कोड वत्तीसे धननो तूं धणी ॥६ ॥ ए धन मांणो रे धन्ना, वय पिण जांणो, मो० ॥ भोगवि लेज्यो रे भोग सुहामणो ॥ ७ ॥ व्रत अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेलो, मो० ॥ सुगम नही छे रे साध कहावणो ॥ ८ ॥ घर २ भिक्षा हो धन्ना, गुरु तणी शिक्षा, मो० ॥ कहाणी रे रहणी नही छे सारखी ॥ ६ ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, आगम भणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो दुकर जोगछै ॥ १० ॥ वनवासै रहणा हो धन्ना, परीसह सहणा, मो० ॥ कोमल केसा रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें भाख्यो हे अम्मा, झूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ दुकर मारग जननी

दाखियो ॥१२॥ सुख अभिलाषी हे अम्मा, झूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मारग जननी दाखियो ॥१३॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा, नहीं परमारथि मोरी अम्मा, वीर वखाण्यो परखदा सहु सुण्यो ॥१४॥ में इम जाण्यो हेअम्मा, वीर वखाण्यो मोरी अम्मा, ए धन जोवन आयु थिर नहीं ॥१५॥ अनुमति दीजे हे अम्मा,ढील न किजे मोरी अम्मा, जो खिण जावे सु फिर आवे नहीं ॥ १६ ॥ अनुमति आपी हो अम्मा, जीव सुख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो रे मनमां गहगही ॥१७॥ छट्ठ २ पारणे हे अम्मा, विगय निवारण मोरी अम्मा, वीर वखाण्यो सुरनर आगलै ॥ १८ ॥ सुख संजम पाले हे अम्मा, दूषण टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ रूडा भणै ॥१६॥ संजम पाल्यो हे अम्मा,नव पखवाडे मोरी अम्मा, मास संथारे सरवारथसिद्ध लह्यो ॥२०॥ इति धन्नाऋषि-सज्झाय संपूर्णम् ॥

॥ कमकी सज्झाय ॥

देव दानव तीर्थंकर गणधर, हरि हर नरवर सघला ॥ करम तणे वस सुख दुख पाया, सबल हुआ महा निबला रे प्राणी,कर्म समो नहि कोई ॥१॥ आदीसरजीने करम अटाख्या, वरस दिवस रह्या भूखा ॥ वीरने बारे वरस दुख दीधा, ऊपना ब्राह्मणी कूखे रे प्राणी ॥क०॥२॥ साठ सहस सुत मास्या एकण दिन, जोध जुवान नर जैसा ॥ सगर हुओ महा पूत्रनो दुखियो, कर्म्मतणा फल एसा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥३॥ बत्रीस सहस देसांरो साहिब, चक्री सनतकुमार ॥ सोले रोग सरीरमे ऊपना, कर्म्मे कीयो तनु छार रे ॥प्रा०॥४॥ कर्म्म हवाल किया हरचंदने, वेची सुतारा रांणी ॥ बारे वरस लग माथे आणयो, नीचतणे घर पाणी, रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ५ ॥ दधिवाहन राजारी बेटी, चावी चंदनवाला ॥ चौपद ज्यूं चहुटामें वेची, [illegible] ए चाला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६

संभूम नांमे आठमो चक्री, कर्म्मे सायर नाख्यो ॥ सोले सहस जच उभा देखे, पिण किणही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे वारमो चक्री, कर्म्मे कीधो आधो ॥ इम जाणीने अहो भविप्राणी, कर्म्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० क० ॥ ८ ॥ छपन्न कोड जादवरो साहिव, कृष्ण महावल जांणी ॥ अटवी मांहि मूओ एकलडो, विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६॥ पांडव पांच महा झूझारा, हारी द्रोपदा नारी ॥ बारे बरस लग वन रडवडिया, भमिया जेम भिख्यारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ वीस भुजा दस मस्तक हूंता, लखमण रावणमारयो ॥ एकलडै जग सहु नर जीत्या, ते पिण कर्म्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम महा वलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म्म प्रमाणे सुख दुख पांम्या, वीतक वहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारो श्रेणिक राजा, बेटे

वांध्यो मुसकै ॥ धरमी नरने कम धकाया ॥ करमसुं जोर न किसका रे ॥प्रा०॥ क० ॥ १३ ॥ सतिय शिरोमणी द्रौपदि कहियै, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुपनी हुइ ते नारी,पूरव कर्म्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आभानगरीनो जे स्वामी, साचो राजा चंद ॥ मांइ कीधो पंखी कूकडो, कर्म्मे नाख्यो ते फंद रे ॥ प्रा० ॥क ॥ १५ ॥ ईसर देव ने पारवती नारी, करता पुरुप कहावै ॥ अह्निस महिल मसांणमे वासो, भिक्षा भोजन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी, रात दिवस रहे अटतो, सोल कला ससीधर जग चावो, दिन २ जाये घटतो रे प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंड्या नर करमें, भांज्या ते पिण साजा ॥ ऋद्धि हरष कर जोडीने विनवै, नमो २ कर्म्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥१८॥

ति कर्म्म सज्झाय समाप्तम् ।

॥ सात व्यसनोंकी सज्झाय ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण ते-
हनो सुविचार विवेकी ॥ सात नरकना रे भाई
सातेई, आपै दुक्ख अपार विवेकी ॥ सा० ॥१॥
प्रथम जूवाने रे विसन पडयांथकां, पाडव पांच
प्रसिद्ध विवेकी ॥ नलराजा पिण इण विसने प-
ड्यो, खोइ सहू राजरिद्ध वि० ॥सा०॥२॥ दूसरे
मांस भच्चण अवगुण घणा,करै पर जीव संहार
विवेकी महासतकनी नारी रेवती,नरक गइ निर-
धार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा
पांन विसन तजी, चित धरी वलि चाह वि० ॥
द्वीपायण रिषि दहव्यो जादवे, द्वारकानो थयो
दाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चोथे विसने वेस्याघर
वसे, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कयवन्नादि-
कनोगयो कायदो, कुविसने रे काज वि०॥सा०॥५
पाप आहेडे कुविसन साचवै, प्राणी हणियें प्रहार
वि० ॥ मारी मृगली श्रेणिक नृप, गयो पहली

नरक मझार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ छठे चोरीने विसने करी, जीव लहे दुक्ख जोर वि० ॥ मुंजदेव राजायें मारियो, चावो हुंडक चोर वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु होय वि० ॥ राणो रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥ इम जांणीने भव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण भव परभव आणंद अतिघणा, कहे धरमसी सुखकार ॥वि०॥सा०॥९॥

॥ वैराग्यकी सज्झाय ॥

भूलो मनभमरा कांइ भमैं, भमियो दिवस ने रात ॥ मायारो लोभी प्रांणियो, भमियो परमल जात ॥ १ ॥ भू० ॥ कुंभ काचो काया कारमी, जेहना करो रे जतन्न ॥ विणसतां वार लागे नही, निरमल राखो रे मन्न ॥ २ ॥ भू० ॥ केहना छोरू केहना वाछरू, केहना माय नै वाप ॥ ओ जीव जासी एकलो, साथे पुण्यनें पाप ॥ ३ ॥ भ आस्या तो डूंगर जेवडी, मरवो पगला रे

हेठ ॥ धन संची संच कांइ करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ भू० ॥ लखपति छत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरव करी गोखै वेठता, भए जल वल राख ॥ ५ ॥ भू० ॥ भवसायरजल दुख भरयो, तिरवो छे रे जेह ॥ वीचमें वीह सवलो अछै, करमें वाय ने मेह ॥ ६ ॥ भू० ॥ उलट नही मारग चालवो, जायवो पहिले रे पार ॥ आगल नही हटवांणियो, संवल लेज्यो रे लार ॥ ७ ॥ भू० मूरख कहे धन माहरो, धन केहनो हतो न थाय ॥ वस्त्र विना जाय पोढवो, लखपति लाकड़ माय ॥८॥ भू० ॥ मह मंद कहै वस्त वोरीय, जे कुछ आवे रे साथ ॥ आपणो लाभ उवारियै, लेखो साहिब हाथ ॥ भू० ॥ ६ ॥

॥ वाहूवलजीकी सज्झाय ॥

राजतणा अति लोभिया, भरत वाहूवल झूझे रे ॥ मूठ उपाड़ी मारिवा, वाहूवल प्रतिवूझे रे ॥ १ ॥ वीरा म्हारा गजथको ऊतरो, ब्राह्मी

सुन्दरी भासै रे ॥ ऋषभ जिनेसर मोकली, वाहूवलनें पासै रे ॥ वी० ॥ गज चढयां केवल न होइ रे ॥ वी० २ ॥ लोच करी चारित्र लियो, वलि आयो अभिमांनो रे ॥ लघु बांधव वादू नही, काउसग्ग रह्यो शुभ ध्यानो रे ॥३॥ वी० ॥ वरस दिवस काउसग्ग रह्यो, वेलड़ियां वींटाणो रे ॥ पंखी माला मांड़िया, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी वचन सुणया इसा, चमक्यो चित्त मझारो रे ॥ हय गय रथमें परिहरया, पिण नवि मूंक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५॥ वैरागे मन वालियो,मुंक्यो निज अभिमांनो रे ॥ पांव उपाड़ी वांदिवा, ऊपनो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवली परखदा, वाढ वल ऋषिराया रे ॥ अजर अमर पदवी लहीं, समयसुंदर वंदे पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अरणिक मुनिकी सज्झाय ॥

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, तड़के दाझे

सी.सो जी ॥ पाय उवराणा रे वेलू परजले, तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ अर० ॥ १ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्यूं, ऊभो गोखने हेठो जी ॥ खरै दुपहरे रे दीठो एकलो, मोही माननी मोठो जी ॥ २ ॥ अ० ॥ वयण रंगीले रे नयणे वेधियो, ऋषि थंभ्यो तिण वारो जी ॥ दासीने कहे जाय ऊतावली,ओ रिषि तेडी आंणो जी ॥ ३ ॥ अ० पावन कीजे ऋषि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी ॥ नवजोवन रस काया कांइ दहो, सफल करो अवतारो जी ॥ ४ ॥ अ० ॥ चंद्रावदनी रे चारित चूकव्यो, सुख विलसै दिन रातो जी ॥ इक दिन गोखै रमतो सोगठै, तव दीठो निज मातो जी ॥५॥ अ० ॥ अरणिक २ करती माय फिरे, गलियै २ मझारो जी ॥ कहि किण दीठो रे माहरो अरणलो, पूछै लोक हजारो जी ॥ ६ ॥ अ० ॥ उतर तिहांथी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिवारो जी ॥ धिग २

पापी रे माहरा जीवने, एहमें अकारज धार्यो जी ॥७॥अ०॥ अगन धुखंती रे सिला उपरैं,अरणिक अणसण कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरू,मन वंछित फल सीधो जी ॥८॥अ०॥

॥ इलापुत्रकी सज्झाय ॥

नांम इलापुत्र जांणिये, धनदत्तसेठनो पूत ॥ नटवी देखी र मोहियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न छूटे रे प्राणिया,पूरव नेह विकार ॥ निज कुल छंडी रे नट थयो, नाणी सरम लिगार ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आयो रे नाचवा, उंचो वंस विवेक ॥ तिहां राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ दोय पग पहरी रे पावड़ी, वंस चढयो गजगेल ॥ निरधारा ऊपर नाचतौ, खेले नवनवा खेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गावे किन्नर साद ॥ पायतल घूघर घनघन,गाजै अंबर नाद ॥ क० ॥५॥ तिहां राय चिंते रे राजियौ, लुबधो नटवी रे साथ ॥

जो पड़े नटवो रे नाचतो, तो नटवी मुझ हाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दान न आपे रे भूपती, नट जाणे नृप वात ॥ हूं धन वंछू रे रायनो, राय वंछे मुझ घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथी मुनिवर पेखियो,धन२ साधु नीराग ॥ धिग् २ विषया रे जीवड़ा, मन आणयो वैराग ॥क०॥८॥ संवरभावे रे केवली,ततखिण कर्म खपाय ॥ केवलि महिमा रे सुर करे, समयसुन्दर गुण गाय ॥ क० ॥ ६ ॥

॥ मेघकुमार मुनिकी सज्झाय ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वैरागीयो जो, ए संसार असार रे मायड़ी ॥ अनुमति द्यो मुझ आज ॥ संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वछ तूं केणे भोलव्यो रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ उणे किण दूहव्यो रे, हूं नवि द्यु आदेश रे जाया ॥ संयम त्रिप० ॥ किम निरवाहिस भार रे जाया ॥ हूं न० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुल्यो जी, स-

हिया दुक्ख अणंत ॥ सासोश्वासें भव पूरिया जी, तेह न जांणू अंत हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हिवणा तूं वालक अछै जी, जोवन भस्यो रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, भोगवि सुक्ख अपार रे जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, दुक्ख न सहणौ जाय ॥ वीरजिणंद वखाणियो जी, ते मैं सुणियो कांन हे मायड़ी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वळ कांछलीयै जीमणो जी, अरस विरस आहार ॥ भुंइ पोला नित हींडणा जी, जाणसि तुझ कुमार रे जाया ॥ हूं नवी० ॥ ६॥ भमतां जीव अनंत भम्यो जी, धम दुहेलो होय ॥ जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तव किम करणो होय रे मायड़ी ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोड़े नवसर हार ॥ जोवनभर छोरू नहीं जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥८॥ हंसतूलिका सेजड़ी जी, रूप रमणि रस भोग ॥ अतहि सुंहालो देहड़ो जी, किम हुय संजम जो-

॥ हूं न० ॥ ६ ॥ [illegible]

मगो जी, अरथ पखे सहु कोय ॥ विषय विषम महुरा कह्या जी, किम भोगविये सोय हे मायड़ी ॥ अ० ॥ १० ॥ खमि २ माउ पसाय करी जी, में दीधुं तुझ दुक्ख ॥ दिओ आदेस जिस हुं सुखी जी, वीर चरणें ल्युं दीक्ख हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥ तन फाटे लोयण भरे जी, दुख न सहणा जाइ ॥ वच्छ सुखी हुवो तिम करो जी, में दीधो आदेश रे जाया ॥ संयम वि० ॥ १२॥ मणि मांणक मोती तज्या जी, तोड्यो नवसर हार ॥ मृगनयणी आठे रड़े जी, हिव अह्म कवण आधार नरेसर ॥ संयम० ॥ १३ ॥ कुमर भणें सुकुली थिया जी, वहु दुख ए संसार ॥ नेह तुमारो जांणियो जी, जो ल्यो संयम भार रे नारी ॥ संय०॥१४॥ रथ सिविका तव सझी करी जी, कुंवर धारणी माइ ॥ श्रेणिकराय उच्छव करै जी, चारित्र ल्यो रिषिराय रे जाया ॥सं०॥१५॥इम जांणी वैरागियौ जी, वरजै जे नर नारि ॥ कर जोड़ी पूनो भणेजी, ते तरस्यै संसार हे माय ॥ अ० ॥१६॥

॥ गजसुकमालको सज्झाय ॥

संवेगरसमे भीलता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोहग टलै, तासु साध्यो रे में करि लोच ॥ १ ॥ यादवराय धन २ गजसुकमाल, तेहने करू रे प्रणाम त्रिकाल ॥ या० ॥ ए आंकणी ॥ प्रभूपास संयम आदर्यो, तेहनो ए परिणाम ॥ मन वचन काया वसि करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ २ ॥ या० ॥ मुनि मुगति जायवा अलजयो, पड़खे न दिन दस वीस ॥ साहसीक इम उच्चरतो, पिण दिन जावे रे तो छेह दीस ॥ या० ॥३॥ समसांण जाय काउसग्ग रह्यौ, तिण सांभि प्रभुने पूछ ॥ मुनिवर अवर इम चिंतवै, एहनें साची रै छै मुंह मूंछ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुभ सुता विन अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाल ॥ सिगड़ी रचि सिर उपरै, चिहुं दिसि वांधी रे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदनो जिम अधिक वधै, तिम वधै मन परिणाम ॥ चवदमें गुणठ्यो, मुनिवर पांमी रे

या० ॥ ६॥ देवकी जांमणने थई, ते रयण वरस हजार ॥ वांदवा आवी प्रह समें, पिण नवि देखे रे प्रांणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूछतां प्रभु मांड़ी करी, रातिनी वीतग वात ॥ हरि देखी हियड़ो फूटसी, तेणें कीधो रे ऋषिजीनो घात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसम सुधारस सेवतां, पांमियो अविचल राज ॥ मनरंग साधु महंतना, गुण गावे रे श्री-जिनराज ॥ या० ॥ ६ ॥

॥ प्रसन्नचंद राजाकी सज्झाय ॥

राज छंड़ी रलियामणो रे, जांणी अथिर सं-सार ॥ वैरागै मन वालियो, कांइ लीधो संजम भार ॥ प्रसन्नचंद प्रणमूं तुमारा पाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे काउसग्ग रह्यो रे, पग ऊपर पग ठाय ॥ बांह बेउं ऊंची करी, सूरज सांमी द्रष्टी लगाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीसर्‍यो रे, वीरजीने वंदन जाय ॥ देइ तीन प्रदक्षिणा, त्रिविध २ खमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ... दूत वचन सुणी रे, कोप चढ्यो ततकाल ।

मेतसुं संग्राम मांडियो, जीव पड्यो जंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्न पूछियो रे, एहनी सी गति थाय ॥ भगवंत कहे हिवणां मरे तो, सातमी नरके जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिण इक अंते पूछियो रे, सरवारथसिद्धि विमान ॥ वाजी देवनी दुंदुभी, मुनि पांम्या केवलज्ञान ॥ प्र० ॥ ६ ॥ प्रसन्नचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमहावीरना शिष्य ॥ रिद्धहरष कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतक्ष ॥ प्र० ॥ ७ ॥

॥ जीवोत्पत्तिकी सज्झाय ॥

उतपत जोय जीव आपणी, मनमांहि विमास ॥ गरभा वासे जीवड़ो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नाभी तले, जिन वचने जोय ॥ फूल तणी जिम नालिका, तिम नाड़ी छे दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥ आंवतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥३॥ रुधिर श्रवे तिण मांस सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी,

तिहां ऊपजे जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपान पवने करो, वासित दुरगंध ॥ तिण थानक तूं ऊपनो, हिव हूओ अंधमंध ॥ उ० ॥५ ॥ नाड़ी वांसतणी भरियैं, घणी रूघाल ॥ ताती लोह सलाकतैं, जाले ततकाल ॥ उ० ॥ ६॥ तिम महिलानी जो निमें, छै नव लख जीव ॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७॥ ऊपजै नर नारी मिल्यां, पांचेंद्री जेह ॥ तेहतणी संख्या नही, तजो कारज एह ॥ उ० ॥८॥ नव लख जीव टिके तिहां, उत्कृष्टी वार ॥ जीव जघन्यपणे टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥६॥ जीव जघन्य तिहां रहे, महुरत परिमाण ॥ वार वरसनी थिति तिहां, उत्कृष्टी जांण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरभे कोइ जीवड़ो, जंपै जग दीस ॥ फिर नर आवंतो रहै, संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥ महिला वरस पिचावनें, कहिये नीरबीज ॥ पिचहत्तर वरसां पछै, थायै पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूखै नर वसै, तिम वांमे नारि ॥ वोच नपुंसक

जांणिये, जिनवचन विचार ॥ १३ ॥ उ० ॥
हिव सामान्यपणै इहां, आयो गरभावास ॥ सात
दिना उपरि रहे, नर गत नव मास ॥ उ०
॥ १४ ॥ आठ वरस तिर्यंच रहे, उत्कृष्टै काल ॥
गरभावासै भोगव्या, इम बहु जंजाल ॥ उ० ॥
१५ ॥ कार्मण काये कर लियो, पहिलो आहार ॥
शुक्र अने शोणिततणो, नही झूठ लिगार ॥ उ०
॥ १६ ॥ परजापत पूरी नही, तिहां विसवावीस ॥
तिण आहारै तूं थयो, उदारिक मीस ॥ उ० ॥
१७ ॥ पवन अछै उदरै तिको, उपजायै अंग ॥
अगनि करै थिर तेहने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १८
॥उ०॥ कठन पणै पृथवी रचै, अवगाह अकास ॥
पांचभूत सरीरमें, इम करै प्रकास ॥ १९ ॥उ०॥
वारै महुरत तां पछै, विलसै नर नारि ॥ गरभ-
तणी उतपति तिहां, नहीं अवर प्रकार ॥ २० ॥
उ०॥ कलल हुवै दिन सातमें, अरवुद दिन सात ॥
अरवुदथी पेसी वधै, घन मांस कहात ॥ २१ ॥
उ० ॥ मांसतणी बोटी हुवै, अडतालिस टांक ॥

प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥२२॥
उ० ॥ सुथिर मास वीजे हुवै, हिव तिज मास॥
करमतणै वसि ऊपजे, माता मन आस ॥ २३ ॥
उ० ॥ चोथै मासै मातना, प्रणमै सहु अंग ॥
हाथ अने पग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २४॥
उ० ॥ पित्त रुधिर छठे पडै, सातमें इण संच ॥
नव धमणी नस सातसै, पेसी सय पंच ॥ २५ ॥
उ० ॥ रोम राय पिण सातमें, साढीतीन कोडि ॥
ऊपजे उणै केतलै, इम आगम जोडि ॥ २६ ॥
उ० ॥ आठमें मासें नीपनो, इम सकल सरीर ॥
उंधै सिर वेदन सहे, जंपै जिन वीर ॥२७॥ उ० ॥
शोणित शुक्र सलेपमा, लघु ने वडनीत ॥ वात
पित्त कफ गरभथो, थायै नर नीत ॥ २८ ॥ उ०॥
मात तणो सूंटि लगै, वालकनो नाल ॥ रस
आहार करे तिहां, आवे ततकाल ॥ उ० ॥ २९ ॥
जननी ल्ये आहार ते, जाय नाडोनाड ॥ रोम
इंद्री नख चख वधे, तिम मोजी ने हाथ ॥ उ०॥
३० ॥ सवहू अंगे ऊलस, सरवंग आहार ॥ कव-

ल आहार करे नहीं, गरभै सुविचार ॥ उ० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किण जीवने,थाये ज्ञान विभंग ॥ अथवा अवधि कहीजिये, तिण ज्ञान प्रसंग ॥ उ० ॥ ३२ ॥ कटक करे वैक्रियपणें,झूझी नर के जाय ॥ को जिनवचन सुणी करी, मरी सुर पिण थाय ॥ उ० ॥ ३३ ॥ ऊंधै मुख गोडा हिये, सहितो वहु पीड ॥ दृष्टि आगलि वेहुं हाथसुं, रहे मुट्ठीभींच ॥ उ० ॥ ३४ ॥ नर विण वस्त्र जलादिकैं, ऊपजै आधांन ॥ अथवा विहुं नारी मिल्यां, कह्यो गरभविधान ॥ उ० ॥ ३५ ॥ कोइ उत्तम चिंतवै, देखी दुखावास ॥ पुन्य करी तिम नोकलूं, नाऊं गरभ वास ॥ उ० ॥ ३६ ॥ ऊंठ कोडि चांपे सुई, कोई समकाल ॥ तिणथी गरभै अठ गुणौ, सहे वेदन वाल ॥ उ० ॥ ३७ ॥ माता दूखी दूखीयो, सुखणी सुख थाय ॥ माता सूती ते सुवै, परवस दिन जाय ॥ उ० ॥ ३८ ॥ गरभ थकी दुख लख गुणो, जांमें जिण वार ॥ जन्म थयां दुख वीसरै, धिग्२ मोह विकार ॥ उ० ॥

३९ ॥ ऊपज्यो अशुचिपणे जिहां, मल मूत्र कलेस ॥ पिंड अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लव लेस ॥ उ० ४० ॥ तुरत रुदन करतो थको, जांमें जिण वार ॥ मात पयोधर मुख ठवै, पीयै दूध तिवार । उ० ॥ ४१ ॥ दिन२ दीसे दीपतो, करै रंग अपार ॥ लाड कोड माता पिता,पूरै सुविचार ॥उ०॥ ४२ ॥ श्रोत्र इग्यारे नारिनें, नव नरने जांण॥ रात दिवस वहिता रहै, चैतो चतुर सुजाण ४३ ॥ उ० ॥ सात धातु साते त्वचा, छै सातसै नाडि ॥ नवसे नाडी पिंडमें, तिम तीनसे हाड ॥ ४४ ॥ उ० ॥ संधि एकसो साठ छै, सतोत्तर सो सम ॥ तीन दोष पेसी पांचसै, ढांकी छै चरम ॥उ०॥४५॥ रुधिर सेर दस देहमें, पेसाव सरीष ॥ ॥ सेर पांच चरबी तिहां, दोय सेर पुरीष ॥ उ० ४६ ॥ पित्त टांक चोसठ अछै, वीरज बत्तीस ॥ टांक बत्तीस सलेखमां, जाणै जगदीस ॥ ४७ उ० ॥ इण परिमाणथको यदा, उछो अधिको थाय ॥ व्यापै रोग सरीरमें, नवि वाजे काय ॥ ४८॥

उ० ॥ पोख्यो पहिले दाहके, इम वधियो अंग ॥ खान पान भूषण भलां, करे नवनवा अंग ॥ ४६ उ०॥ हिव बीजै दसके भणयो, विद्या विविध प्रकार ॥ तीजे दसके तेहने, जाग्यो कांम विकार ॥ ५० ॥ उ० ॥ जिण थांनक तूं ऊपनो, तिणमें मन जाय ॥ चोथे दसके धनतणो, करे कोड उपाय ॥ ५१ ॥उ०॥ पहुंतो दसके पांचमें, मनमें ससनेह ॥ बेटा बेटी पोतरा, परणावे तेह ॥ ५२ उ० ॥ छट्ठे दसके प्राणियो, बले परवस थाय ॥ जरा आइ जोवन गयो, तृष्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥उ०॥ आवै दसकै सातमें, हिव प्राणी तेह ॥ बल भागो बूढो थयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥उ०॥ आठमें दसके डोसलो, खुलिया सहु दांत ॥ कर कंपावै सिरधुणें, करे फोगट वात ॥ ५५ ॥ उ० ॥ नवमें दसके प्रांणियो, तन सूकत जाय ॥ सांभले वचन वहुआं तणो, दिन भुरता जाय ॥ ५६ ॥ उ० ॥ खाटपड्यो खूंखूं करे, सहू गाली देह ॥ हाल हुकुम हाले नही, दीयो परि-

जन छइ ॥ ५७ ॥ उ०॥ आंख गले वे पुड मिले, पडे मुंहडे लाल ॥ वेटा वेटी ने वहु, न करे सार संभाल ॥ ५८ ॥ उ० ॥ दस दृष्टाते दोहिलो लह्यो नरभव सार ॥ श्रीजिन धरम समाचरो, पांमो जिम भव पार ॥ ५६ ॥ उ० ॥ चरणपणे जे तप तपे, पाले निरमल शील ॥ ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील ॥ ६० ॥ उ० ॥ कोडि रतन कवडी सटै, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पखै पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ काया माया कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जोवन कारमो, साचो धरम संभार ॥ ६२ ॥ उ० ॥ चवदै राज प्रमांण ए, छै लोक महंत ॥ जनम मरण कर फरसियो, ते वार अणंत ॥ ६३ ॥उ०॥ आप सवारथिया सहु, नही केहनो कोय ॥ विण स्वारथ अण पहुंचते, सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ उ० ॥ जरा न आवे जां लगे, जां लग सवल सरीर, धरम करो जीव तां लगें, होय साहसधीर ॥ ६५ ॥ उ० ॥ आरज

देस लह्या हिवे, लाधो गुरु संयोग ॥ अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥६६॥ उ० ॥ श्रीनमि रायतणी परै, चेतो चितमांहि ॥ स्वारथना सहको सगा, कोइ किणरो नांहि ॥६७॥उ०॥ भोग संयोग तजी सहू, थया जे अणगार ॥ धन२ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ उ०॥ सुरतरु सुरमणि सारखो,सेवो जिनधरम ॥ जिणथी सुख संपति वधे, कीजै तेहिज कर्म ॥ ६६ ॥ उ० ॥ तंदुलवेयाली अछै, एहनो अधिकार ॥ तिणथी उद्धरनैं कह्यो, नही झूठ लिगार ॥ ७० ॥ उ० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार सांभलि लिये संजमभार ए, परिशिह केरा सदा पालै नेम निरतिचार ए ॥ संसारना सुख सकल भोगवि ते लहे भव पार ए, श्रीजिनहर्ष सुसीस रंगै इम कहै श्रीसार ए ॥ ७० ॥ उ ॥ इति ॥

॥ स्नात्र पूजा ॥

॥ पांखडी गाथा ॥

चौतीसें अतिशय जुओ । वचनातिशय संजुत्त । सो परमेसर देखि भवि, सिंघासण संपत्त ॥ १ ॥

ढाल ॥ सिंहासन बैठा जगभाण, देखी भवियण गुणमणि खाण । जे दीठें तुझ निम्मल झाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलिमेलो आदि जिणन्दा ॥ तोराचरण कमल चोवीस, पूजोरे चोवीस,सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणन्दा ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा । (कुसुमांजलि हाथमें लेकर यह पढ़ते हुए चरणोंमें टीकी लगाना चाहिये)

गाथा ॥ जो निजगुण पज्जव रम्यो, तसु अनुभव एगत्त । सुह पुग्गल आरोपतां । ज्योति सुरंग निरत्त ॥ २ ॥

ढाल ॥ जो निज आतम गुण आनंदी,

पुग्गल संगै जेह अफंदी। जे परमेश्वर निज पद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो शांति जिणंदा ॥ तोरा चरण कमल चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस, जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो श्रीशांति जिणंदा ॥ (यह पढ़कर धुटनों पर टीकी लगाना चाहिये) ॥ २ ॥

गाथा ॥ निम्मल नाण पयासकर, निम्मल गुण संपन्न। निम्मल धम्म उवएस कर, सो परमप्पा धन्न ॥ ३ ॥

ढाल ॥ लोकालोक प्रकाशक नाणी, भवि जन तारण जेहनी वाणी। परमानंद तणी नीसाणी, तसु भगतें मुझ मति ठहराणी ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो नेमि जिणंदा ॥ तोरा चरण कमल चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो श्री नेमि जिणंदा ॥ (यह पढ़कर दोनों हाथोंको टीकी लगाना चाहिये) ॥ ३ ॥

गाथा ॥ जे सिद्धा सिज्झन्ति जे, सिज्झिस्सन्ति अणंत। जसु ओलंबन ठविय मन, सो सेवो अरिहंत ॥ ४ ॥

ढाल ॥ शिव सुख कारण जेह त्रिकालें, सम परिणामें जगत निहालें। उत्तम साधन मार्ग दिखालें, इन्द्रादिक सु चरण पखालें ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो पार्श्व जिणंदा, तोरा चरण कमल चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो श्रीपार्श्व जिणन्दा ॥ (यह पढ़कर दोनों कंधों पर टीकी लगाना चाहिये) ॥ ४ ॥

गाथा ॥ सम्मदिट्ठो देसजय, साहु साहुणी सार। अचारिज उवझाय मुणि, जो निम्मल ॥ ५ ॥

चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो श्री वीर जिणंदा ॥ (यह पढ़कर मस्तक पर तिलक करना चाहिये) ॥ ५ ॥

॥ इति पांखडी गाथा ॥

वस्तु ॥ सयल जिनवर सयल जिनवर नमिय मन रंग। कल्लाणक विह संथविय। करिय सुजम्म सुपवित्त सुन्दर। सय इक सत्तरि तित्थंकर। इक्क समै विहरंत महियल। चवण समैं इकवीस जिण। जन्म समैं एकवीस। भत्तिय भावें पूजिया। करो संघ सुजगीस ॥ १ ॥

इक दिन अचिरा हुलरावती-ए देशी ॥

भव तीजे समकित गुण रम्या। जिन भक्तिप्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इन्द्रिय सुख आसंसना। करि थानक वीसनी सेवना ॥ अतिराग प्रशस्त प्रभावता। मन भावना एहवी भावता ॥ सवि जीव करूं शासन रसी। इसी भाव [illegible] उल्लसी ॥ लहि परिणाम

मलं । निपजावी जिनपद निरमलं ॥ आऊ बंध विचै इक भव करी । श्रद्धा संवेगथी थिर धरी, तिहांथी चविय लहें नर भव उदार । भरतें जिम ऐरवतेज सार । महा विदेह विजय प्रधान । मभ्क खंडे अवतरे जिन निधान ।

ढाल ॥ पुण्यें सुपना ए देखें । मनमें हर्ष विशेषे ॥ गजवर उज्जल सुन्दर । निर्मल वृषभ मनोहर । निर्भय केसरी सिंह । लखमी अतिह अबीह ॥ अनुपम फूलनी माला । निर्मल शशि सुकमाल ॥ तेज तरण अति दीपै । इन्द्र ध्वजा जग जीपै ॥ पूरण कलस पंडूर । पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमें रयणायर । देखे माताजी गुण सायर ॥ बारमें भुवन विमान । तेरमें रत्न निधान ॥ अग्नि शिखा निरधूम । देखें माताजी अनुपम ॥ हरखी रायने भासें । राजा अर्थ प्रकाशें ॥ जगपति जिनवर सुखकर । होस्यें पुत्र मनोहर ॥ इन्द्रादिक जसु नमस्यें । सकल मनोरथ फलस्यें ॥

वस्तु॥ पुण्य उदय पुण्य उदय ऊपना जिण नाह। माता तव रयणी समें देखि सुपन हरषंत जागिय। सुपन कही निज कंतने सुपन अरथ सांभलो सोभागिय। त्रिभुवन तिलक महा गुणी। होस्यें पुत्र निधान॥ इन्द्रादिक जसु पय नमो। करस्यें सिद्ध विधान॥

॥ ढाल-चंद्रा उल्लालानी॥

सोहम पति आसन कंपियो। देई अवधें मन आणंदियो॥ मुझ आतम निर्मल करण काज। भव जल तारण प्रगट्यो जिहाज॥ भव अटवि पारग सत्थवाह। केवल नाणाइय गुण अगाह॥ शिव साधन गुण अंकुर जेह। कारण उलट्यो आषाढ मेह॥ हरखै विकसै तव रोमराय। वलयादिकमां निजतनु न माय॥ सिंहासनथी उठो सुरिंद। प्रणमन्तो जिण आनंद कन्द॥ सग अडपय पमुहा आवि तत्थ। करि अंजलि प्रणमिय मत्थ सत्थ॥ मुख भाखें ए खिण आज सार। तियलोय पहु दीठो उदार॥

रे निसुणों सुर लोय देव । विषयानल तापित तनु समेव ॥ तसु शांति करण जलधर समान । मिथ्या विष चूरण गरुड़वान ॥ ते देव सकल तारण समरथ । प्रगट्यो तसु प्रणमी हुई सनत्थ ॥ इम जम्पी शक्रस्तव करेवि । तव देव देवि हरखे सुणेवि ॥ गावें तव रम्भा गीत गान । सुर लोक हुवो मंगल निधान ॥ नर खेत्रें आरज वंश ठाम । जिनराज वधें सुर हर्ष धाम ॥ पिता माता घरे उच्छव अलेख । जिन शासन मंगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक हर्ष संग । संयम अरथी जनने उमंग । शुभ वेला लगने तीर्थ नाथ । जनम्यां इन्द्रादिक हर्ष साथ ॥ सुख पाम्यां त्रिभुवन सर्व जीव । वधाई वधाई थई अतीव ॥ (यह कहकर फूल और चांवलोंसे वधाना और वादमें:—चैत्यवंदन करके धूप देना चाहिये)

॥ श्रीशांति जिननो कलश कहिशुं-ए देशी ॥

त्रोटक ॥ श्रीतीर्थ पतिनो कलश मज्जन गाइए

सुखकार। नर खेत्त मंडन दुह विहण्डन भविक मन आधार ॥ तिहां राव राणां हर्ष उच्छव थयो जग जय कार। दिसि कुमरि अवधि विशेष जाणी लह्यो हर्ष अपार ॥ निय अमर अमरी संग कुमरी गावती गुण छंद। जिन जननि पासें आवि पोंहती गहगहती आंणंद ॥ हे माय तैं जिनराज जायो शुचि वधायो रम्म। अम जम्म निम्मल करण कारण करिस सुइय कम्म ॥ तिहां भूमि शोधन दीप दर्पण वाय विंजण धार। तिहां करिय कदली गेह जिनवर जननी मज्जन कार ॥ वर राखड़ी जिन पाणि बांधी दियें इम आसीस। जुग कोड़ कोड़ी चिरंजीवो धर्म दायक ईश ॥

ढाल इकविसानी॥ जग नायकजी, त्रिभुवन जन हित कार ए। परमातमजी, चिदानन्द घन सार ए॥ जिन रयणीजी, दश दिस उज्जलता धरै। शुभ लगनेजी, ज्योतिष चक्रते संचरै॥ जनम्याजी, जिन अवसर माता धरै। तिण

त्रोटक ॥ थरहरे आसन इन्द्र चिंते कवण, अवसर ए वण्यो । जिन जन्म उच्छव काल जाणी, अतिही आनन्द उपन्यो ॥ निज सिद्ध सम्पति हेतु जिनवर जाणि भगते उमह्यो । विकसंत वदन प्रमोद वधतै देव नायक गहगह्यो ॥

ढाल ॥ तव सुरपतिजी, घंटा नाद करावए । सुर लोकैंजी, घोषणा एह दिरावए ॥ नर चेत्रैंजी, जिनवर जन्म हुवो अछै । तसु भगतैंजी, सुरपति मंदर गिर गछै ॥

त्रोटक ॥ गछै मंदर शिखर ऊपर भवन जीवन जिन तणों । जिन जन्म उच्छव करण कारण आवज्यो सवि सुर गणों ॥ तुम शुद्ध समकित थास्यें निर्मल देवाधिदेव निहालतां । आपणा पातिक सर्व जास्यें नाथ चरण पखालतां ॥

ढाल ॥ इम सांभलिजी, सुरवर कोड़ी वहु मिली । जिन वंदनजी, मंदर गिर साहमी चली । सोहम पतिजी, जिन जननो घर आविया । जिन माताजी, वंदी स्वामि वधाविया ।

त्रोटक ॥ वधाविया जिनवर हर्षे वद्ध अ
हूं कृत पुण्य ए। त्रैलोक्य नायक देव दीठो तुम
समो कुण अन्य ए ॥ हे जगत जननी पुत्र तुम्हा
मेरु मज्जन वर करी। उच्छंग तुम्ह थाप
थापिस आतमां पुन्ये भरी ॥

ढाल ॥ सुर नायकजी, जिन निज
ठव्या। पांचरूपेजी, अतिशय महिमायें
नाटक विध जी, तव बत्तीस आगल
कोड़ी जी, जिन दरशनणें उमह्या ॥

त्रोटक ॥ सुर कोड़ कोड़ी नाचते वर नाथ
शुचि गुण गावती। अपछरा कोड़ी कर जोडी
हाव भाव दिखावती ॥ जय जयं तूं जिनराज
जग गुरु एम दे आसीस ए। अम त्राण शरण
आधार जीवन एक तूं जगदीश ए ॥

ढाल ॥ सुर गिरवरजी, पांडुक वनमें
दिसें। गिरि शिल परजी, सिंहासन सासय वदे
तिहां जी, शक्रे जिन खोले ग्रह्या।
जी आवी रह्या ॥

त्रोटक ॥ आविया सुरपति सर्व भगतें कलश श्रेणि वणावए । सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ ओषधि सर्व वस्तु अणावए । अच्चुयपति तिहां हुकुम कीनो देव कोड़ा कोड़िनें । जिन मज्जनारथे नीर लाओ सवे सुर कर जोड़िनें ॥ (जलका कलश लेकर खड़े रहें और पढ़ें)

॥ शांतिनें कारणें इन्द्र कलशा भरे ए देशी ॥

ढाल ॥ आतम साधन रसी देवकोड़ी हसी । उल्लसीनें धसी खीर सागर दिशी ॥ पउमदह आदि दह गंग पमुहा नई । तीर्थ जल अमल लेवा भणी ते गई ॥ जाति अड़ कलश करि सहस अठोत्तरा । छत्र चामर सिंहासणे शुभतरा ॥ उपगरण पुप्फ चंगेरि पमुहा सवे । आगमें भासिया तेम आणि ठवे ॥ तीर्थ जल भरिय करि कलश करि देवता । गावता भावता धर्म उन्नति ता ॥ तिरिय नर अमरनें हर्ष उपजावता । धन्य म शक्ति शुचि भक्ति इम भावता ॥ समकितें ोज निज आतम आरोपता । कलश-पाणी मिसे

भक्ति जल सींचता ॥ मेरु सिहरोवरे सर्व आव्या वही । शक्र उच्छङ्ग जिन देखि मन गहगही ॥

गाथा ॥ हंहो देवा अणाइ कालो । अदिट्ठ-पुव्वो तिलोय तारण । तिलोय वन्धु मिच्छत मोह विद्धंसणो । आणाइ तिह्णाविणासणो । देवाहिदेवो दिट्ठव्वो हियकामेहिं ॥

ढाल ॥ एमं पभणंत वण भुवन जोईसरा । देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा ॥ केवि कप्प-ट्टिया केवि मित्ताणुगा । केवि वर रमण वयणेण अइ उच्छगा ॥

वस्तु ॥ तत्थ अच्चुय तत्थ अच्चुय इन्द्र आदेश । कर जोड़ी सव देवगण लेइ कलश आदेश पा-मिय । अद्भुत रूप सरूप जुय कवण एह पुच्छंत सामिय । इंद्र कहे जग तारणो पारग अम्ह परमेस । दायक नायक धर्मनिधि करिये तसु भिषेक ॥ (इस समय जलकी थोड़ीसी धारा देना)

तीर्थ कमलवर उदक भरीनें पुष्कर सागर आवे-ए देशी ॥

ढाल ॥ पूर्ण कुलश शुचि उदकनी धारा,

जिनवर अंग नामें। आतम निर्मल भाव करंतां, वधतें शुभ परिणामें॥ अच्युतादिक सूरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत। सामानिक इन्द्राणी पमुहा, इम अभिषेक करंत॥ पू०॥

गाथा॥ तव इशाण सुरिंदो, सक्कं पभणेइ करिस सुपसाउ। तुम अंके महनाहो, खिणमित्तं अम्ह अप्पेह॥ ता सक्किन्दो पभणइ, साहम्मि वच्छलम्मि वहुलाहो। आणा एवं तेणं, गिण्हइ होउ कयत्था भो॥ (यह कहकर सभी कलशोंके जलसे भगवानको स्नान कराना चाहिये)

ढाल॥ सोहम सुरपति वृषभ रूप करि न्हवण करे प्रभु अंगै। करिय विलेपन पुष्पमाल ठवि वर आभरण अभंगै॥ सो० १॥ तव सुर वर वहु जय जय रव कर निश्चै धरि आणन्द। मोक्ष मारग सारथ पति पाम्यों भांजस्युं हि भव न्द॥ सो०॥ २॥ कोड़ बत्तीस सोवन्न उवारी ाजंतै वरनाद। सुरपति संघ अमर श्री प्रभुन ननीनें सुप्रसाद। आणी थापी एम पयंपे अम्ह

निस्तरिया आज। पुत्र तुमारो धणिय हमारो तारण तरण जिहाज॥ सो० ३॥ मात जतन करि राखज्यो एहनें तुम सुत हम आधार। सुरपति भक्ति सहित नन्दीश्वर करे जिन भक्ति उदार॥ सो०॥ ४॥ निय निय कप्प गया सहु निर्ज्जर कहता प्रभु गुण सार। दीक्षा केवल ज्ञान कल्याणक इच्छा चित्त मझार॥ सो० ५॥ खरतर गछ जिण आणा रंगी राज सागर उवझाय। ज्ञान धर्म दीपचंद सुपाठक सुगुरु तणें सुपसाय॥ देवचंद निज भक्तें गायो जन्म महोच्छव छंद। बोध बीज अंकुरो उलस्यो संघ सकल आणंद॥ सो०॥ ६॥ इति॥

राग बेलावल॥ इम पूजा भगतें करो, आतम हित काज। तजिय विभव निज भावना, रमतां शिव राज॥ इम०॥ १॥ काल अनंतें जे हुआ, होस्यें जेह। जिणंद संपई श्रीमंधर प्रभु, केवल नाण दिणंद॥ इम०॥ २॥ जन्म महोच्छव इण रुचिवंत। विरचे जिन

अनुमोदन खंत ॥ इम० ३॥ देवचंद जिन पूजना, करतां भव पार। जिन पड़िमा जिन सारखी, कही सूत्र मझार ॥ इम० ॥ इति पदम् ।

॥ इति ढाल पूजा ॥

अष्टप्रकारी पूजा ।

जल पूजा।

दुहा ॥ गंगा मागध चीरनिधि, औषध मिश्रित सार। कुसुमे वासित शुचि जलें, करो जिन स्नात्र उदार ॥ १ ॥ ढाल ॥ मणि कनकादिक अड़विध करि भरि कलस सफार। शुभ रुचि जे जिनवर नमें तसु नहीं दुरित प्रचार ॥ मेरु शिखर जिम सुरवर जिनवर न्हवण प्रमान। करता वरता निज गुण समकित वृद्धि प्रधान ॥ २ ॥ (छन्द) हर्ष भरि अपसरावृन्द आवै। स्नात्र करि एम आसीस भावै। जिहां सुरगिरी जंबुदीवो। अमतणा नाथ जीवो

तुम जीवो ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ विमलकेवलभासन-भास्करं, जगति जंतुमहोदयकारणं। जिनवरं वहुमानजलौघतः, शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ओं ह्रीं परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञान-शक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जल पूजा ॥ यह कहकर जलसे न्हवण कराना ॥

चंदन पूजा।

दुहा ॥ वावना चन्दन कुम कुमा। मृगमद नें घनसार॥ जिन तनु लेपैं तसु टले। माह सन्ताप विकार ॥ १ ॥ ढाल ॥ सकल संताप निवारण तारण सहु भविचित्त। परम अनोहा अरिहा तनु चरचो भविनित्त ॥ निज रूपें उप-योगी धारो जिन गुणगेह। भाव चंदन सुह भावथी टालै दुरित अछेह ॥ २ ॥ चाल ॥ जिन तनु चरचतां सकल नाकी। कहै कुग्रह ऊष्णता आज थाकी ॥ सफल अनिमेषता आजम्हांकी। [illegible]ा अम्ह तणी आज पाकी ॥३ ॥ श्लोक ॥

सकलमोहतमिश्रविनाशनं, परमशीलभावयुतं जिनं। विनयकुंकुमचंदनदर्शनैः, सहजतत्वविकाशकृतेऽर्च्च ये ॥ १ ॥ ओं ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय चंदनं यजामहे स्वाहा॥२॥ इति चंदन पूजा यह कहकर केशर और चंदन चढ़ाना चाहिये।

नवअंगि भाव पूजा।

दुहा॥ पर उपगारी चरणयुग, अनंत शक्ति स्वयमेव। यातें प्रथम पूजिये, आतम अनुभव सेव (चरणोंमें टीकी) ॥ १ ॥ जानु पूजा दूसरी, समाधि भूमिका जान। आतम साधन ज्ञान ले, शुद्ध दशा पहिचान॥ (गोड़ोंको टीकी) ॥ २ ॥ कर पूजा जिन राजकी, दिये सम्वच्छरी दान। ते कर मुझ मस्तक ठवूं, पहुंचे पद निर्वाण॥ (हाथोंमें टीकी) ॥ ३ ॥ भुजवल शक्ति जानके, पूज्य करूं चित लाय। ... हटायके, आतम गुण दरशाय॥

(कंधोंमें टीकी) ॥४॥ सिर पूजा जिनराजकी, लोक शिरोमणि भाव। चउगति गमन मिटायके, पंचम गति सम भाव ॥ (मस्तकमें टीको) ५ ॥ लिलवट पूजा सार है, तिलक विधि विश्राम। वदन कमल वाणीसुनें, पहुंचे निज गुण धाम ॥ (ललाटमें टीको) ॥ ६ ॥ कंठ पूजा है सातमी, वचनातिशय वृंद। सप्त भेद पंयचिश श्रुत, अनुभव रस नो कंद ॥ (कंठमें टीकी) ॥ ७ ॥ हृदय कमलनी पूजना, सदा वसो चितमांह। गुण विवेक जागें सदा, ज्ञान कला घट छाय (हृदयमें टीकी) ॥८॥ नाभी मंडल पूजके, षोड़श दलको भाव। मन मधुकर मोही रह्यो, आनंद घन हरपाय (नाभीमें टीकी) ॥ ९ ॥ इति ॥

पुनः ॥ दुहा ॥ जल भरि संपुटमां, युगलिक नर पूजंत। ऋषभ चरण अंगूठवे, दायक भवजल अंत ॥ १ ॥ जानु वले काउसग रह्या, विचर्या देश विदेश। खड़ा २ केवल लह्या, पूजा जानु

जिननं धूपदान ॥ १ ॥ ढाल ॥ धूपघटी जिम महमहे, तिन दहे घातिक वृन्द। आर्ति अनादिनी जावै, पावै मन आनन्द। जे जन पूजे धुपे, भवकूपें फिर तेह। नावें पावे धुवघर आवें सुक्ख अछेह ॥ २ ॥ चाल ॥ जिनघरे वासतां धूप पूरें, मिच्छत दुर्गन्धता जाई दूरें। धूप जिम सहज उद्धंगत स्वभावे, कारिका उच्चगति भाव पावै ॥ ३ ॥ श्लोकः ॥ सकलकर्म्ममहे धनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूपनं। अशुभपुद्गलसंगविवर्जितं, जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षितः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने०। धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ इति धूप पूजा ॥ धूप अगरवत्ती खेवै ॥

अथ दीप पूजा ॥

दोहा ॥ मणिमय रजत ताम्रना, पात्र करी घृत पूर। वत्ती सूत्र कसुंवनी, करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥ ढाल ॥ मंगल दीप वधावो गावो जिन गुणगीत, दो पथकी जिम आलिका मालिका मंगलनीत। दीपतणी शुभज्योती द्योतीं जिन

मुखचन्द, निरखी हरखो भविजन जिम लहोपू-र्णानन्द ॥ २ ॥ चाल ॥ जिन गृहे दीप माला प्रकासैं, तेहथी तिमर अज्ञान नासैं। निजघटै ज्ञानज्योती विकासै, तेहथी जगतणा भाव भासैं ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ भविकनिर्म्मलबोधविकाशकं, जिनगृहे शुभदीपकदीपनं। सुगुणरागविशुद्धसमन्वितं, दधतु भावविकाशकृते जनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपरमात्मने० । दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ इति दीप पूजा ॥ मंगलदीप चढ़ावै।

अथ अक्षत पूजा ॥

दोहा ॥ अक्षत २ पूरसुं, जे जिन आगे सार। स्वतिक रचतां विस्तरै, निजगुण भर निस्तार ॥ १ ॥ ढाल ॥ उज्जल अमल अखण्डित मण्डित अक्षत चंग, पुञ्जत्रय करो स्वस्तिक आस्तिक भावै रंग। निज सत्तानें सन्मुख उनमुख भावे जेह, ज्ञानादिक गुणठावें भावे स्वस्तिक

णादि अशुभ भागै, नियत शिव सर्व रहै तासु आगै ॥ ३ ॥ श्लोकः ॥ सकलमंगलकेलिनिकेतनं, परममंगलभावमयंजिनं । श्रयति भव्यजना इति दर्शयन, दधतु नाथपुरोक्षतस्वस्तिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० । अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥६॥ इति अक्षत पूजा ॥ अखण्ड चावल चढ़ावै ॥

अथ नैवेद्य पूजा ॥

दोहा ॥ सरस सुचि पकवान वहु, शालि दालि घृतपूर । धरो नैवेद्य जिन आगलै, क्षुधा दोष तसु दूर ॥ १ ॥ ढाल ॥ लपनश्री वर घवर मधुतर मोतीचूर, सींहकेसरिया सेविया दालिया मोदकपूर । साकर द्राख सीङ्घोड़ा भक्ति व्यञ्जन घृतसद्य, करो नैवेद्य जिन आगलै जिम मिलै सुख अनवद्य ॥ २॥ चाल ॥ ढोवतां भोज्य पर भाव त्यागे, भविजना निज गुण भोज्य मांगे । अम्हभणि अम्हतणो सरूप भोज्य, आपज्यो तातजी जगत पूज्य ॥ ३ ॥ श्लोकः ॥ सकलपुद्गलसंगविवज्र्जनं, सहजचेतनभावविलासकं ।

सरस भोजननव्यनिवेदनात्, परमनिर्वृ तिभाग-महं स्पृहे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने०। नैवेद्य' यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥ इति नैवेद्य पूजा ॥ मिठाई पकवान चढ़ावे ॥

अथ फल पूजा ॥

दोहा ॥ पक्व बीजोरू' जिन करै, ठवतां शिवपद देइ। सरस मधुर रस फल गिणें, इह जिन भेट करेइ ॥ १ ॥ ढाल ॥ श्रीफल कदली सुरंग नारंगी आंबा सार, अंजीर वंजीर दाड़िम करणा पट्बीज सफार। मधुर सुस्वादिक उत्तम लोक आनन्दित जेह, वर्ण गन्धादिक रमणीक वहुफल ढोवै तेह ॥ २ ॥ चाल ॥ फलभर पूजतां जगत स्वामी, मनु जगति ते लहै सफल पामी। सकल मनुष्येय गतिभेद रंगै, ध्यावतां फल समाप्ति प्रसंगै ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ कटुककर्मविपाक-विनाशनं, सरसपक्वफलव्रजढौकनं। वहति मोक्ष-फलस्य प्रभोः पुरः, कुरुत सिद्धिफलाय महाजनाः॥१॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने०। फलं

॥ ८ ॥ श्रीफल सुपारी नोला फल प्रमुख चढ़ावे॥ इति फल पूजा ॥

अथ अर्घ पूजा ॥

दोहा ॥ इम अड़विधि जिन पूजना, विरचै जे थिर चित्त । मानवभव सफलो करैं, वाधे समकित वित्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ अगणित गुणमणि आगर नागर वन्दित पाय, श्रुतधारी उपगारी श्री ज्ञानसागर उवझाय । तासु चरणकंज सेवक मधुकर पय लयलीन, श्रीजिन पूजा गाई जिनवाणी रसपीन ॥ २ ॥ चाल ॥ सम्वत गुणयुत अचल इन्दु, हर्ष भरो गाइयो श्रीजिनेंदु । तासु फल सुकृत थी सकल प्राणी, लहै ज्ञान उद्योत धन शिव निसाणी ॥ ३ ॥ श्लोकः ॥ इति जिनवरवृन्दं भक्तितः पूजयन्ति, सकल गुणनिधानं देवचन्द्रं स्तुवन्ति । प्रतिदिवसमनन्तं तत्वमुद्भासयन्ति, परमसहजरूपं मोक्षसौख्यं श्रयन्ति ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० । अर्घं यजामहे स्वाहा ॥ चार कोणें धार दाजे । इति ~ पूजा ॥

अथ वस्त्र पूजा ॥

शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूलाः, सिंहासनोपरि मितस्नपनावसाने । दध्यक्षतैः कुसुमचन्दनगन्धधूपैः, कृत्वार्च नन्तु विदधाति सुवस्त्रपूजां ॥ १ ॥ तद्वत् श्रावकवर्ग एप विधिनालङ्कारवस्त्रादिकं, पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्तयाद्दतः । नीरागस्य निरञ्जनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः, स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकांक्षया ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० । वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ वस्त्र चढ़ावै ॥ इति वस्त्रपूजा ॥

अथ नमक उतारण पूजा ।

अह पड़िभग्गापसरं, पयाहिणं मुणिवयं करिऊणं । पड़इ सलूणत्तण लज्जियंच, लूणंहू अवहरन्ति ॥ १ ॥ पिक्खेविणु मुह जिण वरह दीहर नयण सलूण । न्हावइ गुरु मच्छह भरिय, जलण पइस्सइ लूण ॥ २ ॥ लूण उतारिह जि- = तिन्नि पयाहिणि देव । तड़ तड़

करन्तिये, विज्ञा विज्जलेण ॥ ३ ॥ जं जेण वि- ज्जव थुई, जलेण तं तहइ अत्थसहस्स। जिन- रूवा मच्छरेणवि, फुट्टइ लूणं तड़ तड़स्स ॥ ४॥ यह कहकर लूण अग्निशरण करे पीछे लूण पाणी लेई, मुखें गाथा कहे ॥ गाथा ॥ सव्ववि मुणवइ जलविजल, तन्तह भमणइ पास। अहवि कय- न्तस्स निम्मलउ, निग्गुण बुद्धि पसाय ॥ ५ ॥ जलण अणें विणण जलणहि पास, भरवि कय- ज्जल भावहि पास। तिन्नि पयाहिणि दिन्निय पास, जिम जिय छूटै भव दुहपास ॥ ६ ॥ जल निम्मल कर कमलेहि लेविणं, सुरवर भावहि मु- णिवई सेवणं। पभणई जिणवर तुहपइ सरणं, भय तुट्टइ लब्भइ सिद्धि गमणं ॥ ७ ॥ यह कह कर लूण उतारी जल शरण करे ॥ इति नमक उतारण पूजा ॥

अथ पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥

उन्नय पयय भत्तस्स, नियठाणे सणिठय । जिण पासे भमिय जणस्स, पिच्छ-

लुह हुयवहे पड़णं ॥ १ ॥ सव्वो जिणप्पभावो, सरिसा सरिसेसु जेण रच्चन्ती। सव्वन्नूण अ-पासे, जड़स्स भमणं न सङ्कमणं ॥ २ ॥ अच्चन्त दुःकरं पिहू, हुयवह निवड़ेन जड़ेन कयं। आणा सव्वन्नूणं, न कया सुकयत्थ मूलमिणं ॥ ३ ॥ यह कहकर माला पहनावे ॥

अथ छूठी फूल पूजा ॥

उवणेव मंगलेवो, जिणाण मुह लालि संव-लिया। तित्थपवत्तम समई, तियसे विमुक्का कुसु-मवुट्ठी ॥ १ ॥ यह कहकर प्रभुके सम्मुख फूल उछालें ॥

प्रभातकी आरती ॥

जय जय आरती शान्ति तुमारी, तोरा च-रण कमलकी मैं जाउं बलिहारी ॥ टेर ॥ वि-श्वसेन अचिराजीके नन्दा, शांतिनाथ मुख पू-निम चंदा ॥ जय० ॥ १ ॥ चालिस धनुप सो-वनमय काया, मृग लांछन प्रभु चरण सुहाया ॥ २ ॥ चक्रवर्ति प्रभु पंचम

लम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जय० ॥ ३ ॥ मंगल आरती भोरे कीजे, जनम २ को लाहो लीजै ॥ जय० ॥ ४ ॥ कर जोड़ी सेवक गुण गावै, सा नर नारी अमर पद पावै ॥ जय० ॥ ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ नवपद-पूजा ।

अथ प्रथम अरिहंतपद-पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करी, तास धरी उर ध्यांन ॥ अरिहंतपद पूजा करा, निज २ शक्ति प्रमांण ॥ १ ॥ काव्य ॥ उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं, सप्पाडि हेरा सणसंठियाणं ॥ सद्देसणाणंदिय सज्जणाणं, नमो२ होउ सयाजिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यांनथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ कस्या कर्म दुर्मम चकचूर जेणें, भव्य नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना

भव्य भावे त्रिकाले, सदा वासियो आतमा तेण कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीने, दिये देशना भव्यने हित धरीनें ॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेशें नरेशें स्तव्या ब्रह्मपूता ॥४॥ कस्या घातिया कम च्यारे अलग्गा, भवोप ग्रही च्यार छे जे विलग्गा ॥ जगत्पंचकल्याणके सुख पांमें, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामें ॥ ५ ॥

ढाल ॥ तीरथपति अरिहा नमुं, धरम धुरंधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वड वीरो जी ॥ ती० ॥ उल्लालो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आत्म भावे चरण थिरता वासता ॥ जिन नांमकर्म प्रभाव अतिशय प्रातिहारज शोभता, जगजंतु करुणावंत भगवंत भविकजने थोभता ॥ ६ ॥

ढाल ॥ श्रीसीमंधर साहिब आगे ॥ ए-देशी ॥

तीजे भव वर थानक तप करी, जिन वांध्युं नाम ॥ चउसठइंद्रे पूजित जिन,

कीजे तास प्रणाम रे भविका सिद्धचक्र पद वंदो रे ॥ भ० ॥ जिम चिरकाले नंदो रे ॥ भ० ॥ उपशमरसनो कंदो रे ॥ भ० ॥ रत्नत्रयीनो वृंदो रे ॥ भ० ॥ सेवै सुननर इंदो रे ॥ भ० सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पिण उजवालूं ॥ सकल अधिक गुण अतिशयधारी, ते जिन नमि अघ टालूं रे ॥ भ० सि० ॥ ८ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग ऊपन्ना, भोग करम खिण जांणी ॥ लेइदीक्षा शिक्षा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ भ० सि० ६ ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामिक सत्थवाह ॥ उपमा एहवी जेहने छाजै, ते जिन नमिये उच्छाह रे ॥ भ० सि० ॥ १० ॥ आठ प्रातीहारज जसु छाजै, पैंत्रीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबोधं करे जगजनने, ते जिन नमियें उच्छाह रे ॥ भ० सि० ११ ॥

ढाल ॥ अरिहंतपद ध्यातो थको, दव्वह पर्याये रे ॥ भेद छेद करी आतमा, हरिहंत

रूपी थायैरे ॥ १२ ॥ वीर जिणेसर उपदिसै, सांभलज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्यांने आतमा, ऋद्धि मिले सब आई रे ॥ वी० १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत्सिद्धचक्राय अष्ट-द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम अरिहंत-पद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद-पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाल ॥ अशुभ करम दूरै टलै, फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥ काव्य ॥ सिद्धाण माणंद रमाल याणं, नमो२ णंत चउक्कयाणं ॥ सम्मग्ग कम्म क्खयकारगाणं, जन्मजरा दुक्ख निवारगाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म खय पार पांम्या, जरा जन्म मरणादि भय जेण वाम्या ॥ निवारणाय जे आत्मरूपें प्रसिद्धा, थया पार पांमी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रिभागोनदेहावगाहात्मदेसा,

व्याश्रिताज्योतिरूपा, अनाबाधअपुनर्भवादस्वरूपा ॥ १६ ॥ चाल ॥ सकल कर्ममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्याबाध प्रभुतामई, आतम संपत भूपो जी ॥ उल्लालो ॥ जे भूप आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणें करी ॥ स्वद्रव्यक्षेत्र स्वकालभावे, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वभाव गुणपर्याय परणति, सिद्धसाधन परभणी, मुनिराज मानसरहंस समवड, नमो सिद्ध महा गुणी ॥ १७ ॥

ढाल ॥ समयपएसंतर अणफरसी चरम तिभाग विसेस ॥ अवगाहन लही जे शिव पुहता, सिद्ध नमो ते असेस रे ॥ १८ ॥ भ० ॥ पूरव प्रयोगने गति परणामे, बंधन च्छेद असंग ॥ समय एक ऊरधगति जेहनी, तेसिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ भ० १६ सि० ॥ निरमल सिद्धशिलाने ऊपर जोयण एक लोकंत ॥ सादि अनंत तिहां थिति जेहनि, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥ २० भ० सि०॥ जाणै पिण न सकै कही पुर गुण, प्राकृत तिम

गुण जास ॥ ओपमा विण नांणी भवमांहे, ते सिद्ध दिओ उल्लास रे ॥ भ० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ भ० ॥ २१ ॥ सि० ॥

ढाल ॥ रूपातीत स्वभावजे, केवलदंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुण खाणी रे ॥ वी० ॥ ॐ ॥ ह्रीं० इति श्रीसिद्धपद-पूजा ॥

अथ तृतीय आचार्य पद-पूजा।

॥ दूहा ॥ हिव आचारज पदतणी, पूजा करो विशेष ॥ मोहतिमिर दूरे हरै, सूझै भाव असेप ॥ १ ॥ काव्य ॥ सूरीणदूरीकयकुग्गहाणं, नमोर सीरिसमप्पहाणं ॥ सद्दे सणा दाणसमायराणं, अखंडछत्तीसगुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्वभाजा, जिनेंद्रागमें प्रौढ साम्राज्यभाजा ॥ षट् वर्गवर्गित गुणै शोभमाना, पंचाचारनें पालवे सावधाना ॥ २ ॥ भविप्राणिनें देशना देशकालै, सदाअप्रमत्ता यथा सूत्र आलै ॥ जिके शासना

धार दिग्दंतकलश, जगत्ते चिरंजीवज्यो शुद्ध जल्पा ॥ ३ ॥

ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणछत्ती सेधामो जी ॥ चिदानंदरसस्वादता, परभावे निक्कामो जी ॥ उल्लालो ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदघन, साध्य निज निरधारथी ॥ वरज्ञान दरसन चरण वीरज, साधना व्यापारथी ॥ भवि जोवबोधक तत्वशोधक, सयलगुण संपत्तिधरा ॥ संवर समाधी गत ऊपाधी, दुविधत पगुण आदरा ॥ २५ ॥

ढाल ॥ पांच आचार जे सूधा पालै, मारग भाखै साचौ ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने याचो रे ॥ भ० ॥ २६ ॥ सि० ॥ वर छत्तीसगुणैंकरि शोभै, युगप्रधानजगवोहै ॥ जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे भ० ॥२७॥ सि०॥ नित अप्रमत्त धरम उव एसे, नहि विकथा न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमियै, अकलूस अमल अमाय रे ॥ भ० ॥ २८ ॥

सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पडिचोयण वलि जनने ॥ पटधारी गच्छथंभ आचारज, ते मान्या मुनि मनने रे ॥ भ० ॥ २६ ॥ सि० ॥ अत्थमिये जिन सूरज केवल, वंदी जे जगदीवो ॥ भुवन पदारथ प्रगटनपटुते, आचारज चिरंजीवो रे ॥ भ० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे ॥ वी० ॐ ह्रीं आचार्यपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ अथ चौथी उपाध्यायपद-पूजा ।

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोभित गात्र ॥ उवझायापद अरचिये, अनुभव रसनो पात्र ॥ १ ॥ काव्य ॥ सुतत्थ वित्थारणतप्पराणं, नमो२ वायगकुंजराणं ॥ गणस्ससंधारणसायराणं, सव्वप्पणावज्जियमच्छराणं ॥ १ ॥ नही सूरि पिण सूरिगुणने सुहाया, नमूं वाचका त्यक्त मदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थ दानं, जिके सावधानं निरुद्धाभिधानं ॥ २ ॥ धरे

पंचनवगवर्गितगुणौघा, प्रवादिद्विपोच्छेदनेतुल्य सिंघा ॥ गुणीगच्छसंधारणेस्थंभ पूता, उपाध्या यनेवंदियेचित्प्रभूता ॥ ३ ॥

ढाल ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ, अज्जव म द्दवजुत्ताजी ॥ सच्च सोयंअकिंचणा, तवसंयमगुण रत्ताजी ॥ उल्लालो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुप्तगुप्ता, सुमति सुमता शुभधरा ॥ स्याद्वादवादइं तत्व साधक, आत्मपरविभंजनकरा ॥ भवभीरुसाधन धीरशासन, वहनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धांतवायन दांनसमरथ, नमोपाठकपदधरा ॥ ३३ ॥

ढाल ॥ द्वादशअंगसिज्झाय करे जे, पारग धारग तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते नमो उवझाय उल्लास रे ॥ भ० ॥ ३४ ॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दांनविभागे, आचारज उवज्झाय ॥ भवत्रिणहै जे लहै शिवसंपद, नमियै ते सुपसाय रे ॥ भ० ॥ ३५ ॥ सि० ॥ मुरखशिष्यनीपायेजे प्रभु, पाहणते पल्लव आणै ॥ ते उवझाय सकल जन पूजित, सूत्रअर्थ सविजांणे रे ॥ भ० ॥३६॥

सि० ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक, आचार-जपद योग, ते उवझाय सदा ते नमतां, नावे भवभय सोग रे ॥ भ० ॥३७॥ सि० ॥ बावना-चंदनरस समवयणे, अहितताप सवि टाले ॥ ते उवज्झाय नमिजे जे वलि, जिनशासन उजवाले रे ॥ भ० ॥ ३८ ॥ सि० ॥

ढाल ॥ तप सिज्झाये रत सदा, द्वादश अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगत्राता रे ॥ वी० ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं० श्रीपाठकपदे अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति चतुर्थ उपाध्यायपद पूजा ॥

अथ पाँचवीं साधूपद-पूजा ॥

दूहा ॥ मोक्षमारग साधनभणी, सावधान थया जेह ॥ ते मुनिवरपद वंदता, निरमल थाये देह ॥ १ ॥ काव्य ॥ साहूण संसाहियसंजमाणं, नमोऽस्तुशुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहियाणं, मुणीणमाणंदपयट्ठिआणं ॥ करेसेवनासूरिवायगगणीनी, करूं वर्णना तेहनीसीमुणीनी ॥

कुपथ्या ॥ जिनोक्तं हुइ सहजथीशुद्धध्यानं, कहि‌येदर्शनंतेहपरमंनिधानं ॥ ५० ॥ विनाजेहथीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंविचित्रं भवारण्यकूपं ॥ प्रकृतिसातनेउपसमेंचयतेहहोवे, तिहांआपरूपेंसदाआपजोवें ॥ ५१ ॥

ढाल ॥ सम्यग् दरसण गुण नमो, तत्व प्रतीत सरूपीजी ॥ जसु निरधार स्वभाव छै, चेतन गुण जे अरूपी जी ॥ चाल ॥ जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सयल पर ईहा टलै, निजशुद्ध सत्ता भाव प्रगटै अनुभव करुणा उछलै ॥ बहु मांन परणितवस्तु तत्वे अहव सुखकारण पणै, निज साध्य दृष्टै सरव करणी तत्वता संपति गिणै ॥ ५२ ॥

॥ ढाल ॥ शुद्धदेव गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम ॥ जेह पामीजै तेह नमीजै, सम्यग्दर्शन नांम रे ॥ भ० ५२ सि० ॥ मल उपशम क्षय उपशम जेहथी, जे होइ त्रिविध अभंग ॥ सम्यगदर्शन तेह नमीजै, जिनधरमें दृढ रंग रे

॥ भ० ५४ सि० ॥ पांच वार उपशम लहीजै, क्षयउपसमीय असंख ॥ एक वार क्षायक ते सम्यक्, दर्शन नमीइं असंख रे ॥ भ० ॥ ५५ सि० ॥ जे विण नांण प्रमाण न होवे, चारित्र तरु नवि फलियो ॥ सुख निरवांण न जेविण लहिये, समकित दरशन बलिओ रे ॥ भ० ५६ सि० ॥ सडसठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञांन चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्शन ते नित प्रणमुं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ भ० ५७ सि० ॥

॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुण, क्षयउशम जे आवै रे ॥ दर्शन ते हिज आतमा, स्युं होय नाम धरावैं रे ॥ वी० ५८ ॥ ॐ ह्रीं प० दर्शन पदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ सातवीं ज्ञानपद-पूजा ॥

दूहा ॥ सप्तम पद श्रीज्ञाननो, सिद्धचक्र तपमाह ॥ आराधिजै शुभ मनें, दिन२ अधिक उच्छाह ॥१॥ काव्य ॥ अन्नाण सम्मोहतमोहरस्स, नमोर नाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्स-

वगारगस्स, सत्ताणसव्वत्थपयासगस्स ॥ होइ जे हथीज्ञानशुद्धप्रवोधै, यथावर्णनासैविचित्राविबोधै॥ तिणंजाणीयेवस्तुपटद्रव्यभावा, नहोवेविकस्था निजेच्छास्वभावा ॥ ५६ ॥ होइ पंचमत्यादि सुग्यानभेदै, गुरुपासथीयोग्यतातेहवेदइ द ॥ वली ज्ञे यहेयाउपादेयरूपै, लहैचित्त मांझेम ध्यानै प्रदीपै ॥ ६० ॥

ढाल ॥ भव्य नमो गुण ज्ञाननें, स्वपरप्रकाशक भावै जी ॥ पर्याय धरम अनंतता, भेदाभेद स्वभावै जी ॥ चाल ॥ जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक बोधवास विलासता, मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लंछना ॥ स्याद्वादसंगी तत्वरंगी प्रथम भेद अभेदता, सवि कल्पने अविकल्प वस्तु सकल संशय छेदता ॥६१॥

॥ढाल॥ भक्ष अभक्ष न जे विण लहिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञांनते सकल आधार रे ॥ भ० ॥ ६२ सि० ॥

ज्ञांन नें पीछे अहिंसा, श्रीसिद्धातै भाख्युं ॥

ज्ञाननें वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीये शिवसुख चाख्युं रे ॥ भ० ६३ ॥सि०॥ सकल क्रियानुं मूल ते श्रद्धा, तेहनुं मूल जे कहिये ॥ तेह ज्ञांन नित२ वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये रे ॥ भ० ॥६४ सि० ॥ पांच ज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाशक तेह ॥ दीपकपर त्रिभुवन उपगारी, वलि जिम रवि शशि मेह रे ॥ भ० ॥ ६५ सि० ॥ लोक ऊरध अधतिर्यग् ज्योतिष, वैमानीकने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट सब जेहथी, ते ज्ञाने मुझ शुद्धी रे ॥ भ० ॥ ६६ ॥ सि० ॥

ढाल ॥ ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षय उपशम तसु थाये रे ॥ तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान अवाधता जायै रे ॥ वी० ॥ ६७ ॥ ॐ ह्रीं प० ज्ञानपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥

॥ अथ आठवीं चारित्रपद-पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी . ॥ पूजत अनुभवरस मिले, होय ेद ॥ १ ॥ काव्यं ॥

यस्स. नमो२ संजमवीरिअस्स ॥ सम्भावणसंग विवट्टिअस्स, निव्वाणदाणाइसमुज्जयस्स ॥ वलिज्ञानफलतेधरियेसुरंगे, निरासंसताद्वाररोधे प्रसंगे ॥ भवांभोधिसंतारणेयानतुल्यं, धरुं तेहचारित्रअप्रातमूल्यं ॥ ६८ ॥ होइं जासमहिमाथकी रंकराजा, वलिद्वादशांगीभणीहोइताजा ॥ वलिपापरूपोपिनिष्पापथायै, थईसिद्धतेकर्मनेंपार-जायै ॥ ६९ ॥

॥ चाल ॥ चारित्रगुण वलि२ नमो, तत्वरमणजसु मूलो जी ॥ पररमणीयपणो टलै, सकल सिद्धि अनुकूलो जी ॥ उल्लालो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तत्व थिरता दममयी, शुचिपरम खंति मुनींद संपद पंच संवर उपचयी ॥ सामायिकादिक भेद धरमें यथाख्याते पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्वल काम कसमल चूर्णता ॥ ७० ॥

॥ ढाल ॥ देशविरत ने सर्वविरत जे, ग्रही-निने अभिरांम ॥ ते चारित्र जगत जयवंतो,

कीजै तास प्रणाम रे ॥ भ० ॥ ७१ ॥ ॥ सि० ॥ तृण पर जे षट्खंड सुख छंडी, चक्रवर्त्त पिण वरिओ, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मन-मांहि धरिओ रे ॥ भ० ॥ ७२ ॥सि०॥ हूवा रंक पणें जे आदर, पूजत इंद-नरिंद ॥ अशरण श-रण चरण ते वारू, वरिओ ज्ञान आनंद रे ॥भ०॥ ७३ सि० ॥ बार मास पर्यायै तेहनें, अनुत्तर सुख अतिक्रमिये ॥ शुक्ल२ अभिजात्य ते उपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ भ० ७४ सि० ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नांम निरुक्ते भाख्युं, ते वंदू गुणगेह रे ॥ भ० ॥ ७५ सि० ॥

॥ ढाल ॥ जांणि चारित्र ते आतमा, निज-स्वभावमांहि रमतो रे ॥ लेस्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवने नवि भमतो रे ॥ श्री० ७६ ॥ ॐ ह्रीं प० चारित्रपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥

॥ अथ नववीं तपपद-पूजा ॥

...मकाष्ट प्रति जालवा, ५१

अगनि समांन ॥ ते नपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यांन ॥१॥ काव्यं ॥ कम्मद्दु मोन्मूलनकुंज रस्स, नमो२ तिव्वतवोवरस्स ॥ अणेगलद्धीण नीबंधणस्स, दुसज्झअत्थाणयसाहणस्स ॥ ७७ इयनवपयसीद्धी लद्धि, वीज्जासमीद्ध पयमीय सरवग्गंहींतिरेहसमग्गं ॥ दिसिवइसुरसारं खोणिपीढावयारं, तिजयविजयचक्कं सिद्धचक्कं नमा- ॥ ७८ ॥ त्रिकालिकपणें कर्मकपाय टालै, निकाचितपणें वाधिया तेह बालै ॥ कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यंतर दु भेदे, चमायुक्ति निर्हेत दुर्ध्यान छेदे ॥ ७९ ॥ होइ जास महिमाथको लब्धि सिद्धि, अवांछपणे कर्म आवरण शुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतें, होइ सिद्ध सीमंतनी जिम संकेते ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावै परम आनंद पावै, नवभव शिव जावै देव नर भवज पावै ॥ ज्ञानविमल गुण गावै सिद्धचक्र प्रभावै, सवि दुरित समावै विश्व जयकार पावै ॥ ८१ ॥

ढाल ॥ इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अ-

भ्यन्तर भेद जी ॥ आतम सत्ता एकत्वता, पर परणति उछेदे जी ॥१॥ उल्लालो ॥ उछेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुभ योग संग आहार टाली भाव अक्रियता करे ॥ अंतरमुहूरत तत्व साधे सर्व संवरता करो, निज आत्मसत्ता प्रगट भावे करो तपगुण आदरी ॥ ८२ ॥

ढाल ॥ इम नवपद गुणमंडलं, चउ निक्षेप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरै, सम्यगज्ञानें जाणे जो ॥ उल्लालो ॥ निरधारसेता गुणे गुणनो करइजे बहुमान ए, जसु करण ईहा तत्व रमणें थाये निरमल ध्यान ए ॥ इम शुद्धसत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै, अचय अनंत महंत चिदघन परम आनंदता वरे ॥ ८३ ॥

कलश ॥ इम सयल सुखकर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि लब्धिविज्जा सिद्धि मंदिर भविक पूजो मन रली ॥ उवझाय वर श्रीराजसागर ज्ञानधर्मसु ॥ दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद्र ॥

विधि-संग्रह।

प्रभातकालीन सामायिक की विधि।

दो घड़ी रात बाकी रहे तब पोषधशाला आदि एकान्त स्थानमें जा कर अगले दिन पड़िलेहन किये हुए शुद्ध वस्त्र पहिन कर गुरु न हो तो तीन नमुक्कार गिन कर स्थापनाचार्य स्थापे। बाद खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवान्' क ... यिक मुहपत्ति पडिलेहुं ?' कहे। गुरुके 'पडिलेहेह' कहनेके बाद 'इच्छं' कह कर खमासमण देकर मुहपत्तिका पडिलेहन करे। फिर खड़े रह कर खमासमण देकर 'इच्छा०' कह कर 'सामायिक संदिसाहुं ?' कहे। गुरु 'संदिसावेह' कहे तब 'इच्छं' कह कर फिर खमासमण देकर 'इच्छा०' कह कर 'सामायिक ठाउं ?' कहे। गुरुके 'ठाएह' कहनेके बाद 'इच्छं' कह कर खमासमण देकर आधा अङ्ग नवाँ कर तीन नमुक्कार गिनकर कहे कि 'इच्छाकारि भगवन् पसायकरी सामायिक दण्ड उच्चरावो जी'। तब गुरुके 'उच्चरावेमो' कहनेके बाद 'करेमि भंते समाइयं' इत्यादि सामायिक सूत्र तीन बार गुरुवचन-अनुभाषण-पूर्वक कहे। पीछे खमासमण देकर 'इच्छा०' कहकर 'इरियावहियं पडिक्कमामि ?' कहे। गुरु 'पडिक्कमह' कहे तब 'इच्छं' कहकर 'इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए' इत्यादि इरियावहिय करके एक लोगस्सका काउस्सग्ग कर तथा 'नमो अरिहंताणं' कहकर उसे पार कर प्रगट लोगस्स कहे। फिर खमासमण-पूर्वक

'इच्छा०' कहकर 'वेसणे संदिसाहुं ?' कहे। गुरु 'संदिसावेह' कहे तब फिर 'इच्छं' तथा खमासमण पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'वेसणे ठाउँ ?' कहे। और गुरु 'ठाएह' कहे तब 'इच्छं' कहकर खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'सज्झाय संदिसाहुँ ?' कहे। गुरुके 'संदिसावेह' कहनेके बाद 'इच्छं' तथा खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'सज्झाय करुं ?' कहे और गुरुके 'करेह' कहे बाद 'इच्छं' कहकर खमासमण पूर्वक खड़े-ही-खड़े आठ नमुकार गिने।

अगर सर्दी हो तो कपड़ा लेनेके लिये पूर्वोक्त रीतिसे खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'पंगुरण संदिसाहुँ ?' तथा 'पंगुरण पडिग्गाहुँ ?' क्रमशः कहे और गुरु 'संदिसावेह' तथा 'पडिग्गाहेह' कहे तब 'इच्छं' कह कर वस्त्र लेवे। सामायिक तथा पौषधमें कोई वैसा ही व्रती श्रावक वन्दन करे तो 'वंदामो' कहे और अव्रती श्रावक वन्दन करे तो 'सज्झाय करेह' कहे।

रात्रि-प्रतिक्रमण की विधि।

पहले सामायिक लेकर फिर खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'चैत्यवन्द करुँ ?' कहनेके बाद गुरु जब 'करेह' कहे तब 'इच्छं' कह कर 'जयउ सामि जयउ सामि', का 'जय [illegible]' ⊛ तक चैत्य-वन्द करे, फिर

⊛ 'जय वीराय०' की सिर्फ दो गाथ

खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह करके 'कुसुमिणदुसुमिणराइयपायच्छित्तविसोहणत्थं काउस्सग्गं करुँ ?' कहे और गुरु जब 'करेह' कहे तब 'इच्छं' कह कर 'कुसुमिणराइयपायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं' तथा 'अन्नत्थ ऊससिएणं' इत्यादि कह कर चार लोगस्सका 'चंदेसु निम्मलयरा' तक काउसग्ग करके 'नमो अरिहंताणं' पूर्वक प्रगट लोगस्स पढ़े ।

रात्रिमें मूलगुणसम्बन्धी कोई बड़ा दोष लगा हो तो 'सागरवरगम्भीरा' तक काउस्सग्ग करे। प्रतिक्रमणका समय न हुआ हो तो सज्झाय-ध्यान करे । उसका समय होते ही एक-एक खमासमण-पूर्वक "आचार्य-मिश्र, उपाध्याय मिश्र" जगम युगप्रधान वर्तमान भट्टारकका नाम और 'सर्वसाधु' कह कर सबको अलग अलग वन्दन करे । पीछे 'इच्छकारि

'सेवणाआभवमखण्डा" तक बोलनेकी परम्परा है, अधिक बोलनेकी नहीं। यह परम्परा बहुत प्रचीन है।

समस्त श्रावकोंको वंदू' कह कर घुटने टेक कर सिर नवाँ कर दोनों हाथोंसे मुंहके आगे मुह-पत्ति रख कर 'सव्वस्स वि राइय०, पढ़े, परन्तु 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, इच्छं' इतना न कहे। पीछे 'शक्रस्तव' पढ़ कर खड़े होकर 'करेमि भंते सामाइयं०, कह कर 'इच्छामि ठामि काउ-स्सग्गं जोमे राइयो०' तथा 'तस्स उत्तरी, अन्नत्थ' कह कर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करके उसको पारकर प्रगट लोगस्स कह कर 'सव्वलोए अरि-हंत चेइयाणं वंदण०' कह कर फिर एक लोगस्स का काउस्सग्ग कर तथा उसे पार कर 'पुक्खरव-दीवड्ढे' सूत्र पढ़ कर 'सुअस्स भगवओ' कह कर 'आजूणा चउपहरी रात्रिसम्बन्धी' इत्यादि आलोयणाका काउस्सग्गमें चिन्तन करे; अथवा आठ नमुक्कारका चिन्तन करे । बाद काउसग्ग पार कर 'सिद्धाणं बुद्धाणं' पढ़ कर प्रमार्जनपूर्वक बैठ कर मुहपत्ति पडिलेहण करे और दो वन्दना देवे । पीछे 'इच्छा०' कह कर 'राइयं आलोउँ?'

कहे । गुरुके 'आलोएह' कहने पर 'इच्छं' कह कर 'जोमे राइयो०' सूत्र पढ़ कर प्रथम काउस्सग्गमें चिन्तन किये हुए 'आजूणा' इत्यादि रात्रि-अति चारोंको गुरुके सामने प्रगट करे और पीछे 'सव्वस्स वि राइय' कह कर 'इच्छा०' कह कर रात्रि-अतिचारका प्रायश्चित्त मांगे । गुरुके 'पडिक्कमह' कहनेके वाद 'इच्छं' कहकर 'तस्स मिच्छामि दुक्कड़' कहे । वाद प्रमार्जन-पूर्वक आसनके ऊपर दाहिने जानूको ऊँचा कर तथा वाँये जानूको नीचा करके बैठ जाय और 'भगवन् सूत्र भणुँ ?' कहे । गुरुके 'भणह' कहने के वाद 'इच्छं' कह कर तीन-तीन या एक-एक वार नमुक्कार तथा 'करेमि भन्ते' पढ़े । वाद 'इच्छामि पडिक्कमिउं जोमें राइओ' सूत्र तथा 'वंदित्तु' सूत्र पढ़े । वाद दो वन्दना देकर 'इच्छा०' कह कर 'अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइयं खामेउं ?' कहे । वाद गुरुके 'खामेह' कहनेके वाद 'इच्छं' कह कर प्रमार्जनपूर्वक घुटने टेक कर दो

बाहू पडिलेहन कर बाँये हाथसे मुखके आगे मुहपत्ति रख कर दाहिना हाथ गुरुके सामने रख, अनन्तर शरीर नवाँ कर 'जंकिंचि अपत्तियं' कहे। बाद जब गुरु 'मिच्छा मि दुकड़' कहे तब फिरसे दो वन्दना देवे। और 'आयरिय उवज्झाए' इत्यादि तीन गाथाएँ कह कर 'करेमि भन्ते, इच्छामि ठामि, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ' कह कर काउस्सग्ग करे। उसमें वीर-कृत पाठ्मार्गी ... का चिन्तन किंवा छह लोगस्स या चौबीस नमु-क्कारका चिन्तन करे। और जो पच्चक्खाण करना हो तो मनमें उसका निश्चय करके काउ-स्सग्ग पारे तथा प्रगट लोगस्स पढ़े। फिर उकडू आसनसे बैठ कर मुहपत्ति पडिलेहन कर दो वन्दना देकर सकल तीर्थोंको नाम पूर्वक नम-स्कार करे और 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसायकरी पच्चक्खाण करना जी' कह कर गुरु या स्थापनाचार्यके सामने अथवा मुखसे प्रथम निश्चयके

पच्चक्खाए करले । वाद 'इच्छामो अणुसट्ठिं' कह कर वैठ जाय । और गुरुके एक स्तुति पढ़ जाने पर मस्तक पर अञ्जली रख कर 'नमो खमासमणाणं, नमोऽर्हत्०' पढ़े । वाद 'संसारदावानल' या 'नमोऽस्तु वर्धमानाय' या परसमयतिमिरतरणिं' की तीन स्तुतियाँ पढ़ कर 'शक्रस्तव' पढ़े । फिर खड़े होकर 'अरिहंत चेइयाणं' कह कर एक नमुक्कारका काउस्सग्ग करे । और उसको 'नमोऽर्हत्' पूर्वक पार कर एक स्तुति पढ़े । वाद 'लोगस्स, सव्वलोए' पढ़ कर एक नमुक्कारका काउस्सग्ग करके तथा पारके दूसरी स्तुति पढ़े । पीछे 'पुक्खरवरदिवड्ढे, सुअस्स भगवओ' पढ़ कर एक नमुक्कारका काउस्सग्ग पारके तीसरी स्तुति कहे । तदनन्तर 'सिद्धाणं बुद्धाणं, वेयावच्चगराणं' बोल कर एक नमुक्कारका काउस्सग्ग पारके 'नमोऽर्हत्'-पूर्वक चौथी स्तुति पढ़े । फिर 'शक्रस्तव' पढ़कर तीन खमासमण पूर्वक आचार्य तथा सर्व साधुओंको वन्दन करे ।

यहाँ तक रात्रि-प्रतिक्रमण पूरा हो जाता है। और विशेष स्थिरता हो तो उत्तर दिशाकी तरफ मुख करके सीमन्धर स्वामीका 'कम्मभूमीहिं कम्मभूमीहिं, से लेकर 'जय वीयरायय' तक संपूर्ण चैत्य-वन्दन तथा 'अरिहंत चेइयाणं०' कहे और एक नमुक्कारका काउस्सग्ग करके तथा उसको पारके सीमन्धर स्वामीकी एक स्तुति पढ़े।

अगर इससे भी अधिक स्थिरता हो तो सिद्धाचलजीका चैत्यवन्दन करके प्रतिलेखन करे। यही क्रिया अगर संपक्षेमें करनी हो तो दृष्टि-प्रतिलेखन करे और अगर विस्तारसे करनी हो तो खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कहे और मुहपत्ति-पडिलेहन, अंब-पडिलेहन, स्थापनाचार्य-पडिलेहन, उपधि-पडिलेहन तथा पौषधशालाका प्रमाजन करके कूड़े-कचरेको विधिपूर्वक एकान्त में रख दे और पीछे 'इरियावहियं' पढ़े।

सामायिक पारने की विधि।

खमासण-पूर्वक मुहपत्ति पडिलेहन करके

फिर खमासमण कहे। बाद 'इच्छा' कह कर 'समायिक पारुँ'? कहे। गुरुके 'पुणो वि कायव्वो' कहनेके बाद 'यथाशक्ति' कह कर खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'समायिक पारेमि?' कहे, जब गुरु 'आयारो न मोत्तव्वो' कहे तब 'तहत्ति' कह कर आधा अंग नवां कर खड़े-ही-खड़े तीन नमुक्कार पढ़े और पीछे घुटने टेक कर तथा सिर नवाँ कर 'भयवं दसन्नभद्दो' इत्यादि पाँच गाथाएँ पढ़े तथा 'सामायिक विधिसे लिया' इत्यादि कहे।

संध्याकालीन सामायिक की विधि।

दिनके अन्तिम प्रहरमें पौषधशाला आदि किसी एकान्त स्थानमें जाकर उस स्थानका तथा वस्त्रका पडिलेहन करे। अगर देरी होगई हो तो दृष्टि-पडिलेहन कर लेवे। फिर गुरु या स्थापनाचार्यके सामने बैठ कर भूमिका प्रमार्जन करके बाई ओर आसन रख कर खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुँ ?'

कहे। गुरुके 'पडिलेहेह' कहने पर 'इच्छं' कहकर मुहपत्ति पढ़िलेहे। फिर खमासमण पूर्वक 'इच्छा' कह कर 'सामायिक संदिसाहु', सामायिक ठाउं, इच्छं, इच्छकारि भगवन् पसायकरि दंड उच्चरावो जी, कहे। वाद तीन वार नमुक्कार, तीन वार 'करेमि भन्ते' 'सामाइयं' तथा 'इरियावहियं इत्यादि काउस्सग्ग तथा प्रगट लोगस्स तक सब विधि प्रभातके सामायिककी तरह करे। वाद नीचे बैठ कर मुहपत्तिका पडिलेहन कर दो वन्दना देकर खमासमण-पूर्वक 'इच्छकारि भगवन् पसायकरि पच्चक्खाण कराना जी' कहे। फिर गुरुके मुखसे या स्वयं किसी बड़के मुखसे दिवस चरिमंका पच्चक्खाण करे।

अगर तिविहाहार उपवास किया हो तो वन्दना न देकर सिर्फ मुहपत्ति पडिलेहन करके पच्चक्खाण कर लेवे और अगर चउव्विहाहार उपवास हो तो मुहपत्ति पडिलेहन भी न करे। वादको एक-एक खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह

कर 'सज्झाय संदिसाहु ?, सज्झाय करुं ?, तथा 'इच्छं' यह सब पूर्व की तरह क्रमशः कहे और खड़े हो कर खमासमण-पूर्वक आठ नमुक्कार गिने। फिर एक-एक खमासमण-पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'बेसणे संदिसाहुँ ?, बेसणे ठाउँ ?' तथा 'इच्छं', यह सब क्रमशः पूर्वकी तरह कहे।

इसके बाद यदि वस्त्रको जरूरत होतो उसके लिये भी एक एक खमासमण पूर्वक 'इछा० कह कर 'पंगुरण संदिसादुँ, पंगुरण पडिग्गाहुँ ? तथा 'इच्छं' यह सब पूर्वकी तरह कहकर वस्त्र ग्रहण कर ले और शुभ ध्यान में समय बितावे

दैवसिक-प्रतिक्रमण की वीधि।

पहले यथाविधि सामायिक लेवे बाद 'तीन खमासमणपूर्वक इछाकारेण संदिसह भगवन् वन्दन करूँ ? कहे। गुरूके 'करेह' कहने पर चैत्य इछं कह कर 'जय तिहुअण' 'जय महायस' कह कर 'शक्रस्तव' कहे। और 'अरिहंत चेइयाणं' इत्यादि सब पाठ पूर्वोक्त रीति से पढ़ कर काउ-

स्सग्ग आदि करके चार थूइ का देव वन्दन करे। इस के पश्चात् एक एक खमासमण दे कर आचार्य आदि को वन्दन करके 'इच्छकारि समस्त श्रवकोंको वंदू" कहे। फिर घुटने टेक कर सिर नवाँ कर 'सव्वस्स वि देवसिय' इत्यादि कहे। फिर खड़े हो कर 'करेमि भन्ते, इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसिओ०, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कहकर काउस्सग्ग करे। इस में 'आजूणा चौपहर दिवस में इत्यादि पाठ का चिन्तन करे। फिर काउस्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स पढ़ कर प्रमाजनपूर्वक बैठ कर मुहपत्ति का पडिलेहन करके दो वन्दना दे। फिर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं आलोएमि? कहे। गुरु जब 'आलोएह' कहे तब 'इछं" कह कर 'आलोएमि जो मे देवसियो०' 'आजूणा चौपहर दिवससम्बन्धी० सात लाख, अठारह पाप- कर 'सव्वस्स वि देवसिय, इच्छा- भगवन्०' तक कहे। जब

'पडिक्कमह' कहे तब 'इच्छं', मिच्छा मि दुक्कड' कहे। फिर प्रमार्जनपूर्वक बैठ कर 'भगवन् सूत्र भणुँ?' कहे। गुरु के 'भणह' कहने पर 'इच्छं' कह कर तीन-तीन या एक-एक बार नमुक्कार तथा 'करेमि भंते' पढ़े। फिर 'इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसियो०' कह कर 'वंदितु' सूत्र पढ़ें। फिर दो वन्दना देकर 'अब्भुट्ठिओमि अब्भिन्तर देवसियं खामेउं, इच्छं, जं किंचि अपत्तियं०' कह कर फिर दो वन्दना देवे और 'आयरिय उवज्झाए' कह कर 'करेमि भंते इच्छामि ठामि, तस्स उत्तरी' आदि कह कर दो लोगस्स अथवा आठ नमुक्कारका काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्सपढ़े। फिर 'सव्वलोए' कह कर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे और उसको पार कर 'पुक्खरवरदी०' सुअस्स भगवओ०' कह कर फिर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करे। तत्पश्चात् 'सिद्धाणं बुद्धाणं, सुअदेवयाए०' कह कर एक नमुक्कार का काउस्सग्ग कर तथा श्रुतदेवता की

स्तुति पढ़ कर 'खित्तदेवयाए करेमि०' कह। कर एक नमुक्कार का काउस्सग्ग करके क्षेत्रदेवता की स्तुत पढ़े। बाद खड़े हो कर एक नमुक्कार गिने और प्रमार्जनपूर्वक बैठ कर मुहपत्ति पडिलेहन कर दो वन्दना देकर 'इच्छामो अणुसट्ठिं' कह कर बैठ जाय। फिर जब गुरु एक स्तुति पढ़ ले तब मस्तक पर अञ्जली रख कर 'नमोखमासमणाणं, नमोऽर्हत्सिद्धा०' कहे। बाद श्रावक 'नमोस्तुवर्धमानाय०' की तीन स्तुतियाँ और श्राविका 'संसारदावानल०' की तीन स्तुतियाँ पढ़े। फिर 'नमुत्थणं' कह कर खमासमण पूवक 'इच्छा०' कह कर 'स्तवन भणुँ ?' कहे। बाद गुरु के 'भणह' कहने पर आसन पर बैठ कर 'नमोऽर्हसिद्धा०'पूर्वक बड़ा स्तवन बोले। पीछे एक-एक खमासमण दे कर अचार्य, उपाध्याय तथा सर्व साधु को वन्दन करे। फिर खमासमण पूर्वक 'इच्छा०' कह कर 'देवसियपायच्छित्तविसुद्धिनिमित्तंकाउस्सग्ग करुँ ?'

कह कर 'इच्छं' कहे और अर्थ चिन्तन पूर्वक मधुर स्वरसे तीन नमुक्कार पूर्वक 'वंदित्तु सूत्र' पढ़े और बाकीके सब श्रावक 'करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ' पूर्वक काउस्सग्ग करके उसको सुनें। 'वंदित्तु' सूत्र पूर्ण हो जाने के बाद 'नमो अरिहंताणं' कहकर काउस्सग्ग पारे और खड़े-हो-खड़े तीन नमुक्कार गिन कर बैठ जाय। बाद तीन नमुक्कार, तीन 'करेमि भंते पढ़ कर 'इच्छामि ठामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खियो०' कहके 'वंदित्तु सूत्र' पढ़े। बाद खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण संदिसह भगवन् 'मूलगुण-उत्तरगुण-विशुद्धि-निमित्तं काउस्सग्ग करूं ?' कहे। गुरु जब 'करेह कहे, तब 'इच्छं' करेमि भंते, इच्छामि ठामि तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कह कर पाक्षिकमें बारह, चातुर्मासिकमें बीस और सांवत्सरिकमें चालीस लोगस्सका काउस्सग्ग करे। फिर नमुक्कार-पूर्वक काउस्सग्ग पारके लोगस्स पढ़े और बैठ जाय। पीछे मुहपत्ति पडिलेहन करके

दो वन्दना दे और 'इच्छाकारेण संदिसह भग-वन् समाप्ति खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिं-तर पक्खियं खामेउं? कहे। गुरु जब 'खामेह' कहे तब 'इच्छं' खामेमि पक्खियं जं किंचि कहे। बाद 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिय खामणा खामुँ?' कहे और गुरु जब 'पुण्णवंता' तथा चार खमासमण-पूर्वक तीन नमुक्कार गिन कर 'पक्खिय-समाप्ति खामणा खामेह' कहे, तब एक खमासमण-पूर्वक तीन नमुक्कार पढ़े, इसतरह चार बार करे। गुरु के 'नित्थार-गपारगा होह' कहनेके बाद 'इच्छं, इच्छामो अणुसंट्ठि" कहे। इसके बाद गुरु जब कहे कि 'पुण्णवंतो पक्खियके निमित्त एक उपवास, दो आयंबिल, तीन निवि, चार एकासना, दो हजार सज्झाय करी एक उपवासकी पेठ पूरना*और 'पक्खिय' केस्थानमें 'देवसिय,कहना,

* चउमासियमें इससे दूना अर्थात् दो उपवास, चार आयंबिल छह निवि,आठ एकासन्न और चार हजार सज्झाय। सवच्छरियमें

तब जिन्होंने तप कर लिया हो वे 'पइट्ठिय' कहें और जिन्होंने तप न किया हो वे 'तहत्ति' कहें। पीछे दो वन्दना दे कर 'अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर देवसियं खामेउँ ?' पढ़े। बाद दो वन्दना देकर 'आयरिय उवज्झाए' पढ़े।

इसके आगे सब विधि दैवसिक-प्रतिक्रमण की तरह है। सिर्फ इतना विशेष है कि पाक्षिक आदि प्रतिक्रमणमें श्रुतदेवता, क्षेत्रदेवताके आरधनके निमित्त अलग अलग तीन बार काउस्सग्ग करे और प्रत्येक काउस्सग्गको पार कर अनुक्रमसे 'कमलदल०, ज्ञानादिगुणयुतानां० और यस्याः क्षेत्रं०' स्तुतियाँ पढ़े। इसके अनन्तर बड़ास्तवन 'अजितशान्ति' और छोटा स्तवन 'उवसग्गहरं०' पढ़े। तथा प्रतिक्रमण पूर्ण होनेके बाद गुरुसे आज्ञा ले कर 'नमोऽर्हत्०' पढ़े। फिर एक श्रावक बड़ी 'शान्ति'

उससे तिगुना अर्थात् तीन उपवास, छह आयंबिल, नौ निवि, बारह एकासना और छह हजार सज्झाया ऐसा कहते हैं।

पढ़े और वाकोके सब सुनें। जिन्होंने रात्रि-पौषध न किया हो, वे पौषध और सामायिक पार करके 'शान्ति' सुनें।

तपस्या-स्तवन और विधियें।

॥ पखवासा-तपका स्तवन ॥

सीमंधर करजो मया-ए देशी ॥

जंबुद्वीप सोहामणो, दक्षिणभरत उदार। राजग्रही नगरी भली, अलिकापुर अवतार ॥१॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी, समरंता सुख थाय। मनवंछित फल पामियै, दोहग दूर पुलाय ॥ श्री० २ ॥ राज करै तिहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम। पटराणी पद्मावती, शीलगुणें अभिराम ॥ श्री० ३ ॥ श्रावण उज्वल पूनमें, श्रीजिनवर हरिवंश। माता-कुक्षि सरोवरै, अवतरियो राय हंस ॥ श्री० ४ ॥ जेठ पढम पक्ष अट्ठमी, जायो श्रीजिनराज। जन्ममहोच्छव सुर करै, त्रिभुवन हरख न माय ॥

॥ शामल वरण सोहामणो, निरूपम

। जिनवर लंछन काछबो, वीस

तनु मान ॥ श्री० ६ ॥ परणी नार प्रभावती, भोग पुरंदर साम । राजलीला सुख भोगवै, पूरै वंछित काम ॥श्री० ७॥ तव लोकांतिक देवता, आवि जंपै जयकार । प्रभु फागुण वदि वारसै, लीधो संजम भार ॥ श्री० ८ ॥ शुभ फागुण वदि वारसै, मनधर निरमल ध्यान । च्यार करम प्रभु चूरिया, पाम्यो केवलज्ञान ॥श्री० ६॥

ढाल २ ॥ सुख कारण भवियण—ए देशी ॥

ततखिण तिहां मिलिया चलिया सुरनर कोडि, प्रभुना पदपंकज प्रणमैं वे कर जोडि ॥ वे कर जोडि मच्छर छोडी समवसरण विरतंत, माणक हेम रूपमय त्रिगडो छत्रत्रय झलकंत ॥ सिंहासण बैठा तिहां स्वामी चोविह धर्म प्रकासै, वारै परखदा वैठी आगलि सुणै मन उल्हासै ॥ १०॥ तपने अधिकारै पखवासो तप सार, पडवाथी कीजै पनरह तिथी ऊदार ॥ पनरह तिथी कीजै गुरु मुख लीजै जिस दिन हुवै उपशम, श्रीमुनिसुव्रत नाम जपीजै वांदी देव उल्लास ॥ तप

वाचक समयसुंदर इम पभणे पूरो मनह जगीस ॥ १४ ॥

पखवासा-तपकी विधि ।

पहले शुभ दिन गुरुके पास जा करके शुक्ल प्रतिपदासे पूर्णिमा तक निरन्तर १५ पनरह उपवास करे । यदि शक्ति न होतो पहले शुक्लपक्षकी एकमऔर दूसरे शुक्लपक्षको दूजका उपवास करे, इस तरह अनुक्रमसे पनरह शुक्लपक्षमें तपस्या पूर्ण करे और श्रीमुनिसुव्रत स्वामीका भावगर्भित स्तवन पढे । यदि गुरुका संयोग होतो गुरूके पास जाकर श्रवण करे । "श्रीमुनिसुव्रतस्वामी सर्वज्ञायनमः" इस पदको २००० वार गुणना करे। इसके वाद तपग्रहण विधि तथा देववंदनादिककी विधिके अनुसार विवेकी पुरुष सारी तपस्याकी विधि पूर्ण करे । संयुक्त विधि करनेसे उत्तम फलकी प्राप्ती होती है ।

दश पच्चक्खाण-तपका स्तवन ।

॥ दूहा ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं, महावीर

भगवंत। त्रिगडै बैठा जिनवरू, परषद् बार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिणसमे,पूछै श्री जिनराय। दश पच्चक्खाण किसा कह्या, कीयां कवण फल थाय ॥ २ ॥

ढाल १ ॥ सीमंधर करज्यो—ए देशी।

श्रीजिनवर इम उपदिसै, सांभल गोमय ताम। दस पच्चक्खाण कियां थकां, लहियें अविचल ठाम ॥ श्री० ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरसी २, साढपोरसी-पुरिमड्ढ ४। एकासण-नीवी कही ६, एकलठाण देवड्ढि ॥ श्री० ४ ॥ दात ८ आंबिल ६ उपवास १० ही, एहिज दस पच्चक्खाण। एहना फल सुण गोयमा, जूजूवा करूं वखाण ॥ श्री० ५ ॥ रतनप्रभा १ सकरप्रभा २, वालुक तीजी जाण। पंकप्रभा ४ तिम धूमप्रभा ५ तमप्रभा ६ तमतम ७ ठाम ॥ श्री० ६ ॥ नरक सात कही ए सही, करम कठिन करजोर। जीव करम वस ते सही, उपजै तिणहीज ठोर ॥ श्री० ७ ॥ छेदन भेदन ताडना,

भूख तृषा वलि त्रास । रोम २ पीडा करै, परमाहम्मो तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस चेत्रदेवता, तिल भर नहीं जिहां सुख ॥ किया करम जे भोगवै, पामे जीव वहु दुःख ॥ श्री० ९ ॥ इक दिनरी नवकारसी, जे करै भाव विशुद्ध । सो वरस नरकनो आउखो, दूर करै ज्ञानबुद्धि ॥ श्री ॥ १० ॥ नित्य करै नवकारसी, ते नर नरक न जाय । न रहै पाप वलि पावला, निरमल होवे जी काय ॥ श्री० ११ ॥

ढाल २ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो—ए चाल ।

सुण गौतम पोरसी कियां, महा मोटो फल होय । भावसुं जे पोरसी करै, दुरगति छेदै सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांहि जे नारकी, वरसें एक हजार । करम खपावै नरकमें, करता वहुत पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करै इकतार । करम हणं सहस एकना, निहचैसुं गणधार ॥ सु० १४॥ दरगति मांहे नारकी, दस हजार प्रमाण । नरक

आयु खिण एकमें, साढपोरसी करै हाण॥ सु० १५॥ पुरिमड्ढ करै नित जीव जे, नरके ते नवि जाय। लाख वरस करमनें दहै, पुरिमड्ढ करम खपाय॥सु० १६॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनंत। इतरा करम एकासणें, दूर करै मन खंत॥ सु० १७॥ एक कोडि वरसां लगै, करम खपावै जीव। नीवीय करतां भावसूं, दुरगति हणै सदीव॥ सु० १८॥ दस कोडि जीव नरकमें, जितरो करै करम दूर। तीतरो एकलठाणाही, करै सही चकचूर॥ सु० १९॥ दात करंता प्राणियो, सो कोडी परिमाण। इतरा वरस दुरगति तणा, छेदै चतुरसुजाण॥ सु० २०॥ आंबिलनो फल वहु कह्यो, कोडी एक हजार। करम खपाव इण परै, भाव आंबिल अधिकार॥ सु० २१॥ कोडि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मझार। उपवास करै इक भावसुं, तो पामे मुगति मझार॥ सु० ॥ २२॥ ॥

॥ ढाल ३॥ केकइ वर लाधो-ए देशी॥

लाख कोडि वरसां लगे, नरके करता रीव रे।

गौतम गणधारी अट्ठम तप करतां थकां, सही नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोडि लाखही, जीव लहे तिहां दुस्करे । ते दुःख अट्ठम तपहुंती, दूर करी पामे सुख रे ॥ गो० २४ च्छेदन भेदन नारकी, कोडाकोडि वरसोइ रे । कुगति कुमतिनें परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो० २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोडा कोडि वरसनो पाप रे । दूर करै खिण एकमें, निश्चै होय निः पाप रे ॥ गो० २६ ॥ वलिय विशेषे फल कह्यो, पांचम करै उपवास रे ॥ पामे ग्यान पांचे भला, करता त्रिभुवन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिसुं करै, चवदह पूरव होय धार रे । इम अनेक फल तपतणा, कहतां वलि नावै पार रे ॥ गो ० २८ ॥ मन वचने काया करी, तप करै जे नर नार रे ॥ इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहै भव पार रे ॥ गो० २९ आठम तप आराधतां, जीव न फिरै संसार रे ॥ ... भवना पापथा, छूटै, जीव निरधार रे ॥

गो ३०॥ तपहुंती पापी तस्या, निसतरियो अरजुन-माल रे। तपहुंती दिन एकमें, शिव पाम्यो गज-सुकमाल रे॥ गो० ३१॥ तपना फल सूत्रे कह्या, पच्चक्खाणतणा दस भेद रे। अवर भेद पिण छै घणा, करतां छेदे त्रय वेद रे॥ गो० ३२॥

(कलशः)॥ पच्चक्खाण दस विध फल प्ररुप्या महावीर जिणदेव ए, जे करै भविअण तप अखं-डित तासु सुर पय सेव ए। संवत निधि गुण अश्व शशि वलि पोस सुदि दशमी दिने, पदम-रंग वाचक शीस गणिवर रामचन्द्र तपविधि भणे॥३३॥ इति दस पच्चक्खाण वृद्ध स्तवनम्॥

दश पच्चक्खाण तप विधि।

महावीर स्वामीके उपदेशासार शास्त्र कारोंने जिसतरह अन्यान्य तपस्याओंके करनेका फल समझाया है, उसीतरह दश पच्चक्खाण तपके महात्म्यका फलभी बतलाया है। अतएव धर्मा-नुरागी श्रावक और श्राविकाओंके लिये यह तप करनाभी लाभदायक है। जो सज्जन "दश पच्च-

क्खाण" का तप करना चाहें, वे पहले दिन नवकारसी, दुसरे दिन पोरसी, इस तरह क्रमशः स्तवनमें वतलाये अनुसार दस दिन तक दसों पच्चक्खाण करें। साथही स्तवनको भी पढ़ें या श्रवण करें। और दस दिन पूरे हो जानेपर अपनी शक्तिके अनुसार उजमणा करवावें। इस तपस्याके करने वालेको दुर्गतिका नाश होकर उत्तम गतीकी प्राप्ती होती है। महान ऐश्वर्य शाली और भाग्यवान होता है।

वीश स्थानक-तपका स्तवन।

श्री सिद्धाचल भेटियै—ए देशी॥

वीस थानक तप सेवियै, धर कर शुभ परिणाम लाल रे। तीजै भव सेव्यो थको, बांधे तीर्थंकर नाम लाल रे॥वी० १॥ तप रचना अधिकी कही, ज्ञाताअंग मझार लालरे। सुणजो भवि तुमे भावसुं, चित्तसें करिय उच्चार लाल रे॥वी० २॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहे, वीस थानक तप एह ---- रे। निरदूपण शुभ महुरते, उचरीजे सस-

नेह लाल रे ॥वी० ३॥ अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन नमुं ३, सूरि ४ थिवर ५ उवझाय ६ लाल रे। साधु ७ नाण ८ दंसण अरु, विनय १० नमुं उलसाय लाल रे ॥ वी० ४ ॥ चारित्र ११ वंभ १२ क्रियापदे १३, तप १४ गोयम १५ जिण १६ इस लाल रे। चारित्र १७ ज्ञानने १८ श्रुत भणी १९, नमूं तीर्थ २० पद वीश लाल रे ॥ वी० ५॥ वीस दिवसमें ए कहो, पद गुणनो कर मेव लाल रे। अथवा दिन विसा लगै, वीसे पद गुण मेव लाल रे ॥वी० ६॥ एक ओली षट मास में, पूरी जो नवि होय लाल रे। केर नवी करणी पड़ै, पिछलो निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥ छठ अट्ठम उपवाससुं, अथवा देखी शक्ति लाल रे। पोसह कर आराधियै, देव वांदै निज भक्ति लाल रे ॥ वी० ८॥ संपूरणपद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे। तोही सात पदै सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥वी०९॥ ...री थिवर पाठक पदै, साधु चारित्र सुजाण

लालर । गौतम तीर्थपदे सही, सात थानक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद २ दिठ करें सदा, दोय २ जाप हजार लालरे । पड़िकमणो दोय टंकही, करिये पूजा सार लाल रे । शक्ति मुजब तप कीजियें, एक ओली करो वीस लालरे। वीसावीसी च्यारसै, तप संख्या कही एम लाल रे ॥ वी० १२ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित्त धार लाल रे । काउसग्गने पर दचणा, मुख भणिये नवकार लाल रे ॥ वी० १३॥ जिस पदकी स्तवना सुणें, कीजै जिनपद भक्ति लाल रे । पूजन शुभ मन साचवै, दिन २ वढ़ती शक्ति लाल रे ॥ वी० १४ ॥ मृतक जनम ऋतु कालमें, कवि धार्‍यो उपवास लाल रे । सो लेखे नहिं लेखवो, निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी० १५ ॥ सावज त्यागपणो करै, शोक न धारे चित्त लाल रे । शील आभूषण आदरै, मुखसुं वाले सत्य लाल रे ॥ वी० १६ ॥ जेठ आसाढ़ वैशाखमें, मिगसर फागुण मांहे लाल रे । ए पट्

मासे मांहिनें, व्रत ग्रहिये वड़भाग लाल रे ॥ वी० १७ ॥ तप पूरण हुवां थकां, उजमणो निरधार लाल रे । कीजै शक्ति विचारीनें, उच्छव विविध प्रकार लाल रे ॥वी०१८॥ वीस-वीस गिणती तणा, पुस्तक पूठा आदि लाल रे । ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजै हठवाद लाल रे ॥वी० १९ ॥ फल-वधी नगरनी श्राविका, कीधी विध चित लाय लालरे । जनम सफल करवा भणी, ओहिज मोक्ष उपाय लाल रे ॥ वी० २० ॥

कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आज्ञा धार चित्त मझार ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंद्र वरसै चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी शशि गच्छ खरतर भणी स्तवना मनहरू ॥ २१ ॥ इति ॥

वीस स्थानक-तप की विधि ।

यह तपस्या आराधन करनेके पहले शुभ दिन और शुभ मुहूर्तके समय नन्दी स्थापन करके सुविहित गुरुके पास विधि ... ानक

तपकी ओली उच्चरे । एक ओली दो माससे छह मास पर्यंत पूरी करे। यदि छह मासकी अवधिमें एक ओली पूरी न कर पाये तो वह ओलो फिरसे करनी पड़ती है; यानि तपस्वीने जो व्रत-पच्चक्खाण कर लिये हैं, वह उस ओलीकी संख्यामें नहीं लिये जाते; अर्थात् ओलीकी तपस्या फिरसे आरंभ करनी पड़ती है।

एक ओलीके वीस पद होते हैं, उन वीसों पदोंकी क्रमशः अराधना करनी पड़ती है। इस लिये जो तपस्वी शक्ति-सम्पन्न होता है, वह तो वीस दिनमें वीसों पदोंकी अराधना कर डालता है। और जो शक्ति-सम्पन्न नहीं होता है, वह वीस दिनमें केवल एक पदकी अराधना करता है, इस तरह क्रमशः वीस-वीस दिनमें एक-एक पदकी अराधना करके वीसों ओलीकी तपस्या पूरी करता है।

शास्त्रकारका कथन है, कि पदाराधन करने के दिन यदि शक्ति होतो अट्ठम व्रत करके तपा-

राधन आरंभ करे। क्रमशः वीस अट्ठम-व्रत कर लेनेपर एक ओली पूरी होती है। इस तरह ४०० चार सौ अट्ठम व्रत हो जानेसे वीस ओलीकी आराधना पूरी हो जायगी। यदि तपस्वीमें अट्ठम व्रतसे आराधन करनेकी शक्ति न होतो छट्ठ-व्रत करके आरंभ करे। छट्ठसे होनेकी शक्ति न हो तो उपवास द्वारा करे। उपवाससे भी करनेकी शक्ति न हो तो आयंबिल या एकासण द्वारा ही तपाराधन करना आरंभ करे। उस समय शक्ति हो तो अष्टप्रहरी पौषध करे, यदि अष्टप्रहरी पौषध करनेकी शक्ति न हो तो दैवसिक-पौषध करे। जहां तक हो सके समस्त पदोंकी अराधना पौषध-पूर्वक करे। यदि सभी पदाराधनमें पौषध न कर सके तो आचार्य, उपाध्याय, थिवर, साधु, चारित्र, गौतम और तीर्थ इन सात पदोंके अराधनके समय अवश्य ही पौषधव्रत करे। फिर भी पौषध करनेकी शक्ति न हो तो देशावगासी-व्रत करे। इ[illegible] भी शक्ति न हो तो यथा

शक्ति जो व्रत हो सके वही करे, और सावद्य व्यापारका त्याग करे ।

तपस्वीको यहाँपर इस बातका खयाल रखना चाहिये कि जन्म-मरणादिकके सूतकके समयकी तपस्यायें ओलीकी संख्यामें नहीं ली जाती, इसलिये किसी तरहके सुतकके समय कोई तपस्या को हो तो उसे ओलीकी संख्यामें न लेवे, स्त्रियोंके लिये ऋतु कालकी तपस्या भी वर्जनीय है, अतः स्त्रियोंको इस बातका खयाल जरूर रखना चाहिये ।

तपस्या करते समय ऊपर कहे अनुसार पौषध आदि कोई भी धार्मिक क्रिया करनेका कहा है; पर उनमेंसे कोई भी क्रिया न हो सके तो तपस्याके दिन दो वार प्रतिक्रमण करे, और तीन वार देव-वन्दन किया करे । समस्त तपस्यायें करते समय ब्रम्हचर्यका सेवन रखे। जमीन पर सोवे । तपस्याराधन करके किसी तरहका सावद्य व्यापार न करे। असत्य-भूठ न

बोले। सारा दिन तपस्याकी गुणावलीके वर्णनमें व्यतीत करे। पारण करनेके दिन देव-दर्शन-पूजन करके यति-मुनिको अहार दे कर बाद पारण करे।

अन्तमें किसी तरहको धार्मिक क्रिया न कर सके तो देव-पूजन, अंग-रचना करवा कर मन्दिरमें गाना-बजाना करे। और शुभ भावना भावे। तपस्याके पदके अनुसार गुण-भेद संख्या-प्रमाणसे काउसग्ग करे। तपस्याके गुणोंको स्मरण कर उतने ही खमासमण दे कर वन्दना करे। बाद तपस्याके गुणोंकी उदात्त स्वरसे स्तवना करे, और प्रसन्न-चित्त रहे।

वीस स्थानक-गुणना और काउसग्ग प्रमाण।

(१) "णमो अरिहंताणं" इस पदकी २० वीस माला गिन कर १२ बारह लोगस्सका काउसग्ग करे। (२) "णमो सिद्धाणं" इस पदकी वीस माला गिन कर १५ पनरह लोगस्सका काउसग्ग करे। (३) "णमो पवय-

णस्स" इस पदकी वीस माला गिन कर ७ सात लागस्सका काउसग्ग करे। (४) "णमो आयरियाणं" इस पदकी वीस माला गिन कर ३६ छत्तीस लोगस्सका काउसग्ग करे। (५) "णमो थेराणं" इस पदकी वीस माला गिन कर १५ पनरह लोगस्सका काउसग्ग करे। (६) "णमो उवज्झायाणं" इस पदकी वीस माला गिनकर २५ पचीस लोगस्सका काउसग्ग करे। (७) "णमो लोए सव्व साहूणं" इस पदकी वीस माला गिनकर २७ सत्ताईस लोगस्सका काउसग्ग करे। (८) "णमो नाणस्स" इस पदको वीस माला गिनकर ५ पाँच लोगस्सका काउसग्ग करे। (९) "णमो दंसणस्स" इस पदकी वीस माला गिन कर १७ सतरह लोगस्सका काउसग्ग करे, (१०) "णमो विणयसंपराणाणं" इस पदकी वीस माला गिनकर १० दस लोगस्सका काउसग्ग [illegible]। (११) "णमो चारित्तस" इस पदकी

वीस माला गिनकर ६ छह लोगस्सका काउस्सग्ग करे। (१२) "णमो बंभव्वय धारीणं" इस पदको वीस माला गिनकर ९ नौ लोगस्सका काउसग्ग करे, (१३) "णमो किरिआणं" इस पदको वीस माला गिनकर २५ पच्चीस लोगस्सका काउसग्ग करे। (१४) "णमो तवस्सीणं" इस पदकी वीस माला गिनकर १५ पनरह लोगस्सका काउसग्ग करे, (१५) "णमो गोयमस्स" इस पदकी वीस माला गिनकर १७ सतरह लोगस्सका काउसग्ग करे। (१६) "णमो जिणाणं" इस पदको वीस माला गिनकर १० दस लोगस्सका काउसग्ग करे। (१७) "णमो चरणस्स" इस पदको वीस माला गिनकर १२ बारह लोगस्सका काउसग्ग करे। (१८) "णमो नाणस्स" इस पदकी वीस माला गिनकर ५ पाँच लोगस्सका काउसग्ग करे। (१९) "णमो सुअ नाणस्स" इस पदको वीस माला गिनकर १० दस लोगस्सका काउसग्ग करे।

जाय, जिणे ए मनमें सुख पामे ॥ २ ॥ रोहिणी नामे कन्यका ए, सबकुं सुखकारी, आठां पूत्रां ऊपरां ए तिण लागै प्यारी ॥ बाधै, चंद्रतणी कला ए जिम पख उजवाले, तिम ते कुमरी धाय माय पांचै प्रतिपालै ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूवडी ए घर अंगण बेठो, दीठी राजा खेलतो ए तिण चिन्ता पैठो ॥ तीन भुवन विच एहवी ए नही दूजी नारी, रंभा पउमा गवर गंग इण आगल हारी ॥४॥ पुरुष न दीसै कोइ इसो जिणनें परणाउं, आंख्या आगल साल वधै तिण चयन न पाउं ॥ देश-देश ना राजवी ए ततखिण तेडाया, सबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक राजातणो ए छै कुमर सोभागी, कन्याकेरी आंखडो ए तिणसेती लागी ॥ ऊभा देखै सकल लोक चढिया केइ पाला, चित्रसेनरे कंठ ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अनै देवांगना ए जपै जैजैकार, रलियायत थयो देखने सारो संसार ॥ कर जोडी कहै लोक वखत

कन्यारो जाडो, वीतशाकनो कुमर थयो सिर ऊपर लाडो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो भलो ए दीया दान अपार, घर आया परणी करी ए हरख्यो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र भणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस लीधो ॥ ८ ॥

ढाल—प्रभु प्रणमुं रे पास जिणेसर थंभणो—ए देशी ॥ तिण नगरी रे चित्र-शेन राजा थयो, सुख मांही रे केतलो काल वही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हूवा भला, चढते पख रे चन्द्र जिसी चढती कला ॥ (उल्लाः लो) चढती कला हिव राय वैठो पास बैठी रो-हणी, सातमी भूमी कंतसेती करै क्रीडा अतिघ-णी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो, पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ६ ॥ (चाल) इक कामण रे गोख चढी द्रष्टे पडी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे खडी ॥ ... रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज

रे तिण अधिकेरो दुख हुओ ॥ (उल्लालो) दुख हुवो देखी रोहिणी हिव कहे इम प्रीतम भणी, ए नार नाचै अनै कूदै कहो किम मोटा धणी ॥ एहवो नाटक आज तांइ में कदे देख्यो नही, मुझने तमासो अने हासो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ (चाल) इण वचनै रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीडा नवि लहै ॥ एदुखणी रे पूत्र मुओ तड पड करै, जव वीतेरे वेदना जाणीजै तरै, ॥ (उल्लालो) जाणै तरै तूं वात दुखनी गरवगहली कामिनी, इम कही राजा हाथ झाल्यो तेहना वालकभणी ॥ सातमा भूंयथी तलै नाख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पुत्र नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ (चाल) हिव राजा रे पुत्रतणै शोकै करी, थयो मुरछित रे रोवै अति आंख्या भरी ॥ पडतो सुत रे सासणदेवत झालियो, कंचनमय रे सिंहासण वैसारियो ॥ (उल्लालो) वैसारियो कर जोड आगै रे नाटक देवता, गोदे खिलावै केइ हसावै

पायपंकज सेवता ॥ ऊपनो भूपतने अचंभो देख ए कारण किसो, जो कोइ ग्यानी गुरु पधारै पुछियै सांसो इसो ॥ १२ ॥ (चाल) चिन्तवतां रे चारतिया आया जिसै, राजा पिण रे पुहतो वंदणने तिसे ॥ सुण देशना रे पूछे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी रे पूरवभव बालकतणो ॥ (उल्लालो) बालकतणो भव भूप पूछै कहे इण पर केवलि, रोहणी राणीनो भवांतर अने राजा नो वली ॥ श्रीगुरु पासे पाछले भव रोहणी तप आदर्यो, तपतणे सगते साधुभगते तुम्म भवसायर तर्यो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजा रे रोहणितप किम कीजियै, विधि भाखो रे जिम तुम पासे लीजीयै ॥ तव मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन राजाभणी ॥ (उल्लालो) राजाभणी विधि एह जंपै चन्द्र रोहणतप आवियै, उपवास कीजै लाभ लीजै भली भावना भावियै ॥ बारमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा लगे कीजै तजी आलस अंगसुं ॥ १४॥

ढाल—वीर सुणा मोरी वीनती—ए देशी ॥

तप करिये रोहणितणो, वलि करिये हो ऊजमणो एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥ त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजै वृत्त अशोक ॥ गुणनो वारम जिनतणो, भला नेवज हो धरिये सहु थोक ॥ त० ॥ १६ ॥ केशर चन्दन चरचिये, कीजै आगे हो आठे मंगलीक ॥ विधसु पुस्तक पूजिये, ते पामे हो शिवपुर तहतीक ॥त० १७॥ सेवा कीजै साधुनी, वलि दीजे हो मुंह माग्या दान ॥ संतोषीजै साहमी, मनरंगे हो कर२ पकवान ॥ त० १८ ॥ पाटी पोथी पूंछना, मिस्र लेखण हो झिलमिल सुजगीस, नवकरवाली वोटणा, गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ त० १९ ॥ चोथो व्रत पिण तिण दिने, इम पाले हो मन आण विवेक ॥ इण विध रोहणि आदरै, ते पामे हो आनंद अनेक ॥ त० २० ॥

ढाल—धरम करो जिनवर तणो—ए देशी ॥

इम महिमा रोहणतणी, श्रीग्यानी गुरु परकासे रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, वासुपूज्य तीर्थंकर पासे रे ॥इ० २१॥ इण परि रोहण आदरी, ऊपर ऊजमणो कीधो रे ॥ चित्रसेनने रोहणी, मन सूधे संजम लीधो रे ॥ इ० २२ ॥ आठे पूत्रे आदरी, दिख्या वारम जिन आगे रे ॥ वलि नानाविध तप तपे, धरमतणी मति जागे रे ॥ इ० २३ ॥ करि अणसण आराधना, लहि केवल शिवपद पाया रे ॥ जिन वाणी आणी हिये, प्रभु चरणां चित लाया रे ॥ इ० २४ ॥ मनमोहन महिमा नीलो, में तवियो शिवपुरगामी रे ॥ मन मान्या साहिवतणी, हिव पुन्ये सेवा पामी रे ॥ इ० २५ (कलश) ॥ इम गगन दुग मुनि चन्द्र वरसे (१७२०) चोथ श्रावण सुदि भली ॥ में कही रोहणतणी महिमा सुगुरु मुख जिम सांभली ॥ वासुपूज्य अमने थया सुप्रशन चित्तनी चिन्ता टली, श्रीसार जिनगुण गावतां हिव सकल मन आस्या फली ॥२८॥ इति रोहणी-तप स्तवनम् ॥

रोहिणी-तपकी विधि।

जिस तपस्वीको रोहिणी-तपकी तपस्या करनेकी इच्छा हो वह पहले शुभ दिन और शुभ समय देख कर गुरुके पास जा कर वन्दना व्यवहार करके विनय-पूर्वक रोहिणी-तप ग्रहण करे। बाद जिस दिन रोहिणी नक्षत्र हो, उस दिन उपवास करके वारहवें वासुपूज्य स्वामीको पूजा-अर्चना करे। अष्ट मंगलिककी रचना कर अष्ट द्रव्य चढ़ावे। देव-वन्दनादिक धार्मिक क्रियायें करके गुरुके मुखसे धर्मोपदेश श्रवण करे। यदि गुरुका संयोग न हो तो इस विधिके पहले जो रोहिणी-तपका स्तवन दिया गया है, उसे शान्ति-पूर्वक पढ़े, या किसी साधर्मिक भाईसे श्रवण करे। और "श्री वासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञाय नमः" इस पदको २००० दो हजार वार गिने; यानि इस पदकी वीस मालायें गिने। इस तरह विधि-पूर्वक सात वर्ष पर्यन्त रोहिणी-तपकी आराधना कर लेनेसे तपस्वीकी मनोकामना पूर्ण हो जाती

है, यदि तपस्वीको पुत्र पानेकी इच्छा हो तो वह भी इस तपके आराधनसे पूरी हो जाती है और उसके सुख-सौभाग्यकी वृद्धि होती है।

छम्मासी-तप का स्तवन।

गौतमस्वामी रे बुध दो निरमली, आपो करिय पसाय। महावीरस्वामी जे जे तप किया, तेहनो कहिसुं विचार॥ वलि-वली वांदु वीरजी सुहामणा ॥१॥ भावठ भंजण सेव्यां सुख करै, गातां नव निधि थाय। बारे वरसां वीरजी तप कियो, दूर करै सहु पाप ॥व०॥२॥ बे कर जोड़ीए हं वीनवूं, श्रीजिनशासन राय। नाम लियां थी नव निधि संपजै, दारिद्रण दुरित पुलाय॥ व०॥३॥ नव चौमासा जिनजीरा जाणियै, एक कियो छरमास। पांचे उणा छ दली जाणि यै, बारकेकोजोमाश ॥व०॥४॥ बहुत्तर माशखमण जग जोपता, छ दो मासो रे जाण। तीन अढ़ाई दो दो कीया, दो दोढ माशी वखाण ॥व०॥५॥ भद्र महाभद्र शिवगति जाणियें, उत्तम एहना

प्रकार । बीचमें पारणो स्वामी नहि कियो, नहि कियो चोथो आहार ॥ व० ॥ ६ ॥ तिहुं उपवासे प्रतिमा बारमी, कीधा बारे जी मास । दोयसें बेला जिनजीरा जाणिये, इण गुण तीस विलास॥ व०॥७॥ तीनसे पारणा जिनजीरा जाणियै, तीन गुणतीस पचास । एहमें स्वामी केवल पामिया, पाम्या मुगति आवास ॥ व० ॥८॥ कलश ॥ इम वीर जिनवर सयल सुखकर अतहि दुक्कर तप करी, संयमसु पाली कर्म टाली स्वामी शिव रमणी वरी । सेवक पभणें वीर जिनवर चरण वंदित तुमतणा, संसार कूप पडंत राखो आपो स्वामी सुख घणा ॥ ७ ॥ इति छम्मासी तप स्तवनम् ॥

छहमासी-तपकी विधिः ।

जिस तरह शासन-नायक भगवान महावीर स्वामीने छह मासी तपकी उत्कृष्ट तपस्या की थी, उस तरह तो इस समय होना कठिन है, कारण वैसा बल-पराक्रम इस समय नहीं रहा। तथापि १८० एक सौ अस्सी उपवासोंके

करने पर जघन्य छह मासी-तपका फल प्राप्त होता है, अतः तपस्वीको चाहिये कि समयानुसार १८० उपवास करके यह तपस्या पूर्ण करे। तपस्याके दिन देव-वन्दनादिक धार्मिक क्रियायें करे। और जो इस विधिके पहले छह मासी तपका स्तवन दिया है, उसे मनन-पूर्वक पढ़े। यदि स्वयं न पढ़ सकता हो तो दूसरें किसीसे श्रवण करे। साथही तपस्याके दिन "श्री महावीर स्वामी नाथाय नमः" इस पदको २००० दो हजार वार गिने, यानि इस पदकी २० वीस माला गिने। तपस्या पूर्ण कर लेनेके बाद जहां पर महावीर स्वामीका तीर्थ हो--पावापुरी, क्षत्रियकुण्ड आदि जा कर यात्रा कर आये। शक्तिके अनुसार छोटा-बड़ा उजमणा भी करे। इस तपस्याके फलसे लघु-कर्मी होकर अक्षय-सुख संपत्तिको लाभ करता है।

बारहमासी-तप का स्तवन।

दान उल्लटधरी दीजीयै—ए देशी॥ त्रिभुवन नायक तूं धणी, आदि जिनेसर देव रे।

चोसठ इंद्र करं सदा, तुझ पदपंकज सेव रे॥ त्रिभु० ॥१॥ प्रथम भूपाल प्रभु तूं थयो, इण अवसरपणी काल रे। तुझ सम अवर न को प्रभु, तूं प्रभु दीनदयाल रे॥त्रि० ॥२॥ प्रथम तीर्थंकर तूं सहो, केवलज्ञान दिणंद रे। धर्म प्रज्ञापक प्रथम तू, तूंहो है प्रथम जिनंद रे॥ त्रि० ॥३॥ अंतर अरि जे आतमतणा, काल अनादि थिति जेह रे। ते तप शक्तिये तें हणवा, आतम वीरज गुण गेह रे॥ त्रि० ॥४॥ ताहरी शक्ति कुण कह सके,जेहनो अंत न पार रे। द्वादश मासनो तप कर्यो, तेह अपानक सार रे॥ त्रि० ॥ ५ ॥ एह उत्कृष्ट तप वरणव्यो, आगममें जिनराज रे। ते करवूं अति आकरुं, तप विना किम सरे काज रे ॥त्रि०॥६॥ तीनसै साठ उपवास ते, ते इण पंचम काल रे। अवसर आदरै क्रम विना, ते दिए भवि सुविशाल रे॥ त्रि० ॥७॥ ए तप गुरुमुख आदरै, शास्त्र तणे अनुसार रे। पडिक्कमणादिक भावथी, शुद्ध क्रिया मन धार रे॥ त्रि० ॥८॥ चित्त समाधि

शुभ भावथी, धरे ताहरो ध्यान रे । ते नर उत्तम फल लहै, कवि लहै उत्तम थान रे ॥ त्रि० ॥९॥ काल अनादि संसारमे, जन्म मरणतणा दुःख रे। ते लहे धर्म पाया विना, तप विना किम हुवै सुख रे ॥ त्रि० ॥१०॥ हिव लह्यो नरभव पुण्यथी, वलि लह्यो श्रीजिन धर्म रे । तत्त्वनो रुचि थइ हे मुझे, हिव मिट्यो मनतणो भर्म रे ॥ त्रि० ॥११॥ भव-भव एक जिनराजनो, सरण होज्यो सुखकार रे। कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, में कियो हिवै परि-हार रे ॥त्रि० ॥१२॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, मोक्ष-मारग सुविशाल रे । भव-भव जे मुझ संपजै, तो फलै मंगलमाल रे ॥ त्रि० ॥१३॥ श्रीजिनशासन तप कह्यो, ते तप सुरतरू कंद रे। धन-धन जे नर आदरै, काटै ते करमनो फंद रे ॥त्रि०॥ १४॥ कलश ॥ इम नाभिनंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो, में थुण्यो धन दिन आजनो मुझ मात मरुदेवी नंदनो । संवत सुनेत्राकास निधि शशि नयर श्रीबालूचरै, श्रीजिनसौभाग्य सुरिन्दके सुपसाय विजय विमल धरै ॥ १५ ॥ इति ॥

बारह मासी-तपकी विधि ।

आदि तीर्थंकर श्री ऋषभदेव स्वामीने बारह मासी व्रतकी उत्कृष्ट तपस्या की थी, इसलिये तपस्या करनेवालेको चाहिये कि बारह मासी तपस्या भी जरूर करे। तपस्या करनेवालेको इस व्रतके ३६० तीन सौ साठ उपवास करने पड़ते हैं। वह क्रमशः अपनी इच्छाके अनुसार करे। तपस्याके दिन उपवासादि व्रत करके धार्मिक क्रियायें करे, और बारह मासी तपका स्तवन जो इस विधिके पूर्वमें दिया है, उसे श्रद्धा-पूर्वक पढ़े या किसीसे श्रवण करे। साथ ही तपस्याके दिन "श्री ऋषभ देव स्वामी नाथाय नमः" इस पद को २००० दो हजार बार गिने, अर्थात् २० वीस माला गिने। तपस्या पूरी कर लेने पर यथाशक्ति उजमणा करे। बाद सिद्धक्षेत्र या केसरियाजी तीर्थकी यात्रा कर आये। इस तपस्याके महात्म्यसे तपस्वी किसी तरहके कष्ट नहीं पाता, और वह अपना सारा जीवन आनन्दकी लहरोंमें

अवगाहन करता हुआ व्यतीत करता है। इस तपश्चर्याके प्रभावसे रोग, शोक, भय आदि कोई भी दुख नहीं आने पाते। इसलिये तपस्या करने वालेको यह तपस्या अवश्य ही करनी चाहिये।

॥ अट्ठाईस लब्धि-तपका स्तवन ॥

दुहा ॥ प्रणमुं प्रथम जिनेसरू, शुद्ध मने सुखकार। लवधि अट्ठावीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्नव्याकरणें प्रगट, भगवतीसूत्र मझार। पन्नवणा आवश्यके, वारू लवधि विचार ॥ २ ॥ आंबिल तप कर ऊपजै, लवधां अट्ठावीस। ए हिव परगट अरथसुं, सांभलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥

ढाल ॥ १ ॥ सफल संसारनी-एदेशी ॥ अनुक्रमें एह अधिकार गाथातणे, लवधिना नाम परिणाम सरिपा भणे। रोग सहुजाय जसु अंग फरस्यां सही, प्रथम ते लवधि छे नाम आमोसही ॥४॥ जासु मल मूत्र औषध समा जाणियें, बीय वप्पोसही लवधि ।

श्लेष्म औषध सारिखो जेहना, तीजो खेल्ला-सही नाम छै तेहनो ॥ ५ ॥ देहना मैलथी कोढ दूरे हुवै, चोथो जल्लोसही नाम तेहनो ठवै। केश नख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहै नहीं रोग सव्वोसही ते कही ॥ ६ ॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रियतणा, भेद जाणे तिका नाम संभि-श्रोतणा। वस्तु रूपी सहू जाणिये जिण करी, सातमी लवधि ते अवधिग्याने करी ॥ ७ ॥

ढाल ॥ २ ॥ आठमो तिहां नरहर-ए एचाल ॥

हिव आंगुल अढियै ऊणो मानुषक्षेत्र, संज्ञा पंचेंद्रि तिहां जे वसय विचित्र। तसु मननो चिन्तित जाणे थुल प्रकार, ते ऋजुमति नामे अष्टम लवधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुषक्षेत्रे संज्ञा वंत, पंचेंद्रिय जे छै तसु मन वातां तंत। सूखम परजायें जाणे सहू परिणाम, ए नवमी कहियै विपुलमती शुभ नाम ॥ ६ ॥ जिण लवधि प्रभावें ऊडी जाय आकाश, ते जंघाविज्जाचा-रण लवधि प्रकाश।

खेरु थाय, ए लवधि इग्यारमी आसोविश कहिवाय॥ १० ॥ सहु सूखम वादर देखै लोकालोक, ते केवल लवधी वारमियै सहू थोक। गणधर पद लहियै तेरम लवधि प्रमाण, चवदम लवधे करी चवदै पूरव जाण ॥ ११ ॥ तीर्थंकर पदवी पामे पनरमी लवधि, सोलम सुखदाई चक्रवत्ति पद रिद्ध। वलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अढ़ारमी आखा वासुदेव विस्तार ॥ १२ ॥ मिसरी घृत खीरै मेल्या जेह सवाद, एहवी लहै वाणी उगणीशम परसाद। भणियो नवि भूलै सूत्र अरथ सुविचार, ते कुप्ट कबुद्धी वीसम लवधि विचार ॥ १३ ॥ एके पद भणियां आवे पद लख कोड, इकवीसमी लवधी पयाणुसारणी जोड। एके अरथे करी ऊपजे अरथ अनेक, वावीसम कहियै वीजवुद्धि सुविवेक ॥ १४ ॥

ढाल ॥ ३ ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे

सोलह देशतणी सही रे, द...

वखाण । तेह लबधि तेवीसमी रे, तेजोलेश्या जाण, चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार, आगमने अधिकार ॥ च० ॥ वारू लबधि विचार ॥ च० ॥ एआंकणी ॥ १५ ॥ चवद पूरवधर मुनिवरू रे, उपजंता सन्देह । रूप नवो रचि मोकले रे, लवध आहारक एह ॥ च० ॥१६॥ तेजोलेश्या अगननी रे, उपशमवा जलधार । मोटी लवधि पचवीसमी रे, शीतोलेश्या सार ॥ च० ॥ १७ ॥ जेण सगतिसुं विकुरवै रे, विविध प्रकारै रूप । सदगुरु कहै छावीसमी रे, वैक्रिय लवधि अनूप ॥ च० ॥१८॥ एकण पात्रे आदमी रे, जीमाडै केइ लाख । तेह अक्खीणमहानसी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० ॥ १९ ॥ चूरै सेन चक्रीसनी रे, संघादिकने काम । तेह पुलाक लवधी कही रे, अट्ठावीशमी नाम ॥ च० ॥२०॥ तेज शीत लेश्या विहुं रे, तेम पुलाक विचार । भगवतीसूत्रमें भापियो रे, ए त्रिहुनो अधिकार ॥ ॥२१॥ पन्नवणा अहारनीरे, कलपसूत्र गण-

धार। तीन २ इक २ मिली रे, वारू आठ विचार ॥ च० ॥ २२ ॥ प्रश्नव्याकरणे सही रे, वाकी लब्धां वीश। सांभलतां सुख ऊपजै रे, दोलत हुवै निशदीस ॥ च० ॥२३॥ ॥ कलश ॥ संवत सत्तरैसे छवीसे मेरुतेरस दिन भलै, श्रीनगर सुखकर लूणकरणसर आदिजिन सुपसाउलै। वाचनाचारज सुगुरु सानिध विजय हरख विलासए, श्रीधर्मवर्द्धन स्तवन भणतां प्रगट ज्ञान प्रकास ए ॥२४॥ इति २८ लब्धि स्तवनम् ॥

अट्ठाईस लब्धि-तप की विधि।

जिस तपस्वीको यह तपस्या करनी हो वह पहले उत्तम दिन और समय देख कर गुरुके समीप जाये। बाद अनुनय-विनय पूर्वक गुरुसे तपस्या उच्चरे। इस तपस्याके २८ अट्ठाईस उपवास करने पड़ते हैं, वह समयानुसार क्रमशः करे। जिस दिन जिस लब्धिका उपवास हो, उसके नामकी गुणना-माला गिने। अगर शक्ति हो तो देववन्दनादिक धार्मिक क्रियायें करे। और तपस्या

पूरा कर लेनेपर शक्तिके अनुसार उद्यापन-उजमणा भी करे। इस तपस्याके प्रभावसे बुद्धि निर्भय हो कर निरन्तर अनन्द रहना है।

॥ अथ चतुर्दश पूर्वतप स्तवन ॥

ढाल ॥ बे कर जोडी ताम—ए देशी ॥
जिनवर श्री वर्द्धमान, चरम तीर्थंकर, प्रह उठी प्रणमुं मुदा ए। श्रुतधर श्रीगणधार, सूरि शिरोमणी, नमतां नव निधि संपदा ए ॥ १ ॥ चवदै पूरव नाम, सूत्रै जूजूवा, वीरजिनंदे भापिया ए। ते हिव सुगुरु पसाय, वरणविस्युं इहां, आगममें जिम उपदिस्या ए ॥ २ ॥ पहिला पूर्वउत्पाद १, दूजो आग्रायणी २, वीर्यवाद ३ तीजो नमूं ए ॥ अस्ति नास्तिप्रवाद ४, सत्ता जाणियै, नाग रयण पंचम ५ गिणुं ए ॥ ३ ॥ छट्ठो सत्यप्रवाद ६, सत्तम आतम ७, कर्मप्रवाद अट्ठम गिणो ए ८ ॥ प्रत्याख्यानप्रवाद ९, नामे नवम, विद्याप्रवाद दशमो कह्यो ए १० ॥४॥ इग्यारम नाम कल्याण ११, प्राणायु बारमो १२, क्रिया विशाल

तेरम भणो ए ॥१३॥ बिंदुसार १४ इण नाम, चवदे ए कह्या, शास्त्र थकी में संग्रह्या, ए ॥५॥

ढाल २ ॥ श्रीविमलाचल शिर तिलो— ए देशी॥ उत्पाद पूर्व सोहामणो, कोटी पद परिमाण। षट भाव प्रगट छै ते जिहां, त्रिपदी भाव विनाण ॥ १ ॥ सर्व द्रव्य पर्यायतणो, जीव विशेष प्रमाण । दूजो पूर्व अग्रायणी, छिन्नु लख पद जाण ॥ २ ॥ पद लख सत्तर जेहनो, संख्या परगट एह । वीर्य प्रबलता जीवनो, भाषो तीजे तेह ॥ ३ ॥ चोथे पूर्वे जे कह्यो, अस्ति नास्ति प्रवाद । पद संख्या साठ लाखनो, सप्तभंगी स्याद्वाद ॥ ४ ॥ न्यान प्रवाद पद पंचमो, सूत्रे आण्यो जोड । मत्यादिक पण भेदसुं, पद संख्या इक कोडि ॥ ५ ॥ सत्यप्रवाद छट्ठा कहूं, भाषुं सत्य स्वरूप । संख्या पद इक कोडनो, भाषा आगम अनूप ॥६॥ नित्यानित्यपणो इहां, आतम द्रव्य स्वभाव। छत्तीस पद कोड जेहना, सूत्रै आण्या

भाव ॥ ७ ॥ कर्म प्रवादतणो हिवै, प्रगटपणें अधिकार । लाख असी पद जेहना, कोडी इग निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कहुं हिवै, नामे प्रत्याखान । लाख चोरासी जेहना, पद संख्या चित्तआन ॥ ९ ॥ अतिशय गुण संयुत भणी, साधन साध्य निदान । विद्या अनुपम सातसै, कोडो वरस लख जान ॥ १० ॥ कल्याण नाम इग्यारसो, छव्वीस कोड प्रमाण । ज्योतिषशास्त्र विचारणा, चोविह देव कल्याण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद बारमो, छप्पन लख इग कोडि । प्राण निरोधन जे क्रिया, शास्त्रे आणयो जोड ॥१२॥ क्षायिकादिक जे क्रिया, छन्द क्रिया सुविशाल । पदसंख्या नव कोडनो, तेरमो क्रिया विशाल ॥ १३ ॥ लोकसारबिंदु चवदमो, नामे अरथ निहाल । पद संख्या इग कोडनी, लाख पचवीस संभाल ॥ १४ ॥ लोकप्रत्यय देखण भणी, संख्या गज परिमाण । सोले सहस अरु तीनसै, और तयासी जाण ॥ १५ ॥ पूरव संख्या

ए कही, गुणमालाथी देख। आगे बुधजन सोधज्यो, बाकी देश विशेष ॥ १६ ॥

ढाल ॥३॥ वीर जिनेसर उपदिसै--ए चाल ॥
सूत्रे गुंथे गणधरा, अरथै अरिहंत भाखै रे। ते श्रुतज्ञान नमूं सदा, पाप तिमिर जिम नासै रे ॥१॥ वाणी रे जिणंदनी, सुणज्यो चित्त हित आणी रे। तत्व रमणता अनुसरै, सम्पूरण गुण खाणी रे ॥ वा० २ ॥ विषय कषाय तजी करी, ग्यान भगत उर धारी रे। विधि संयुत जिनमन्दिरै, प्रभु मुख पाश जुहारी रे ॥ वा० ३ ॥ तप जप संजम आदरी, श्री श्रुतज्ञान निधानो रे। सदगुरु चरण नमो करी, संवरजोग प्रधानो रे ॥ वा० ४ ॥ अक्षत लेइ ऊजला, गुंहली सुन्दर कीजै रे। नाण दंसण चारित्रनी, ढिगली तीन धरीजै रे ॥ वा० ५ ॥ चवद पूर्व व्रत इण परै, सुगुरु संजोगे लेई रे। विधिसुं पुस्तक पूजियै, चित्त अति आदर देई रे ॥ वा० ॥ ६ ॥

संपूरण थयां, ऊजमणो हिव कीजै रे।

घर सारू धन खरचने, नरभव लाहो लिजे रे॥ वा० ॥७॥ पूठा परत विटांगणा, पूरव नाम प्रमाणो रे। नवकरवाली कोथली, लेखण ठवणी जाणो रे॥ वा० ॥८॥ देहरे देव जुहारने, आरती मंगल कीजे रे। स्नात्रपूजा वलि साचवी, तत्व सुधारस पीजे रे॥ वा० ॥६॥ इण पर तप आराधतां, दुरगति कारण छेदे रे। चवदह रज्जु शिरोमणी, जीव अक्षयगति वेदे रे॥ वा० ॥१०॥ तप आराधन विधि भणी, आगम वचने जोइ रे। भवियण पिण तुमे आदरो, ज्युं भव-भ्रमण न होई रे॥ वा० ॥ ११ ॥ कलश॥ इम सयल सुखकर गच्छ खरतर तपै रवि जिम क्रांत ए, सौभाग्यसूरि मुणिंद इण पर कह्यो पूर्व वृतंत ए। सम्वत अठारै वरस छिन्नूं नयर श्रीवालूचरै, ए स्तवन भणतां श्रवण सुणतां सयल मनवंछित फलै॥ १२॥ इति चतुर्दश-पूर्व-तप स्तवनं सम्पूर्णम्॥

चउदह पूर्व-तपकी विधि।

तपस्वीको यदि यह तपस्या करनी हो तो वह पहले उत्तम दिन देखकर गुरुसे उक्त तपस्या ग्रहण करे। इस तपस्यामें चउदह उपवास करने पड़ते हैं, वह समयानुसार क्रमशः करे। जिस दिन जिस पूर्वको तपस्या हो, उस दिन उसी पूर्वके नामकी वीस माला गिने। स्तवनमें १४ पूर्व के नाम और उनकी विधि दी गयी है, उसके अनुसार विवेकी पुरुष गुरुसे समझ कर सारी क्रिया करे। इस तपस्याके स्तवनको भाव-पूर्वक श्रवण करे या स्वयं पढ़े। यह तपस्या करनेसे ज्ञानावरणीय आदि कर्मोंका क्षयोपशम हो कर उत्तम ज्ञान और लक्ष्मीकी वृद्धि होती है।

॥ अथ तिलक तपस्याका स्तवन ॥

दुहा ॥ शासन देवी शारदा, वाणी सुधारस वेल। बालक हित भणी वगसियै, सुबुद्धि सुरंगी रेल ॥१॥ नवम अंग जिन पूजतां, मन लहि शुभ परिणाम ॥ तप तिलके फल पामिये, दवदंती गुणधाम ॥ २॥

॥ ढाल ॥ वीर जिणेसर उपदिसे—ए देशी ॥
कमजा जिम कुंडणपुरे, भुजवज नरपतिभीमो रे ।
पदमनी पदम सुवासना, श्वेतगज स्वप्ने नीमो
रे॥पदम०१॥ परतख फल ए पुन्यना, प्रसवी सुता
पूरे मासे रे । दवदंती नाम दीपतो, गुणमणि
बुद्धि प्रकाशे रे ॥ पद० २ ॥ चौसठकला विच-
चणा, रूप गुणें करी रंभा रे ॥ देव गुरु धर्म दी-
पावती, व्रतधारी दृढ थंभा रे ॥ प० ३ ॥ प्रतिमा
पूजे शांतिनी, देवे दीधी त्रिकालो रे ॥ मात पिता
प्रमोदसुं, स्वयंवर वरमालो रे ॥ प० ४ ॥ उव-
झायाधिप श्रीनिषधनो, नल लिखियो निलाडे
रे ॥ आनन्दसु पंथ आवतां, पूरव पून्य उघाडे
रे ॥प० ५॥ मझम रयणी तम भरी, मधुरवकुंत
इहां वनमें रे ॥ मणि भाले तेज दिन मणी,
जाग्रत देखी अहो मनमें रे ॥ प० ॥६॥ ग्यानधारी
गुरु कोइ मिले, पूछिये एह प्रसन्नो रे ॥ कर्म बलै
मुनि आविया, परीसह जीत सदन्नो रे ॥प० ७॥
पंच जीत पंच पालतां, टालता दुस्सह सवला रे ॥

संजम शुद्ध संभालतां, उद्यम शिवसुख कमला रे ॥ प० ॥८॥ दोहा ॥ मणि तेजें मुनि तरु ठवे, रथ थकी स्त्री भरतार ॥ देवै तीन प्रदक्षणा, त्रिधिसुं चरण जुहार ॥९॥ देशना सुण पावन थया, ज्ञान सुधारस पाय ॥ को तप परभव तिलक है, कहि यै श्रीमुनिराय ॥ १० ॥

॥ढाल २॥ भरत भावसुं ए—ए देशी ॥ मधुर स्वरै मुनिवर कहे ए, नाणी गुरु सुपसाय, दीपक सहू लोकना ए ॥ कर्म शुभाशुभ परभवै ए, इह भव फल निपजाय, करम गति वंकडो ए ॥११॥ ओहिनाण भव प्रागनो ए, नृप सुणे निरमल भाव, समकित साहीयो ए ॥ धर्मव्रतीको नृपवधू ए, जाण्यो हे तत्त्व प्रस्ताव, साची जिन वाचना ए ॥१२॥ चोथ प्रमुख नृप चंपसूं ए, किरिया शुद्ध करी एह, भलै चित भावसुं ए ॥ नवांग पूजे तिलकसुं ए, चाढे जिन चोवीस, रयण कचंण जड्या ए ॥१३॥ तिलक २ सें पामियो ए, समकित एह सत्तीस, सफलो गियो ए ॥ भगवन तप विधि

भाखियें ए, नल कहे चोथ वरीस, पीहर षट्कायना ए ॥१४॥ आदिनाथ अरिहंतना ए, षट् उपवास कहीस, श्री चौवीहारस्युं ए ॥ चोथ दोय जिन वीरना ए, अजितादिक बावीस, आणा गुरु शिर वही ए ॥ १५ ॥ पोषध त्रीस तीने थया ए, पूजन तिलक चढ़ाय, तारक जगदीसने ए ॥ उद्यापन संघ भक्तिसुं ए, जन्म सफल नर राय, सूधे मन साधियें ए ॥ १६ ॥ सुण वाणी समकित ग्रहे ए, पय प्रणमी गुरु वीर, चित्त उमाहीयो ए ॥ इण पर जे भवि आदरै ए, थायै चरम शरीर, मूल सुख शासतो ए ॥ १७ ॥ (कलश) श्रीशांति दाता त्रि जगत्राता भविक ध्याता सुखकरा, इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजस वाध्यो शिवघरां ॥ आगमे आखै सूरीय साखै सुगुरु भाषै सुण थया, शुद्ध ध्यावै भविक भावै विजय विमल जिनवर कथा ॥ १८ ॥ इति तिलक तपस्या स्तवनम् ॥

तिलक-तपस्याकी विधि।

उत्तम दिन देखकर तपस्वी गुरुके पास जाये और उनसे विनय-पूर्वक तिलक तपस्या ग्रहण करे। इस तपस्याके करने वालेको कुल ३० तीस उपवास करने पड़ते हैं, वह इस क्रमसे करे। पहले ऋषभदेव भगवानके छह उपवास करे, इन छहों उपवासोंके करते समय "श्रीऋषभदेवस्वामी सर्वज्ञायनमः" इस पदका २००० वार चिन्तवन करे; अर्थात् इस पदकी २० माला गिने। जब यह छह उपवास हो लें, तब महावीर भगवानके दो उपवास करे। इन दो उपवासके समय "श्री महावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः" इस पदकी वीस माला गिने, और धर्म-ध्यानमें समय व्यतीत करे। इन दो उपवासोंके हो जाने पर बाईस तीर्थंकरोंके क्रमशः बाईस उपवास करे। जिस दिन जिस तीर्थंकरका उपवास हो, उसीके पदकी वीस माला गिने। बाकीकी सारी विधि स्तवनके अनुसार गुरुसे समझ कर करे। तपस्या करते समय आरंभ-समारंभके कार्य नहीं करे।

॥ अथ सोलिये तपका स्तवन ॥

वीर जिनेसर भाषियो रे लाल, सहु व्रतमें सिरताज, भवि प्राणी रे॥ कषायगंजन तप आदरो रे लाल, इणथी पातिक जाय ॥भ० ॥वी१॥ कोड वरष तप आदरे रे लाल, क्रोध गमावै फल तास ॥ भ० ॥ मान करे जे प्राणियारे, लाल ते जगमें न सुहाय ॥ भ० वी० ॥२॥ व्रतमें माया आदरी रे लाल, स्त्रीपणो पायो मल्लिनाथ ॥ भ०॥ रूप परावृत कीया घणा रे लाल, आषाढ़भूति गणिका साथ ॥ भ० वी० ॥ ३ ॥ च्यार कषाय छे मूलगा रे लाल, उत्तम सोले भेद ॥भ०॥ इम भव-भव भमतो थको रे लाल, जीव पामे बहु खेद ॥ भ० वी० ॥ ४ ॥ एकासण व्रत जे करे रे लाल, लाख वरस दुख हाण ॥ भ० ॥ नीवी व्रत दूजो कह्यो रे लाल, ए धारो जिनवर वाण ॥ भ० वी० ॥५॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो रे लाल, उपजै लबधि अपार ॥ भ० ॥ उपवास करता भावसुं रे लाल, पामे भवनो पार ॥ भ० वी० ॥ ६ ॥ इम दिन

शोले तप करो रे लाल, पूरण व्रत ए थाय ॥भ०॥ देव गुरु पूजा करै रे लाल; मन वंछित फल थाय ॥ भ० ॥ नर सुर रिद्धि पिण भोगवे रे लाल, निश्चे मुगति जाय ॥ भ० वी० ॥ ८ ॥ इति ॥

सोलह तपस्याकी विधि ।

क्रोध, मान, माया, और लोभ इन चारों कषायोंके अनन्तानु बन्धी, अप्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानी, और संज्वलन इनके द्वारा चार-चार भेद होने पर चार कषायोंके क्रमशः सोलह भेद पड़ते हैं । इनको निवारण करनेके लिये तपस्वीको यह तपस्या करते समय सोलह दिनकी तपश्चर्या करनी पड़ती है, वह इस तरह कि, पहले दिन एकासण, दुसरे दिन निवि, तीसरे दिन आयंबिल और चौथे दिन उपवास, इस तरह अनुक्रमसे चार बार व्रत करके सोलह दिन की तपस्या पूरी करे । तपश्चर्याके दिन सोलह तपका स्तवन पढ़े, या श्रवण करे । समूचि तपश्चर्या पूर्ण कर लेने पर यथा-शक्ति उद्यापन करे ।

प्रातःकालकी पडिलेहण विधि।

पहले खमासमण देकर "इरिया वहिय" पढ़े, बाद खमासमण-पूर्वक "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पडिलेहण संदिसा हूं" इच्छं, कह कर फिर खमासमण-पूर्वक "इच्छाकारेण संदिह भगवन्! पडिलेहण करूं?" इच्छं, कह कर मुहपत्ति पडिलेहण करे। बाद खमासमण देकर इच्छाकारेण० "अंग पडिलेहण संदिसाहु" इच्छं, फिर खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० अंगपडिलेहन करूं? इच्छं" कहकर आसन, चरवला, कंदोरा, धोती आदि उपकरणोंकी पडिलेहण करे। पीछे खमासमण पूर्वक "इच्छकार भगवन्! पसायकरी पडिलेहण पडिलेहावोजी? इच्छं, कह कर शुद्ध स्वरूपके पाठ-पूर्वक स्थापनाचार्यजीकी पडिलेहण करे, बाद स्थापनाचार्यजीको उच्च स्थान पर रखे। खमासमण-पूवक इच्छाकारेण० उपधि मुहपत्ति पहिले हुं?" इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे। इसके बाद खमासमण-पूर्वक

इच्छाकारेण० ओहि पडिलेहण संदिसा हूं ? इच्छं, कहकर खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० ओहि पडिलेहण करूं ?" इच्छं, कहकर वाद कम्वल, वस्त्र आदिकी पडिलेहण करे। इसके वाद पौषधशालाको प्रमार्जन करके कूड़े-कचरेको जयणासे एकान्त स्थानमें रखदे। वाद "इरिया वहिय" पढ़े। इसके वाद खमासमण-पूवक इच्छाकारेण० सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं, कहकर खमा० इच्छा० सज्झाय करूँ ? इच्छं, कहकर नवकार सहित पोसहकी सज्झाय करे, और उपदेश मालाका श्रवण करे।

संध्या पडिलेहण विधि।

पहले खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! वहुपुड़ि पुन्ना पोरिसो इच्छं, कहकर खमासमण देवे, वाद "इरिया वहिय" पढ़े। वाद खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० पडिलेहण करूं ? इच्छं, कहकर, वाद फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण० पौषधशाला प्रमार्जन

करूं ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे। बाद खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० अंग पडिलेहण संदिसा हूं ? इच्छं, कहकर फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण० अंग पडिलेहण करूं ? इच्छं, कहकर आसन, चरवला, कदोरा, धोती आदि उपकरणोंकी पडिलेहण करे। बादमें पौषधशालाका प्रमार्जन कर कूड़े-कचरेको यथाविधि रखे। फिर खमासमण देकर "इरिया वहिय" पढ़े। पीछे खमासमण-पूर्वक "इच्छकार भगवन्! पसायकरी पडिलेहण पडिलेहवावोजी ? इच्छं, कहकर शुद्ध स्वरूपके पाठ पूर्वक स्थापनाचार्यजीकी पडिलेहण करे। बाद स्थापनाचार्यजी को ऊंची जगहपर रखे। पीछे खमासमण देकर इच्छाकारेण० उपधि मुहपत्ति पडिले हुं ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे। बाद खमासमण-पूर्वक "इच्छाकारेण० सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं, कहकर खमासमण-पूर्वक "इच्छाकारेण सज्झाय करूं ? इच्छं, कहकर एक नमुकार

बोलकर पोसहकी सज्झाय करे। बाद फिर एक नमुक्कार पढ़े। इसके बाद दो वान्दना देकर पच्चक्खाण लेवे (जिसने उपवास किया हो वह वान्दना न देवे) बाद खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० उपधि थंडिला पडिलेहण संदिसा हूं? इच्छं, कहकर फिर खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० उपधि थिंडिला पडिलेहण करूं? इच्छं, कहकर फिर खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० बेसणे संदिसा हुं? इच्छं, कहकर फिर खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० बेसणे ठाउं?, इच्छं, कहकर कम्बल वस्त्रादिकी पडिलेहण करे। जिसने उपवास किया हो वह इस समय केवल कन्दोरा और धोतिकी पडिलेहणा करे।

रात्री संथारा विधि।

खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० बहुपुडिपन्ना पोरिसी?" इच्छं, कहकर खमासमण देवे और "इरिया वहिय" पढ़े। इसके बाद ... पूर्वक इच्छाकारेण० ... सं

मुहपत्ति पडिहले हुं ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे। बाद खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० राईसंथारा संदिसा हूं ? इच्छं, कहकर खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० राईसंथारा ठाउं ? इच्छं, कह कर फिर खमासमण-पूर्वक इच्छाकारेण० चैत्यवन्दन करूं ?" इच्छं, कहकर चउक्कसाय, नमुत्थुणं यावत् जयवीयराय चैत्यवन्दन करे। बाद "निस्सही ३ णमोखमासमणाणं गोयमाइणं महामुणिणं" तीन नवकार, तीन करेभी भन्ते कह कर अणुजाणह चिट्ठिज्जा आदि राईसंथाराकी गाथायें कहे और अन्तमें सात नमुक्कारका स्मरण करे।

॥ पच्चक्खाण पारनेकी विधि ॥

खमासमण देकर इरियावहिय पढ़े ॥ पीछे खमा० इच्छा० पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे ॥ पीछे खमा० इच्छा० पच्चक्खाणपारुं ? यथाशक्ति खमा० इच्छा० पच्चक्खाण पारेमि ? तहत्ती । कह

कर मुट्ठी बन्द कर एक नवकार गिने। बाद जो पच्चक्खाण किया हो उस पच्चक्खाणका नाम ले कर पच्चक्खाण पारनेका पाठ बोलकर एक नवकार गिने, पीछे खमासमण देकर इच्छा० चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कहकर जयउसामि० यावत् जयवीयराय० पर्यंत चैत्यवंदन करे।

॥ देववंदनकी विधि ॥

खमा० इच्छा० चैत्यवंदन करूं ? इच्छं, कह कर चैत्यवंदन णमुत्थुणं कहे। बाद खमासमण देकर इरियावहिय पढ़े। पीछे खमा० इच्छा० चैत्यवन्दन करूं ? इच्छं, कहकर चैत्यवंदन करे। बाद जंकिंचि णमुत्थुणं कहकर चार थुईसे देव वांदे। पीछे णमुत्थुणं यावत् जयवीयराय पर्यंत कहे; फिर णमुथुणंका पाठ पढ़े।

॥ पोसह लेनेकी विधि ॥

पोसहके उपगरण लेकर उपाश्रयमें जाये। बाद सामायिककी विधिके अनुसार स्थापनाचार्यकी स्थापना करके विधि-पूर्वक गुरुवंदन करे। बाद

खमासमण देकर इरियावहिय पढ़े। पीछे खमा० इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह मुहपत्ति पडिले हुँ ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे। पीछे खमा० इच्छा० पोसह संदिस्साऊं ? इच्छं, खमा० इच्छा० पोसह ठाऊं ? इच्छं, कहकर खड़े हो, हाथ जोड़कर तीन नवकार गिने। बाद इच्छकार भगवन्! पसाय करी पोसह दंडक उच्चरावोजी! (यदि आठ प्रहरका पोसह लेना हो तो "अहोरत्तं" कहे, दिनका लेना हो तो "दिवसं" कहे, और रात्रिका लेना हो तो "रत्तं" कहे) बाद जो वड़ा आदमी हो वह करेमिभंते पोसहं० इत्यादि पोसहका पच्चक्खाण तीनवार उच्चरावे—यदि कोई वड़ा न हो तो आप तीनवार उच्चर लेवे॥ बाद खमा० इच्छा० सामायिक मुहपति पडिलेहुं ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे॥ पीछे खमा० इच्छा० सामायिक संदिस्साहु ? इच्छं, इत्यादिक सामायिककी विधिके अनुसार पोसहकी विधि जानना। परंतु इरियावहिय न

पढ़े। पांगरणाके आदेशके बाद खमा० इच्छा० बहुवेलं संदिस्साउं? इच्छं, खमा० इच्छा० बहुवेलं करूं? इच्छं, पोसह लिये बाद राई प्रतिक्रमण करे तो प्रतिक्रमणमें चार थुइसे देववांदे, बाद णमुत्थूणं कहकर बहु वेलका आदेश लेवे। पीछे आचार्यमिश्रं इयादि कहे।

॥ पोसहकृत्यकी विधि ॥

पहले पोसह लेनेके बाद पड़िलेहणके समय प्रभात पड़िलेहणकी विधिसे पड़िलेहण करे। पीछे गुर्वादिक विद्यमान हो तो विधिपूर्वक वंदना करे। बाद पच्चक्खाण करके बहुवेलका आदेश लेवे, पीछे देवदर्शन करनेको मंदिरमें जावे, (जिसने पोसह किया हो वह यदि देवदर्शन न करे तो दो या पांच उपवासके प्रायश्चित्तका भागी होता है) अनन्तर विधिसहित चैत्यवंदन करके पच्चक्खाण करे। उपाश्रय और मंदिरसे निकलते समय तीनवार आवस्सही कहे। और

समय तीनवार निस्सीही

लघुनीति और वड़ी नीति परठनी हो तो पहिले "अणुजाणह जस्स गो" कहे, पीछे से तीनवार 'वोसिरे' कहे। मंदिरमें जाकर उपाश्रयमें आवे और लघुनीति वडिनीति करके पीछे उपाश्रयमें आवे। निद्रा या प्रमाद आगया हो तो इत्यादि कार्योंमें इरियावहिय पढ़े। मंदिरसे उपाश्रयमें आकर गुरुका संयोग हो तो व्याख्यान सुने। पीछे पौनो प्रहर दिन चढ़े बाद उग्घाडा पोरसी भणावे यथाः—खमा० इच्छा० उग्घाडा पोरसी? इच्छं, कह कर खमा० इरियावहिय पढ़े। पीछे खमा० इच्छा० उग्घाडा पोरसी मुहपत्ति पड़िलेहुँ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे॥ पीछे कालवेलामें मंदिरमें अथवा उपाश्रयमें विधिके अनुसार पंचशक्रस्तवसे देववंदन करे। पीछे जल आदि पीनेकी इच्छा हो तो पच्चक्खाण पारनेकी विधिके अनुसार पच्चक्खाण पारके जल आदिक परिभोग करे। पीछे चौथे पहरमें संध्यापडिलेहणकी विधिके अनुसार पडिले- करे। रात्रिका पोसह लेनेवालाभी पोसहकी

विधिके मुताविक पोसह लेकर पडिलेहण करे ॥ रात्रि पोसहवाला प्रतिक्रमणके आदिमें इरिया-वहिय पढ़कर चौवीस थंडिलां पडिलेहण करे। प्रति-क्रमणमें सात लाख पापस्थानककी जगह ठाणेक-मणे चंकमणे इत्यादि पोसह अतिचार पढ़े ॥ जिसने दिनका पोसह न लिया हो और रात्रिका लिया हो तो वह सात लाख आदि बोले। प्रति-क्रमण करनेके वाद सज्झायका ध्यान करे। प्रहर रात्रि जानेपर संथारा पोरसी विधिके अनुसार पढ़ कर विधिसे शयन करे। पीछली रात्रिको ऊठकर नवकार मंत्र गिने। बाद इरियावहिय पढ़ कर खमासमण-पूर्वक कुसुमिण दुसुमिणका काउ-स्सग्ग करे। (पोसहवाला कुसुमिण दुसुमिणका काउस्सग्ग पहले करे पीछें चैत्यवंदन करे) सात लाखकी जगह संथारा-उवट्टण-इत्यादि पोसह अतिचार बोले। बाद प्रभात-पडिलेहणकी विधिके अनुसार पडिलेहण करे। तदनन्तर गर्वादिकको करे बाद पोसह पाले।

पोसहमें राइमुहपत्ति पडिलेहणकी विधि।

गुरुमहाराजके सामने खमासमण देकर इरियावहिय पढ़े। बाद खमा० इच्छा० राइमुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे। पीछे दो वांदणा दे कर इच्छा० राइयं आलोउं ? इच्छं, आलोएमि जोमेराइओ कहकर विधि-पूर्वक गुरु वंदन करे। बाद पच्चखाण लेकर बहुवेलका आदेश लेवे।

पोसह पारनेकी विधि।

खमासमण देकर इरियावहिय पढ़े। बाद खमासमण-पूर्वक मुहपत्ति पडिलेहण करे। पीछे खमा० इच्छा० पोसह पारुं ? यथाशक्ति, खमा० इच्छा० पोसह पारेमि ? तहत्ति कहकर जीमना हाथ नीचे रखकर तीन नवकार गिने, पीछे खमा० देकर मुहपत्ति पडिलेहण करे। पीछे खमा० इच्छा० सामायिक पारुं ? यथाशक्ति, खमा० इच्छा० सामायिक पारेमि ? तहत्ति कह कर जीमना हाथ नीचे रख, तीन नवकार गिन कर

भयवं दसराण भद्दो का पाठ पढ़े। पीछे दाहिना हाथ स्थापनाचार्यजीके सामने सीधा रख कर तीन नवकार गिने, (पोसह और सामायिक पारनेका पाठ एक ही वार कहा जाता है) यानी दोनोंके पारनेका पाठ एक ही है।

देसावगासिक लेने और पारनेकी विधि।

देसावगासिक लेनेकी विधि पोसह लेनेकी विधिके अनुसार समझना, परंतु पोसह लेनेके आदेशमें देसावगासिकका आदेश लेना। जैसे— देसावगासिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? देसावगासिक संदिस्साउं ? ठाउं ? देसावगासिक दंडक उच्चरा वोजी ? करेमिभंते पोसहके पच्चक्खाणके बदले अहन्न भंते ? तुह्माणं समीवे देसावगासियं पच्चक्खामि इत्यादि देसावगासिकका पच्चक्खाण तीन वार उचरे। वहुवेलका आदेश न लवे, देसावगासिक जघन्यसे दो सामायिकका और उत्कृष्टसे १५ सामायिकका होता है।

देसावगासिक पारनेकी विधि पोसह पारनेकी

विधिकी तरह समजना जैसे—देसावगासिक पारु ? पारेमि ? इत्यादि सामाइय पोसह संदि-यस्सकी जगह सामाइय देसावगासियं संदि-यस्स इत्यादि पाठ कहना।

— ❀ —

भक्ष्याभक्ष्य-विचार।

प्राचीनकालके समय श्रावक लोग भक्ष्या-भक्ष्यके सम्बन्धमें बड़ा ही उपयोग रखा करते थे, प्रायः उस समयके श्रावकोंको अभक्ष्य चीज़ोंका त्याग ही रहता था, वे लोग अभक्ष्य सेवन करना महा पाप और नरकका मार्ग समझते थे। यदि कोई न समझ कर या ग़लतीसे किसी अभक्ष्य पदार्थका सेवन कर लेता तो वह उसे बड़ाभारी दुःष्कर्म किया समझ कर अत्यन्त पश्चाताप करता और उसके लिये गुरुके पास जा कर यथाविधि आलोयणा-प्रायश्चित ले लेता था।

वर्तमान समयके श्रावक-श्राविकाओंमें इस

विषयकी पूरी शिथिलता पड़ गयी है। कई श्रावक भाई तो भक्ष्याभक्ष्य किसे कहते हैं, वह भी ठीक तरह नहीं समझते। कई भाई यदि इस विषयमें थोड़ासा कुछ जानते हैं; किन्तु इन्द्रियोंकी लोलुपताके कारण भक्ष्याभक्ष्य को न सोच कर उसे सेवन करते ही रहते हैं। कई सज्जन खूब पढ़े-लिखे हैं, अंग्रेजी बी० ए० और एम० ए० पास किये रहते हैं, उनको इस विषयका ज्ञान भी ठीक रहता हैं; किन्तु फिर भी वे लोग रसनेन्द्रियकी लालसामें पड़ कर अभक्ष्य पदार्थोंका सेवन आनन्द-पूर्वक करते ही रहते हैं, यदि उनसे इस विषयमें कुछ कहा जाय तो यही उत्तर मिलेगा कि "आलू, बैंगन न खानेसे थोड़े ही धर्म या मोक्ष प्राप्त होता है?" इसी तरह और भी अनेक प्रकारके कुतर्क करने लगते हैं। उस समय यदि उन्हें शास्त्र-प्रमाण देकर ठीक तरह समझाया जाय तो उसे भी वे लोग अङ्गिकार करनेको तैयार नहीं होते। और जब अपना पक्ष

कमजोर देखते हैं, तब इस विषयको हँसी-दिल्लगीमें ले आते हैं।

प्यारे पाठक और पाठिकाओं! शास्त्रकारोंने भक्ष्याभक्ष्यके सम्बन्धमें जो अमूल्य उपदेश दिया है, वह वास्तवमें हम लोगोंके लिये बड़ा ही उपकार का काम किया है। यदि हम लोग भक्ष्य और अभक्ष्य पदार्थोंको शास्त्रके अनुसार समझ कर काममें लिया करें तो हमारे लिये बड़ा ही लाभदायी है। शास्त्रकारोंने अभक्ष्य पदार्थों का त्याग किया है, वह वास्तवमें सोच-समझ कर ही किया है। इस नियमके पालनसे सिवा लाभके किसी तरहकी हानि नहीं।

अभक्ष्य पदार्थोंके खानेसे अनेक स्त्री-पुरुष रोग-ग्रस्त और कमजोर हो गये हैं। ऐसे अनेक दृष्टान्त पढ़ने और सुननेमें आते हैं, कि अज्ञात फलके खानेसे कई स्त्री-पुरुषोंने अपने प्राणोंसे हाथ धोये हैं, कईयोंके हाथ-पाऊँ गल गये हैं। अभक्ष्य पदार्थ ऐसे भी हैं, जिनके खानेसे

उस समय तो परम आनन्द मालूम होता है। परन्तु कालान्तरमें उन्हींके कारण असाध्य रोग हो जाया करते हैं, जिनसे मनुष्य अल्प अवस्थामें ही संसारसे चल बसता है। अतएव मनुष्य मात्रको अभक्ष्य चीजोंका त्याग करना परमावश्यक है।

अब आप धार्मिक भावोंसे भी इस विषयका विचार कीजिये, जिससे आपको इसके त्यागका सच्चा महत्व और भी मालूम हो जायगा। जितने अभक्ष्य फल और कन्दमूल हैं, उन सभीमें दृश्य और अदृश्य रूपसे अनेक सूक्ष्मजीव रहते हैं। जब वह फल और कन्दमूल सेवन किये जायेंगे तो उन बिचारे जीवोंकी क्या दशा होगी यह आप स्वयं समझ लें। प्रत्येक प्राणीका कर्त्तव्य है, कि वह एक दूसरेकी आत्माको जहाँ तक बन पड़े बचानेका यत्न करे। छोटे-बड़े सभी जीवोंमें एकसी आत्मा है। उसमें छोटी-बड़ीका किसी तरह भेद नहीं। जितनी बड़ी आत्मा

आपमें है, उतनी ही उन सूक्ष्म जीवोंमें है। अतएव आपका पूर्ण कर्त्तव्य है, कि जिस पदार्थके खानेसे जीवहानि होती हो, या किसी जीवको कष्ट होता हो तो उस पदार्थको सर्वथा न खाना चाहिये। यदि कोई आपका दूसरा भाई खाता हो तो उसे भी खानेको निषेध करना आपका परम कर्त्तव्य है।

श्रावकको उत्सर्ग मार्गसे प्रासुक अहार लेना कहा है; पर यदि शक्ति न हो तो सचित्त पदार्थका त्याग करे, यदि वह भी न बन पड़े तो बाईस अभक्ष्य और बत्तीस अनन्त कायका त्याग करना तो परम आवश्यक है। अतएव यहाँ पर हम अपने प्रेमी पाठकोंके लाभके लिये कौन-कौन से अभक्ष्य पदार्थ हैं। वह संक्षिप्त रूपसे समझा देते हैं। आशा है, पाठक गण इसे पढ़ समझकर यदि थोड़ासा भी लाभ उठायेंगे तो हम अपने परिश्रमको सफल समझेंगे।

बाईस अभक्ष्य किसे कहते हैं ?

पाँच तरहके उम्बर फल ५, चार महा विगइ ४, हिम १०, विष ११, करहा-ओले १२, सब तरहकी मिट्टी १३, रात्रा-भोजन १४, बहुबीज१५, अनन्तकाय १६, बोल आचार १७, घोलवड़ा १८, बेंगन, जिनके नाम अज्ञात हों ऐसे फल-फूल १६, तुच्छ फल २०, चलित रस २२, इन बाईस चीजोंको अभक्ष्य पदार्थ कहते हैं। अतएव श्रावक-श्राविकाओंको इनका त्याग जरूर करना चाहिये।

अभक्ष्य पदार्थ।

१ बड़के फल, २ पारस-पीपली (फालसा) या पीपलके फल, ३ प्लक्ष (पीपलकी ही जातिका वृक्ष है) ४ गूलर और ५ कचूमर या कालुम्बर, इन वृक्षोंके फलमें बहुतसे छोटे-छोटे जीव होते हैं, जिनकी गिनती नहीं हो सकती। इस

लिये ये सब अभक्ष्य हैं। दुष्काल पड़नेपर अन्न न मिले, तोभी विवेकी पुरुष इन्हें न खावे।

६, मधु ७ मदिरा ८ मांस ९ मक्खन, इन चारों वस्तुओंका जैसा रंग होता है, उसी रंगके असंख्य जीव इनमें निरन्तर उत्पन्न होते रहते हैं। इस लिये ये भी अभक्ष्य हैं—ये चार 'महा-विगइ' कहलाते हैं।

मधु।—मधुमक्खियाँ या भौंरे अपने भोजनके लिये जो मधु या शहद जमा करते हैं, उन्हें ही नीच जातिके लोग धुआँ दिखा कर या मारकर, चुरा लाते हैं। बेचारे असंख्य जीव मारे जाते हैं। तिस पर मधुमें भी बहुतसे जीव पैदा होते रहते हैं, इसलिये जिह्वाके स्वादके लिये तो क्या कहना, औषधके लिये भी इसे नहीं खाना चाहिये। इसे खानेसे नरक-गति प्राप्त होती है।

मदिरा।—इसका तो सर्वथा त्याग ही करना उचित है। अंग्रेजी दवाओंमें ज़रूर स्पिरिट (दारू) पड़ती है, इसलिये उन्हें भी नहीं खाना चाहिये।

अंग्रेज़ी दवाओंमें जो चूर्ण आदि होते हैं, उनमें भी बहुतसे अभक्ष्य पदार्थ मिले होते हैं। अतएव इनसे परहेज़ ही रखना उचित है।

मांस।—मछली, बकरा, हरिन, भेड़ा, चिड़िया आदि जीवोंको मारकर जो मांस प्राप्त होता है, वह महा अशुद्ध तथा अभक्ष्य है। सभी धर्म-ग्रन्थोंमें मांस खानेकी निन्दा की गयी है, तो भी लोग मोटे-ताज़े होनेके लोभसे या जिह्वाके स्वादके लिये दूसरोंके प्राण ले लेते हैं। यह महा अधर्म और पाप-कर्म है।

मांसके अन्दर प्रत्येक रग-रेशेमें अनेक त्रस जीव उत्पन्न होते हैं—उसे आगसे उबालने पर भी उसमें जीव उत्पन्न होते रहते हैं। इसी लिये धर्मात्माओंने मांस, अण्डे या मछलियोंका खाना बुरा बतलाया है।

आजकल कुछ पापियोंने घीमें चर्बी मिलाना शुरू किया है। यह महा पाप है। इसी प्रकार विलायती बिसकुट आदि खाना भी बुरा है—

इन ... छूना भी नहीं चाहिये। कितनी ही अंग्रेजी दवाएं—जैसे, काडलीवर आयल (मछलीका तेल), और मुम्बई* आदि कई औषधियें चरबी वगैरहसे तैयार की जाती हैं। इनका सेवन करने वाले घोर नरकमें जानेका रास्ता तैयार करते हैं। जन्म, जरा, मरण, आधि, व्याधि और उपाधिके दुःखसे छूटना हो, तो मनुष्य कभी इन चीजोंको न खाये।

मक्खन।—छाछमें से मक्खन निकालते ही तुरत उसमें जीव उत्पन्न होने लगते हैं, इसीलिये श्री अरिहन्त भगवान्ने इसका खाना मना किया है। प्रभुकी आज्ञाका अवश्यही पालन करना चाहिये।

ओस।—१० बर्फ़, और ओले,—इन तीनोंमें भी बड़ादोष है। अपकाय (हर एक सचित्त पानी) की प्रत्येक बूंदमें असंख्य जीव होते हैं—यदि

* मुबई नामक औषधी—पशु और मनुष्योंके कलेजेसे रक्त निकाल कर बनायी जाती है। इसलिये यह प्रत्यक्ष रूपसे ... है। इस औषधीके स्थान ...

उनका आकार सरसों बराबर भी हो जाय, तो उनकी गिनती इतनी अधिक होती है, कि फिर तो वे सारे जम्बूद्वीपमें भी न समा सकें। परन्तु चूंकि पानीके बिना प्राणीका जीना ही कठिन है, इसलिये अवश्यक्ताके अनुसार खर्च करना पड़ता है। परन्तु उसीका जमा हुआ रूप जो बर्फ है, उसमें तो और भी बहुतसे जीव इकट्ठे होकर मर जाते हैं, इसलिये थोड़ी देरके स्वादके लिये ऐसी चीज कभी न पीना। बहुत गरमी मालूम पड़े तो चन्दनका लेप करे या बादाम तथा चन्दनक शरबत पिये।

कुदरती बर्फ या ओलेका पानी भी नहीं पीना चाहिये; क्योंकि उस पानीमें असंख्य जीव होते हैं। यह तीर्थंकर महाराजका ही किया हुआ निषेध है। आइसक्रीम, आइस वाटर, आइस सोडा; कुलफी आदि बर्फकी बनी चीजों का भी त्याग करना चाहिये।

११ विष—भाँग, अफीम, बच्छनाग, हर-

ताल, संखिया, धतूरा आदि जहरीली और नशीली चीजें अभक्ष्य हैं; क्योंकि इनके खानेसे पेटके कीड़े मर जाते हैं, शरीर शिथिल हो जाता है और आदमी बेसुध सा हो जाता है। इस लिये शौक़ या बल प्राप्तिके लिये इन्हें नहीं खाना चाहिये—दवाके लिये खा सकते हैं। नशोंका व्यसन बड़ा ही बुरा होता है। इससे इस लोकमें भी बुराई होती है और परभवमें भी। अकसर स्त्रियाँ बच्चोंको नींद आनेके लिये थोड़ी सी अफ़ीम खिला दिया करती हैं; पर इससे बच्चोंको कुछ फ़ायदा नहीं पहुंचता, उलटी हानि होती है। साथ ही कहीं भूलसे उसने पुड़िया उठाकर खाली, तो जान जानेका डर होता है। इस लिये इसका ध्यान रखना चाहिये, कि स्त्रियाँ इस क़ामको न करें।

१२, ओले—आकाशसे जो वर्षाके पानीके साथ ओले गिरते हैं, वे भी बर्फ़की तरह अभक्ष्य हैं।

१३—भूमिकाय (पृथ्वीकाय) सब तरहकी मिट्टी, खड़िया, खार, नमक, आदि अभक्ष्य हैं; क्योंकि इनमें असंख्य जीव होते हैं। इनके बदले बहुत सी ऐसी चीजें काममें लायी जा सकती हैं. जो अचेतन हैं। खार या भूतड़ा नहाने-धोनेके काममें लाते हैं, वे उसके बदलेमें सोड़ा, आँवला, कंकोल, साबुन आदि काममें ला सकते हैं।

मिट्टी खानेसे पेटके असंख्य जीव मर जाते हैं और पाण्डु, आमवात, पित्त और पथरी रोग होते हैं। यदि भूलसे खाने--पीनेकी चीजोंमें धूल या कंकड़ी आ जाय, तो उसका दोष नहीं लगता, तथापि उपयोग रखना जरूरी है।

कच्चा सचित्त नमक श्रावकको त्याग करना चाहिये। अचित्तका व्यवहार करना चाहिये। दाल और शाकमें डाल देनेसे नमक सचित्तसे अचित्त हो जाता है, परन्तु मसाले या औषधिमें अचित्त नमकका व्यवहार किया जा सकता है।

१४—रात्रिभोजन-रातको भोजन करना इस भव और परभव दोनोंहीके लिये दुःखका कारण है। रातको खानेवाले उल्लू, काग, गीध, बिच्छू, चूहा, बिल्ली, सांप चिमगादड़ आदिकी योनिमें उत्पन्न होते हैं, बड़े दुःख पाते हैं और धर्मकी तो उन्हें प्राप्ति ही नहीं होती। स्वयं रातको भोजन करनेसे बाल-बच्चे भी वही चाल चलने लगते हैं। रातको खानेसे भोजनके साथ जीव-जन्तुओंके मिल जानेका भी बड़ा डर रहता है। उत्तम पशु-पक्षी भी रातको नहीं खाते। दिनको भी अन्धेरे या छोटे बरतनमें खाना मना है। दिनका बना हुआ भोजन रातको और रातका बना हुआ दिनको खाना भी दोषयुक्त है, सूर्योदयके दो घड़ी बाद तथा सूर्यास्तके दो घड़ी पहले खाना चाहिये। इसके पहले या पीछे खाना मना है। रातको पानी पीना रुधिरपान तथा भोजन करना मांस-भोजन करनेके समान। प्यारके मारे बच्चोंको रातमें खिलाना मना है।

१५—बहुबीज-जिन फलोंमें बीज-बीजमें अन्तर न हो, अर्थात् एकसे दूसरा सटा हुआ इस प्रकार बीज हों; उनको बहुबीज़ जानना। इनके प्रत्येक बीजमें जीव होते हैं, इसलिये इनका व्यवहार नहीं करना। अनार अभक्ष्य नहीं है।

१६—आचार बहुतसी चीजोंके बनते हैं; पर कोई-कोई तो तीन दिनमें ही अभक्ष्य हो जाते हैं। आचार अधिक तेलमें डुबाये जानेसे अचित हैं; क्योंकि ऐसा होनेसे उनके, विगड़नेका डर नहीं और तबतक वे भक्ष्य बने रहते हैं। आचारके बर्त्तन बड़ी सफाईसे और खूब अच्छी तरहसे मुंह बन्द करके रखे जाने चाहियें। जहाँतक हो सके, आचार जल्दी खाके खतम कर देने चाहियें। वर्षों तक पड़े रहने देना ठीक नहीं।

१७—द्विदल ऐसे पदार्थ जिनकी दो फाँक दाल हो सकती हो, जिनको पेरनेसे तेल नहीं [illegible] और जिनके रोपनेसे फल नहीं हो[illegible]

सबको द्विदल कहते हैं,--जैसे, चना, मूंग, अरहर, उड़द, बजरा, मक्का, कुलथी, मटर, ग्वार, मसूर आदि। इनकी दाल, पकौड़ी, भाजी चाहे कुछ बनाकर खाइये। इसके साथ अगर दूध, दही या मठेका संयोग होता है, तो तुरत ही दो इन्द्रियोंवाले जीव उत्पन्न होते हैं। छाछ, दूध या दहीको खूब गरम करके अथवा गरम करनेके बाद ठंडे पानीमें मिलाकर किसी विदल पदार्थके साथ मिलानेसे दोष नहीं होता। मेथी ग्वार या अन्य बिना तेजवाले पदार्थोंके पत्तोंका साग, मटर, चना, ग्वारकी फली, मूंगकी फली मटरकी फली, हरे चनेके पत्तोंके साग, सुखौते या आचार अथवा दालमोठ, बुँदिया, गांठिया आदि तले हुए पदार्थोंके साथ तथा उड़द, मूंग, आदिके पापड़ या बड़के साथ या मेथी पड़े हुए अचारमें कच्चा गोरस (दूध, दही या मठा) नहीं डालना चाहिये। दही-बड़ा अगर उबाले हुए गोरसका हो तो उसी दिन, खाना

नहीं तो अभक्ष्य है। राई तथा सरसों द्विदल नहीं है, क्योंकि उनमें तेल होता है। सिखरनके साथ भी द्विदलका स्पर्श नहीं करना चाहिये। स्पर्शदोष टालनेके लिये दाख, केला खजूर वगैरहका रायता भी गोरस गरम करके बनाना चाहिये। यदि गेहूं या बाजरेकी रोटीके साथ कच्चा गोरस खानेकी इच्छा हो तो द्विदलवाले वर्त्तन, हाथ, मुँह आदि धोकर ही विदलपदार्थ भोजन करने चाहिये। कहनेका तात्पर्य यह कि किसी प्रकार द्विदल-पदार्थके साथ कच्चे दूध-दही छांछकी छुआछूत नहीं होनी चाहिये। गोरस खूब गरम कर लेनेपर उसके साथ द्विदलके संयोगसे कोई दोष नहीं होता। इसलिये कढ़ी, बड़े या रायता बनाते समय गोरसको खूब गरम कर लेना चाहिये।

१८ बैंगन—सब तरहके बैंगन खाना छोड़ देना चाहिये; क्योंकि इसमे बहुत बीज होते हैं, इसके मुँहपर सूक्ष्म त्रस-जीव (कीड़े) होते

हैं। यह काम और निद्राको बढ़ानेवाली चीज़ है। इससे पित्तवाले रोग होते हैं। इसे खाना एकदम मना है। इसका तो आचार वगैरह कभी बनना ही नहीं चाहिये। रोग और पापके इस आगारको तो तिलाञ्जलि ही दे देनी चाहिये।

१६ अनजाने फल—जिस फलका नाम नहीं मालूम हो, जिसे कोई न खाता हो, उसका फल या फूल कभी नहीं खाना चाहिये। उसके गुण-दोषका जब पता ही नहीं, तब कौन जाने वह ज़हर ही हो? इसलिये उसका सदैव त्याग ही करना उचित है।

२० तुच्छफल—जो असार पदार्थ तृप्ति-कारक नहीं हो, जैसे खट्टे जामुन, पीलू, पीचू, गुण्डी, आमकी केरियाँ, आदि तुच्छ फल हैं। चना, मटर, ग्वार, बाजरा, शमी आदि केवल तथा अन्य फलोंको जो अत्यन्त कोमल होते हैं। ...छ ही जानना, क्योंकि कोमल अवस्थामें

वनस्पतियां अनन्तकाय होती हैं। इसलिये उनका कोमल अवस्थामें भक्षण करनेसे अनन्तकाय-व्रतका भङ्ग होता है। ऐसी चीजें कितनी भी खा जाओ, तो भी जी नहीं भरता। साथही जो ऐसे तुच्छ फल बहुत खाता है, उसके बहुत रोग भी होते हैं। इसलिये इन सब तुच्छ फलोंका त्याग ही करना चाहिये।

२१ चलित रस—सड़ा हुआ अन्न, वासी रोटी या पूरी, भात, दाल, साग, खिचड़ी, हलुआ, लपसी, भुंजिया, वर्फी, पेड़ा, ढोंकला, (दाल, और चांवलके चूर्णका बना हुआ) आदि खानेकी चीजें एक रात बीत जानेपर वासी-हो जाती हैं-यही नहीं, सूर्यके अस्त होते ही उनके स्वाद, गन्ध, रस और स्पर्शमें परिवर्त्तन हो जाता है और वह "चलित रस" हो जानेसे अभक्ष्य पदार्थ हो जाते हैं। यदि वरसातके दिनोंमें बड़ी उत्तमरीतिसे मिठाई बनायी गई हो, तो उत्तम तो यही है कि उसे पन्द्रह दिनों-

तक काममें लाये, मध्यम यह है, कि २० दिन तक काममें लाये और लाचारी दर्जे एक महीने तक उसे खा सकते हैं। यदि बनानेमें ही कच्ची रह जाये, तो उस दिनकी बनी हुई उसी दिन अभक्ष्य हो जाती है। शास्त्रमें जितना समय दिया हुआ है, उसके बाद पदार्थके चलित-रस हो जानेसे उसमें असंख्य दो इन्द्रियोंवाले जीव उपन्न हो जाते हैं। इसलिये श्रावकोंको चाहिये कि, बासी चीजें कभी न खायें। भोजनकी थालीमें जूठा भी नहीं छोड़ना चाहिये। बल्कि खानेके बाद थाली धोकर पी लेना चाहिये। यदि खानेसे बचा हुआ अन्न किसी जानवरको दे दिया जाये, तो और भी अच्छा है। दिनकी बनी चीजें सूर्यास्तके पहले खा लेनी चाहिये। रातकी बनी चीजें सवेरे खाना उचित नहीं। सवेरे सूर्यकी किरणें निकलनेके बाद चूल्हा जलाना और सूर्यास्त होते ही उसे बुझा [illegible] इये। अर्थात

रातको कभी चूल्हा नहीं जलाना चाहिये।

चलित रसके सम्बन्धमें अन्य सूचनाएं।

१ आटा—बिना छलनीमें चाला हुआ आटा पीसनेके बाद कुछ दिनोंतक मिश्र (यानी कुछ सचित्त और कुछ अचित्त) रहता है—इसके बाद वह अचित्त हो जाता है। सावन-भादोंमें बिना चाला हुआ आटा पांच दिनोंतक मिश्र रहता है। आश्विन-कातिकमें चार दिन, मगसर-पूसमें ; ३ दीन ; माघ-फगुनमें पांच-पहर ; चैत्र-बैसाखमें चार पहर ; जेठ-असाढ़में तीन पहर। इसके बाद वह अचित्त हो जाता है। और जिस दिन आटा पीसा गया हो, उसी दिन चाल लिया गया हो तो सभी ऋतुओंमें उसी दिन अचित्त हो जाता है और दो घड़ी बाद मुनि, महाराज भी उसे खा सकते हैं। अचित्त हो गये हुए आटेमें भी वर्ण, गन्ध, रसका परि-वर्तन हो गया हो तो वह अभक्ष्य हो जाता है। अगर उसमें कीड़े पड़ गये हो, तो उसे चाल कर

भी नहीं खाना चाहिये। चौमासेके दिनोंमें आटा हर रोज दोनों वक्त चालना चाहिये और जाड़े गरमीमें एक वक्त। कारण नहीं चालनेसे उसमें जाली पड़ जाती है और वह अभक्ष्य हो जाता है। आटेको हरदम इस्तेमाल करनेके पहले चाल लेना चाहिये। गेहूं और चनेके आटेसे बाजरेका आटा बहुत जल्द बिगड़ता है। इस लिये उस पर ज्यादा ख़याल रखना चाहिये। व्यापारी पुराना अन्न बेचा करते हैं। इस लिये पिसवानेके पहले अनाजको अच्छी तरह देख लेना चाहिये। नहीं तो कितनेही छोटे-छोटे जीवोंके भी पिस जानेका डर रहता है। चौमासेमें तो ख़ास करके हर एक चीज़में कीड़े पड़ जानेका डर रहता है। इसलिये नाजको बराबर देखते रहना चाहिये, इन सब बातोंकी तरफ़ स्त्रियोंको पूरा ख़याल देनेकी जरूरत है। इसमें उनकी बुद्धिमानी है। पहलेतो बड़े-बड़े घरोंकी स्त्रियां भी जीवदयाकी ख़ातिर अपने घरके काम लायक़ आटा आपही

पीसलिया करती था; पर आजकलके ज़मानेमें तो इसमें अपनी हलकाई समझी जाती है।

२ जलेबी—जिस तरिकेसे जलेबी बनायी जाती है, वह बहुतही ख़राब है। उससे बहुतसे जीवोंकी उत्पत्ति होनेका भय रहता है। मेदेको कई दिन रखे बिना और उसमें कुछ खटाई डाले बिना जलेबी फूलती नहीं है। इसलिये इसे तो कभी खाना ही नहीं चाहिये। बाजारकी तो और भी ख़राब होती है।

३ हलवा—हलवा यदि जिस दिन बने उसी दिन खाया जाये, तो भक्ष्य है। नहीं तो अभक्ष्य है। बासि तो खाना ही नहीं चाहिये।

४ इमरती—यह जलेबीकी सी होती है। पर इसमें बासी या खट्टी मैदानी काममें नहीं आती, अतएव जिस दिनकी बनी हो उस दिन खानेमें कोई हर्ज नहीं है। दूसरे दिन अभक्ष्य हो जाती है।

५ मावा (खोया)—दूधका मावा जिस

दिनका बना हो उसी दिन भक्ष्य है। रातको अभक्ष्य हो जाता है। अगर वह घीमें भून लिया जाये तो रात-भर रह सकता है। उससे पेड़ा, बर्फी, गुलाबजामुन आदि मिठाई उसी दिन बनानी और सिर्फ ५ दिन तक खानी चाहिये। उसके बाद उसका रंग और स्वाद बिगड़ जाता है। कितने ही हलवाई मावेके साथ रतालू आदि कन्द मिला देते हैं। इस बातका ध्यान रखना चाहिये।

६ मुरब्बा—आमका मुरब्बा जाड़ा, गरमी और बरसातके दिनोंमें जबतक उसका रंग, गन्ध, रस और स्पर्श नहीं बदले तबतक खाने योग्य है। जैसाकि आचारके प्रकरणमें लिखा है। अगर वैसीही सफ़ाई और सावधानीके साथ उसे रखा जाये तो ठीक है। मुरब्बेकी चाशनी अगर नरम हो, तो बिगड़ जाती है। पन्द्रह बीस दिनमें ही उसके मुरब्बेमें खराबी आ जाती है। इस लिये ऐसी चीजें बड़ी सावधानीसे बनानी चाहिये।

चौमासेमें तो इन चीजोंकी और भी देख-भाल करनेकी जरूरत है। मुरब्बेकी चाशनी नरम हो, तो थोड़े दिनमें मुरब्बा बिगड़ जाता है। नरम चासनीके मुरब्बेमें पन्द्रह-वीस दिनमें ही काईसी जमने लगती है। भुआ उठने लगता है। मुरब्बे या आचारका वर्तन खुला रखनेसे भी खराव होनेका डर रहता है। इसके विपरीत मिठाई या गाँठिया वगैरह वन्द रहनेसे ही खराव हो जाते हैं। चौमासेमें तो हवा लगनेसे भी चीजें विगड़ने लगती हैं। इसलिये जो चीज़ जिस तरीकेसे रखने योग्य हो, वैसेहो रखनी चाहिये।

७ सेव, वड़ी, पापड़ आदि चीजें जाड़े-गरमीमें सूर्योदय होनेपर ही बनानी और सूर्यके अस्त होनेके पहले ही सुखा लेनी चाहिये। नहीं तो वे बासी हो जाती हैं। चौमासेमें तो ऐसी चीजें बनाकर रखना ही ठीक नहीं, क्योंकि उनमें पीले रंगकी काईसी जम जाती और अनेक त्रस जीव उत्पन्न हो जाते हैं। चौमासेमें बने हुए

पापड़ प्रतिदिन फेफार कर देखते रहना चाहिये। भरसक तो इस ऋतुमें इन्हें काममें नहीं लानाही अच्छा है। ऐसी चीजें बनी रखी हो, तो आषाढ़ सुदी १५ के पहले ही खाडालना चाहिये और फिर कार्तिक सुदी १५ के बाद बनाना चाहिये। बाजारकी बनी हुई ये चीजें तो खानी ही नहीं चाहिये। श्राद्ध-विधिमे लिखा है, कि चौमासेमे सेव, वड़ी और पापड़ नहीं खाना चाहिये।

८, दूधपाक—बसौंधी, खीर, सिखरन, दूध मलाई आदि चीजें दूसरे दिन वासी हो जाती हैं। इसलिये अभक्ष्य हो जाती हैं। रातको भी ये चीजें अभक्ष्य होती हैं। दही या दहीकी मलाईके विषयमें भी यही समझना चाहिये।

९, आम—आर्द्रा-नक्षत्रके बाद आमका रस चलित होने लगता है, इसलिये आम अभक्ष्य हो जाता है। सड़े हुए, उतरे हुए, बदबूदार आम एक दम अभक्ष्य हैं। चूसकर खानेकी अपेक्षा रस निचोड़कर खाना ठीक है।

रस भी

ज्यादा देरतक नहीं रखना चाहिये। यदि चार-छःया आठ घड़ीबाद खाना हो, तो ठंडे पानीके वर्त्तनमें रसवाला वर्त्तन रख देना चाहिये और ऐसी जगह रखना चाहिये, जहाँ गरमी न लगे। आर्द्रा-नक्षत्रके बाद तो आमका खाना छोड़ ही देना चाहिये।

१०, पापड़ —सेकें हुए पापड़ दूसरे दिन बासि हो जाते हैं। घी या तेलके तले हुए पापड़ दूसरे दिन खासकते हैं।

११, चटनी—धनिये और पुदीनेकी चटनीमें सेके हुए चने या गाँठिया आदि डाल कर जो चटपटेदार चटनी बनायी जाती है। वह जिस दिन बने उसी दिन भक्ष्य है। दूसरे दिन नहीं। नीबू, करौंदी, धनीया, पुदीना आदि चीजोंकी चटनीमें यदि किसी तरहका अनाज न पड़े तो भक्ष्य है। भरसक तो चटनी रोज ही ताजी बना कर खानी चाहिये।

...मसाला—आटे या मेथीके साथ

हुआ मसाला दूसरेही दिन अभक्ष्य हो जाता है।

१३, पकवान—पकवान या मिठाइका जब तक रुप रस या गन्ध नहीं विगड़े तबतक भक्ष्य रहते हैं। वरसातके दिनोंमें उत्तम रीतिसे बनायी हुइ मिठाइ पन्द्रह दिन गरमीमें २० दिन तथा जाड़ेमें एक महीने तक भक्ष्य रहती है। हलवाईकी दूकानकी मिठाईका समय यह नहीं हो सकता; क्योंकि इसका कोई ठीक नहीं रहता कि उसने कब मिठाई बनायी। अगर वर्ण, गन्ध, रसमें फ़र्क पड़ जाये तो इस समयके पहले हो अभक्ष्य हो जाती है। दूकानकी मिठाईमें बहुतेरे दोष हैं। इसलिये जहाँतक होसके घरपरही बनवानी चाहिये। वरसातमें तो भूलकर भी हलवाई की दूकानकी मिठाई नहीं खानी चाहिये।

१४, वेसनकी चोजें—सेव, गाँठिया, बुंदिया दालमोठ आदि वेसनकी चोजोंका समय मिठाई-के हो समान जानना। भुजिया, कचौरी, पूरी, मालपुआ आदि नरम चोजें तो दूसरे ही दिन बासी हो जाती हैं। इसलिये अभक्ष्य हैं।

१५, चूरमेका लड्डू—यदि तला हुआ न हो तो दूसरे दिन बासी हो जाता है, नहीं; तो दूसरे तीसरे दिन भी खा सकते हैं। बहुतसे लोग चूरमे के लड्डू या अन्य मिठाइयोंमें तिल डालते हैं। तिल अभक्ष्य है इसलिये उसका त्याग करना चाहिये ।

१६, रसोई—गरमीके दिनोंमें सवेरेकी रसोई, (दाल, भात, आदि) शामको स्वाद हीन (चलित—रस) हो जाती है, इसलिये अभक्ष्य है। रोटी—पूरी भी बड़ी हिफ़ाज़तसे रखना चाहिये ।

१७, भात—रींधे हुए भातपर यदि दही या छाछके छींटे डाले जायें तो वह आठ पहर तक भक्ष्य रहता है; पर सवेरेका पकाया हुआ भात इसी तरह दहीके छींटे डाल कर रखा गया हो, तो सिर्फ़ उसी दिन तक भक्ष्य रहता है—सूर्यास्तके बाद वह काम लायक़ नहीं रहता।

१८, दही—सवेरेका जमाया हुआ दही

सोलह पहर तक काम लायक रहता है। इसके बाद अभक्ष्य हो जाता है। साँझका जमाया हुआ दही १२ पहर बाद अभक्ष्य हो जाता है। इसका हिसाब यों लगाना चाहिये, कि रविवारको दिनमें दस बजे दही जमाया जाये तो उस समयसे नहीं, बल्कि सूर्योदयसे ही समयकी गिनती होगी। वह दही मंगल वारके सूर्योदय के पहले—पहल खालेना चाहिये। इसके बाद उस दहीके छांछका सोलह पहर समय गिना जायेगा। दूधका यदि रंग वगैरह न पलट गया हो, तो वह चार पहर तक पीने योग्य होता है। दोपहर या संध्याके बाद दुहा हुआ दूध हो, तो उसमें रातके बारह बजेके पहले-पहल जोरन (मेलन) डाल देना चाहिये।

बाजारका दही नहीं खाना चाहिये; क्योंकि बाजारके वर्त्तन-बासनका कोई ठिकाना नहीं रहता—कभी-कभी तो उसमें मरे हुए कीड़े मिलते हैं। कांजीका काल भी १६, पहरका

है। इस प्रकार दूध, दही, छाँछ मट्ठे का जो समय कहा गया है । उसके पहले भी यदि उनका रुप, रस, गन्ध विगड़ जाये तो उन्हें अभक्ष्य जानना चाहिये ।

१६, दूध — दूध चार पहर तक भक्ष्य रहता है; पर साँझका दुहा हुआ दूध आधी रातके पहले ही इस्तेमालमें आजाना चाहिये। कभी-कभी गरमीके दिनोंमें कड़ी गरमीमें, बड़ी देर तक बिना गरम किये छोड़ देनेसे विगड़ जाता है; पर उसे दही समझ कर काममें नहीं लाना चाहिये; क्यों कि उस दूधका वर्णादिक पलट जानेसे वह अभक्ष्य हो जाता है। आजकल बहुत से दूध वेचनेवाले रातको दूध खूब गरम करके उसमेंसे मलाई निकाल लेते हैं । और उसमें अरारोट मिलाकर सवेरे ताजा दूध कहकर उसीको वेचदेते हैं । इसका पूरा खयाल रखना ।

विगड़े हुए या वासी दूधका दही, खीर, बसौंधी, मलाई, खोआ आदि नहीं खाना चाहि-

ये। जहाँतक हो सके, तुरतका दुहा हुआ दूध झटपट गरम कर लेना चाहिये, नहीं तो उसके बिगड़नेका डर रहता है। बिना छाने दूध नहीं पीना चाहिये। जैनशास्त्रोंमें इन ७ चीज़ोंका छान लेना बहुत ज़रुरी बताया गया है।

(१) मीठा पानी (२) खारा पानी (३) गरम-पानी (४) दूध (५) घी (६) तेल और (७) आटा।

दुध वेचने वाले अकसर दूधमें पानी मिला देते हैं। उन्हें इसका विचार नहीं रहता, कि उस पानीमें कीड़े हैं या बाल हैं या वह पानी छना हुआ है या नहीं।

गाय, भैंस, बकरी और भेड़का दूध तो ग्रहण करने योग्य है और किसी जानवरका नहीं। जो दूध जल्द बिगड़ जाता है, वह रोग उत्पन्न करता है।

२०, घी—घीका रूप, रस, गन्ध, स्पर्श बिगड़ जाय, तो वह अभक्ष्य हो जाता है। बहुत दिनका रखा हुआ घी भी बिगड़ जाता है।

आज कल बहुतसे बेईमान घीके व्यापारी चर्बी, रतालू आदि मिला कर घी बेचते हैं। इधर कई दिनोंसे तो "वनस्पति-घृत"के नामसे एक प्रकारका विलायती घी बिकने लगा है। यह सब अभक्ष्य हैं। इसकी ओर सबको ध्यान देना चाहिये। घी बनानेवाले यदि मक्खनसे घी निकाल कर तुरत आग पर रख गरम कर लिया करें तो ठीक है नहीं तो अक्सर देखा जाता है, कि वे दो-चार या पाँच-सात दिनका इकट्ठा हुआ मक्खन लेकर घी बनाते हैं। जिनके घरमें गाय भैंस हो, उन्हें तो अपने घर घी तैयार करनेकी चेष्टा करनी चाहिये।

२१—बलि—हालकी ब्यायी हुई गाय-भैंसके तुरत दुहे हुए दूधकी बलि बनती है। ब्यायी हुई गायका दूध १० दिन, भैंसका १५ दिन, बकरीका ८ दिन तक ग्रहण करने योग्य नहीं है।

२२—खट्टी पकौड़ी—जो चाँवल, उरद दालकी दहीमें पकौड़ी जाती

है। वह रातकी बनायी हुई अभक्ष्य होती है। सूर्योदयके बाद बनानी और सूर्यास्तके पहले ही खालेनी चाहिये। रोटी, पूरी, दाल, कढ़ी, भुजिया, पकौड़ी या विना दही छिड़का हुआ भात आदि चीजें बासी होने पर बिलकुल खराब हो जाती हैं। इनके खानेसे अनेक जीवोंके विनाशका भय रहता है, शरीरमें बहुतसे रोग पैदा होते हैं, प्रभुकी आज्ञाका भी उल्लंघन होता है। इसलिये हमको हरएक चीज तुरतकी ताजीही खानी चाहिये। बहुतसी जगह यह रिवाज है, कि शीतलाष्टमीके दिन चूल्हा नहीं जलाते और रातकी बनी हुई चीजें दूसरे दिन सवेरे और शामको खाते हैं। यह बिलकुल मिथ्यात्व है। इसे छोड़ देना चाहिये।

२३ दही-बड़े—अगर गरम दहीमें बनाये हों, तो उसी दिन भक्ष्य हैं। कच्चे दहीके बड़े अभक्ष्य हैं।

२४, खाखरा—गुजरात आदि प्रान्तोंमें

गेहूंका खाखरा बना कर सुखा कर रख लिया जाता है और लोग उसे पाँच-सात या अधिक दिनतक खाते रहते हैं। अक्सर लोग उसी बरतनमें ऊपरसे भी खाखरा बना बना कर रखते जाते हैं। ऐसा करना उचित नहीं जिस बर्तनमें रखते हैं, उसे तो हरदम साफ़ ही रखना चाहिये नहीं तो उसमें कितने ही त्रस जीवोंके पैदा हो जानेका डर रहता है।

२५—पापड़की लोई, बड़ा, मीठी पूरी—उरद, मूंग आदिके बड़े या मीठी पूरी, मुलायम रोटी सवेरेकी बनी हुई हो, तो चार पहर तक खाने योग्य रहती है।

२६ जुगलीराव—ज्वार या मक्काके आटेको छाँछमें रींध कर जो 'राब' बनायी जाती है उस जुगली राबका समय १२ पहरका है। इसके उपरान्त वह अभक्ष्य हो जाती है। अन्न कम और छाँछ ज्यादा हो तो जुगली राब और छाँछ कम तथा अन्न ज्यादा हो तो 'घाट' कहलाती है। ८ पहर है।

२७ रायता—केला, दाख, खजूर, छुहारे आदिका रायता बनाते हैं। इसका समय १६ पहरका कहा गया है। यदि इसे विदलके साथ खाना हो, तो खूब गरम करके दही डालना चाहिये। सेव, गाँठियाँ, बुंदिया आदि डाल कर रायता बनाना हो तो पहले दही गरम करके तब इन विदल पदार्थोंको मिलाना चाहिये। यह रायता शाम तक खाने योग्य है।

२८ भूना हुआ अन्न-चावल, चना, मटर, मक्का आदिको भून कर चवेना बनाते हैं। इसका काल-प्रमाण भूंजिया, पूरी, चूरमेके लड्डू आदिके समान है। इसे चौमासेमें १५ दिन, जाड़ेमें १ महीना और गरमीमें २० दिन जानना।

२९ ढुंढणिया-यह काठियावाड़में बनती है। ज्वार-बजरेमें पानी डालते और कूटते हैं। इसके बाद उसे सुखाकर भूसी अलग कर देते हैं। उसका समय वर्षामें १५ दिन, जाड़ेमें १ महीना गरमीमें २० दिन।

३२ बत्तीस अनन्तकाय।

सभी अनन्तकाय अभक्ष्य हैं; क्योंकि एक सुईकी नोंक बराबर जगहमें कन्द-मूलोंकी कलीमें अनन्त जीव रहते हैं। अतएव श्रावकोंको उचित है कि अनन्तकायसे परहेज़ करें। एक जिह्वाके स्वादके लिये अनन्त जीवोंकी हानि करना बहुत ही बुरा है। अनन्तकायका सर्वथा त्याग करनेसे अनन्त जीवोंको अभयदान देनेका फल मिलता है। क्या अभक्ष्य-भक्षण किये बिना हमारा निर्वाह नहीं हो सकता? क्या और वनस्पतियोंका अकाल पड़ गया है? जो लोग प्राण जायें, तो जायें, पर अभक्ष्य पदार्थ नहीं खाते, वे धन्य हैं। जो अपने बुरे कर्मोंके वशमें पड़ कर जानबूझ कर आँखें बन्द किये हुए, परभवका लेश-मात्र भी भय न मान कर अदरक, मूली और गाजर आदि चीज़ें खाते हैं, उन पापियोंकी न जाने क्या गति होगी? मनुष्यत्वके साथ जैन-धर्मका पालन कर अपना यह भव सफल करो और अन्तमें शिव-सुखके भागी बनो। हे भव्य-पुरुषों! भगवान तीर्थङ्कर महाराजने जो २२ अभक्ष्य पदार्थ बतलाये हैं, उनका शीघ्रतासे त्याग कर, श्रावक नामको सार्थक कर, सच्चे जैन बनो।

बत्तीस अनन्तकायोंके नाम।

१ भूमिके मध्यमें जो कन्द उत्पन्न होते हैं, वे सब तरहके कन्द। २—कच्ची हल्दी। ३—कच्ची अदरक। ४—सूरन। —कच्चू। ७—सतावर। ८—विरारीकन्द। । ११—गिलोय। १२—प्याज़।

१३—करैला। १४—लोना साग। १५—गाजर। १६—लोढ़ीपद्म-का कन्द। १७—गिरिकर्णी—(यह काठियावाड़में अँचारके काममें आती है, कच्छ देशमें इसकी पैदाइश बहुतायतसे है।)। १८—किसलय (कोमलपत्ते) सभी प्रकारके वृक्षके हरे और नये पत्ते तथा वनस्पतियोंके उगनेके समयका अंकुर अनन्तकाय जानना चाहिये। यदि जरूरत हो, तो मोटे पत्ते लेने चाहिये। १९—खीरसुआकन्द (कसेरू) २०—थेगकन्द। २१—मोथा। २२—लोन-वृक्षकी छाल। २३—खिलोड़ कन्द। २४—अमृतबेली।

२५—मूली (देशी विदेशी)—मूलीके पांचों अङ्ग अभक्ष्य हैं. (१) मूलीका कन्द (२) डाल (३) फूल (४) फल (५) बीज ये पाँचों ही अभक्ष्य हैं। इनमें बहुतसे त्रस-जीव उत्पन्न होते हैं।

२६—भुईफोड़—यह बरसातके दिनोंमें छत्रके आकारमें उत्पन्न होता है।

२७—बथुएका साग।

२८—बरहा—जिसमें विदल धान्यकी तरह अङ्कुर निकल आया हो। रातको जो दाल पानीमें छोड़ी गयी हो और उसमें अङ्कुर निकल आये हो, वह अभक्ष्य है। जो अन्न पानीमें फुलाया जाये वह सवेरे ही फुलाना चाहिये और थोड़े ही देर पानीमें रखना चाहिये। मतलब यह कि अङ्कुर नहीं फुटना चाहिये। अगर अन्नको उबाला जाये, तो अङ्कुर निकलनेका भय नहीं रहता।

२९—पालकका साग। ३०—सुअरवल्ली (जंगली लता)।

३१—कोमल इमली, जिसमें बीज न हों, वर्जित है।

३२—आलू कन्द तथा रतालू, पिण्डालू, शकरकन्द, घोषात

की, करे, करीर आदि वनस्पतीयोंके अङ्कुर अनन्तकाय कहे जाते हैं। टिंडेका कोमल फल, वरुण-वृक्ष, बड़ा नीम आदिको भी अनन्तकाय जानना (अङ्कुरावस्थामें)।

इस प्रकार अनन्तकायके ३२ नाम गिनाये गये हैं। प्रसिद्ध तो इतने ही हैं, विशेष नाम तो अनेक हैं। किसी वनस्पतिके पांचों अङ्ग, किसीकी, जड़, किसीका पत्ता, फूल, छाल, या काठि अनन्त काय होता है। किसीका एक, किसीके दो, किसीके तीन, किसीके चार और किसीके पांचों अङ्ग अनन्तकाय होते हैं। जिस वनस्पतिके पत्ते, फल आदिकी नस या सन्धि मालूम न पड़े, गांठ गुप्त हो, तुरत टूटजाये, तोड़ते ही पिचक जाये, पत्ता मोटे दलका और चिकना हो, जिसके फल और पत्ते बड़े कोमल हों उसको अनन्तकाय जानना। यह सब लक्षण एक ही में हों, यह सम्भव नहीं है। कोईका साग भी अनन्तकाय कहा गया है।

अनन्तकायके सम्बन्धमें जानने योग्य बातें।

१—कितने ही धूर्त दूकानदार दूध, खोये और घीमें रताळू या शकरकन्द पीस कर मिला देते हैं। इसके बारेमें पूरा ध्यान रखना चाहिये।

२—गीली अदरक या कच्ची हल्दीके स्थानमें सोंठ या सूखी हुई हलदी खानेके काममें लानी चाहिये। इनके सिवा और किसी अनन्तकायका सुखौता भी काममें नहीं लाना चाहिये। इनका अँचार भी वर्जनीय है। गाजरका सुखौता या अँचार तथा पीक-

हल्दी, अदरक, गिरोकणीं आदिका

३ दूकानदार अपने यहाँ लहसुन, प्याज़ वगैरह अशुद्ध चीज़ें भी रखते हैं। बाजारकी चटनीमें तो प्रायः लहसुन मिला होता है। साथही वे बासी चीज़ें भी गरम करके ताजीके समान बेंचते हैं। अतएव बाजारू चीजोंके खानेमें कई तरहके दोष हैं। जिस कढ़ाई या तेलमें लहसुन प्याज तले गये हैं, उसमें फिर कोई चीज़ नहीं तली जानी चाहिये। कितने ही लोग दालमें अदरक छोड़ते हैं कितने ही लहसुन-प्याज़से बघारते हैं, कभी कभी लोग दाल या कढ़ीमें हरी इमली डाल देते हैं। इनकी ओर विशेष ध्यान देना चाहिये छुआ-छूतका भी विचार रखना उचित है। अनजानकी बात दूसरी है, पर जान बूझ कर दोष करना ठीक नहीं है।

४ मेथी पालक वगैरहके सागोंमें भुआ और लोनीका साग जो अनन्तकाय है, मिले तो उसे निकाल देना चाहिये। अनजाने की बात और है।

एक और ग्रन्थमें ये नीचे लिखे बाईस पदार्थ अभक्ष्य बतलाये गये हैं—

(१) गूलर (२) प्लक्ष (३) काकोदुम्बरी (४) बड़ (५) पीपल (इस किस्मके पांच फल); (६) मांस, (७) मदिरा, (८) मक्खन और मधु (ये चारों महा विकृत या महाविगई कहे जाते हैं।) (९) अनजाने फल (१०) अनजाने फूल (११) हिम (बर्फ) (१२) विष (१३) ओले (१४) सच्चित्तमिट्टी (१५) रात्रि-भोजन (१६) दही-बड़े आदि जो कच्चे दही-दूधमें नाजकी बनी चीजें डाल कर बनाये जायें (१७) बैगन (१८) पोश्ता (१९) सिंघाड़ (यद्यपि अनन्तकाय नहीं है तथापि काम वृद्धि करता है, इस लिये वर्जित है) (२०) छोटे बैगन और (२१) कायंवाली। २२ खस खसके दाड़े।

पहले कहे हुए २२ अभक्ष्योंके साथ इस ग्रन्थोंमें ११, १८, २०, २१ और २२ नम्बर वाले अभक्ष्य विशेष हैं, इनका भी त्याग करना चाहिये ।

अभक्ष्य अनन्तकाय दूसरेके घर, अचित्त किया हुआ हो, तो भी नहीं खाना चाहिये ; क्योंकि एक तो दोष लगे और दूसरे व्यसन पड़ जाये। सोंठ तथा हल्दी नाम तथा स्वादका फेर होनेसे अभक्ष्य नहीं रह जाते। इन अभक्ष्योंमें भाँग, अफ़ीम आदिकी जिन्हें लत लगी हुई है, उनको चाहिये, कि उसकी नाप-तौल ठीक रखे। रात्रि भोजनके बारेमें चौविहार तिविहार या दुविहारका नियम ले लीजिये, कि एक महीनेमें इतना करेंगे। यदि रोगके कारण दवाके तौर पर कोई अभक्ष्य पदार्थ खाना पड़े तो उसका नाम, समय और वजन भलीभाँति समझ लेना चाहिये। यदि कभी कोई चीज़ अनजानतेमें खा ली जाये, तो उससे व्रतका भङ्ग नहीं होता।

श्रावकोंको अन्य मतोंके मानने वालों या जाति बिरादरी वालोंके यहाँ जीमने जाना पड़े, तो बहुत समझ-बूझ कर जीमना चाहिये; क्योंकि उनके यहाँ २२ अभक्ष्य और ३२ अनन्तकायमेंसे कुछका दोष तो अवश्य ही लग जानेका डर रहता है। इसीसे जहाँ तक बन पड़े, बहुत कम आदमियोंसे जान-पहचान रखे, वहीं तक अच्छा है। ख़ास कर द्वादशव्रतधारी तथा विरति-व्रत-वालोंको तो ऐसी जगहोंमें जाकर जीमना ही नहीं चाहिये।

ऊपर जो बाईस अभक्ष्योंका वर्णन किया गया है, उसको भलीभाँति समझनेकी चेष्टा करनी चाहिये। स्वयं भगवान्ने उनके

भोजनका निषेध किया है, इसलिये उनकी आज्ञाका अवश्य ही पालन करना चाहिये। हमलोग पूजाके समय सबसे पहले माथेमें जो तिलक लगाते हैं, उसका आशय यही है, कि हम प्रतिज्ञा करते हैं, कि हे भगवन्! हम आपकी आज्ञाएँ अपने शिर पर चढ़ाते हैं। इसलिये नित्य ही भगवानकी आज्ञाका पालन करना तथा इस प्रतिज्ञाके चिह्न-स्वरूप तिलक लगाना चाहिये।

इन अभक्ष्य पदार्थोंका वर्जन करके हम असंख्य जीवोंको अभयदान देनेका पुण्य प्राप्त कर सकते हैं। शास्त्रोंमें लिखा है, कि एक जीवको अभय देना सुवर्णके सुमेरुपर्वतका दान करनेके बराबर है। फिर जो असंख्य जीवोंको अभयदान करते हैं, उनके पुण्यका क्या ठिकाना है? इसलिये हे चतुर और सुज्ञ बन्धुओ! आप लोग भगवानके वचनोंका आदर कीजिये; क्योंकि यही मोक्षका द्वार है। जो यह कहते हैं, कि खाना, पीना, मौज करना ही जीवनका मूल-मन्त्र है, वे पापी और मूर्ख हैं। जो लोग शरीरको दुःखोंकी आँचसे तपाकर महाफलकी प्राप्ति करनेमें लग जाते हैं, वेही शीघ्र मोक्षके अधिकारी होते हैं।

विशेष सूचनाएँ।

बाईस अभक्ष्योंके सिवा और भी कितनी ही चीज़ें अभक्ष्य हैं। हम नीचे उनका हाल और कब कौन चीज़ भक्ष्य या अभक्ष्य है, उसका वर्णन लिखते हैं।

१—फागुन सुदी १५ से कातिक सुदी १५ तक दोनों तरहके खजूर, दोनों तरहके तिल, पोस्ता, खारेक, काजू वगैरह मेवे तथा तरहकी पत्तोंकी भाजी अभक्ष्य है। फागुनका चौमासा

लगनेके पहले ही तिलका तेल पेरवाकर रख लेना चाहिये; क्योंकि तिलमें बहुतसे त्रस जीवोंकी उत्पत्ति होती है, इसलिये ८ महीने पहलेसे ही तेल भर कर रख लेना चाहिये। तिल-शक्करी, तिलके लड्डू और रेवड़ियाँ नहीं खानी चाहिये। पोस्ता बहुबीज है, इसलिये इसका खाना सर्वथा वर्जित है। जिस चीजमें पोस्ताके दाने पड़े हों, वह सब तरहसे श्रावकोंके लिये अभक्ष्य है। अकसर लोक चूरमेके लड्डू घुघुरी आदि मिठाइयोंमें पोस्ताके दाने डालते हैं, इस बातका पूरा-पूरा ख़याल रखना चाहिये।

होलीके दिनसे ऋतु बदलने लगती है, इसलिये अनेक चीजोंमें त्रस जीव उत्पन्न होते हैं। इसलिये इस समय भक्ष्याभक्ष्यका पूरा विचार रखना चाहिये।

काजू, अंगुर और सूखे अञ्जीर आदिमें जीव पड़नेका सम्भव रहता है। अतएव ये अभक्ष्य हैं। ये चीजें जाड़ेके दिनमें ही खानेकी हैं, अतः ८ महीनेतक (कातिक सुदी १५ तक) इनका व्यवहार न कर, उसके बाद करना चाहिये।

जो शाग-भाजी या पत्ते आदि तरकारी या आचारके लिये रखे जाते हैं, वे आठ महीने बाद अभक्ष्य हो जाते हैं; क्योंकि नव महीनेमें उनमें त्रस जीव उत्पन्न होने लगते हैं।

जो लोग आठ महीने भाजी या पत्ते नहीं खाते, वे पानके पत्ते भी नहीं खा सकते और कढ़ीमें मीठे नीबूका रस भी नहीं डाल सकते, यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये।

२—असाढ़ चौमासेसे कातिक चौमासे तक, सूखे मेवे, जैसे, बदाम, पिस्ता, चिरौंजी, किशमिश, दाख, अखरोट, कुंकणी केला,

जरदालू, अंजीर, मूंगफली, सूखे नारियलकी गिरी, सूखी रायण, कच्ची खांड़, सूखे अंगुर आदि अभक्ष्य हैं। कारण उनमें तद्वर्ण जीव होते हैं, कुन्थू आदि त्रस जीव पड़ जाते हैं और भुआ या काई जम जाती है। ताज़े तोड़े हुए बदाम, पिस्ता, पानीवाला नारियल उसी दिन काममें ला सकते हैं। जो बदाम या पिस्तेकी मींगी बाज़ारमें बिकती है, वह नहीं खानी चाहिये। एक दिनका फोड़ा हुआ नारियल, जिसका पानी निकाल लिया गया है, दूसरे दिन तक खा सकते हैं अगर उसका रंग बदल नहीं गया हो। कितने ही सूखे मेवे फागुनमें भी अभक्ष्य माने जाते हैं। बात भी ठीक मालूम होती है; क्योंकि प्रायः देखा जाता है, कि चैत-वैसाखके दिनोंमें काली दाखमें कीड़े पड़ जाते हैं। इसी प्रकार ज़रदालू, अंजीर वगैरह पदार्थोंमें भी जीवोत्पत्ति हो जाती है, जिससे वे अभक्ष्य समझने चाहिये। बहुतसे व्यापारी गत वर्षकी दाख, अंजीर, बदाम, पीस्ता, चिरौंजी आदि मेवे बेचते हैं। खरीदते समय इनके विषयमें पूरी सम्हाल रखनी चाहिये। जहाँ तक हो सके, ताज़े माल ही खरीदने चाहियें। नहीं तो जाने-पहचाने हुए व्यापारीके यहाँसे ही मंगवाना चाहिये। नौकर चाकरोंके हाथसे मंगवानेमें तो अकसर धोखा ही होता है।

३—चौमासेमें (असाढ़ सुदी १५ से कातिक सुदी १५ तक सूखे हुए सागका * सुखौता तो सर्वथा त्याग ही करना चाहिये।

* आज कलके समयमें प्रायः सब तरहके सागोंको सुखौता बनानेकी जो रीति रही है, वह सर्वथा त्याग करने योग्य है। यह कोई शास्त्रीय विधान

कारण, उसमें त्रस जीव पैदा हो जाते हैं। गरमीमें भी सुखौता बड़ी हिफ़ाजतसे रखना चाहिये, नहीं तो कीड़े पड़ जाते हैं। चौमासेमें तो इसका ख़्याल कर त्याग करना चाहिये।

४—चवेना—चाँवल, गेहूं बाजरा, ज्वार, मक्का, चना आदिका भुना हुआ चवेना कभी नहीं खाना ; क्योंकि इस प्रकार भुने हुए अन्नमें बहुतसे जीवोंके विनाशका भय रहता है।

५—किसी भी वनस्पतिका भर्त्ता बनाकर नहीं खाना चाहिये

६—पान—इसके खानेसे बहुतसे त्रस जीवोंके नाशका भय है। इसलिये पान नहीं खाना। ब्रह्मचारियोंके लिये तो यह और भी बुरा है। जिनको पान खानेकी आदत लग गयी है, उनको भी कमी करनी चाहिये।

७—चक्कीका आटा—अजकल बड़े-बड़े शहरोंमें विदेशी चक्कोका आटा बिकता और बाहर भी चालान होता है। कितने दिन बाद भी यह आटा बिकता रहता है, अतएव इसमें बहुतसे जीव पैदा हो जाते हैं। अतएव इसका व्यवहार नहीं करना चाहिये। जिस घरमें इस आटेकी चीजें बनी हों, वहाँ खाने नहीं जाना चाहिये। इस आटे या मैदेकी बनी मिठाई, पुरी, कचौरी, नानखताई, विसकुट, आदिका त्याग करना ही उचित है।

नहीं है। केवल लोगोंने अपने आरामके लिये ही यह प्रथा जारी कर रखी है। मारवाड़ बीकानेरकी ओरके श्रावकोंने तो अभी [illegible] को भी खाने-की [illegible] रखी है। यह तो और भी खराब है। हमारे ख्यालसे तो किसी [illegible] बनाना ही नहीं चाहिये। इसमें अनेक तरहके दोष हैं। [illegible]

८—मीठा काजू—हलवाई जो मीठा काजू बनाता है, उसको बिना देखे माल बना डालता है, इसलिये उसमें त्रस-जीव होनेकी शङ्का रहती है। इसलिये उसे नहीं खाना चाहिये। यदि खानेकी इच्छा हो तो घरमें बना लो और काजुका छिलका अलग करके भलीभाँति देख लो कि कोई जीव तो नहीं है।

९—विलायती दूध—विलायतसे डिब्बेमें भरे हुए नेसल्स मिल्क,' 'मिल्कमेड मिल्क' आदि दस-बारह तरहके बनावटी दूध आते हैं, जो मुसाफिरीमें दूधके बदले चायमें डाले जा सकते हैं; परन्तु ये सब तथा शीशेमें बन्द करके आनेवाले आचार, मुरब्बे, गुलकन्द और विलायत बिस्कुट आदि वस्तुएं अभक्ष्य हैं। इसलिये इन सबका त्याग कर देना चाहिये। आजकल हमारे देशमें इतना रोग-शोक इन्हीं सब अभक्ष्य पदार्थों के खानेसे बढ़ गया है।

१०—सोडा, लेमोनेट, जिञ्जर, राजबेरी, पिक-मी-अप, विल-कास, पलटौनिक, कोल्ड-ड्रिङ्क, कोल्ड-क्रीम, जिंजरेल-लाइम, लीथियो, मरोक, चेरी सीडर, चेम्पियन सीडर, क्विनाइन, टौनिक, क्रीम सोडा आदि कितनी ही चीज़ें बोतलमें बन्द करके आती हैं। इनका व्यवहार करना ठीक नहीं है। इसका कारण यह है कि इन बोतलोंको मुसलमान, पारसी, आदि सभी मुंहमें लगाते हैं—फिर उन्हें अपने मुंहसे लगाना धर्म भ्रष्ट होना नहीं तो और क्या है? फिर ये न जाने कितने दिनोंकी भरी-भरायी दूकानोंमें धरी रहती हैं। आजलकके अंग्रेजी पढ़े जैन-युवकों-को इस नष्टकारी आदतसे बचना चाहिये।

११—बीड़ी, हुका, चिलम, चुङ्गी, सिगरेट, तम्बाकू, गाँजा, चरस, माजून, अफ़ीम, कुसुम्बी, भाँग आदि नशेकी चीजें काममें लाना बुरा है। जीवहिंसा, अनर्थका कारण तथा पैसेकी फ़िजूल खर्चीके सिवा इससे और कोई फ़ायदा नहीं है। जिसे नशेकी लत लग जाती है, उसे तो जिस दिन नशा नहीं मिले, उस दिन जान जानेकी नौबत आ जाती है। अन्तमें क्षयरोग हो जाता है और किसी-किसीकी तो नशेकी ही हालतमें जान चली जाती है। इससे अग्नि, वायु तथा अन्य त्रस जीवोंकी हिंसा होती है, इसलिये इन सब व्यसनोंको छोड़ देना चाहिये।

१२—विलायती दवाएं भी अभक्ष्य हैं। उचित तो यह है कि आदमी रोगका कारण ही पैदा न होने दे। यदि आत्मा बलवान हो, तो क्या नहीं कर सकती? यह स्वर्ग प्राप्त कर सकती है, सिद्धि-सौध (मोक्ष-पद) को भी प्राप्त कर सकती है। कितने ही लोग तो बड़े शौकसे विलायती दवाएं पिया करते हैं, यह बहुत बुरी आदत है। प्रत्यक्ष अनाचार है।

१३—गुड़में जीवकी उत्पत्ति होती है। कितने ही बेईमान व्यापारी नफेके लिये गुड़में चनेका बेशन, खारा या मिट्टी मिला देते हैं। इस लिये खूब परीक्षा करके गुड़ लेना और खाना चाहिये।

१४—विदेशी खाँड़ बहुत ही अशुद्ध पदार्थोंसे साफ़ की जाती है, इस लिये उसका व्यवहार करनेसे धर्म भ्रष्ट होता है और रोग भी होता है। इसीसे लोग काशी आदिकी चीनी काममें लाने लगे

हैं, पर इसमें भी बेईमानी चल गयी है। परदेशी चीनी स्वदेशी कहकर बेंची जाती है। इसलिये जानी हुई जगहसे ही चीनी लेनी चाहिये, जहाँ इस तरहकी मिलावट नहीं की जाती हो। इसी प्रकार विदेशी नमक, विदेशी केशर भी इस्तेमाल नहीं करनी चाहिये।

१५—चढ़ी दाल—किसी तरहकी दालका अनाज बिना दोनों दाल अलग किये नहीं खानी चाहिये।

१६—दिल्लीका हिन्दू-बिस्कुट-दिल्ली, पूना, बड़ौदा आदि स्थानोंमें जो बिस्कुट तैयार होते हैं, उन्हें हमारे कितने ही भाई काममें लाते हैं; परन्तु पहले तो उनके बनानेमें बिलायती मैदा काममें लायी जाती है और दूसरे दो-दो तीन-तीन दिन तक पानी में फूलती रहती है, इसके बाद उसके बिस्कुट बनाये जाते हैं। इससे असंख्य संमूर्च्छिम और द्वीन्द्रियादिक जीवोंकी उत्पत्ति होती है और उनकी हिंसा होती है। कहीं-कहीं तो बिस्कुट तैयार करनेमें चरबी भी काममें लायी जाती है, इसलिये बिस्कुट सर्वथा त्याग देने योग्य है। नानखाखताईमें भी बिलायती मैदा काममें लायी जाती है, इससे वह भी त्याग देना चाहिये।

१७—टूथ-पाउडर और टूथ ब्रश (दांतका मंजन और कूंची) बिलायतसे जो दन्तमंजन आता है, उसे काममें लाना ठीक नहीं न मालूम उसमें कौनसा भक्ष्याभक्ष्य पदार्थ पड़ा होता है। यदि मंजन ही लगाना हो तो बदामके छोकलेको जला कर उसकी बुकनीके साथ कपूर, बरास, खड़िया, हरड़, बहेड़ा, आँवला, अनारकी छाल, गेरू, कत्था, मांचरस, हीराकसीस ...

अनारके सूखे हुए फूल, माजूफल, कवावचीना आदि गुणकारी वस्तुओंको मिलाकर दाँतका बढ़िया मञ्जन तैयार किया जा सकता है। इसके अलावा जानवरोंकी हड्डीके बने हुए ब्रूश भी काममें लाना उचित नहीं है।

१८—होटल—होटल, विश्रामगृह, भोजनालय, ब्राह्मणोंका-वासा आदि नामोंसे कितने ही होटल नगरोंमें खुले हुए हैं। जिससे पूछो वही कहेगा, कि शुद्ध ब्राह्मणोंके हाथकी शुद्ध वस्तुएँ वहीं उसीके पास मिलती हैं; पर न तो उन सभीकी जात-पाँतका कुछ ठीक रहता है, न वहाँ अच्छी चीजें मिल सकती हैं। इस-लिये इन होटलोंमें खाना बहुत ही बुरा है। आजकल कुछ लोगों-की मति तो ऐसी भ्रष्ट हो गयी है, कि छुआछूत, भक्ष्याभक्ष्यका बिलकुल विचार ही छोड़ बैठे हैं और मुसलमानों तथा किस्तानों-के होटलसे मक्खन और पावरोटी माँग कर खाते हैं। न मालूम ये किस नरकमें जा कर पड़ेंगे।

१९—पानी—आजकल जहाँ-तहाँ रास्तेमें और रेल-स्टेशनों पर नलें लगी हैं जिनसे पानी लेकर मुसाफिर अपनी प्यास बुझाते हैं; पर यह बहुत बुरी बात है। बिना छना हुआ पानी शराबके बराबर कहा गया है। पीनेका पानी तो जरूर ही छान लेना चाहिये। बर्तन कभी जूंठे नहीं रहने देना चाहिये। पानीके बर्तनमें जूंठे लोटे आदि नहीं डालना चाहिये। जो बिना ढक कर नहीं रखा गया हो, उसे पीनेमें बड़ा दोष है। थोड़ी सी ला-परवाहीमें असंख्य जीवोंका नाश हो जाता है। इसलिये पानीके ... प्रत्येक भाई-बहनको पूरी सावधानी ... ।

वर्जित वनस्पतियाँ।

जिन वनस्पतियोंके खानेसे तृप्ति नहीं होती और साथ ही बहुत हिंसा होनेका भय रहता है, उनके नाम ये हैं—

नाम और वर्जित होनेका कारण

ईख—कितना भी खाइये, तृप्ति नहीं होती। रस चूस कर सोठी फेंक देते हैं, उससे बहुत संमूर्च्छिम जीव उत्पन्न होते हैं और मिठाईके मारे चींटी आदि त्रस जीव भी उसके ऊपर टूट पड़ते हैं, जो जानवर या आदमी के पैरों तले पड़ कर मर जाते हैं।

कुम्हड़ा, पेठा, जामुन करौंदा, बेर, गुन्दी } इन सबमें भी संमूर्च्छिम जीवोंकी उत्पत्ति और हिंसाका भय रहता है इसलिये त्याग देना ही ठीक है।

अञ्जीर—इसमें बहुत बीज होते हैं, अतएव त्यागने योग्य हैं।

शहतूत, फालसे,—कितना भी खा जाओ तृप्ति नहीं होती, इसीलिये वर्जित हैं।

सिंघाड़ा—कामवर्द्धक है, अतः त्याज्य है। तोड़ते वक्त बहुत जीव मरते हैं।

बालोल—ताजा मिलना मुश्किल है, और थोड़ी देर रखनेसे भी उसमें त्रस जीव उत्पन्न हो जाते हैं।

दर्शन-विरुद्ध तथा लोक-विरुद्ध वर्जित वनस्पतियाँ।

नाम और—कारण।

चिंचढ़ी—लम्बी साँपके आकारकी होती है। अशुद्ध परिणामी है, अतः वर्जित है।

कटहल-फनस—दर्शन-विरुद्ध (माँसपेशी-सी मालूम पड़ती है) होनेके कारण वर्जित है।

कद्दू—मोटाफल होनेके कारण लोग नहीं खाते।

पेठा—लोग इसे कभी-कभी पशुकी कल्पना कर देवीके सामने बलि चढ़ाते हैं। (औषधके लिये हर्ज नहीं है)

कड़वी तुम्बी—कहीं जहरी निकली तो जान ही ले लेती है।

कंटोला, करेला, टिण्डा, टमेटा, कंकोड़ा, — इनमें कीड़े पड़ जाते हैं, किसीमें जीव बहुत होते हैं, तो किसीमें बीज। इसलिये इनका त्याग ही उचित है।

महुआ—इसीके फलसे शराब चुलायी जाती है, इसलिये वर्जित है।

बहुतसे त्रस जीवोंकी हिंसासे बचना हो, तो नीचे लिखी वनस्पतियोंका और भी त्याग करना उचित है,—

श्रीफल (बेल)-का फल या मुरब्बा अथवा बाँसका आचार वर्जित है, स्त्रियोंके लिये तो खास कर मना है। इनसे रोग भी उत्पन्न होते हैं।

फागुन सुदी १५ से कातिक सुदी १५ तक जिनकी भाजी या पत्तोंका साग जीव हिंसाके कारण खाना मना है उनके नाम—

मेथीका साग, ताँदड़ी, धनिया, पुदीना, भिंडी, केला, नागर-बेल, अरवी, कन्दा, सूरन, नीमके हरे [illegible], पोईका साग, इलाय-

चीके पत्ते, चाय, गुलाबके फूल, तुलसीके पत्ते, अजवाइनके पत्ते आदि ८ महीनेतक वर्जित हैं। गोभी और करमकल्ले (पत्तागोभी) में भी बहुतसे त्रस जीव उत्पन्न होते हैं, जो मालूम नहीं पड़ते। जाड़ेके दिनोंमें इन्हें अच्छी तरह देख भाल और झाड़-पोंछ कर काममें लाना चाहिये। सब तरहकी तरकारी बहुत सावधानीसे खानी चाहिये।

आर्द्रा-नक्षत्रसे ही त्यागने योग्य वनस्पतियाँ—

आम—आम स्वादिष्ट फल है, इसलिये बहुतसे लोग आर्द्रा-नक्षत्रके बाद भी खाते हैं; पर यह भगवान्‌की आज्ञाका उल्लंघन करना है, इससे असंख्य जीवोंका नाश होता है, जिससे अन्तमें दुर्गति होती है। इससे आर्द्रा-नक्षत्रसे ही इसका खाना छोड़ देना चाहिये।

चौमासेमें वर्जनीय वनस्पतियाँ।

भिण्डी, कंटोला, करैला, तुरैया, — यों तो अन्य ऋतुओंमें भी त्रस जीव उत्पन्न होते हैं; पर चौमासेमें तो खास कर बहुत पैदा होते हैं। करैला वगैरह तो ऊपरसे जरा भी सड़े नहीं मालूम पड़ते; पर उनके अन्दर कीड़े होते हैं। कहीं भूलसे जीवहिंसा न हो जाये, इसीलिये चौमासेमें वर्जनीय है। यदि कोई साग या भाजी खानेकी आवश्यकता ही पड़े, तो उसे भलीभाँति देखकर, बनारना खाना चाहिये।

व्यवहारमें आनेवाली वनस्पतियाँ।

शाकके काममें—	फलके तौर पर
१ ककड़ी	तरबूजा
२ करेला	मीठे नीबू
३ कंटोला	पपीता
४ गिनुआ	अननास
५ ग्वारकी फली	नासपाती
६ गूंदा	अमिया
७ हरे चने	अमरुद
८ हरेज्वार	कोठ
९ चौराई	केला
१० टमेटा	अनार
११ टिण्डा	आँवला
१२ ड़ाला	नारङ्गी
१३ डोडी	नरियल
१४ खरबूजा	पीनस
१५ तरोई	अंगुर
१६ थूहर	बिजौरा
१७ दातोन (बबूल, ग्रारेडी आदि)	
१८ दुधिया	
१९ परवल	
२० पत्तेका साग	

२१ फलसी
२२ भिण्डी
२३ हरी मिर्च
२४ मरवा
२५ मोगरा
२६ खट्टे नीबू
२७ मटर
२८ आलकुल

ऊपर जिन वनस्पतियोंके नाम लिखे हैं, इनमें भी जिनका त्याग करते बने, करना चाहिये। जो वनस्पति बारहों महीने मिलती हो, उसका उपयोग करना, जैसे—केला। इसके सिवा प्रत्येक हरी साग-सब्जी अमुक समय तक खानी, फिर नहीं; इसका ध्यान रखना चाहिये। जैसे कार्त्तिक महीनेमें अमुक-अमुक चीजें खानी चाहिये, परन्तु यदि उनका बारह महीनेका आश्रय ले रखे, तो विरतिपनका फल मिलता है; क्योंकि आम जाड़ेके बाद चैतसे आर्द्रा-नक्षत्र तक खाना चाहिये, फिर नहीं। इस प्रकार नियम कर लेनेसे बड़ा लाभ होता है। नियम लेनेके बाद प्रति वर्ष कुछ चीज़ोंका सर्वथा त्याग करना होगा। ऐसा करनेसे त्याग और अभयदानकी भावना प्रबल होती है। जबतक नियम नहीं किया जाता, तबतक कोई फल नहीं मिलता। श्रावकोंको तो चाहिये कि छओं "अट्ठाईयोंमें" * तो वनस्पतियोंका एकदम त्याग करदें।

* चैत्र और आश्विनकी दो अट्ठाई शाश्वती हैं। वह चैत सुदी ७ से १५

जानने योग्य विषय।

अब जिन लोगोंने सचित्त पदार्थोंका सर्वथा त्याग कर रखा हैं, उन्हें यह बतलाया जाता है कि कौन-कौन चीजें सचित्त हैं और वे कैसे अचित्त बनायी जा सकती हैं तथा उनका व्यवहार कितने समय तक किया जाना चाहिये।

१ गेहूं, बाजरा आदि नाज सचित्त हैं; पर कुछ काल बाद अचित्त हो जाते हैं। उसका वर्णन श्राद्धविधि आदि ग्रन्थोंमें देखना चाहिये। मेथी भी अनाज है, यह याद रखना चाहिये। इन अनाजोंका आटा पीसने पर वह कैसे अचित्त होता है, यह हम पहले ही लिख चुके हैं। जबतक वे सचित्त रहते हैं, तबतक उनको काममें नहीं लाना चाहिये। चने आदिकी दाल अचित्त है, इसलिये उसका आटा (बेसन) भी अचित्त है।

२ ताजे ज्वार या चनेका चबेना मिश्र (अर्थात् सचित्त और अचित्त) है, अतएव नहीं व्यवहार करना।

३ सभी अभक्ष्य वस्तुएं सचित्त हैं, अतएव उनका त्याग करना अत्यन्त आवश्यक है।

४ सिंके हुए चने तथा और अनाज बालूमें भूने हुए हों तो बराबर अचित्त बनते हैं। अन्यथा कामके लायक नहीं होते।

५ धनिया, जीरा अजवाइन आदि कूट-पीस कर या आँच दिखानेसे अचित्त हो जाते हैं और तब व्यवहारमें लाये जा सकते हैं, यों नहीं। दही, छाँछ आदिमें पड़ा हुआ सचित्त जीरा प्रासुक नहीं होता।

६ हरियाली भी सचित्त कही जाती है, क्योंकि जो चीज़ें बोनेसे पैदा होती हैं, वह सचित्त हैं। अतएव सूखी हरियाली भी यदि सेकी हुई हो तभी काममें ला सकते हैं।

७ नमक भी सचित्त है, परन्तु भूमिकामें लिखे अनुसार अचित्त होनेपर व्यवहारमें ला सकते हैं।

८ लाल सेंधानमक सचित्त है—सफेद सेंधव अचित्त है।

९ खड़िया भी सचित्त है। यह खानेके काममें तो नहीं आती पर मंजन बनानेके काममें आती है। इसे पहले कहे अनुसार अचित्त बनाकर व्यवहार करना चाहिये। कैम्फर-चॉक आदि जो चीजें आती हैं, उनका व्यवहार नहीं करना चाहिये, क्योंकि मालूम नहीं, वे किस प्रकार बनायी जाती हैं।

१० "चलित रस" शीर्षकके नीचे जिन चीजोंकी सूची दी हुई है, वे सब सचित्त हैं और इसीलिये अभक्ष्य हैं।

११ उबाल देनेपर पानी अचित्त हो जाता है। जहाँ जीव पड़ने का डर हो, वहाँ पानी कपड़ेसे ढककर रखना चाहिये। चौमासेमें गरम किया हुआ पानी भी सिर्फ ३ पहर तक काममें ला सकते हैं। बादमें सचित्त हो जाता है।

१२ तरह-तरहके शरबत, सोडा गुलाबजल, केवड़ाजल, आदि कभी व्यवहारमें नहीं लाना चाहिये।

१३ अंग्रेजी दवाएं जो अर्ककी तरह हों, कभी नहीं लेनी। अगर लाचारी लेना ही पड़े तो प्रायश्चित्त भी करना चाहिये।

आदि एकदम अभक्ष्य हैं।

१५ बबूल आदिके हरे दाँतौन सचित्त हैं।

१६ ताम्बूल, नीमपत्ते, तुलसी, इलायची आदिके पत्ते सचित्त होनेके कारण व्यवहारमें नहीं लाने चाहिये। परन्तु नीमके पत्ते कढ़ीमें डाले जायें या नागरवेलका पत्ता घी आदिमें गरम करके डाला गया हो, तो वह चीज अचित्त और व्यवहारमें लाने योग्य हो जाती है।

१७ नीम और आमकी मोजरें, तथा गुलाब आदिके फूल सचित्त हैं, इसलिये व्यवहार नहीं करना चाहिये। गुलाबके फूल मिठाइयोंपर छिड़कते हैं, यह अचित्त होनेपर व्यवहार करना कहा है।

१८ धनिये या पुदीनेकी चटनीमें वनस्पति और नमक दोनों ही सचित्त हैं; पर पीस देनेसे वे दोनों दो घड़ी बाद अचित्त हो जाते हैं, इस लिये २ घड़ीके बाद खाना चाहिये।

१९ पिसे हुए मसाले, जिनमें नमक मिला हो या अँचार भी दो घड़ी बाद खाये जा सकते हैं; परन्तु ग्वार आदिके अँचारके अचित्त होनेमें देर लगती है; क्योंकि उनके अन्दर बीज होते हैं, इसलिये उनपर नमकके शस्त्रका शीघ्र प्रभाव नहीं पड़ता।

२० अनार और अमरूद भी सचित्त हैं, ये दो घड़ी बाद अचित्त नहीं होते, इसलिये इनका सर्वथा* त्याग करना चाहिये।

*सर्वथा त्यागके २ भेद हैं—एक सर्वथा-सचित्त त्याग और दूसरा सर्वथा-वस्तु-त्याग जिन्होंने सचित्तका सर्वथा त्याग किया है, वे तो उसे आग आदिके द्वारा अचित्त कर व्यवहारमें ला सकते हैं; पर जिन्होंने अनार और अमरूद

सचित्त तो कभी व्यवहारमें नलाये। हां, यदि अग्निके द्वारा अचित्त कर लिया जाये, तो व्यवहार कर सकते हैं। अमरूदको आग दिखानेसे भी उसका बीज कठोर ही रहता है, इससे मिश्र-ताका दोष लगता है।

२१ ईख और शहतूत सचित्त हैं। इसलिये सर्वथा त्याग करना चाहिये, ईखका रस निकालनेके दो घड़ी बाद अचित्त हो जाता है।

२२ सीताफलको तो सचित्त त्यागियोंको अवश्यही त्याग देना चाहिये; क्योंकि वह तो कभी अचित्त होही नहीं सकता कारण, उसमेंसे बीज अलग नहीं हो सकते, इसी प्रकार जाम्बु, रायण, बोर, हरेबदाम या अंगुर आदि बिना बीज निकाले नहीं खाना चाहिये।

२३बीजवाले केले भी सचित्त हैं, इन्हें भी नहीं खाना चाहिये। पके हुए केले छिलका उतार लेनेसेही अचित्त हो जाते हैं।

२४ पके हुए ककड़े या खरबूजेके कुल बीज निकाल कर दो घण्टेके बाद खाना चाहिये।

२५ ककड़ीके बीज अलग नहीं किये जासकते, इसलिये सचित्त नहीं खाना, पर तरकारी आदिमें अचित्त है। इसलिये खाना चाहिये।

२६ आमका रस निकाल, गुठली फेंकनेके बाद दो घड़ीके अनन्तर खाना चाहिये।

आदि वस्तुओं का ही त्याग किया है, [illegible]

२७ नारियलका पानी या गरीसे बीज निकाल देनेके दो घड़ी बाद व्यवहारमें लाना चाहिये ।

२८ पकी इमली, खजूर या पिन्डखजूरके भीतरका बीज निकाल कर दो घड़ी बाद काममें लाना चाहिये ।

२९ सुपारी पूरी तोड़कर व और बदाम तथा अखरोट बीज निकालनेके दो घड़ी बाद खाना चाहिये । कितनी ही चीजें तुरत अचित्त हो जाती हैं; पर अपनेको इसका ठीक ज्ञान नहीं, इसलिये दो घड़ी बाद ही उपयोग करना चाहिये ।

३० पिस्ते या जायफलका छोकला उतार लेने पर अचित्त हैं

३१ काला मुनक्का या लाल मुनक्का जिसमें बीज हो, उसे बीज निकाल कर दो घड़ी बाद खाना ।

३२ जरदालूके भीतरकी गुठली निकाल कर दो घड़ी बाद खाना चाहिये । यदि उसके भीतरके बदाम हो, तो उसे भी तोड़कर दो घड़ी बाद खा सकते हैं ।

३३ पेड़ परसे तुरतका उतारा हुआ गोंद दो घड़ी बाद अचित्त हो जाता है ।

३४ सूखे अंजीरके बीज तो निकाले नहीं जा सकते । अतः अंजीरका सर्वथा त्याग करना चाहिये ।

३६ सचित, त्यागीको उचित है, कि यदि अचित्त पानीके करनेका अवसर न मिले, तो पानीमें थोड़ी-सी शक्कर या राख डाल देनेसे वह पानी दो घड़ी बाद अचित्त हो जाता है ।

ऊपर देखी हुई सचित-सम्बन्धी सूचनाओंकी और सचित्त-

त्यागियोंको खास कर ध्यान देना चाहिये। इसीके अनुसार और गुरुके बतलाये अनुसार वर्त्तना चाहिये। श्रीजिनेश्वर भगवानने जिन बाईस अभक्ष्योंका निषेध किया है; उन्हें और अन्य अनाचरणीय पदार्थोंका भी त्याग करना चाहिये। वनस्पतियोंमें तो जरूर ही नियम रखना चाहिये। नियम प्रतिज्ञा करनेसे विरतिपना आता है और इस विरतिका बड़ा भारी फल होता है। कहा है, कि "ज्ञानस्य फलं विरतिः"—ज्ञानका फल विरति है। यदि विरति न हुई तो ज्ञान किस कामका? लम्बी-चौड़ी बात तो सभी कर सकते हैं, परन्तु आचरण करना ही कठिन व्यापार है। मनमोदक नहीं भूख बुझाते।" अविरतिसे निगोदिया आदि जीवोंकी तरह घने कर्म-बन्ध होते हैं। (देश-विरति या सर्व-विरति) को अङ्गीकार करते हैं, उनकी प्रशंसा ऐसे देवता भी करते हैं, जो विरति नहीं कर सकते। अविरतिसे बड़े दुःख उठाने पड़ते हैं और नारकी वगैरह भवोंमें पड़ना होता है। इसलिये विरतिका अङ्गीकार करना चाहिये। नियममें थोड़ा कष्ट, परन्तु बड़ा लाभ होता है। इसका परिणाम सुखका हेतु है। बहुत नियम न पार लगे, तो तीर्थङ्कर महाराजने जिन वस्तुओंका निषेध किया है, उनका भक्षण नहीं करना चाहिये।

अब यह नियम (प्रतिज्ञा-व्रत) क्योंकर अङ्गीकार करना तथा पालना चाहिये? व्रतका अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार और अनाचार—इस प्रकार ४ दोष लगते हैं। जैसे—किसीने चौविहार (चार आहारका त्याग) किया है, और उसे पानीकी

२७ नारियलका पानी या गरीसे बीज निकाल देनेके दो घड़ी बाद व्यवहारमें लाना चाहिये ।

२८ पकी इमली, खजूर या पिनखजूरके भीतरका बीज निकाल कर दो घड़ी बाद काममें लाना चाहिये।

२९ सुपारी पूरी तोडकर * और बदाम तथा अखरोट बीज निकालनेके दो घड़ी बाद खाना चाहिये । कितनी ही चीजें तुरत अचित्त हो जाती हैं; पर अपनेको इसका ठीक ज्ञान नहीं, इसलिये दो घड़ी बाद ही उपयोग करना चाहिये ।

३० पिस्ते या जायफलका छोकला उतार लेने पर अचित्त है

३१ काला मुनका या लाल मुनका जिसमें बीज हो, उसे बीज निकाल कर दो घड़ी बाद खाना ।

३२ जरदालूके भीतरकी गुठली निकाल कर दो घड़ी बाद खाना चाहिये । यदि उसके भीतरके बदाम हो,तो उसे भी तोड़कर दो घड़ी बाद खा सकते हैं ।

३३ पेड़ परसे तुरतका उतारा हुआ गोंद दो घड़ी बाद अचित्त हो जाता है ।

३४ सूखे अंजीरके बीज तो निकाले नहीं जा सकते । अतः अंजीरका सर्वथा त्याग करना चाहिये ।

३६ सचित्त, त्यागीको उचित है, कि यदि अचित्त पानीके करनेका अवसर न मिले, तो पानीमें थोड़ी-सी शक्कर या राख डाल देनेसे वह पानी दो घड़ी बाद अचित्त हो जाता है ।

ऊपर देखी हुई सचित-सम्बन्धी सूचनाओंकी और सचित्त-

त्यागियोंको ख़ास कर ध्यान देना चाहिये। इसीके अनुसार और गुरुके बतलाये अनुसार वर्त्तना चाहिये। श्रीजिनेश्वर भगवानने जिन बाईस अभक्ष्योंका निषेध किया है; उन्हें और अन्य अनाचरणीय पदार्थोंका भी त्याग करना चाहिये। वनस्पतियोंमें तो जरूर ही नियम रखना चाहिये। नियम-प्रतिज्ञा करनेसे विरतिपना आता है और इस विरतिका बड़ा भारी फल होता है। कहा है, कि "ज्ञानस्य फलं विरतिः"—ज्ञानका फल विरति है। यदि विरति न हुई तो ज्ञान किस कामका? लम्बी-चौड़ी बात तो सभी कर सकते हैं, परन्तु आचरण करना ही कठिन व्यापार है। मनमोदक नहीं भूख बुझातीं।" अविरतिसे निगोदिया आदि जीवोंकी तरह घने कर्म-बन्ध होते हैं। (देश-विरति या सर्व-विरति) को अङ्गीकार करते हैं, उनकी प्रशंसा ऐसे देवता भी करते हैं, जो विरति नहीं कर सकते। अविरतिसे बड़े दुःख उठाने पड़ते हैं और नारकी वगैरह भवोंमें पड़ना होता है। इसलिये विरतिका अङ्गीकार करना चाहिये। नियममें थोड़ा कष्ट, परन्तु बड़ा लाभ होता है। इसका परिणाम सुखका हेतु है। बहुत नियम न पार लगे, तो तीर्थङ्कर महाराजने जिन वस्तुओंका निषेध किया है, उनका भक्षण नहीं करना चाहिये।

अब यह नियम (प्रतिज्ञा-व्रत) क्योंकर अङ्गीकार करना तथा पालना चाहिये? व्रतका अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार और अनाचार—इस प्रकार ४ दोष लगते हैं। जैसे—किसीने चौ- चार आहारका त्याग) किया है, और उसे [illegible]

इच्छा हुई तो उस इच्छा-मात्रसे अतिक्रम हुआ ; जिस स्थान पर हो वहाँसे पानी पीनेके स्थानपर जाये, तो व्यतिक्रम-दोष लगता है ; वर्तमानमें पानी लेकर मुंहके पास ले आये ; पर पिये नहीं तो अतिचार-दोष लगता है, और जब पानी पी डाले तब अनाचार हो जायेगा । इसलिये व्रत पालनेवालोंको तो चाहिये, कि ऐसी चेष्टा करे । जिसमें अतिक्रमका भी दोष न लगे । इस नाशवान शरीरके मोहमें पड़कर उभयलोकमें सुख देनेवाले व्रतको तो प्राणोंसे भी बढ़कर समझना चाहिये । आगमें कूद पड़ना अच्छा पर व्रतका भङ्ग करना अच्छा नहीं होता ।

चँदोवा ।

प्रत्येक श्रावकके घर नीचे लिखे १० स्थानोंमें चँदोवे या छप्पर जरूर बांधने चाहिये—

(१) चूल्हेपर (२) पानीके पन्डेरे पर (३) भोजनके स्थानोंमें (४) चक्कीकी जगह (५) खाने-पीनेकी चीज पर (६) दूध-दहीके ऊपर (७) सोनेके बिछोनेके ऊपर (८) स्नान करनेकी जगह (९) समायिक आदि धर्म-क्रियाके स्थानमें (पौषधशालामें) और मन्दिरमें ।

सात प्रकारके छनने रखना चाहिये ।

(१) पानीका छनना । (२) घीका छनना । (३) तेलका छनना । (४) दूधका छनना । (५) छाँछका छनना । (६) गरम किये हुए अचित्त पानीका छनना । (७) आँटा चालनेका या छाननेकी चलनी ।

इनके द्वारा हम बहुतसे जीवोंको हिंसासे बच सकते हैं। जैनशासनका यही उपदेश है, कि वही पुरुष धन्य है, महान है पुण्यवान् है, तेजवान है, सुखी है, भाग्यशाली है, जोकि जीवदया का भली भाँति पालन करता है।

अब संक्षेपमें यह समझ लीजिये कि कैसे बर्त्तनमें और किस प्रकार भोजन करना चाहिये।

जो दोष रात्रि भोजनमें है, वही अंधेरेमें भोजन करनेमें भी है। ठीक वैसा ही दोष छोटे मुंहवाले लोटे आदिमें पानी पीनेमें भी है, जिसके भीतर नजर न पहुंच सके।

काँसा या कलईवाले ताम्बे पीतलके बर्तन काममें लाने चाहिये। टीनपर कलई किये हुए बर्त्तन तो कभी किसी जैन या हिन्दूको व्यवहारमें नहीं लाना चाहिये। लोहे या टीनके बर्त्तन त्याज्य हैं। केले आदिके पत्तेपर भी भोजन नहीं करना चाहिये। दिनको भी यदि अंधियाला हो तो नहीं खाना चाहिये। उजेलेमें स्वच्छ बर्त्तनमें, भक्ष्याभक्ष्यका विचार करते हुए स्थिरचित्त हो बिना बोलेचाले भोजन करना चाहिये। खाते-खाते बातें करनेसे ज्ञानावरणीय कर्मबन्ध होता है। दूसरी ओर ध्यान चले जानेसे भोजनमें मक्खी आदि त्रस जीव पड़ जानेका भय रहता है। अगर कहीं ग्रासके साथ मुंहमें मक्खी चली गयी तो कै हो जाती है। अगर बोलनेकी जरुरत ही पड़ जाये तो पानीसे मुंह शुद्ध करके बोलना चाहिये। सदा देख-भाल कर अच्छा और परिमित भोजन करना चाहिये। दो तीन आदमी एक साथ नहीं खाना चाहिये।

भोजन करते समय दूसरी धोती पहननी चाहिये। और हाथ पैर धो कर खाने बैठना चाहिये। जो प्रभुकी नित्य पूजा करनेवाले हैं, उन्हें तो बराबर राखसे हाथ शुद्ध कर लेना चाहिये। मिट्टी सचित्त है, इस लिये राख ही काममें लानी चाहिये। खुली जगहमें जिसके ऊपर छाननी न हो, भोजन नहीं करना चाहिये। घी, गुड़, दूध, दही, मठा, दाल तरकारी और पानीके बर्त्तन क्षण भर भी खुले नहीं छोड़ने चाहिये। श्रावकको उचित है, कि थोड़ी भूख रहते ही खाना खतम कर दे; यानी जितना चाहिये, उससे कम ही भोजन करे अथवा जितनी भूख हो, उतना ही खाना चाहिये। थालीमें जूठन नहीं छोड़नी चाहिये। भरसक तो खा-पी कर थाली धो कर पी लेनी चाहिये। थाली धो कर पीनेसे आयंबीलका फल होता है। मुनिमहाराजको शुद्धता-पूर्वक आहार करानेके बाद आप इसी प्रकार शुद्धताके साथ नित्य आहार करनेसे अमृतके समान फल मिलता है, नहीं तो अवश्य ही विषके समान फल होता है।

जूठा बर्त्तन देर तक नहीं पड़े रहने देना, उसे तुरत आप धो लेना या नौकरसे धुलवा लेना चाहिये। अन्यथा, उसमें बहुतसे जीवोंकी उत्पत्ति हो सकती है।

स्त्रियोंके ध्यान देने योग्य बातें।

जैसे राज्यमें मन्त्री प्रधान होता है, वैसे ही घरमें स्त्रीकी प्रधानता होती है। इसलिये उनको इस अभक्ष्य-अनन्तकायका

वर्णन भली भाँति पढ़ कर व्यवहारमें लाना चाहिये। यदि वे नीचे लिखी बातोंकी ओर ध्यान दें तो अपना पराया सबका कल्याण कर सकती हैं।

१—सूर्योदयके पहले कभी चूल्हा नहीं जलाना। पहले सारा घर झाड़-बुहार करके तब कोई काम शुरू करना चाहिये।

२—प्रति दिन सवेरे घर-द्वारकी सफाई और वर्तनोंकी मंजाई धुलाई होनी चाहिये। लकड़ी आदि भी ख़ास करके वरसातमें, देख लेनी चाहिये। क्योंकि अकसर उसमें जीव पड़ जाते हैं, जो विना देखे जल जा सकते हैं।

३—रसोई करके वर्तन वासन तथा घी, मसाला, तेल, दूध, दही, रोटी, पूरी, पानी आदिके वर्त्तन खुले नहीं रखने चाहिये। उच्छिष्ट पदार्थको तो तुरत हटा देना चाहिये, नहीं तो उसमें बहुतसे संमूर्च्छिम जीव पड़ जाते हैं।

४—नमक और मसाले भरसक शीशेके वर्त्तनोंमें रखने चाहिये। बरसातमें मिर्चमें तो वैसे ही जीव पड़ जाते हैं और कहीं भूलसे विना देखे-भाले खानेकी चीज़में वह मिर्च डाल दी, तो जीवहत्याका पाप अलग लगे। शाक या दालमें डालनेके पहले मसाला, चाय दूधमें डालनेके पहले चीनी, दाल, शाक, रोटी के साथ काममें लानेके पहले घी भली भाँति देख लेना चाहिये।

५—शामको सूर्यास्तके पहले ही चूल्हा ठंडा कर देना चाहिये। बासी चीजें तो न कभी खुद खानी, न बच्चोंको खिलानी। इससे धार्मिक ही नहीं शारीरिक लाभ भी है।

६—यदि तुम्हारे पास धन है तो उसे पूर्व पुण्योंका उदय समझो और जो काम नौकरों द्वारा करवाना हो, उसे ठीक समझ-बूझ कर करवाना चाहिये। कारण आप जैसे जयणा पूर्वक काम करेंगे, वैसे वह नहीं कर सकेगा। जैसे आप साग न बनावें, तो नौकर सागके साथ साथ न जाने कितने जीवोंको मार डालेगा। पानीमें भी गोलमाल कर सकता है। अतएव जो काम अपनेसे न हो सके, उसीके लिये नौकरोंको पुकारें यही हमारे लिये उचित है।

७—चार 'महाविगइ'का अवश्य ही त्याग करना। बरफ, मलाईकी बरफ आदिका व्यवहार नहीं करना। बच्चोंको अफीम न खिलाना। कच्ची मिट्टी या नमक न खाना। आलस्य छोड़ कर नमकको अचित्त बना लेना। रातको भोजन नहीं करना। तिलों और पोस्त के दानोंका त्याग करना; जहाँ तक हो सके चटनी, आँचार वगैरहका चटोरपन छोड़ना और दूसरोंसे भी छुड़वाना; विदल वस्तुओंका खास ख़याल रखना तुम्हारा ही काम है। यदि पुरुष विरतिवान न हों, तो तुम उनको वैसा बना सकती हो। बैंगन वगैरहका भुर्त्ता बना।कर नहीं खाना-खिलाना। झड़बेरी या खट्टे जामुन न खाना। गाली, निन्दा आदि बुरी बातें न करना धर्मके कामोंमें लगी रहना। जिन चीजोंका रस बिगड़ गया हो, या जो बासी हो गयी हो, उन्हें कभी काममें न लाना। आटा, मुरब्बा, आँचार, सेव, बड़ी, पापड़ आदिके विषयमें जो कुछ पहले लिखा गया है; उस पर पूरा ध्यान देना। अनन्तकाय-

का त्याग करना। कच्ची हल्दी, अदरख, लसुन वगैरह बीमार पड़ने पर भी न खाओ। फागुनकी चौमासा शुरू होनेके पहले ही आठ महीनेके लिये साफ बर्त्तनमें तेल भरवा रखो। असाढ़से शुरू होनेवाले चौमासेमें खांड़, काजू, बदाम, पिस्ता, दाख आदिको काममें लाना बन्द कर दो। सूखे अचार आदि असाढ़के चौमासेके पहले ही खा कर खतम कर दो। हरे चाँवल, बेल, केर नागर बेलके पान और मैदेसे परहेज करो। आटा या सोजी बाजारसे नहीं मंगवाओ। घरमें पीस लेनेमें मिहनत तो पड़ेगी; पर अनेक जीवोंका आशीर्वाद मिलेगा। पानीको बहुत खर्च न किया करो और बिना छाने काममें न लाओ।

८—पर्वके दिनोंमें दलना-मलना, पीसना, तोड़ना, धोना-माँजना, सिर गूँथना, मठा निकालना, गोबरके कण्डे पाथना आदि मना है। छहों अट्ठाइयोंके दिन भी ये सब काम करना मना है।

९—मिथ्यात्व-लौकिक पर्व—आसाढ़की पूनो, रक्षाबन्धन, नवरात्र, होली, संक्रान्त, गणेशचौथ, नागपञ्चमी, राँधन छठ, शीतलासप्तमी (जिसमें बासी चीजें खायी जाती हैं) गोपाष्टमी, नोलीनवमी, अद्दयाद्शमी, भीम-एकादशी, धनतेरस, अनन्तचौदस सोमप्रदोष, सोमवती अमावस, बुधाष्टमी, दसहरा, मुहर्रम, बकरीद आदि पर्व मिथ्यात्वके हेतु और अनर्थकारी हैं, अतएव इन्हें त्याग देना।

१०—रोने-कूटनेकी चाल, दसें, ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवेंका सूतक मानना, गृहप्रवेश, अधरणो (पहले पहल गर्भ रहनेका

उत्सव मनाना), श्राद्ध, बाल-विवाह आदि रिवाज छोड़ देने योग्य है।

प्यारी बहिनो ! इन बातों पर अवश्य ही ध्यान देना। इससे आपका बहुत उपकार होगा।

चौदह स्थानोंमें उत्पन्न होनेवाले संमुर्च्छिम जीवोंकी हिंसा, जो मनुष्यकी असावधानीसे हो जाती है। इसके विषयमें पूरा ध्यान रखना चाहिये।

१—जो लोग छोटे छोटे गाँवोंमें रहते हैं, जिनके गाँवके पास नदी, तालाव, जंगल, खेत वगैरह हों, उन्हें चाहिये कि पायखानेके अन्दर न जा कर दिशा-फरागतके लिये बाहर मैदानमें चले जाया करें। स्वास्थ्यकी दृष्टिसे भी यही उचित है और धार्मिक दृष्टिसे भी, क्योंकि बन्द पायखानोंमें बहुतसे संमूर्च्छिम मनुष्य पञ्चेन्द्रिय जीवोंकी उत्पत्ति और नाश हुआ करते हैं। अगर पायखानेमें रोगी जाते हों, तो उनका रोग औरोंको भी हो जा सकता है। इसीलिये मैदानमें जाना चाहिए। वहाँ भी यह देख लेना चाहिए कि कोई कीड़े मकोड़े तो नहीं है। गीली जमीन भी बचा देनी चाहिये।

२—पेशाव भी ऐसी जगहमें करना चाहिये, जहाँ जल्द सूख जाये। किसीके पेशाव किये हुए स्थान पर पेशाव नहीं करना चाहिये। मोरी, पनाले वगैरहमें पेशाव करनेसे भी संमूर्च्छिम मनुष्य पंचेन्द्रिय जीवों तथा कीड़े आदि त्रस-जीवोंकी

उत्पत्ति होती और विनाश होता है। इसलिये भरसक पायखाना-पेशाब तो ऐसी ही जगह करना, जहाँ वह झट सूख जाय।

३—मुंहसे थूक-खखारके करने, नाक छिनकते, कै करते, कानका मैल या पीव निकालनेमें अथवा शरीरके किसी हिस्सेसे खून, या पीव निकाल कर फेंकनेमें यह खयाल रखना चाहिये, कि वह ऐसी जगह गिरे जहाँ झट सूख जाये। दिन हो तो सूर्यकी धूप जिस स्थान पर पड़े, वहीं फेंकना और उसके ऊपर राख तो हर हालतमें डाल देना प्रत्येक विवेकी धर्मात्मा पुरुषको इस विषयमें पूरा ध्यान रखना चाहिये। ऐसा नहीं करनेसे अनेक संमूर्च्छिम पंचेन्द्रिय जीव पैदा हो कर मरते हैं।

४—स्नान करनेके पहले तेल लगा लेना उचित है। बंधे हुए पानीमें न नहा कर बहते हुए पानीके सोतेमें नहाना चाहिये। भरसक तो श्रावकोंको नदी, तालाब, कुण्डल आदिमें कभी नहा-नहा नहीं चाहिये, क्योंकि इससे अनेक जीवोंको हिंसा होती है। पानीका परिमाण भी नहीं रहता। कभी कभी तो भयंकर जल जीवोंसे प्राण जानेका भी भय रहता है। श्रावकको तो विना छाने हुए पानीसे कभी नहीं नहाना चाहिये।

इस बातका सदैव स्मरण रखना चाहिये, कि पाखाना पेशाब जिन मन्दिरसे कमसे कम सौ हाथ दूर पर करना चाहिये। मन्दिरके अहातमें नाल छिनकना, थूँक फेंकना उचित नहीं है।

५—शास्त्रोंमें कहा है, कि भोजनकी थालीमें जूठन नहीं छोड़नी ... कारण उसमें कुछ ही देर बाद असंख्य संमूर्च्छिम

जीवोंकी उत्पत्ति हो जाती है। इसलिये भोजनकी थाली तो धो पोंछ कर पी जानी चाहिये। अकसर जीमन आदिमें लोग बहुतसी जूँठन छोड़ देते हैं, श्रावकोंको चाहिये, कि न इतनी चीजें परोसें, न इतनी लें कि जूँठन रह जाये।

६—ऐसाही पानीके भी विषयमें भी समझना चाहिये। पानीके वर्तनोंसे पानी काढ़नेका लोटा अलग रखना चाहिए। जूँठा वर्तन उसमें नहीं डुबोना चाहिए। गुजरात काठियावाड़में तो यह बुराई बहुत है। सब भाई-बहनोंको इस दोषसे बचनेकीजरूरत है।

सूतक-विचार।

लड़केका जन्म हो तो १० दिन तक सूतक रहता है, इसी तरह लड़कीका हो तो १२ दिन। यदि लड़का या लड़की जन्म ले कर मरणको प्राप्त हो जाय तो केवल एक दिनका सूतक लगता है। जिस स्त्रीके बच्चा होता है, उसे एक मास तक सूतक पालन करना पड़ता है। कोई स्त्री या पुरुष विदेशमें मर जाय तो उसके लिये एकदिन सूतक रखना चाहिये। यदि अपने घरमें नौकरनीको लड़का या लड़की हो तो तीन दिन तक सूतक लगता है। किसी स्त्रीको गर्भ रह कर गिर जाय तो जितने महीनेका गर्भ हो उतने दिन तक सूतक रखना पड़ता है।

जिनके घरमें जन्म-मरणका सूतक हो वह १२ दिन तक देव-पूजन न कर सकें। मृतकके सूतकमें घरके जिन आदमियोंने शवको उठाया हो वह १० दिन तक देव-पूजन न करें। और बाहरके आदमी ३ दिन तक पूजन न करें।

जिन्होंने मृतकके शवको स्पर्श किया हो, वह चौवीस प्रहर प्रतिक्रमण न करें। जिनको नित्यके नियम हो वह समताभाव रख, संवर पनेमें रहे। किन्तु मुखसे नवकार मन्त्रका भी उच्चारण न करे। स्थापनाचार्यजीको छुए नहीं। और जो सूतकको न छुआ हो वह आठ प्रहर प्रतिक्रमण न करे।

रजस्वला स्त्री चार दिन पर्यन्त घरकी किसी चीज़से स्पर्श न करे। चार दिन प्रति क्रमण न करे। पाँच दिन पूजन न करे। यदि रोगादिके कारण स्त्रीको रक्त बहता मालूम हो तो उसके लिये विशेष दोष नहीं। स्नानादि करके शुद्ध-पवित्र हो कर पाँच दिन बाद पुस्तकादिके स्पर्श करे। प्रभु दर्शन करे। अग्रपूजा करे, परन्तु अंग-पूजा न करे। रजस्वला स्त्री यदि तपस्या करे तो वह फलवती होती है। जिस घरमें जन्म-मरणका सूतक हो, वहाँ पर मुनिराज १२ दिन अहार-पानी न लेवें। सूतक वालेके घरका पानी या अग्रा-पूजनके काममें नहीं आ सकता।

गाय, भेंस, घोड़ी, सांड, आदि घरमें बिआवे तो १ दिनका सूतक लगता है। यदि मरण हो जाय तो जब तक शव न उठाया जाय तब तक सूतक रहता है।

